राधाकृष्ण द्वारा प्रकाशित महाश्वेता देवी की अन्य रचनाएँ :
सालगिरह की पुकार पर, श्री श्रीगणेश महिमा, 1084वें की माँ, जंगल के दावेदार, चोट्टि मुंडा और उसका तीर, अक्लांत कौरव, अग्निगर्भ, मूर्ति, ईंट के ऊपर ईंट, घहराती घटाएँ

ग्राम बांग्ला

भाग एक

महाश्वेता देवी

बंगला से अनुवाद
डॉ० माहेश्वर

राधाकृष्ण

पश्चिमी दिगंत की ओर जाते-जाते भी अगर पूर्वांचल की तरफ देखा जाये तो जागरण ही दिखायी पड़ता है; कभी सूर्य का, तो कभी जीवन का ।

—महाश्वेता देवी

खेड़ियाशवर दोनो ही शवर जातियाँ हैं। सरकारी गणना में लोधा और खेड़िया एक में गिने जाते है। दोनों ही जातियाँ किसी समय 'अपराध प्रवण' (यह नाम ब्रिटिश मदाशयता का उपहार है) कहकर विवेचित हुईं, जिसका अभिशाप वे आज भी ढो रही हैं। लोधा हत्या की घटना बीच-बीच मे 'खबर' बनती है और खेड़ियाशवर ने पुरुलिया जिला के स्वाधीनता सग्राम में अत्यत दुस्साहसिक भूमिका निभाई थी। कुछ दिनों पहले तक ये पुरुलिया शहर मे साधारणत. कमर मे रस्सी और हाथ मे कड़े के अलावा और कुछ पहन कर नही घुसते थे। अभी कुछ दिनों पहले स्वाधीनता संघर्ष के लिए पेंशन प्राप्त कानूराम शबर का घर वन विभाग ने गिरा दिया। बहुत-से स्वाधीनता संग्रामी शवर आज भी सरकार से कोई वृत्ति नही पाते। हाथ मे कुल्हाड़ी और कमर में कोपीन पहने शवरों की जीविका है लकड़ी इकट्ठा करना।

दांतन थाना के अंतर्गत 2 नंबर अचल के शाखारीडागा ग्राम के लोधाओं का विवरण निम्नलिखित है: परिवार 87, बालक 123, बालिका 82, स्कूल जाने वाले बच्चे 44, सपूर्ण भूमिहीन 26 (कृषियोग्य भूमि और आवास विहीन)। उपरोक्त गणना के समय तक किसी परिवार को आदिवासी सहायता योजना के तहद कोई मदद नहीं मिली थी। रोजगार की स्थिति यह है कि बाका कोटाल के परिवार, जिसकी सदस्य सख्या 7 है, की आमदनी 60 रु० महीना है। मेरे पास ऐसे भी उदाहरण है जहाँ प्रति व्यक्ति 4 से 5 रु० महीने की आमदनी है।

पुरुलिया के अत्यंत दरिद्र खेड़ियाशबर लोग जबला गाँव में जड़ नदी का, शासनडी-बाघडी गाँव मे हनुमाता नदी का, निश्चिदपुर गाँव में कुमारी नदी का और शारगअ गाँव मे नेंसाई नदी का पानी पीते है। सभी जगह मैंने नही देखी हैं, फिर भी यह बात जानती हूँ कि पुरुलिया के असख्य गाँवों मे पानी का संकट है।

इन सभी समितियों की चर्चा मैंने यह जताने के लिए की है कि ग्राम-बांग्ला के साथ मेरा परिचय खूब घनिष्ठ है। इनकी दुख-दुर्दशा की जानकारी मेरे पास सीधे पहुँचती है। ऊपर जो विवरण दिये गये हैं उनसे यह समझने का भी अनुरोध करती हूँ कि जो आज संगठन बना रहे है वे पीने

और सिंचाई के पानी, शिक्षा, भूमि, जीवनरक्षा के साधनों आदि से वंचित हैं, इसीलिए संगठन बना रहे हैं। ऐसे परिवारों की संख्या अगणित है जो आज भी कुछेक फल, लकडी और पत्ते देने वाले पेड और 4-5 बकरियों के सहारे जीवन-यापन कर सकते हैं।

लोधा और खेडिया लोगों की चर्चा इसलिए की है कि (क) वे आदिवासी हैं, (ख) मर्दुमशुमारी में लोधाखेडिया नाम एकसाथ हैं, (ग) लोधाओं को खेड़िया से विच्छिन्न करके उन्हें 'विशेष रूप से सरक्षित आदिवासी' नाम दिया गया है, (घ) खेड़िया आदिवासी खाते की कोई सुविधा नही पाते और (च) लोधाओं के बारे मे सरकार अब सचेत हो रही है, वह भी लोधा समाज मे जागरण आने के बाद।

इसी तरह इनकी कृपा से ग्राम बांग्ला के समाचार मेरे पास आते रहते है और सरकारी दफ्तरों को, जिलाधिकारियों को पानी दो, शिक्षा तथा आवास की व्यवस्था करो, सागर तक फैली भारतभूमि इन्हे नही चाहिए, कुछेक फलदार वृक्ष और बकरियां दो, घृणित ठेकेदारी प्रथा समाप्त करो और इनके द्वारा गठित समितियो के माध्यम से विकास योजनाओ पर अमल करो—इन्ही मसविदों की पाँच-सात सौ चिट्ठियाँ मुझे प्रतिवर्ष लिखनी पडती हैं। चूंकि मेरे पास घटनाओं के विवरण प्रत्यक्ष रूप से आते हैं, इसलिए इन रचनाओं में वर्णित छोटी घटनाओ के तथ्य और उनसे संबंधित डाकुमेंट मेरे पास है। जो गांव मैंने देखे है और जो नही देखे है—उन सभी को लेकर ग्राम बांग्ला की रचना की गई है। अवश्य ही सालभर मुझे नाना प्रकार के अभियोग सुनने पडते हैं। जो कहते हैं कि मैं पाश्चात्य ढग का भोगविलास से भरपूर जीवन बिताती हूँ, उनके साथ मेरा परिचय भी नही है, उनकी बातो का उत्तर मै नही दूंगी। पर जो कहते हैं कि यह सब करके तो सिर्फ गरीबो को थोडी-बहुत मदद पहुँचाई जा रही है, उनको मैं उत्तर देना चाहूँगी। मैं थोडा और गहराई मे भी जाना चाहूँगी। अभी तक हमने इतिहास से सीखा है कि संघर्ष के क्षेत्र में एकजुटता और बहुत दिनो से अपनी मांगों को लेकर सघर्ष करना (जो 'मेन स्ट्रीम' करता है), संघर्ष के इस स्तर तक गरीबी की सीमा से नीचे के आदमी को नही लाया गया। यह बात उन्हें इसलिए जाननी होगी कि

लोधा-मुंडा-खेड़िया-संथाल आदि को आदिम साम्यवाद स्तर की समाज-व्यवस्था मे वापस नहीं ले जाया जा सकता। यह एक ठोस यथार्थ है। इससे ज्यादा ठोस यथार्थ यह है कि उन्हें इस वर्तमान हिंस्र तथा बर्बर समय के साथ चलना होगा। इसीलिए जब खेड़िया लोग पचायत से कुआँ मंजूर कराने के बाद ठीकेदार को हटाकर, पत्थर काटकर खुद अपने हाथों कुआँ तैयार करते हैं, उसके पानी से घर से सटी जमीन पर परंपरागत धान की खेती न करके मुट्टा, कुरथीकलाई की खेती करते हैं और साल में कई महीनों के लिए भोजन का जुगाड़ कर लेते हैं, तो यह उनका अर्जित फल है, भिक्षा पाना नहीं है। लोधा और खेड़िया आज एकताबद्ध होकर निर्मम समाज को जता रहे हैं कि दूसरों के अपराध उनकी गर्दन पर डाल-कर अत्याचार करने के दिन लद गये। वे अब लड रहे है। लड़ाई का मतलब हमेशा हथियार उठाना नही होता। उनकी सारी कोशिशें जब व्यर्थ हो जाती हैं तब भी ये लड़ाई ही सीखते हैं। दुश्मन को पहचानते हैं और इनका गुस्सा कण-कण जमा होता हुआ और कठोर होता जाता है। मैं समझती हूँ भारत का गरीब आदमी निरक्षर भले हो अशिक्षित नहीं है। उसने युगों-युगो से अन्याय सहा है, वह सफेद और काले का अर्थ समझता है। किस चीज के लिए लड़ना होगा—यह वह जानता है और उस लड़ाई का संदर्भ क्या होगा यह भी वही तय करेगा। गाँव के गरीब को हम बताने और सिखाने जायेंगे, उससे कुछ सीखेंगे नही, यह हमारी भूल है। बहुत बड़ी भूल। उसके पक्ष मे सबसे बड़ी बात यह है कि महीने में 4-5 रुपये की आमदनी करके, पत्ते और कंदमूल खाकर भी वह जिंदा रहता है और इस तरह साबित करता है कि वह जिंदा रहना, टिका रहना जानता है। वह यह भी जानता है कि बिना किसी अन्य समाज से सीखे, अपनी ही कोशिश और स्फूर्ति से सिधूकानू और बिरसा और दूसरे असंख्य लोगों ने एक सार्थक संग्राम का गठन किया था।

जो यह कहते हैं कि साहित्यिक दृष्टि से मेरी रचनाशीलता व्यर्थ हो रही है, 'आपरेशन ? बसाइ टुडु' अथवा 'स्तनदायिनी' की शैली-भाषा-शिल्प के निर्माण मे मैं असफल ही रही हूँ—उनसे मेरा निवेदन है कि अब मुझे साहित्य के शिल्पगत उत्कर्ष का कोई आग्रह नही रहा। जो इसमें सक्षम

हैं वे करें। इसके साथ ही विनम्रतापूर्वक यह भी बता दूं कि चूंकि सारा साल दूसरे तरह के क्रियाकलापों में कटता है, इसलिए साहित्य के लिए साहित्यिक ढंग की आलोचना-प्रत्यालोचना के लिए मैं अपने अंदर कोई उत्साह नही पाती। इन बातों को बधुगण मेरी व्यर्थता ही मानें। वस्तुतः अपने लेखन को लेकर कोई वक्तव्य प्रस्तुत करना मुझे बड़ा बुरा लगता है। मेरी रचना पढकर अगर मुझे समझा न जा सके तो मैं अपने को लाचार और व्यर्थ पाती हूं। मैं और कुछ नही कर सकती। जो लोग आज भी पूछते हैं कि अकादमी पुरस्कार लेकर मैंने क्या अपने को बेच नही दिया है, उनसे मेरा अनुरोध है कि वे पुरस्कार सबंधी अपना दृष्टिकोण पहले स्पष्ट करें। सिनेमा-थियेटर में, किसी विशेष सिनेमा के लिए निर्देशकों को ढेरों सरकारी पुरस्कार और सम्मान मिलता है। आप लोग उनकी निष्ठा पर तो प्रश्नचिह्न नही लगाते। सिनेमा के क्षेत्र मे वामपथी निर्देशक को आत्मविक्रय तथा समझौतावादी नही करार देंगे और साहित्य के क्षेत्र में ऐसा करेंगे; इससे प्रमाणित होता है कि आप लोग दोमुंहे न्यायबोध से परिचालित हो रहे हैं। शायद कही यह भी अवधारणा आपके अवचेतन में बनी हुई है कि सिनेमा-निर्देशको का मूल्य साहित्यकार की अपेक्षा कही ज्यादा है। सिनेमा-निर्देशक को दस-बीस-पचीस-पचास हज़ार में खरीदा जा सकता है तो बेचारे साहित्यकार को उससे कही सस्ते दामो यानी पांच या दस हज़ार में ही खरीदा जा सकता है। कौन लेखक किस तरह का समझौता कर रहा है, यह उसके साहित्य-कर्म में ही पकड़ा जा सकता है। जो कहते हैं कि मैं सिर्फ शोषण-उत्पीडन दिखा रही हूँ, इससे मुक्ति की बात नहीं कर रही हूं—उनसे कहना चाहूँगी कि यदि मेरा लेखन यह बता पा रहा है कि स्थिति असहनीय हो गई है और इससे मुक्ति जरूरी है, तो मैं अपने उद्देश्य मे सफल हूँ। जिनके जीवन में आग लगी हुई है उन पर मेरी पूरी आस्था है कि वे कभी गलती नही करेंगे। उन्होंने कभी कोई गलती नही की, न तेलंगाना मे, न तेभागा मे और न नक्सलवाड़ी मे। अपना रास्ता वे खुद चुन लेंगे। इस विषय में मैं पूर्ण अनधिकारी हूं। मैं तो जो देख रही हूं, जो जान रही हूँ, उसका यथातथ्य चित्रण करने की चेष्टा भर कर रही हूं। जो इस बात से दुखी हैं कि मैं साहित्य-विषयक

आलोचना-प्रत्यालोचना के प्रति आग्रही नहीं हूँ, उनसे मेरा विनम्र निवेदन है कि अभी तक जितनी बातें मैंने कही है वे मेरे लिए केवल समाज-व्यवस्था के प्रश्न से संबंधित नहीं है, बल्कि साहित्य के संदर्भ में भी उतनी ही सही हैं।

अंत मे कहना चाहूँगी कि मैं तो अब अस्तगामी हो चली हूँ। आयु की बालू-घडी मे से बालू के कण नि:शब्द झर रहे हैं। आज लगता है, सभी असह्य परिस्थितियो के बावजूद जो आदमी की जिजीविषा है, वह जो सत् मूल्यो मे आस्था रखना चाहता है, जिसके लिए वृष्टि ही खेती का साधन है, वह मनुष्य जब एक पौदा रोपता है जमीन में वह भी गहरी आस्था के साथ उसी जिजीविषा का ही रोपण करता है—ये ही मेरे लिए सबसे ज्यादा जानने योग्य बातें हैं। यह उपलब्धि वह मंज़िल है जहाँ अंत में अपना रास्ता ढूँढते हुए मैं पहुँची हूँ। जिन्हे केवल करुणा का पात्र भिखारी बनाके रखा जा रहा है, वे आज पीने और सिचाई के पानी के लिए खुद लड रहे हैं और अपने हाथों कुआँ खोद रहे हैं, अपने हाथो अपना रास्ता बना रहे हैं, इतना देखकर जा रही हूँ, इसके लिए खुद को धन्य मानती हूँ।

पश्चिमी दिगत की ओर जाते-जाते भी अगर पूर्वांचल की तरफ देखा जाय तो जागरण ही दिखाई पड़ता है; कभी सूर्य का, तो कभी जीवन का।

—महाश्वेता देवी

ग्राम बांग्ला

"इस चुनाव के पहले ही सुकुमार जाना वडा संदिग्ध व्यक्ति हो उठा था। वह रहस्यमय लोगों के साथ मिलने-जुलने लगा था। उनमें से कोई सुकुमार को अचानक…"

इस प्रकार के संदिग्ध लोगों के नाम यथासमय दफ्तर मे पहुँच गये थे। किसी क्षण उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता था। ननीकात दलुई को उनके पकडे जाने की पूरी आशा थी। इस आशा का कारण था डाक्टर का कथन कि सुकुमार जाना की मौत किसी भी क्षण हो सकती है। जिस तरह का 'ब्रेन कनवशन…'

"मौत हो सकती है ?"

"हाँ।"

"यह तो बड़ी दुखद बात होगी।"

"निश्चय ही।"

डाक्टर समझ गया है कि यहाँ बैठकर ननी बाबू के प्रश्नो के उत्तर मे 'हाँ'-'ना' करते रहने मे ही उसका कल्याण है। वह एक ऐसे हस्पताल में है, जहाँ हर तरह के केस बीच-बीच में आते रहते हैं।

सभी को बचा पाना संभव नहीं होता। बहुतेरे मर भी जाते हैं। डाक्टर यह भी नही कह सकता कि 'ओफ! खून मिल जाता तो इसकी जान बच सकती थी।'

सभी मौतें दुख का कारण नहीं होती। ननी बाबू के लिए तो एकदम नही।

सुकुमार की मौत को जब ननी बाबू 'दुखद बात' कहते हैं तो डाक्टर को उसका अर्थ तुरत यह समझ में आ जाता है कि दरअसल सुकुमार की

मौत से ननी बाबू छुटकारे की साँस लेंगे ।

ननी बाबू सदलबल विदा लेते हैं। अभी कुछ कहना मुश्किल है। मगर हस्पताल मे सुकुमार के बचने की आशा कम ही है। साइकिल को हाथ से ठेलते हुए, ननी सोच रहा है। एकाएक चिन्मय से कहता है—कुछ समझे ?

"बचेगा नहीं ।"

"ओह ! उसकी बात नही कर रहा हूँ ।"

"फिर ?"

"मान लो बच जाय ।"

"यह तो बड़ी खुशी की बात है ।"

कोई सकट आते ही ननी का खिदमतगार विशाल खादुआ देशी की शरण में जाता है। नशे से रहित सफेद आँखों से संकटजनक परिस्थिति की आँख से आँख नही मिला पाता वह । संकट की लाल आँखो में नशे से धुत् लाल आँखें ही डाल पाता है वह ।

'आपरेशन वर्गा'[1] के समय ननी ने अपने दोनों खिदमतगारों के नाम वर्गादारों की सूची मे शामिल करा दिये थे । विशाल के साथ उसने तय किया था कि इसके बदले में वह साल मे दो-चार मन धान, एक जोड़ा धोती, एक जोड़ा बनियान, एक गरम चादर और रोज के लिए भात-चाय-कुरमुरे-तेल और बीडी का प्रबंध करेगा ।

बर्गादारो (काश्तकारों) की सूची मे उसका नाम शामिल हो गया, फिर भी विशाल के जीवन मे कोई परिवर्तन नही आया । तो भी रजिस्टर में बर्गादार बनकर ही जैसे वह सौभाग्य के समुद्र मे गोते खाने लगा था। फलस्वरूप देशी का अद्धा चढ़ाकर थोड़ा ताज़ा दम होकर उसने ननी से कहा था—"बाबू, जुग-जुग जियो ।"

ननी के दूसरे खिदमतगार सुदामा की प्रतिक्रिया थी—"अरे साला, बाबू जुग-जुग जिएँ। क्यों, अरे बेकूफ, शराब काहे को पीता है, बोल

1. पश्चिम बंगाल की वाम फ्रंट सरकार का एक कार्यक्रम जिसके अन्तर्गत खेतो को उन पर काश्त करने वालो के नाम लिख दिया गया था ।

तो ?"

"अरे साला, आज शराब नही पियेगा, तो कब पियेगा ! आज हमारे लिए खुशी का दिन है।"

"कैसी खुशी ?"

"बर्गादारी खाता में हमारा नाम जो चढ़ गया।"

"क्या सुकुमार जाना हमें बर्गादार बनने देगा ?"

"क्यो, क्यों नही बनने देगा ?"

"जो बर्गा करते हैं, वे कहाँ जायेंगे ?"

"कौन लोग ?"

"दुर साला, कैसा बेकूफ बन जाता है। मैं कहता हूँ माझी लोग बर्गा करते हैं कि नही ?"

"हाँ, करते हैं।"

"उनका नाम तो खाता मे चढा नही और हमारा चढ गया। सुकुमार बाबू मानेंगे ?"

"क्यों नही मानेंगे। सुकुमार और हमारे बाबू तो एक ही पारटी करते हैं, नही ?"

"धत्, खाक समझता है तू।"

निश्चय ही सुकुमार ने इस मामले को लेकर बहुत उथल-पुथल किया था। माझीपुरवा से ननी के दल की पहले से ही खींचतान चल रही थी। इस घटना के बाद से तो खिच-खिच कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी। इस बारे मे जो घटनायें घटी, उनका ही परिणाम था सुकुमार की खोपड़ी पर लाठियों की बिन बादल बरसात।

आजकल ननी सब समय विशाल को साथ मे रखता है। गाँव-गढ़ी के हालात आजकल पहले जैसे नही रहे। ननी के लिए भी स्थिति इतनी निरापद नहीं रह गई थी। 'स्नेहमयी रूप धारण कर माँ खेतों के उस पार खडी है—दिग्-दिगंत तक उसके केश लहरा रहे हैं'—यह सब पुरानी तस्वीर है। निश्चय ही अभी भी कोई कमरे की दीवार पर रवि वर्मा के तैलचित्र नही टाँगता, क्योंकि पाठ्य पुस्तकों मे वही पुरानी तस्वीर आज भी पाई जाती है ? सुजला, सुफला, शस्य श्यामला ग्राम-जननी की छवि

को तो भारत में घुसते ही अंग्रेजों ने समाप्त कर दिया। ननी को सब मालूम है।

आजकल तो ग्राम-जननी पगली हो गई है, आँखों में उसके वहशीपन भरा हुआ है, और उसकी संतान का रहन-सहन ही बदल गया है। ननी तो जनता के लिए है। पर शायद जनता उसके लिए नहीं है। एक गाँव में तीन-तीन दल। प्रत्येक दल के अन्दर उप-दल। ऐसे में उस अंचल का एकमात्र माना हुआ नेता ननी दलुई भी अकेले आने-जाने का साहस नहीं जुटा पाता।

सुकुमार साहस करता था। पा गया न उसका फल।

वर्गादारी के झगड़े के वक्त सुकुमार ने विशाल और सुदामा को समझाया था कि ननी ने क्यों उनका नाम खाते में चढ़वाया है। यह भी कहा था कि भले ही ननी ने ऐसा किया, पर उन्हें यानी विशाल और सुदामा को इसके लिए राजी नहीं होना चाहिए था।

"कमाल करते हो आप ! बाबू को हम भला ना कर सकते है ! बाबू अगर'''।"

"अच्छा विशाल भाई, अघोर बाबू ने भी तो इसी तरह माझियों को उजाड़ा था ?"

"हमें भी।"

"क्या फिर उसने किसी माझी को बसाया ?"

"नहीं तो।"

"तभी से तुम लोग उसी अघोर बाबू के बेटे ननी के घर बेगार खट रहे हो ?"

"क्या करें, आप ही बताइये ?"

"अभी जो हुआ उसका मतलब समझते हो ?"

"क्या ?"

"अभी तो सिर्फ नाम चढा है। वर्गा (काश्त) तो मिली नहीं।"

"ऐसा भी कहीं होता है ? कौन होने देगा ?"

"फिर बोलो बेगार क्यों खटेंगे। खेती करेंगे और हिस्सा लेंगे।"

"बाप रे ! हमारी इतनी हिम्मत कहाँ ?"

"माझी लोग गरीब हैं, तुम लोग भी गरीब हो, अब तुम्हारा उनसे विरोध हो गया कि नही ?"

"विशाल की खोपड़ी मे यह बात घुसती ही नही। इस घामड को मैं बता रहा था।" कहकर सुदामा जल्दी-जल्दी बीड़ी के कश खीचने लगा। फिर बोला था—"हम उजड़े थे, तब वे बसे थे। अघोर बाबू के हाथ में ताकत थी। किया जैसा चाहा। अब ननी बाबू के हाथ मे है। घाट बाँधकर काम कर रहे हैं। इससे उनके साथ हमारा विरोध काहे होगा ?"

"सुकुमार, तुम्हारी तो उनके साथ मेल-जोल है। तुम उनसे कहो न। वे तुम्हें मानते हैं ?"

"बीच में से वे सब तीस घर गजा बाबू के दल में चले जायेंगे, देख लेना।"

"अच्छा ! अच्छा ! तुम्हें इतनी चिन्ता करने की जरूरत नही।"

इसके बाद से ही ननी विशाल को साथ रखने लगा। विशाल के पास दो ही चीजें हैं। एक उसकी विशाल देह और दूसरी उस देह के भीतर अपार शक्ति। और ननी से वह डरता है। ननी जो कहता है विशाल वही करता है। ननी इन दिनों गाँव के लिए बहुत मूल्यवान है। और उस मूल्यवान आदमी को अपने साथ लेकर चलने का काम विशाल को मिला है, सुदामा को नही। इससे विशाल अपने को थोडा श्रेष्ठ समझने लगा है।

हस्पताल मे सुकुमार को देखकर लौटते समय ननी और दूसरे लोगों की बातों मे उसे (विशाल को) लगा कि सुकुमार की मौत हो सकती है। इस संभावना से उसे बहुत कष्ट हो रहा है। विशाल यह जानता था कि शहर के बडे हस्पताल मे ले जाने पर मुर्दा भी ज़िंदा हो जाता है।

अघोर बाबू को भी बड़े हस्पताल ले जाया गया था। माथे की नस फट गई थी, लकवा मार गया था, फिर भी और पाँच-छः बरस जीते रहे थे। ओह, ननी बाबू की बहू ने क्या सेवा की थी ! बूढे की मत फिर गई थी। भूजा खाऊँगा, नारियल खाऊँगा, यह खाऊँगा, वह खाऊँगा, दिन-रात खाऊँ-खाऊँ करता रहता था। बेचारी भूजा का चूरा बनाकर, नारियल को सिल-बट्टे पर पीसकर बूढे को देती थी और मुंह में डालकर थू-थू करने

लगता था।

ननी बाबू उन दिनों रात-दिन एक किये रहते थे। यहाँ मीटिंग, वहाँ मीटिंग। कहाँ तबोलियों को पानी नहीं मिल रहा है। कहाँ खेत-मजदूरों की मजदूरी बढ़वानी है—रात-दिन साइकिल पर घूमते रहते थे।

ननी बाबू और गजानन बेरा।

विशाल ने सुना था—तब दोनों एक ही दल में थे। गजा बाबू की उम्र ज्यादा थी। जेल का भात खाकर देह जर्जर हो गई थी। बाद में शायद दल के दो टुकड़े हो गये थे।

अघोर बाबू की मौत के बाद ननी बाबू घर पर रहने लगे। लोग कहते थे ननी बाबू मालिक होंगे तो जमीन-जायदाद गरीबों में बाँट देंगे। घर को ही पारटी का दफ्तर बना देंगे।

नहीं जी, कहाँ की बात करते थे लोग। देखो तो, ननी बाबू के राज में उनके धान के कोठारों की गिनती बढ़ गई और बाप से भी ज्यादा कड़े हाथों उन्होंने बागडोर सँभाल ली।

और उधर सुकुमार को देखो।

"बाबू, ननी बाबू!"

"क्या है रे विशाल?"

"क्या सुकुमार को शहर ले जाना ठीक नहीं होता?"

"कैसे होगा? ताल कैसे पार करेंगे?"

"क्यों, कंटरेक्टर की लारी में रखकर ले जा नहीं सकते?"

"डाक्टर सुकुमार को हिलाने-डुलाने की इजाजत नहीं देगा।"

"जवान-जहान लड़का है। उसकी जान बच जाती।"

"अब चुप भी रहेगा।"

ननी खुद भी जैसे व्यग्र हो उठता है। सुकुमार अभी जिंदा है। कोशिश करके क्या उसे बचाया नहीं जा सकता? मन जवाब देता है—नहीं, वह नहीं बचेगा।

मन फिर पूछता है—तो क्या वह मर जायेगा? फिर मन ही जवाब देता है—हाँ, मर जायेगा, मर जायेगा।

कहीं पर एक नागिन किट्-किट्-किट्-किट् कर उठती है। ननी का

राजनीतिक मन कहता है यह सब झूठ है। और फिर उसकी शिराओं में बैठा एक पागल, बेलगाम मन कहता है—देखा ?

नागिन बोल रही है। इसका मतलब है—सुकुमार मरेगा।

सुकुमार ! गाँव की पगडंडी पर चलते-चलते अँधेरे में, ननी का मन व्याकुल हो उठता है। उसके सामने पैदा हुआ, उसीके हाथों पाला-पोसा गया सुकुमार। सुकुमार की बुआ की उमर जब सोलह की थी तब ननी की उमर होगी बाइसेक साल। उसके लिए ननी के मन में तीव्र आकर्षण हुआ था। पर गाँव के अन्दर ही दूसरी जाति की लड़की से ब्याह की बात जबान पर लाने से ही सर्वनाश हो जाता।

ओह ! कब की बात है ! पोखर के किनारे दोनो ने एक-दूसरे के आँसू पोंछकर अन्तिम विदा ली थी। फिर कहाँ प्रेम और कहाँ क्या ? आज मलिनी भरी-पुरी गृहस्थी में ताई, दादी, जेठानी, नानी आदि नाना पदों पर कार्य करती हुई कभी क्या उसे याद भी करती होगी ?

सुकुमार के प्रति ननी के मन मे कही एक कोमलता थी—दुर्बलता भी कह सकते है। और वही सुकुमार मरने जा रहा है।

भारी गले से ननी कहता है—"आज नही हो सकता। पर कल भोर में एक लारी का जोगाड़ करना होगा, समझे चिनू।"

"अच्छा।"

"क्या सोच रहे हो ?"

"आकाश देख रहा हूँ।"

"आकाश !"

"हाँ, अगर पानी पड गया तो लारी पकड़ना मुश्किल होगा। ताल में पानी बहुत बढ़ जायेगा। धार भी तेज़ हो जायेगी।"

यह ताल काली और रूपाई नदियो को जोड़ता है। अचानक वर्षा पड़ते ही जैसे-जैसे नदियों मे पानी बढ़ता है, वैसे-वैसे ही इस ताल में भी। स्थिर जल धाराप्रवाह हो उठता है, लगातार ज़मीन काट-काटकर ताल ने अपना पाट काफी चौड़ा कर लिया है। इस ताल को पार किये बिना सड़क तक पहुँचना या लारी पकडना मुश्किल है। बरसात मे बस ताल के इस पार नही आती।

पानघाट के पास ताल का पाट सबसे चौड़ा है। यहीं पर एक पुल बनाने और ताल पर बांध बनाने की बात अनंत काल से सुनी जा रही है। इसी ताल में नहाना, कपड़े धोना, मवेशियों को पानी पिलाना आदि अनेक जरूरी काम निबटाये जाते हैं। साल-भर ताल में पानी रहता है।

कई साल पहले एक मिशनरी संस्था ने इस इलाके में पानी का अभाव दूर करने का काम हाथ में लिया था। राजा की झील कहलाने वाली एक बड़ी झील की उन्होंने सफाई की थी। पूजाहाटी ग्राम उनके इस प्रयास से बच गया था। उन्होंने कहा था कि वे यहाँ के साठेक पोखरों और कुओं को साफ कर देंगे। इस ताल को भी।

उन दिनों इस इलाके में बड़ी गहमागहमी शुरू हुई थी। तब ननी के दल ने इसका बहुत प्रबल विरोध किया था। इस तरह मिशनरियों को यहाँ घुसने नहीं दिया जायेगा। जो करना होगा ननी और उसके लोग करेंगे।

इसको लेकर ननी और राजा बाबू में ठन गई थी। ननी को सब याद है।

"ननी, यह तुमने क्या किया ? कितना कह-सुनकर उन्हें राजी किया था। तुमने सब गुड़-गोबर कर दिया।"

"वह सब गंदगी यहाँ लाने की जरूरत नहीं है राजा दादा ! मैं यह नहीं होने दूँगा।"

"देखो ननी ! पानी की तकलीफ तुम्हें नहीं है। मुझे भी नहीं है। तुम्हारे पास तीन-तीन पोखरियाँ हैं। आराम से गुजर रही है…"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?"

गजानन कुछ देर चुपचाप ननी को ताकते रहे। गजानन बेरा पुराने जमाने के आदमी हैं। अभी भी देह मे बल है, छाछठ साल की उमर में भी। सिर पर छोटे-छोटे बाल, माथे पर लाठी की चोट का गहरा दाग, खेत-मजूर आंदोलन का उपहार। कछोटा मार कर धोती पहनते हैं, ऊपर अधमैला टेरिलीन का कुर्ता। आज भी साइकिल पर बैठकर महान अक्टूबर क्रांति मनाने जाते हैं।

"हाँ, तो मैं कह रहा था पानी की बात। मेरे पास जमीन नहीं है। इसीलिए पानी की समस्या भी नहीं है। इलाके मे पानी की परेशानी खत्म

हो जाती। पानी के ऊपर क्या सफाई करने वाले का नाम लिखा होगा ? तुम्हारे पिता ने ब्राह्मण को बुलाकर झील का दान किया था। कोई क्या कहेगा कि एक कांग्रेसी ने झील का पानी दिया था।"

"गजा दादा, बात से बतंगड होता है।"

"ननी, तुम तो मुझे एक वाक्य में डिसमिस किये दे रहे हो।"

"हम नैतिक आधार पर उन्हें इस अंचल मे घूमने की इजाजत नही दे सकते।"

"थोड़ी नैतिकता हमारे पास भी है, भाई। मगर हम-तुम इस नैतिकता से पानी की कमी को कहाँ दूर कर पा रहे हैं ? ठीक है! जैसा चाहो, करो।"

बात वही खत्म हो गई थी। मगर आज भी ननी पानी के मामले में कुछ नहीं कर पाया है। वह जानता है कि ताल पर पुल बन जाने से चार नंबर अंचल, केतूपुर के दो नंबर अंचल और पून्या के एक भाग का बडा कल्याण होगा।

पून्या बहुत भीतर पडता है। पुल बनने से सड़क बनेगी, बस वहाँ तक आ सकेगी। अभी शादी-ब्याह के वक्त धनी लोग जीप किराये पर लेकर बारातियो के यातायात की व्यवस्था करते है। वर्षा शुरू होते ही वह भी बंद हो जाता है।

चिन्मय का इशारा इसी तरफ है। ननी भी आकाश की तरफ देखता है। "हाँ, बादल जमाट बाँधे है। होने दो, बारिश होने दो। वैशाख मे पानी पड़ना तो अच्छा ही है। मगर बारिश हुई तो पानी बढ जायेगा। वैशाख मे पानी पडा था। पर सावन में आकाश जैसे सूखा पत्ता हो रहा है।"

"पानी नहीं पड़ा तो इस बार..."

"नही, फिर सूखे से नजात नही मिलेगी।"

"सुबह लारी पकड़ना है।"

"हाँ, कहा तो।"

"जवान लडका है। बच भी सकता है।"

चिन्मय इस मंतव्य का उत्तर नही देता। वह कुछ सोच रहा है।

"क्या सोच रहे हो ?"

"मारा किसने ?"

"अरे ! अभी तक यह भी नहीं समझ पाये ?"

"सोम लोगों ने ?"

"तो फिर कौन ?"

"उसकी इतनी हिम्मत हो सकती है ?"

"तुम क्या समझते हो, उसको भले-बुरे का ज्ञान है ?"

"पता नही ।"

"छोड़ो, ये सब बातें अभी रहने दो ।"

"सुकुमार की उन लोगों से खूब पटती थी ।"

"यही तो उनका दाँव लगा ।"

"मैं उस दिन गाँव में नही था ।"

"खड्गपुर गये थे ?"

"हाँ ।"

"देखो, अगर कुछ ऐसा-वैसा हुआ तो···"

"हम उसकी लाश का जलूस निकालेंगे । उन्हें समझा देंगे कि उसके खून का बदला हम जरूर लेंगे ।"

ननी काँप उठा । उमर ! उसकी उमर भी तो उनसठ साल की हुई । उमर ज्यादा होने पर यह सब सहन नही होता । सुकुमार ! थोबडा-सा चेहरा, चिपटी नाक । इस गाँव में वही एक है, जो पंट के ऊपर कुर्ता पहनता है । प्राइमरी स्कूल की मास्टरी मिल रही थी । नही लिया । बोला—लोग कहेंगे कि मैं अपना फायदा देखता हूँ ।

और बेकार ही रहा उसके बाद । बाप पोस्टऑफिस में चपरासी है । माँ लड़कियों के स्कूल में झाड़ू-बुहारू करती है, लड़कियों और टीचरों को पानी पिलाती है । उनका बेटा सुकुमार । अरे भाई, तुझे इतना बड़प्पन दिखाने की जरूरत क्या थी ?

साइकिल के कैरियर पर झाबा रखकर इस गाँव से उस गाँव सब्जी बेचता फिरता है । उसकी लाश को लाल कपड़े में लपेटकर जलूस । नही, यह बात सोचना भी ठीक नही है ।

चिन्मय ने अचानक विशाल से कहा—"तू जरा आगे बढ़ ले ।"

"क्यों ?"

"काम है।"

"अरे, उसके सामने सब कुछ बोल सकते हो।"

"नहीं। ननी दादा।"

"नहीं ?"

"नहीं।"

"ठीक है। विशाल, तू ज़रा आगे बढ़ जा, भाई !"

विशाल तेज़ी से आगे बढ़कर पंचायती कुएँ की जगत पर जा बैठता है।

चिन्मय फुसफुसाकर बोलता है—"शायद देबू और राजन ने उसे मारा है ?"

"देबू···राजन ?"

"हाँ !"

"तुम्हें किसने बताया ?"

"सभी कह रहे हैं।"

"सभी ?"

"हाँ, मैंने माझीपुरा में सुना। वे सबके सामने बोल रहे हैं। आपका भी नाम ले रहे हैं।"

"समझा। तो···फिर ये सोम वगैरह कहाँ गये ?"

"कह नहीं सकता। पर राजाराम की बहू कह रही थी कि यह ननी बाबू का काम है।"

ननी का खून खौल उठता है। पूछता है—"देबू और राजन कहाँ हैं ?"

"पता नहीं। परसों हाट में सुकुमार के साथ उनका झमेला हुआ था। एक-दूसरे को दोनों ने धमकी दी थी—देख लेंगे। देबू जैसा गरम-मिजाज है···"

ननी एक मिनट में सारी पैंतरेबाज़ी तय कर लेता है। अब सुकुमार को बचाने की पूरी कोशिश करनी होगी। अगर यह बात सच है कि सुकुमार को मारने वालों के बारे में ऐसी बातें चल रही हैं तो उसे एक

दूसरी भूमिका में उतरना पड़ेगा। दबू और राजन ने मारा ? ऐसी बेवकूफी की ?

इस वक्त इसी बात को लेकर कितनी छीछालेदर होगी ?

"आपको विश्वास नही हो रहा है ?"

"मेरे विश्वास-अविश्वास का प्रश्न नही है। सुकुमार इन दिनों डिसिप्लिन नही मानता था। जो हमारे विरोधी हैं, उन्ही के साथ मेल-जोल बढा रहा था। नतीजा यह हुआ कि निरंजन माइती उसे अपनी ओर खीचने की कोशिश करने लगा।"

"उसने तो मना कर दिया था।"

"निरंजन के लड़के गुडे हैं।"

"वह तो है। गजानन दादा भी तो ···।"

"उसने मना किया था। पर गजानन दा' के लड़कों को गुंडा कहना ठीक नही है।"

"निरंजन माइती को बहुत पहले उसने मना किया था। इतने दिनो बाद···"

"तुम्हारी बातो से तो लगता है तुम भी मुझे ही मुजरिम मान रहे हो।"

"नही तो।"

"कल उसे शहर ले जाना होगा।"

"अगर कल तक बचा रहा तो।"

"हाँ, यह बात तो है। जाते समय रघु हासदा को भेजते जाना।"

"देखता हूँ।"

ननी घर मे घुसता है। एकतल्ला मकान है। चार कमरे इन दिनों खाली पड़े रहते हैं। एक कमरे मे चावल, सरसो, दाल आदि रखा जाता है। दूसरा बच्चों के आने पर उनके सोने के काम आता है। ननी के सोने के कमरे के अलावा जो बडा कमरा है वह बैठक है। जब ननी घर मे रहता है ज्यादातर इसी कमरे का प्रयोग करता है।

सभी लडके-लड़कियाँ आ जाते हैं तो जगह की कमी पड़ जाती है। सबको किल्लत होती है। घर में जैसे चाँदपुर की हाट लग जाती है।

नन्नी की तीन लड़कियाँ है, दो लड़के । लड़कियों की शादी सोलह पहुँचते न पहुँचते कर दी गई थी। बड़ा लड़का शादीशुदा है। छोटे की जिम्मेदारी उसी के सिर है। छोटा लडका बड़े लड़के के ससुर का रंग का कारखाना देखता है। सभी जानते है बड़े लड़के की साली से उसकी शादी होगी।

अचानक सभी के आ पहुँचने से कमरों का सामान इधर-उधर करना पड़ता है। सभी कमरों मे बिस्तर बिछते है। घर ठसाठस भर जाता है। आँगन के उस पार दालान की गोद में और तीन छोटे-छोटे कमरे हैं जिनमें खूब ऊँचाई पर रोशनदान बने है। इन्ही कमरो से चौकियाँ, खाटें, बिस्तरें निकाले जाते हैं, कभी जरूरत पडने पर टाट की खोल मे पुआल भरकर नये गद्दे बना लिए जाते हैं। चावल, दाल, मुदाम, विशाल सब इधर-उधर ठेल दिये जाते हैं।

लड़का-लडकी, दामाद, नाती-पोते सब मिलाकर बाइस लोग है। गीता अनत चतुर्दशी के व्रत का उद्यापन करने आई थी। नन्नी बाबू के राजनीतिक क्रियाकलाप चूल्हे मे चले गये थे। बडी लडकी के बच्चे अँगरेजी स्कूल में पढ़ते हैं। वे जो कुछ देखते हैं सभी को 'स्वीट' बताते हैं।

बहुत व्यस्त रहने के कारण नन्नी परिवार की वृद्धि पर ध्यान नहीं दे सका, उसका नियोजन नही कर सका, फलस्वरूप परिवार बहुत वृहदाकार हो गया। गाय, बैल, धान, सालो, ग्वाला—सब कितना झमेला है। सब बेचकर खतम करो। कलकत्ता में एक बढिया फ्लैट खरीदो। भले आदमी की तरह रहो। नन्नी को सब सलाह देते है।

नन्नी पाँव धोकर कमरे मे जाता है। गीता का मुख गंभीर है। वह पूछती है—"सुकुमार कैसा है?"

"ठीक नही है।"

"उसकी माँ आई थी।"

"किसलिए?"

"उसे शहर ले जाने को कह रही थी।"

"ले जाऊँगा। कल ले जाऊँगा।"

"मन बड़ा खराब हो रहा है।"

"स्वाभाविक है। तुम ज्यादा चिंता मत करो।"

"अभी उस दिन हाट से कीड़े मारने की दवा ले आया था। पता नहीं, अचानक यह क्या···"

"चुप रहो। खाने दो।"

इसी समय विशाल की विशाल मूर्ति आ खड़ी हुई।

"क्या है रे विशाल ?"

"बाबू, आज जरा घर जाना है। भतीजी और दामाद आये हुए हैं। भाई ने बुलाया है।"

"जा, कल भोर में आ जाना।"

विशाल बाहर निकल आया। मन बहुत भरा-भरा-सा है उसका। ऐसे वक्त में थोड़ी शराब की जरूरत है। पेट में देशी का पौवा-अद्धा न हो तो किसी अप्रीतिकर या उत्तेजक घटना का सामना करना उसके वश का नहीं है। इसी समय रघू और चिंतामणि आते दीख पड़े। दोनों भाई हैं। माझीपुरा के ज्यादातर लोग ननी बाबू के परम भक्त हैं। होने दो भक्त। रघू, तुम लोगों को तो बसने की जमीन मिली है, तू ब्लाक ऑफिस में चपरासी भी बना। मैंने, विशाल खाटुआ वल्द सागर खाटुआ ने कुछ भी नहीं पाया। विशाल की छाती में तीखा नश्तर चुभता है। देशी की बोतल गले के नीचे उतारनी ही होगी। रघू और चिंतामणि को अनदेखा करके वह आगे बढ़ गया।

रघू और चिंतामणि बैठक में बैठ गये। यहाँ बिजली कब आयेगी कौन जाने। अभी भी दिया, लालटेन, ढब्बर आदि से ही रोशनी मिलती है। मिट्टी का तेल भी कठिनाई से मिलता है। महुए के बीज का तेल निकालकर उससे दिया-बत्ती जलाते हैं लोग।

ननी हाथ-मुँह धोकर बैठक में आया। फिर बिना किसी भूमिका के बोला—"राजाराम की बहू, सुना है, अनाप-शनाप बक रही है ?"

रघू और चिंतामणि चुपचाप मुँह निहारते हैं।

"सुना नहीं क्या तुम लोगों ने ?"

"सुना है।"

"उसे डांटकर चुप नहीं करा सकते ?"

"डांटा है, उसके बाप ने डांटा है।"

"सोम वगैरह कहां गये ?"

"हम नही जानते।"

"देखो, खोजो उन्हें, कल सुकुमार को हस्पताल ले जाना है। पता नहीं बचेगा या मरेगा। पर हमे पूरी कोशिश करनी है अपनी तरफ से। हमें देखना होगा कि गजानन बेटा और निरंजन माइती इस मामले को लेकर कोई हंगामा न खडा कर सकें। गजानन बाबू अगर हमारे साथ सहयोग करते तो वोट का मार्जिन कही ज्यादा होता। अभी भी वह भीतर घात कर सकते हैं। खाकर आये हो न ?"

"जी, सोने जा रहे थे।"

"ठीक है। जो कहा, याद रखना।"

"जी हां।"

"राजाराम की बहू।"

"उसे हम क्या कह सकते हैं ? वह हमारे सामने नही होती, न हम उसके सामने जाते हैं।"

राजाराम की घटना से खालुआ गांव में बड़ी गड़बड़ी फैली थी। वह गड़बड़ी वैसी की वैसी रही। माझीपुरा के संथालों के बीच भी दलादली बढ़ गई। इन सब बातों के साथ सुकुमार की खोपड़ी पर पड़ने वाली लाठियो का गहरा संबंध है। रघू को याद है सुकुमार ने गहरे अफसोस के साथ कहा था—यह क्या हुआ, एक ही वर्ग के लोगों के बीच दुश्मनी की नीव पड़ गई !

फिर कहा था—साफ करना होगा, यह सब जंजाल साफ करना होगा।

चिंतामणि और रघू की नीद मे, चिंता में, अकेलेपन में राजाराम की अत्यंत सुंदर देह धान के खेत में निष्प्राण पडी दिखाई देती रहती है। राजाराम का घर जलकर राख हो गया था। वर्षा की कृपणता के बावजूद उस जली हुई जमीन पर हरी घास उग आई है। सोम ने कहा था, कभी यह ज़मीन मुझे मिली तो इसी जली हुई ज़मीन पर नई हांडी में भात पकाकर

खाऊँगा।

सोमराई की बातें सपना है। दूर का सपना। चितामणि के दुख की वजह दूसरी है। राजाराम की साली उसे बहुत पसंद थी। उनके समाज मे जान-पहचान-प्यार से शादी को पूरी मान्यता है। मगर कुसुमी उसकी ओर नजर उठाकर भी नही देखती थी। बात करना तो दूर। उसकी बडी बहन की माँग का सिंदूर जिसने धो डाला, उसके साथ व्याह ? नही, कभी नही।

रघू और चितामणि निकल पडते हैं। माना कि राजाराम राजा बाबू की पारटी करता था। सुकुमार तो उनका ही आदमी है। उसकी यह हालत ? इससे तो बात और बिगड़ेगी।

दोनो अपने-अपने घर की ओर बढ़ जाते हैं। माझीपुरा तो एक ही है, मगर उसमे तीन-तीन पारटियाँ बन गई है। निश्चय ही ननी के अनुयायी ज्यादा हैं। इस पर राजाराम कहता था—"होने दो, जो जिसके दल में रहना चाहे रहे। जीवन में यह नही जाना कि कभी मुझे भी जमीन मिलेगी, हाथ में हल की मूठ होगी। उन्हें मिली है। नौकरी भी मिली है। पर हैं तो हमारे ही जात-भाई। जिसका मन हो जिस पारटी में जाय, बस आपस मे जात-भाई में झगडा-झंझट नही होना चाहिए।"

मगर वही हुआ। जात-भाई, बिरादरी के बीच दंगा-हगामा हुआ, मार-पीट हुई। बूढे बुढ़िया ये सब बातें सोचते हैं। जवान नही सोचते। रघू और चितामणि इस समय माझीपुरा के पारटी-नेता हैं। रघू ज्यादा लडाकू है। चितामणि उसका लक्ष्मण जैसा भाई है।

इस बार सिधू-कानू दिवस फीका गया। पचायत ने जिन्हें मदद नही दी, वे सभी लोग सूखे के कारण काम की खोज मे बाहर निकल गये थे। अभी लौटकर नही आये थे।

चितामणि ने कहा, "दो-चार नलकूप बिठाये जाते तो पानी मिलता, खेती हो सकती थी। है कि नही ?"

"होगा। सब होगा।"

"कब ?"

"तू चुप भी रहेगा।"

"लोगों की हालत देखकर मन दुखी होता है।"

"कुसुमी तुझसे ब्याह नही करेगी ?"

"नही।"

"तो क्या और लडकियाँ नही है ?"

"हैं। मगर उसकी तरह नही।"

"तू क्या ऐसे ही रहेगा ?"

"रतन का मन हो तो उसका ब्याह कर दो।"

"छोटे भाई का ब्याह पहले होगा ?"

"तो क्या हुआ !"

थोडी चुप्पी। फिर चलते-चलते रघू कहता है, "सूखे के कारण सब अपने-अपने पेट काटकर बेच रहे हैं। बापू कहते थे—गाछ-पाला वर्षा को बुलाते हैं।"

"सब भूखों मरेंगे।"

"पहले बरखा नही होती थी तो जलदेवता को बुलाते थे।"

"नही, रूपलाल सिंह कहता है मैं जलदेवता की पूजा नही कराऊँगा। मेरे पास जमीन नही है। फिर मुझे बरखा की क्या जरूरत ?"

"तू गया था उसके पास ?"

"हाँ, ऐसे ही…"

"वह सब मानने से कुछ नही होगा।"

"वह तो मैं भी जानता हूँ।"

चिंतामणि सोचता है—बूढ़े रूपसिंह के पूजा करते ही, जल के देवता को पुकारते ही पृथ्वी पर मूसलाधार वर्षा उतरेगी—ऐसा कभी नहीं होगा। मंत्र-तंत्र, टोना-टोटका जो करेगी सब सरकार। मगर सरकार करती कहाँ है ? पानी मिलता तो खेती होती। आदमी इधर-उधर क्यों भागता ? कही ईंट के भट्ठे पर काम करके कुसुमी हड्डियो का ढाँचा होकर लौटी है। पानी एकदम नही है, यह भी सही नही है। काली और रूपाई दो-दो नदियाँ पास में हों तो कैसे कहा जाय—पानी नही है।

इन बातों के बारे में सोचता है तो उसे लगता है वह कोई विश्वास-घात कर रहा है। और उसे यह भी लगता है कि उसका भाई माझीपुरा

का कोई पक्का नेता नहीं है। राजाराम होता तो सबके साथ मिल-बैठकर कोई उपाय सोचता। सभी को लेकर ब्लाक के दफ्तर जाता या जिला-परिषद जाता।

राजाराम जैसा आदमी होना मुश्किल है।

वे अपने घर जाते हैं। उधर विशाल अपने घर का रास्ता छोड़कर दूसरा रास्ता पकड़ता है। वह रास्ता गजानन बेरा के घर की तरफ जाता है।

दो

गजानन बेरा अविवाहित और वयस्क व्यक्ति हैं। खादी के आन्दोलन में भाग लिया था, शराब की दुकान पर धरना दिया था। जात-पांत विरोधी आन्दोलन किया था और सन् बयालीस के आन्दोलन के पहले ही खेत-मजूर आन्दोलन में शामिल होकर जेल हो आये थे। बयालीस के आन्दोलन के दौरान वे जेल में ही थे। सन् पचास के बाद रिहाई मिली। तभी से वह कम्युनिस्ट हैं। ननी उनका बहुत भक्त और प्रिय था। ननी के बाप अघोर बाबू कांग्रेसी थे, पर ननी धीरे-धीरे गजानन बाबू के प्रभाव में आकर कम्युनिस्ट हो गया था।

उनकी समझ में यह नहीं आया था कि ननी और भी बदलेगा, और भी। पारटी बँट गई थी बँटने दो। दोनों अलग-अलग पारटियों में जाकर भी इलाके की उन्नति के लिए एकसाथ नहीं चल सकते, ऐसा भी नहीं। इस बार वे वाम फ्रण्ट के साथ हैं। पिछली बार नहीं थे। पिछली बार चुनाव-समझौता हुआ होता तो सुकुमार भी उनके साथ होता।

सुकुमार जाना।

राजाराम वगैरह तो उन्हीं के समर्थक थे। राजाराम हेमब्रम। फिर भी राजाराम की जमीन के बारे में, उसके खून के बारे में सुकुमार की

भूमिका भिन्न थी। यह बात भी वह कैसे भूल सकते हैं कि राजाराम के मारे जाने के बाद वे थाने की तरफ दौड़े थे तो रास्ते में खुले-आम उन पर हमला हुआ था। उस समय सुकुमार ने ही उनके सामने खड़ा होकर उन्हें बचाया था।

उस समय उनकी और मनी की पारटी के बीच चुनाव-समझौता नहीं हुआ था। ग्रामांचल में राजनीति की व्याख्या व्यक्तिगत विद्वेष का आधार लेकर खडी होती है। उस समय राजाराम के मामले में उन्होंने क्या-कुछ किया था ? कितनी कोशिश की थी ?

गजानन जानते हैं कि अपनी पूरी ताकत लगाकर वे नहीं लड़े थे। अगर लड़े होते तो बाद में उनकी स्थिति थोडी बेहतर होती।

सुकुमार। यह सोचना भी कितना भयंकर है कि सुकुमार को देबू और राजन ने मारा है! अगर वह मर जाय तो दूसरों के साथ सोमराइ को भी पकडा जायेगा और सोमराइ भी जेल की हवा खायेगा।

जेल तो सोमराइ की किस्मत में लिखी हुई है। कोई केस नहीं बनेगा, कोई मुकदमा नहीं चलेगा। सोमराइ बिना किसी अदालती कार्रवाई के जेल में सड़ता रहेगा। समाचार पढा था एक कि कई आदिवासी, जो काफी दिनों से बिना किसी अदालती कार्रवाई के जेल में सड़ रहे थे, एक शिक्षित आदिवासी की कोशिश से रिहा किये गये है।

उसी तरह सोमराइ जेल में सड़ता रहेगा।

सोमराइ राजाराम की तरह नहीं है। धीमे बात करता है। नम्र, नरम और उसकी दोनों आँखों में चिड़ियों की आँखों जैसी असहायता भरी होती है। राजाराम का हिसाब सीधा था। जिसे जो पारटी करनी हो करे। किन्तु जीने-मरने, व्रत-त्यौहार में सभी एक साथ होंगे। देखो, देश के विभाजन के बाद जो लोग आये उन्हें हम शरणार्थी कहते हैं। क्यों कहते है ? इसीलिए न कि अपना घर-बार छोड़कर वे शरण पाने आये हैं। पर हम लोग यानी माझी, भूमिज और आदिवासी जाति के लोग कितनी बार उजड़े इसे कौन बताये ? जहाँ जाते हैं उसी को अपनी जमीन, अपना घर-बार मानते हैं।

इस तरह अपना घर-बार छोड़कर एक जगह से दूसरी जगह जाते,

उजडते-बसते हमारा अपना तो कुछ रहा नही। बस रह गये हैं व्रत-त्यौहार——जब हम सब इकट्ठा होते हैं।

वह हिसाब तो चल नही पाया। इस समय की राजनीति में सिर्फ एक पारटी का दूसरी के साथ झगडा-झझट ही नही है। पहले संथाल-संथाल, भूमिज-भूमिज, गरीब-गरीब के बीच मतभेद पैदा करके सभी को असहिष्णु और हिंसक नही बना पाई थी राजनीति। पर अब जो जहाँ भी व्यवस्था में है, जिसे भी अधिकार मिला है वही प्रभुता से पागल होकर गरीबों को उकसाकर गरीब के खिलाफ लडवा रहा है। जिसकी जान नहीं ले पा रहा है उसे सरकारी मदद, पंचायत के कामों से अलग रखकर उसकी रोटी मार रहा है। गरीबों का यह आपसी संघर्ष और मार-काट एक नये किस्म का वर्गसंघर्ष है। यही पाप मेरा है—गजानन का, यही ननी का है, यही निरंजन और दूसरे लोगों का भी पाप है।

एक दिन उन्हें जवाबदेही करनी होगी। तब शायद गजानन बेरा जीवित नही होंगे। उमर हो रही है। पर जैसे एक भयानक भँवर में फँसे हुए गजानन सोचते हैं——उन्हें यह राजनीति नहीं करनी है। उनका भी एक सपना था। स्वप्न ही वह शक्ति है जो आदमी को अपनी जवानी, अपनी क्षमता और सब कुछ होम करने को मजबूर कर सकती है। गजानन की माँ कहती थी कि आशा के इशारे पर तो भूत भी खटते हैं। गाँव में आकर हमेशा के लिए बसे यही कोई पन्द्रह बरस हुए होंगे उन्हें। नहीं, ब्याह नही किया है। उनके भाई अपनी सम्पत्ति बेचकर चले भी गये। गजानन बेरा एक छोटी दुकान चलाते हैं। उसी कमरे के एक कोने में सोते हैं। खाना बेहतरीन पकाते हैं। अपने हाथ का पकाया खाते हैं। रात की रोटियाँ भी सुबह ही बना लेते हैं। गुड़ के साथ खा लेते हैं।

सुकुमार की बात बार-बार मन पर ठोकर मार रही है। शायद इस मामले में उनसे भी पूछताछ हो। ननी जान-बूझकर देबू और राजन के हाथों सुकुमार को पिटवायेगा, यह बात हो ही नहीं सकती। मगर क्या ननी इस बारे में कुछ भी नही जानता था? अगर मरने के पहले सुकुमार सारी बातें कह जाता?

यही बातें सोचते-सोचते गजानन अपनी मसहरी गिरा रहे थे। विलास

की यही एक सामग्री है उनके पास। हाट से बाइस रुपये में खरीदी थी यह नाइलोन की मसहरी। कोई कीमती नाइलोन नही है। एकदम मामूली और पतले सूत का बना है। फिर भी यही उनके लिए हज़ार नियामत है। मसहरी गिरा लेने पर मन मे जैसे खुशी की एक फुरफुरी-सी उठती है। और क्या सफेदी है! वाह! भीतर से सब-कुछ साफ-साफ दीखता है।

क्या कभी सोचा था कि मसहरी के अन्दर सोये-सोये छत पर रेंगते सांप को देखना सम्भव है या मसहरी के अन्दर से हवा को पूरा-पूरा देह पर से गुजरते महसूस करना ही क्या सम्भव लगता था? मसहरी की खरीदारी के समय ननी से भेंट हो गई थी—मोल-भाव बल्कि उसी ने किया था।

सोचने से दु:ख होता है। ननी दलुई ने ही तो उनके लिए स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की व्यवस्था की थी। हार्निया का उन्होने जब आपरेशन करवाया था, तब भी खूब खोज-खबर लेता था। सोचकर बडा दु:ख होता है कि वह और ननी अभी भी मन-ही-मन कोई विरोध पाल रहे है।

इसी तरह की अनाप-शनाप चिन्ताओं से घिरे गजानन बत्ती बुझाकर सोने का उपक्रम कर रहे थे कि दरवाज़े पर किसी की हलकी थपथपाहट सुनाई दी।

"कौन?"

गजानन ने अपना सोटा हाथ मे उठा लिया। उनकी दुकान में वैसी कीमती कोई चीज़ नही है—यही मामूली बिस्कुट, लार्जेंज, कलम, कापी, सुई, धागा, चाय-पत्ती, कंघी जैसी चीज़ें ही हैं। पर आजकल आदमी का कोई भरोसा नही। वह कब, क्या करेगा, कहना मुश्किल है। अभाव और अनाहार से आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। गजानन ने सतर्क होकर दरवाज़े की ओर देखा। दरवाज़े के ऊपर दीवार मे उनकी भतीजी की हाथ से बनाई एक कढाई है, जिसमे फूलो से लिखा है—'आराम हराम है'।

पांवो की धमक उनके कानो में पड़ी। लगा दुकान और कमरा घूम रहे हैं। तभी एक डरी हुई आवाज़ कानों में पड़ी—"बाबू, बाबू, मैं हूँ—

विशाल। विशाल खटुआ।"

"क्या काम है ?"

"दरवाज़ा खोलिए ना ! कहीं कोई सुन लेगा, या देख लेगा तो बड़ी मुश्किल होगी।"

"अच्छा ! खोलता हूँ।"

गजानन ने दरवाज़ा खोला। विशाल मौका पाकर उनके पास आता है। हालचाल पूछता है। अघोर बाबू ने जब उन्हें बेदखल किया था तो गजानन शक्ति-भर लड़े थे, वह सब बहुत पुरानी बात है। लगता है. त्रेता या द्वापर की कथा है। उन दिनों इसी खालुआ गाँव में किसी के घर डाका पड़ता तो सारा गाँव एक आवाज़ मे उलट पड़ता था। तब पेड़-पौधे भी थे गाँव में। अँधेरा घिरते ही सियारों का हुआँ-हुआँ सुन पड़ता था।

अब सब कुछ बदल गया है। अब खालुआ के आसपास सियार नहीं हुँआते। भारत से सब कुछ निर्यात होता है। खालुआ के सियारों को ज़हरीले गोश्त का लालच दिखाकर मार लेते हैं सियार मारने वाले। उनका मांस खा-पका लेते हैं और खाल विदेश चली जाती है। कितने ही और जानवर जैसे जंगली बिल्ली, साँप, ऊदबिलाव वगैरह इसी तरह मारे जाते हैं। आदमी की पेट की आग मे खाद्य-अखाद्य सब भस्म हो रहा है।

दरवाज़ा खुलते ही विशाल अन्दर आ जाता है। देशी शराब उसके पेट में नहीं है। इसीलिए उसकी आँखों मे कातरता भरी हुई है।

"बाबू !"

"क्या है रे ?"

"बाबू, सुकुमार को शहर ले जाते तो उसकी जान बच जाती।"

विशाल अपने दु.ख और क्षोभ को गजानन बाबू के सामने व्यक्त कर रहा है। बीच-बीच मे आँखें पोंछता जाता है और गर्दन टेढ़ी करके उनकी ओर देखता जाता है।

गजानन उसकी बातें सुनते-सुनते सोच रहे हैं। भौंहों पर बल पड़ा हुआ है।

"बाबू !"

"अच्छा ! ···हाँ···तू जा अब। पता नहीं कोई कान लगाकर सुन न रहा हो।"

"अच्छा बाबू, चलता हूँ।"

विशाल गजानन के घुटने छूकर हाथ माथे पर ले जाता है और अपनी दीर्घ काया लेकर चला जाता है।

गजानन गहरी साँस लेते हैं। लुंगी खोलकर धोती पहनते हैं, शरीर पर कुर्ता डालते हैं। पैसों के नाम पर तो कुछ खास न था। तेरह-चौदह रुपये होंगे—कुल।

विशाल अच्छी मुसीबत में डाल गया उन्हें। मामला इतना आसान नहीं है। कई दिन पहले बनमाली दास को भी हस्पताल ले जाना पड़ा था। बुखार था, पेट फूल गया था और दूसरी कई तकलीफें थीं। यह ताल पार करके बड़े रास्ते तक पहुँचना ही तो सारी मुसीबत है।

बड़े रास्ते तक पहुँच जाने पर तो लारी पकड़ी जा सकती है। मिलती हैं लारियाँ। पानघाट में मालाकार बाबू की टेंपो भी मिलती है।

गजानन बाबू समझ रहे हैं कि उनका मन चंचल हो उठा है। सुकुमार की जान बचाई जा सकती है, यह एक महत्त्वपूर्ण बात है। बहुत महत्व-पूर्ण। संभव हो तो विपन्न की प्राणरक्षा बहुत जरूरी है। उनके चमकते खल्वाट माथे में युद्ध के दाँव-पेंच चल रहे हैं। ननी इस बार भी जीत गया, पर बहुत कम मार्जिन से। पारटी क्या चाहती है गजानन को नहीं मालूम। फिर भी खालुआ के अंचल संख्या चार में ननी हारे और निरंजन के पाँवों के नीचे की जमीन मजबूत हो, यह वह नहीं चाहते। ननी कहीं पर निरंजन से डरता है। नहीं तो निरंजन गैरकानूनी ढग से जमीन पर कब्जा नहीं जमाये रख सकता था। "मेरी ताकत नहीं है। मैं सरकारी रेट पर मजूरी नहीं दे सकता। जो करना चाहो, करो।" कहकर निरापद नहीं रह सकता था।

जो भी हो ननी के दल में सुकुमार के अनेक अनुयायी हैं। गाँव में भी उसका अच्छा प्रभाव है। सुकुमार को बचाने के काम में हाथ डालकर अच्छा ही होगा, एक मूल्यवान व्यक्ति की जान बचेगी और ननी अच्छी तरह बेवकूफ बनाया जा सकेगा। सुकुमार जिंदा रहे तो उसके ही मुँह से

सारी बातें जानी जा सकती हैं। कैसे, क्या हुआ था—यह ज्ञान एक हथियार हो सकता है, जिसका बाद मे उपयोग किया जा सकेगा।

और मोटी बात तो यह है कि उनकी अपनी स्थिति भी अच्छी हो जायेगी। अभी लोग उन्हें मौखिक सम्मान देते है। "हाँ हाँ, उन्हें देख लो। वह गजानन बेटा है। ज़िला पुलिस के रजिस्टर मे उनका नाम कई बार दर्ज हुआ है। बाप रे! पता नही कितने दिनों से आंदोलन कर रहे हैं। कितनी ही बार जेल जा चुके है"—वगैरह, वगैरह।

मगर ये बातें भी वही कहते हैं, जो जानते हैं। आजकल के लड़के क्या जानते है? पानघाट मे एक बार लड़कियों से छेड़छाड़ करने पर उन्होने कुछ छोकरो को फटकारा। इसके लिए उन्हें सुनना पड़ा था, "लगता है दादू की अपनी ही धोती ढीली हो रही है।"

अजित मालाकार ने ये बातें सुनी तो दौड़ा आया था। छोकरों को माफी माँगकर जान छुड़ानी पड़ी थी। अजित मालाकार पानघाट का बेताज बादशाह है। एक बस—कई-एक लारियाँ और टेंपो—क्या नहीं है उसके पास। तारा पर पुल बने इसके लिए अजित बहुत आग्रही है। ऐसा हो जाय तो बड़े रास्ते के मोड़ पर वह सिनेमा हाल खोल देगा।

अजित का प्रभाव यों ही नहीं है। विश्वकर्मा पूजा मे जो लोगों को सिनेमा दिखाता है, घर मे शीतला पूजा के अवसर यात्रा (एक लोक-नाट्य) कराता है, यात्रा के उत्सव में सबसे ज्यादा चंदा देता है, जो इस इलाके मे सिनेमाघर बनवायेगा—ऐसे आदमी का प्रभाव ग्रामीण अंचलो मे असाधारण होता है। अजित की राजनीति भी सभी की समझ में आती है। जिसके हाथ मे क्षमता होती है, जो पदासीन होता है उसकी वह ज्यादा खातिर करता है, पर इसका यह अर्थ नही कि जो क्षमताविहीन या पदहीन है उसकी उपेक्षा करता हो। सभी को कुछ न कुछ देकर वह खुश रखता है। कहता है—आयाराम-गयाराम के इस ज़माने में कुछ कहना मुश्किल है। और हमारी जनता भी तो एक नंबर की खामखयाली और 'मूडी' है। निरंजन माइती बाहर हो जायेगा और ननी दलुई उसकी जगह ले लेगा—यह बात सात-आठ साल पहले सोची भी नही जा सकती थी।

अजित देव—ब्राह्मण, अँगरेजी शिक्षित व्यक्ति और मति कौरानी का परम भक्त है। उसकी मान्यता है कि मति कौरानी ने मारन-उच्चाटन, वशीकरण में सिद्धि पा ली है। गजानन के प्रति उसकी भक्ति का कारण यह है कि उस इलाके में अँगरेजीदाँ के रूप मे उनकी ख्याति है।

उस दिन गजानन की इज्जत अजित ने बचाई थी। मगर अब सब कुछ गडबड हो रहा है। पाँवों के नीचे जमीन जैसे धँसती जा रही है। एक बार वर्षा मे उत्ताल तरंगें भरती सुवर्णरेखा में नहाने उतरे थे गजानन। जानी-पहचानी नदी, जाना-पहचाना उसका पानी। मगर पाँव पानी में डालते ही पैरों के नीचे का बालू धँसता गया, धँसता गया। डूबे जा रहे थे, डूब ही गये थे गजानन। उत्ताल लहरें जीभ लपलपाकर एक मिनट मे उन्हें चाट लेती।

राजाराम ने हाथ पकडकर बाहर खीच लिया था।

समय बड़ा निष्ठुर आ गया है। उन्होने खेत-मजूर आंदोलन में भाग लिया था, तेभागा आंदोलन में शरीक हुए थे, जेल की यातनाएँ भोगी थी, इसीलिए आज उन्हें कोई क्षमा नही करेगा। लोग चाहते हैं तुम निरंतर सही बने रहो, तुम्हारे सिद्धात और कर्म में लगातार एकता हो। आदमी को शतरंज की मोहरो की तरह इधर-उधर मत खिसकाओ—यह बड़ा कठिन खेल है।

और जो लोग ऐसा चाहते हैं, वे कौन हैं? क्या उनका कोई निश्चित रूपाकार है या वे केवल कल्पना हैं? सुकुमार तो कल्पना नही है, सोमराइ की आश्चर्य से फटी आँखें तो कल्पना नहीं है। "बाबू, काश्तकार के खेत मे गोड़नी करने जा रहा हूँ। मेरी जमीन पर ध्यान देना, बाबू। अगर वापस मिल जाती तो उस जली हुई जमीन पर एक बार भात पकाकर खा लेता।"

वह बात याद आने पर कलेजे में कही बहुत गहरे एक शूल-सी उभरती है। आज राजाराम जिंदा होता तो सुकुमार को ले जाने की चिंता थोड़ी ही करनी होती उन्हें।

सोचते-सोचते ही वह घर से निकल पड़ते हैं। एक हाथ में टार्च और दूसरे मे सोटा। केवल अभ्यास। हाथ मे लाठी होने पर भी आक्रमणकारी...

ग्राम बांग्ला

से रक्षा नहीं है। वैसे सुकुमार तो खाली हाथ था। वह तो सोच भी नहीं सकता था कि खासुआ ग्राम में उसकी खोपड़ी पर लाठी पड़ सकती है।

सुकुमार के घर के पास आकर सुना उसका बाप ऊँची आवाज में कलप रहा है। दरवाज़ा खुला ही था। शायद कोई बाहर निकला था।

"कोई है ? भैया कहाँ हैं ?"

"कौन ? देवर जी ? आओ।"

सुकुमार की माँ बोल उठती है। सुकुमार का बाप उमर में गजानन से बहुत छोटा है। पर गजानन के बड़े भाई का नाम था—पंचानन। यही उसका भी नाम है। इसलिए बचपन से ही वह गजानन का भैया हो गया था। उसकी पत्नी गजानन को देवर कहती थी। गजानन भी उसे भाभी कहकर पुकारते हैं।

"आओ, देवरजी, आओ।"

आँगन मे अलगनी पर अभी भी एक सूखा कपड़ा लटका हुआ था। इसी से लगता था कि सुकुमार के घरवाले इस विपत्ति में एकदम दिशाहीन हो रहे थे।

सुकुमार की माँ बडी सुघड़ गृहिणी है। बेचारी सारा जीवन गृहस्थी की छोटी चादर में अपने परिवार को ढँकने की कोशिश करती रही है। अपने चार बच्चो और एक ननद की बेटी को पालना—एक कठिन संग्राम-सा रहा है। इसके लिए जो भी समझ में आया किया। बतख पाले, अंडे बेचती रही, क्या नहीं किया। खजूर के पत्तों की चटाई बुनकर घर में बिछाती, कुछ बेचती।

किसी समय वह महिला समिति की सक्रिय सदस्या थी। गजानन मीटिंग करते, तो जो भी बन पडता जी-जान से जुट जाती।

मगर आज जैसे एकदम विभ्रमित हो उठी है, समझ में नहीं आता क्या करे ?

"भाभी, यह सूखा कपडा तो उठा लो। कुछ खाया-वाया या नहीं ?" गजानन ने पूछा ?

"नहीं देवर जी, न पकाया, न खाया।"

"बहुत खूब ! सब लोग उपवास करेंगे तो सुकुमार जल्दी अच्छा हो जायेगा क्या ?"

"मन नहीं करता कुछ खाने को।"

"दिलीप आया है ?"

"हाँ।"

दिलीप सुकुमार का भाई है। खड्गपुर में दर्जी की दुकान है उसकी। किसी के तीन-पांच में नहीं रहता। जो हो सकता है परिवार की मदद करता है, नहीं हो पाता तो नहीं करता। बेटे किसी लायक नहीं हो पाये यह बात लेकर पंचानन पत्नी के सामने हमेशा कलपता रहता है। दिलीप की पढ़ाई आठवीं जमात तक है, सुकुमार ने हाई स्कूल पास कर लिया है, पर पंचानन की बातें सुनो तो ऐसा लगता है जैसे उसने अपने बेटो को उच्च शिक्षा दिलाई थी और इतनी योग्यता होते हुए भी उन्होंने अपने जीवन के साथ खिलवाड़ किया। कुछ बन न सके।

तभी दिलीप कमरे से बाहर आया। भाई के लिए उसके मन में बहुत उद्वेग है। वर्ना शहर में आज ऐसे गानेवाले आए हुए थे, जो मोहम्मद रफी, किशोरकुमार, लता मंगेशकर और रूना लैला जैसे अंदाज मे गाना गाते हैं—और उसके पास टिकिट भी था। टिकिट को फेंककर दिलीप भाई की खबर सुनकर गाँव चला आया था।

गजानन ने कहा—"दरवाजा बंद कर लो। तुमसे बातें करनी है।"

गजानन बाबू की बातें सुनने के बाद दिलीप ने कहा कि वह क्लब के नित्य, सुंदर और बल्लू को बुला लेगा मदद के लिए।

"वे लोग आयेंगे ?"

"वे तो अभी यही थे। अभी-अभी गये हैं। मगर थोड़ी सावधानी की जरूरत तो है।"

"क्यों ? सावधानी किसलिए ?"

पंचानन गरम हो जाता है। कौन किस दल का है, कौन क्या राजनीति कर रहा है, यह सब इस समय उसके भेजे मे नहीं घुम रहा है। वह अपनी तरह जीता है। नौकरी, वापिस लौटकर गाय-बैलो के लिए चारा काटना और घर से सटी तीन कट्ठा जमीन मे सब्जी उगाना—बस

यही उसका नित्यकर्म है। सुकुमार के बारे में उसकी राय से सभी अवगत हैं—"सभी ने दल तोड़कर अपना काम बनाया, पर तू कुछ नहीं कर पाया।"

सुकुमार ने प्राइमरी स्कूल की मास्टरी नहीं ली, इसके नैतिक कारण को पंचानन कभी नहीं समझ पाया। वस्तुतः जिन-जिन कारणों से सभी लोग सुकुमार की समझ-बूझ का लाभ उठाकर चलते हैं, कोई भी काम हो उसकी राय लेते हैं—उन-उन कारणों के प्रति पचानन जाना के मन में कोई गर्व का भाव था—इसका पता किसी को न था।

अब अचानक पचानन बोल पड़ा—"सावधानी क्यों? किस चीज का डर है? जिन्होंने उसे पीटा है, डरना उन्हें चाहिए। वह तो हमेशा दूसरों के लिए ही लड़ता रहा।"

"तुम चुप रहो जी।" सुकुमार की माँ ने कहा।

"अच्छा भाई, तुम्ही बताओ, तुम क्यों आये। तुम तो उसकी पार्टी में नहीं हो?"

बोलते-बोलते पचानन की आवाज बुझ जाती है।,उसकी पत्नी उसका हाथ पकड़कर उसे चुप रहने का संकेत कर रही है।

"मेरा दिमाग ठीक नहीं है। सारा दिन हस्पताल में खड़े-खड़े···।" वह हाथ छुड़ाकर चुप हो जाता है।

"उन्हें बुलाऊँ?" दिलीप पूछता है।

"हाँ, बुलाओ। और हो सके तो माझीपुरा से···नहीं, रहने दो। नित्य को कहो पानघाट चला जाय और किसी लारी या टेम्पो का इंतजाम करे। अजित को मेरा नाम लेकर कहना। इन लोगों पर विश्वास किया जा सकता है न?"

"हाँ, हाँ, उन्होंने ही भैया को शहर के हस्पताल में ले जाने की बात उठाई थी। उनको भैया ही क्लब में लाये हैं।"

"ठीक है। तो फिर यही करो।"

वे सामान्य लड़के हैं, शांतिप्रिय! थोड़ा फुटबाल, थोड़ा नाटक, जब जो पार्टी शासन में होती उसकी हाँ में हाँ मिलाते और खुद शांति से रहते। सुकुमार उनको राजनीति का पहला पाठ पढ़ाता था। सुंदर बेकार

है। नित्य पानघाट में आपरेटर। बल्लू पून्या के प्राइमरी स्कूल में क्लर्क की नौकरी करता है। बाप के मरने के बाद उसकी जगह लग गया है। गाँव के उत्सवों में वह रवींद्र संगीत भी गाता है। हालांकि 'पाया है अवकाश, विदा दो भाई' जैसा गीत हर कहीं गाने का नहीं है, पर उसे यह बात अभी किसी ने बताई ही नहीं। नित्य और सुंदर का मानना है कि अगर उन्हें रेडियो पर चांस मिले तो वह नाम कमा लेंगे।

उनके आते ही गजानन उन्हें लेकर निकल पड़ते है। लग रहा है कोई षड्यंत्र कर रहे हैं। डाक्टर नाराज तो नहीं होगा। नहीं, पंचानन है साथ में, और दिलीप भी है। रोगी के बाप और भाई रोगी को अपनी ज़िम्मेवारी पर ले जा रहे हैं। और फिर डाक्टर तो शुरू में कह रहा है कि यह केस उस डाक्टर और उस हस्पताल की ताकत के बाहर है।

गजानन को पुराने दिनों जैसा लग रहा है। हाँ, यह एक काम जैसा काम है अलबत्ता। ऐसा काम, जिसमें साहस, हाज़िरजवाबी और तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता आवश्यक है। ऐसा कोई काम कितने दिन हो गये उन्हें किये। कोई ज़रूरत नहीं पड़ी।

सभी आकाश की ओर देखते हैं। वर्षा के आसार नहीं हैं। बादल ज़रूर हैं, पर पानी वाले नहीं लगते। इस साल भी अगर वर्षा नहीं हुई तो फसलें तो गईं भाड़ में। वर्ष पर वर्ष अगर इसी तरह सूखा पड़ता रहा तो राज्य सरकार परिस्थिति का मुकाबला कैसे करेगी?

पंचानन कहता है, "अगर पहले से ज़ोर देकर पोखरों की खुदाई होती···।"

"कोशिश तो की गई थी।"

"ननी बाबू ने क्यों नहीं माना?"

"उनके पास भी तर्क था।"

"इतना बड़ा गाँव। सात-आठ सौ घर। माझीपुरा, भूमिज पुरा, माहातपुरा, एक-एक करके सभी घर खाली हो जायेंगे।"

"गये थे न?"

"हाँ, इधर-उधर काम की तलाश में गये थे सब। खेती होगी, अपने गाँव-घर में मजूरी मिलेगी इस आशा से वापिस आये थे।" सुंदर कहता है।

"फिर सब चले जायेंगे। लेबर-सप्लाई में इन दिनों खूब कमाई है। निरंजन का भांजा तो इसी में मालामाल हो गया।" नित्य की राय थी।

दलबल के साथ गजानन बाबू को प्रवेश करते देखकर डाक्टर सतर्क हो जाता है। ननी बाबू आये थे, फिर निरंजन बाबू आये। अब गजानन बेरा की बारी है। निरंजन ने कहा था—"पून्या से लौट रहा था। सुना हाट से लौटते वक्त कल कुछ लोगों ने सुकुमार पर हमला किया था। सोचा, देखता चलूं उसकी तबीयत कैसी है।"

"कैसा है ?"

"वैसा ही।"

"जी जायेगा ?"

"यहां जो हो सकता है, कर रहा हूं।"

"यह तो हस्पताल नहीं है, यह तो एक···"

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता। मुंह खोलने में खतरा है। पता नहीं कौन किस बात का मुंह किधर फेर दे ? वह जानता है कि उस हस्पताल में किसी गभीर बीमारी की परिचर्या करना कितना असंभव है। एक्स-रे करना संभव नहीं। पेशाब-पाखाना और खून की परीक्षा हो नहीं सकती। चार से ज्यादा बेड नहीं। क्वार्टर नहीं है, इसलिए कोई नर्स नहीं है। दवाइयाँ नहीं हैं, कभी-कभी तो रुई और बैंडेज भी नहीं होता।

ये बातें सभी को मालूम हैं।

डाक्टर क्या कहे ? उसे हमेशा लगता है कि कोई षड्यंत्र चल रहा है। यहाँ जैसे सभी सभी के विरुद्ध हैं। निरंजन बाबू डाक्टर को पसंद नहीं करते। डाक्टर कुंआरा है। उसके यहां आने के कुछ ही दिनों के भीतर निरंजन ने उसका ब्याह पक्का कर दिया था। कहा था—"नौकरी छोड़ दो।"

"क्यों ?"

"ब्याह करिये और यहीं जम जाइये। पानघाट में आपका चेंबर खुलवा दूंगा। शहर में दवाइयों की दुकान। चाहें तो शहर में ही रहिएगा। एक्स-रे मशीन भी लग जायेगी।"

इस तरह कई लाख रुपयों का चारा दिया गया था डाक्टर को। लड़की

निरंजन के भांजे की बेटी थी। धनी व्यवसायी बाप की एकमात्र संतान। शरीर-भर में चरक के सफेद दाग थे, इतनी ही कमी थी। पहले मरहम, फिर जडी-बूटी, फिर गंडा-तावीज, आखीर में डाक्टर। जब रोग लडकी के पूरे शरीर पर कब्ज़ा जमा चुका, आँख के पपोटे तक सफेद हो गये तब आयी डाक्टर की बारी। तभी से उसकी शादी की कोशिशें भी शुरू हुईं।

डाक्टर इस शादी के लिए राज़ी न हुआ था।

सुकुमार की खबर जानने के बाद निरंजन बाबू ने कहा था—"मेरी भांजी के साथ शादी नही की आपने। गाँव में डाक्टरी करने के लिए मन में ग्राम-सेवा का भाव होना ज़रूरी है। गांव की लडकी से ब्याह करना भी एक प्रकार की ग्राम-सेवा है।"

इसी तरह की बातें करके और डाक्टर को विचलित करके निरजन अपनी साइकिल पर सवार होकर चले गये थे। डाक्टर डर गया। निरजन माइती ऐसा आदमी है कि अगर किसी तालाब का मालिक गाँव से बाहर गया हो तो उसमें चारा डालकर मछली की खेती कर लेता है। जिसकी मछली के चारे सभी के तालाबों में हों, उसे नाराज़ करना बुद्धिमानी नही है। खालुआ के मानचित्र मे निरंजन एक अमोघ चरित्र है।

निरजन की भाजी से विवाह तो नही किया डाक्टर ने, परन्तु जो भी डाक्टर अरूपचंद्र शासमल के नाम लिखी निरंजन माइती की चिट्ठी लेकर आता, उसकी भरसक पूरी चिकित्सा करता वह। इस आशा में रहता है कि ब्याह के प्रस्ताव को ठुकराने की बात निरजन भूल जायेगा।

निरंजन कभी कोई चीज़ भूलता नही, यह बात आज फिर प्रमाणित हो गई। ग्राम-सेवा शब्द की यह नई व्याख्या डाक्टर को अशांत कर गई। वह जैसे बेहद थका हुआ महसूस करने लगा। सुकुमार के पास बैठे हुए उसे देख-देखकर डाक्टर की वह थकान और भी बढ़ती जा रही है। उसके लिए सुकुमार कोई राजनीतिक छोकरा नहीं है। वह एक भारी 'ब्रेन-कनक्शन' का केस है? इस समय उसके लिए जो कुछ करना चाहिए उसका कोई सरजाम नहीं है डाक्टर के पास। डाक्टर बेहद थका हुआ महसूस कर रहा है।

अचानक किसी को साँप काट खाता है। सोच-सोचकर और भी उदास

और हारा हुआ लगता है—पहले ओझा-गुनी, फिर हस्पताल। हस्पताल भी ऐसा, जहाँ डाक्टर तो है पर सर्पदंश का इंजेक्शन हो सकता है, नहीं भी हो सकता है। क्या करे वह ?

प्रसव के केस आते हैं। गाँव से दाई को बुलाना होता है। नर्स तो है नहीं। पहले साल नर्स की नौकरी बहाल होती है। दूसरे साल उसके क्वार्टर की मंजूरी आती है। तीसरे साल क्वार्टर बनना शुरू होता है। गाँव मे किराये पर कमरा उठाने की चलन नहीं है कि नर्स आकर उसमें रह सके। इसलिए नर्स नही है।

क्या करना चाहिए यह जानते हुए भी जब जरूरी चीजों के अभाव मे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना पड़ता है तो बहुत बुरा लगता है। तिस पर *ननी दलुई और निरंजन माइती की डाक्टर अरूपचंद्र शासमल की सेवा* मे लिखी चिट्ठियाँ आती रहती हैं, राजनीतिक विवेक की प्रखरता से परिचालित युवको के चंदे की रसीदें आती है, मौजमस्ती के लिए आवारा युवकों द्वारा किये जाने वाले 'फंक्शनों' और 'फीस्टों' के चदे की रसीदें होती हैं, और शहीदो की तरह चेहरों वाले धर्मबोध से प्रेरित बूढ़ों की हरिभक्ति प्रदायिनी सभा का चदा होता है—और इन सबके ऊपर है सर्वग्रासी निर्यात—जैसे घर के अदर बाघ।

डाक्टर का भोजन कंपाउण्डर साहेब के घर से बनकर आता है। कंपाउण्डर साहेब रात का खाना खुद डाक्टर के घर देने आते है। खाना खाने के बाद रोज़ प्रायः डेढ घटे कंपाउंडर साहेब द्वारा लिखित 'दुःखेर पांचाली' (दुख का गीत) नामक उपन्यास का पाठ सुनना पड़ता है। उपन्यास एकाधिक खडों मे लिखा गया है। अभी भी लेखन चल रहा है। यह उपन्यास पाठ सुनना ही डाक्टर के लिए सबसे बड़ी सज़ा है।

डाक्टर बहुत ही थक गया है। रात मे रोगी के पास बैठे-बैठे वह महसूस कर रहा था कि अब और बैठे रहना असभव है। शरीर जैसे अब साथ नही दे रहा है। मगर थाने से भी सुकुमार के बारे में तागीद आई है। थानेदार का निर्देश है कि उसे सावधानी से रखें।

डाक्टर संवाद लाने वाले से यह भी नही पूछ सका कि थाना सुकुमार के मामले में कितनी दिलचस्पी रखता है। थाने से केस आता तो साथ मे

पुलिस कांस्टेबुल आता। इस मामले में वह भी नहीं है। वह रोगी की कितनी सुरक्षा कर सकता है? बहुत अरक्षित है यह हस्पताल। जिन लोगों ने सुकुमार को पीटा है, वे अगर फिर आयें तो? खून-खराबा तो आज के ग्राम बांग्ला के चित्र का एक स्थायी रंग है। दल का जोर हो तो राम श्याम को, श्याम यदू को, यदू राम को हरदम मार रहे हैं। थाना क्या करेगा? डाक्टर क्या करेगा?

यही सब वह सोच रहा था, जब गजानन बेरा ने उसे पुकारा। आवाज सुनकर उसने उधर देखा।

सारी बातें सुनकर उसने स्वीकार में सिर हिलाया।

"सुकुमार के बाप-भाई अपनी जिम्मेवारी पर उसे ले जाना चाहते हैं तो फिर उसे कुछ नहीं कहना।"

शहर के हस्पताल के लिए आवश्यक निर्देश वह लिख देता है। कैसे वे लोग रोगी को ले जायेंगे यह बात वह नहीं पूछता। खालुआ से रोगी को शहर ले जाने का एक ही उपाय है।

दो साइकिलें अगल-बगल रखकर बीच में एक मचान-सी बनाकर, जैसे दूर से मुर्दा लाया जाता है, उसी तरह रोगी को उसमें लेटाकर ले जाना होता है। साइकिलों को हाथ से ठेलना होता है पैदल चलते हुए। चढ़कर चलाना संभव नहीं होता।

उन्होंने यह व्यवस्था कर ली थी।

"शहर जाकर अच्छा हो जायेगा न?" पचानन पूछता है।

"ऐसी ही आशा करता हूँ। साँस धीमी चल रही है, पर घबड़ाने की बात नहीं है। बाकी बातें लिख दी हैं।"

यह छोटा-सा जुलूस चुपचाप चला जा रहा है। ताम पार करके अब वे पालघाट पहुँच गये हैं। गजानन को पसीना आ रहा है। उत्तेजना में रक्त शिराओं में तेज़ी से दौड़ रहा है।

पालघाट में टेम्पो के पास चित्रलिखित-सा खड़ा है सोमराइ हेमब्रम। पचास साल पहले संथालों का जो रूप चित्रित किया जाता था, ठीक वैसा ही। कमर में काछनी, कंधे पर लाठी, ऊपर गमछा। पाँवों में जो रबर की स्लिपर वह पहने है इसी में लगता है यह तस्वीर आज की है।

गजानन चौंकते हैं—"तू यहाँ ?"

"हाँ बाबू, सुनते ही उलटे पाँव चला आया। सुना आप लोग आ रहे हैं, इसलिए गाँव नहीं गया।"

"सुना था तू गाँव गया था।"

"वह तो तीन दिन पहले। रात में गया और भोर होते ही चला आया।"

"अच्छा, चल गाड़ी में बैठ।"

"मैं भी चलूं ?"

"और नहीं तो क्या यहीं खड़ा रहेगा।"

सोमराइ भी टैम्पो मे सवार होता है। टेम्पो चल पड़ता है। सुकुमार का बाप कुछ बड़बडा रहा है। बीच-बीच मे सुन पडता है"'ठीक हो जायेगा'''शहर मे'''हस्पताल मे'''इसी तरह की बातें। आकाश मे बादल घिरे थे, घिरते जा रहे थे। अभी भी वैसे बादल नही घिरे थे, जो बरसना शुरू कर दें।

गाड़ी के हाइवे पर पहुँचने के बाद वृष्टि के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। गजानन सोच रहे हैं अच्छे मौके मे निकल आये वे लोग। बारिश होने के बाद ताल को पार करना मुश्किल होता। गाड़ी को जनक महापात्र चला रहा था। जनक एक्सपर्ट ड्राइवर है।

लगभग डेढ घंटे के बाद रेलवे स्टेशन और नगर की रोशनियाँ आँखों में झलमलाने लगी। जनक ने गाड़ी को जब पाँचमाथा के मोड पर घुमाया तो हरी रोशनी से शोभित राष्ट्र के जनक की मूर्ति दीख पडी। अब हस्पताल दीख रहा है। सभी ने राहत की साँस ली। सुन्दर और दिलीप तैयार होने लगे। हस्पताल में उनकी जान-पहचान थी।

वे हस्पताल मे प्रवेश करते है। इतनी रात को इमर्जेंसी केस ही लिये जाते हैं। दिलीप और सुदर परिचितों की तलाश मे निकल पड़े। या तो कोई ऊपरी दबाव हो, या कोई परिचित हो या नोट सुँघाये जायँ—इनके अलावा भर्ती कराना आसान नहीं होता, यही गजानन को मालूम था।

मगर उनकी धारणा गलत साबित हुई, क्योंकि डाक्टरों ने पूरा-पूरा सहयोग किया। सुकुमार को बेड मिल गया। आक्सीजन देने की व्यवस्था

होने लगी। यह सब कुछ गजानन की आँखों के सामने हो रहा था, वर्ना उन्हें विश्वास न होता। उस पर डाक्टरों की हड़ताल चल रही थी और आगे भी चलने वाली थी। दीवारें पोस्टरों से पटी पडी थीं। क्या इस हस्पताल के डाक्टर हड़ताल नही कर रहे है? या फिर काम करते हुए अपनी माँगों के लिए आंदोलन कर रहे है?

रोगी को भर्ती कराकर वे बाहर आ गये।

"क्या कहा?" गजानन और पचानन दोनो के मुँह से निकला।

"अभी कुछ नही कह रहे है।"

"हमें रुकना है न?"

गजानन बोले—"रात को रुकते है। सवेरे हाल पता करके चलेंगे। भाई साहेब, निरय, बल्लू तुम सब जा सकते हो।"

"आप रुककर क्या करेंगे?"

"रुपया-पैसा लगेगा। टेम्पो वाले को तो बाद में भी दे सकते है। यहाँ क्या दवा लाने की जरूरत नही होती?"

"वह सब मैं देखूंगा।" दिलीप ने कहा, "सुबह दुकान पर जाऊँगा। दोस्त लोग है, इंतजाम हो जायेगा।"

"क्यों, मैं लाऊँगा।" पंचानन ने कहा।

इतनी देर बाद गजानन ने आहिस्ता से एक बीड़ी सुलगाई और एक गहरा कश खीचकर बोले—"ठीक है सभी लोग करेंगे। मैं थोड़ा कमर सीधी करके आता हूँ। चलो स्टेशन से चाय पीकर आते है। अब रात ही कितनी है? देखते-देखते कट जायेगी।"

इसी बीच झमाझम बूंदें पड़ने लगी। जनक और सोमराइ दौडकर बरामदे में आ गये।

"बाप रे! पानी बरसने की तो जैसे बात ही भूल गई थी। बरसो, बरसो भगवान।"

प्रत्याशित वृष्टि। सोमराइ जैसे वृष्टि के झमाझम स्वर को अंजुरी में भर-भरकर पी रहा है। वैसे वृष्टि होने या न होने से उसे चिंतित होने की कोई बात न थी; क्योंकि उसके पास जमीन थी ही नही। पर संभवत: यह बात उसे याद नही रहती।

सुबह तक वृष्टि हुई। इसके बाद, सवेरे हस्पताल जाने पर जब डाक्टर ने बताया कि रोगी की हालत ज्यादा खराब नही है तो सभी की जान में जान आई। इसके बाद कमाल दिखाया बल्लू ने और सभी को चकित कर दिया।

भले ही वह पून्या के एक प्राइमरी स्कूल का मामूली क्लर्क है, पर उसी शहर मे उसका जीजा एक समृद्ध दुकानदार है। मेडोना रेडियो स्टोर्स उसी की दुकान है। और पुराना बाजार के उसके नये मकान में बाथ-शावर भी लगा हुआ है। अभी इस शहर में दूरदर्शन का पदार्पण नहीं हुआ है, पर सजावट के लिए उसने टी० वी० का शो केस खरीदकर ड्राइंगरूम में लगा दिया है। उस पर जो आवरण लगा है उस पर एक तस्वीर लगाई हुई है जिस पर अमिताभ बच्चन को भारत की युवाशक्ति का पथ-प्रदर्शन करते देखा जा सकता है।

इसी घर में बल्लू सभी को ले जाता है। हाथ-मुँह धोकर सभी लोग पूरी और रसगुल्ला का पारण करते हैं। खूब मीठी चाय सुडकते हैं। बल्लू की भांजी अँगरेजी स्कूल की शिक्षा का प्रमाण दे जाती है 'जैक ऐंड जिल' कविता का पाठ करके।

जनक महापात्र को भी इन सभी चीजों का रसास्वाद करने का अवसर मिलता है। सोमराइ मगर इनके साथ नही आया है। वह हस्पताल के सामने चुपचाप बैठा हुआ है।

फिर सभी गजानन की भतीजी के घर जाते हैं। पैसे उधार लेकर टैम्पो का भाड़ा चुकाते हैं गजानन। दिलीप से कहते हैं, मैं नहा-धोकर थोडी कमर सीधी कर लूँ, फिर आता हूँ।

पंचानन, बल्लू, नित्य और सुंदर को विदा कर देते हैं गजानन। दामादे रेलवे वर्कशाप मे फोरमैन है। वह चचेरे ससुर के सामने आने मे कतराता है। उनकी यूनियन एक समय बड़ी जोरदार थी। उन दिनो उसने भी खूब उछल-कूद की थी।

भतीजी गजानन को बहुत मानती है। परिवार नौकरी की तलाश मे तितर-बितर हो गया है। कोई कानपुर, कोई अलीपुरदुआर तो कोई चित्त-रंजन। गाँव मे एक चाचा रहते हैं।

"काका, आप नहाकर उनके कपड़े पहन लीजिए। आपके कपड़े बहुत मैले हो रहे हैं। साफ किये देती हूँ।"

"नही बेटो, रहने दे। लौटकर साफ कर लूँगा।"

"अभी भी पारटी करते हैं, काका ?"

"पूँछ पकड़े हुए हूँ, कह सकती हो।"

"आप नहाकर थोड़ा लेट लीजिए। खाना हो जायेगा तब तक।"

"हाँ, थोड़ा सोना चाहता हूँ। रात-भर पलक नही मार पाया।"

दो घंटे बाद नींद टूटी तो भतीजी ने थाली लगाकर सामने रखी। "यह लीजिए, वह लीजिए, आपको रोहू मछली बहुत पसन्द है, नही-नही, दोनो बोटियाँ खानी होंगी। ताजा मछली है"—वगैरह-वगैरह बोलती रही और जोर देकर काका का पेट ठसाठस करती रही भतीजी।

"तू एकदम अपनी माँ पर गई है। वह भी इसी तरह ठूँस-ठूँसकर खिलाती थी।"

"काका, मछली माँ की तरह बना पाई हूँ ?"

"अरे नही रे! उसकी तरह तो खैर क्या बना पाएगी तू। उसे तो यज्ञ-भोज में हाथ जोड़कर लोग ले जाते थे। पर हाँ, तेरा हाथ भी कोई कम नही है। कितने दिन हो गये ऐसा बढ़िया खाना खाए!"

भतीजी का दिल कचोटता है। काका तो सारा जीवन ऐसे ही काट गये। वर्ना इस उमर मे दुकानदारी करके अपनी ही उँगलियाँ जलाकर पेट भरना पड़ता। साँस भरकर बोली, "भाई तो चाहते हैं आप उनके पास कानपुर जाकर रहें। वह भी तो आपके ही बेटे हैं। वही रहते।"

"नही रे। कभी उनके लिए कुछ किया नही, तो अब कौन-सा मुँह लेकर उनकी खातिरदारी लेने जाऊँ ?"

"तो क्या हुआ। आप कोई बुरा काम तो नही कर रहे थे? सभी आपका कितना आदर करते थे। मैंने देखा था, मन्त्री जी भी आपकी कितनी खातिर कर रहे थे।"

"अच्छी बात है। थोड़ा और बूढ़ा हो जाऊँ। फिर कभी-कभी तेरे पास रहकर तेरे हाथ का खाना खाऊँगा।"

"आपको याद ही नही रहेगा।" कहकर वह होंठ इस तरह बिचकाती

लोग आज भी उनको सम्मान देते हैं। सम्पत्ति न बनाने के पीछे कोई प्रबल आदर्शवाद था—यह भी नही। पहले परिवार के पास जगह-ज़मीन थी कुछ। तब वह घर पर रहते ही न थे, न खेती की ओर ही ध्यान देते थे। भाई नौकरी मे थे। इनका चाल-चलन देखकर उन्होंने सारी पैतृक सम्पत्ति बेच दी और गाँव छोड़ गये। गजानन उस समय भी अनुपस्थित थे।

अघोर बाबू ने इनके भाइयों से इनका हिस्सा रखवा लिया था। उसी पैसे से बाद में दुकान बनाई थी गजानन ने। अब वह सोचते हैं अगर भाई लोग उनके हिस्से की ज़मीन छोड़ जाते तो वे खेती से ही गुज़र-बसर कर लेते।

तीन

ननी एक सम्पन्न खेतिहर और ज़मीदार है, इस बात में गजानन बेरा को कोई बुराई नही दीखती। अघोर बाबू, ननी के पिता ने जमीन इकट्ठी की थी। खुद अमीन थे। फलस्वरूप अनुपस्थित मालिकों की जमीन, विधवाओं की ज़मीन, माझियो और भूमिजों की तथा दूसरों की गैर-कानूनी ढग से हड़पी ज़मीन—इस बारे मे वह एक चलते-फिरते विश्व-कोश थे। यह विपुल ज्ञान-भंडार उन्हें ऐसे कार्यों की प्रेरणा देता था, जिन्हें करके वह एक बड़ी भू-सम्पत्ति के मालिक हो गये थे।

सभी कहते—एक ही तो लड़का है तुम्हारा। लड़कियों की शादी करके फारिग हो गये हो। तुम्हारी सम्पत्ति पर उनका कोई दावा न हो इसकी भी पक्की व्यवस्था कर ली है तुमने। पर यह बताओ, क्या तुम्हारा लड़का यह सब देखेगा ?

अघोर बाबू की देह में जब तक ताकत थी, ज़ोर देकर कहते—देखेगा, देखेगा। नहीं देखेगा तो जाएगा कहाँ ? जर-जमीन का स्वाद उसने अभी नहीं चखा है। एक बार चख लेगा तो देखना। अभी तो पागल-सा

घूमता फिरता है, घर का आटा-दाल भी बाँटता फिरता है। देखते हैं कितने दिन करेगा।

लड़के के इन सब सामाजिक कार्यों को लेकर अघोर बाबू के मन में भी थोड़ा गर्व था, और थोड़ा स्नेहमिथित प्रश्रय भी था। करने दो न। कितने लोगों के बेटे कितनी ही अन्य बुराइयों में फँस जाते हैं। वह तो फिर भी कोई बुरा काम नहीं कर रहा।

बेटे के ऊपर अघोर बाबू का प्यार प्रायः अंधा था। खुद घोर कांग्रेसी होते हुए भी उन्होंने उसे कम्युनिस्ट पार्टी करने की इजाजत दी थी। राजनीति को पारिवारिक सम्बन्धों के बीच वह नहीं आने देना चाहते थे।

ननी कम्युनिस्ट पार्टी करता। बीवी उसकी सास जी की दीक्षा में व्रत-उपवास, पूजा-पाठ में मगन रहती। ग्राम बांग्ला की मानसिकता को तोड़ पाना आसान नहीं। ननी ने खुद कोई सम्पत्ति अर्जित नहीं की थी। बाप की कमाई हुई जायदाद को बनाए हुए था। उसके पास जायदाद है, इसीलिए वह दुष्ट माना जाएगा और गजानन बेरा के पास कुछ नहीं है, इसीलिए वह देवता माने जायेंगे—ऐसी बात नहीं है। जिसके पास जो था वह उसे बनाए हुए है। जमीन को कब्जे में रखने के लिए काश्तकार को चालाकी से ठगना होगा, पानी की व्यवस्था करनी होगी—जमीन ऐसी चीज है कि सरलता और सज्जनता से उस पर अपना अधिकार बनाए रखना कठिन है।

लाइफबॉय जहाँ है, स्वास्थ्य वहाँ है; हार्लिक्स जहाँ है, शक्ति वहाँ है—की तरह जमीन जहाँ है, खून-खराबी वहाँ है।

नहीं तो राजाराम को मरना क्यों पड़ता? सुदूर अतीत के संथालों जैसी सरलता और विनम्रता लेकर भी सोमराइ को क्यों परछाईं की तरह इधर-उधर छिपते-लुकते रहना पड़ता?

सोमराइ! यह नाम दिमाग में आते ही भीतर से जैसे शर्म और परेशानी सिर उठाने लगती हैं। वह भी उनके साथ ही आया था। गया कहाँ? क्या खाया? उसकी कोई खोज-खबर नहीं ली किसी ने।

गजानन बाबू हस्पताल के सामने ही सोमराइ को पा जाते हैं। वह पेड़ के नीचे मूर्ति-सा खड़ा है।

गजानन को आता देखकर वह एकटक उनकी ओर ताकता है। उसकी आँखों में एक कौतूहल और होंठों पर एक विनम्र मुसकान चिपकी हुई है। गजानन जानते हैं उसे उनसे कोई उम्मीद नहीं है। लगता है कभी उन्होंने उसे जो वायदा दिया था उसे पूरा नहीं किया, अपना वायदा तोड़ डाला। फलस्वरूप सोमराइ जान गया है कि अब उनको गजानन बेरा से किसी बात की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

सोमराइ, राजाराम की बहू सुवासी और कुसुमी—इन्हें कुछ नहीं चाहिए। वे क्या सोच रहे हैं, क्या कर रहे हैं इसका कुछ भी पता नहीं गजानन बेरा को।

उनकी आँखों में जैसे एक पर्दा-सा झूलता रहता है जिसके पीछे उनके मनोभाव छिपे रहते हैं। गजानन को बड़ा दुःख होता है। ये सब एक दिन उनके कितने अपने थे! कितनी आसानी से वे बता सकते थे कि वे अगले दिन क्या खायेंगे!

वे जब मादल और धमसा बजाकर और खूंटे में बंधे कड़े नचाकर गाते तो साथ में गजानन भी गाते थे। क्या तो गाते थे वे? हाँ, याद आया:

ओड़ रे नदिया के धारे धारे
आए हैं शिकारी बाबू हो,
हनू (बंदर) को जा जा कर खाओ रे,
हनू (बंदर) को मार रे, हनू को पीट रे,
छाल से उसकी वरदा (एक वाजा) बनाओ रे।

लोधा जाति के लोग बंदर मारने पर उसका मांस खाते थे और उसकी चमड़ी का बाजा बनाते थे।

यह गान भी गजानन बाबू सीख गये थे। एक समय संथालों के घर ही उनके घर थे। वे दिन अब लौटकर नहीं आयेंगे। अब वे उतना प्रगाढ़ विश्वास नहीं करेंगे उनका। माझीपुरा में अब वे करम पूजा में शामिल नहीं होंगे। सोचकर मन बड़ा कष्ट पाता है।

जो विश्वास उन्होंने एक अमूल्य निधि की तरह उनके पास रख छोड़ा था उसे वैसे ही चुपचाप वापस ले लिया है। जैसे वे इतनी अमूल्य निधि

के सौंपने योग्य नही हैं। सोचकर गजानन बाबू खुद को बड़ा लुटा-लुटा-सा महसूस करते हैं।

"क्यों सोमराइ! तब से यही है?"

"अब जाने वाला हूँ।"

"कहाँ जायेगा?"

"दुर्गाबाडी के पास।"

"वहाँ कौन है?"

"दिलीप ने किसी से बात की है।"

"किससे?"

"बजार का आदमी है। सथाल है।"

"वही नहाना-खाना होगा?"

"कह रहा है। एक बार जाकर देखता हूँ।"

"क्यो, वहाँ नही रहेगा?"

"स्टेशन पर रह लूँगा। कही खा लूँगा।"

"क्यों?"

"यहाँ थोड़ा रुकता हूँ। दिलीप दवा लेने गया है। हो सकता है कोई काम आ पडे।"

सुकुमार को देखना नही हो पाया। डाक्टर ने बताया, हाँ 'कनक्शन' तो गहरा है। पर जान का खतरा नहीं है। हालत बदतर नही हो रही है। पल्स (नाडी) ठीक है। सबसे अच्छी बात यह है कि 'कैथेडर' (पेशाब कराने की रबर की नली) द्वारा आसानी मे पेशाब हो गया है। इससे ज्यादा कुछ कहना संभव नही है।

"लगता है बच जायेगा।"

"हम हमेशा यही आशा करते हैं।"

"ज़रा खयाल रखियेगा। बड़ा भला आदमी है।"

"आप उसके क्या लगते हैं?"

"निजी रिश्ता नहीं है।"

"हाँ, लड़का अच्छा है······वह संथाल तो कल रात से ही······ अच्छा!!"

वहाँ से निकलते ही गजानन की मुलाकात दिलीप से हुई। वह दवा लेकर बाजार से लौटा था।

"दवा देकर आ। बात करनी है।"

दिलीप के जाने पर गजानन आकाश की तरफ देखते है। बादल छँट रहे हैं। आकाश साफ हो रहा है।

दिलीप को जाते देखकर उससे पूछा, "क्या कहा ? रुकने को कह रहा है ?"

"मेरा एक दोस्त आ रहा है। उसके आने पर मैं थोड़ा जाकर पीठ सीधी करूँगा। डाक्टर ने कहा है जा सकते हो।"

"ठीक है। मैं थोड़ा घूम-फिर आता हूँ।"

सोमराइ को लेकर गजानन एक रिक्शे मे बैठे। सोमराइ इस तरह बैठा था कि उससे कुछ बोलना संभव न था। उसे लेकर वे एक सस्ते-से होटल में गये, जहाँ कुली-मजूर खाते हैं, पर भात और होटलों की तुलना मे ज्यादा मिलता है।

"पहले बैठकर खा ले।"

सोमराइ ने दो बार भात लिया, दाल कितनी बार ली कहा नही जा सकता। शाल के पत्तों के दोने में तरकारी और दाल और पत्तल में भात। तरकारी जरा-सी लेकर खाई, फिर कई ग्रास भात, ऐसे ही खाने का अभ्यास है संथालो को। मछली का टुकड़ा सबसे बाद मे खाते हैं। भात का एक दाना भी पत्तल में नहीं छूटता। शाल की पत्तल की परतो मे से खोज-खोजकर एक-एक दाना खाते हैं।

"पेट भरा ?"

"हाँ बाबू। नींद-सी आ रही है।"

नींद-सी आ रही है कहने का मतलब है खूब खाया। गजानन ने थोड़ी-सी रोटियाँ, प्याज़ और अचार खरीदा।

"मेरे लिए है क्या, बाबू ?"

"हाँ, और यह ले पाँच का नोट।"

"किसलिए ?"

"चल पान खायेगा ?"

"चलिए।"

दोनों ने पान खाया। फिर गजानन ने कहा, चल अब स्टेशन चलते हैं। बातें करेंगे।

पैदल ही वे स्टेशन पहुँचे। जाकर एक बेंच पर आसन जमाया। एक टिकट-चेकर की तरफ देखकर गजानन ने सिर हिलाया और मुस्कराये। अँगरेज़ों के समय यह एक झकाझक रेल कर्मियों की नगरी थी। साहेब और मेम क्लबों में नाचने आते थे। ऐंग्लो-इंडियन लोगों के क्वार्टर रंगीन परदों और फूल के गमलों से सुशोभित रहते। स्टेशन चमचमाता रहता और काँच के दीवारोंवाली दुकानों में रजनीगंधा और पद्म के फूल बिकते थे।

यह सब अब द्वापर युग की कहानी लगती है। वर्तमान ही इस समय सब कुछ हो उठा है। वर्तमान अतीत को निगल लेता है।

गजानन ने पहले सोमराइ की वास्तविक स्थिति के बारे में नहीं सोचा था। अब सोच रहे हैं।

"सोमराइ, तू खालुआ नहीं जायेगा?"

"ना।"

"ना?"

"बाबू, मेरी जमीन मिलेगी?"

"देखूंगा।"

"खालुआ नहीं जाऊँगा, बाबू!"

"नहीं?"

"जमीन का तो कुछ बना नहीं।"

"देख सोमराइ, जो हुआ उसे तू भी जानता है और मैं भी। मैं क्या कर सकता था..."

"बाबू, अगर तुम एक बार खड़े हो जाते!"

"मुझे भी तो वे मारते?"

"हाँ, मारते तो।"

"तू अपनी जमीन पर क्यों नहीं जा पा रहा है? अपनी ही बिरादरी की दुश्मनी के कारण ही तो?"

"यह तो है। मगर बाबू रघू लोगों ने दुश्मनी क्यो की ? हमारी तो रैयतदारी जमीन थी। उनके पास नही थी तो वे पारटी करके, जो कुछ करके जमीन का पट्टा पा गये, फिर भी भाई बोल के चलते तो भी ठीक था। मुझे नही मिला, किसी और गरीब को मिल गया। मिला तो गरीब को। जो भी पारटी हो, गरीब को मिले तो ठीक है।"

"वे समझ नही पाये बात को।"

"गजा बाबू, तुम तो सब जानते हो। चार टुकड़ों मे दो भाइयों के बीच तीन बीघा जमीन थी। उस जमीन को कैसे ननी बाबू, तोताराम मंडल, पशुपति दास—इन तीनो ने मिलकर हजम कर लिया ?"

"नही, मैं नही जानता। कुछ नही जानता।"

"तब तुम लोग सरकार मे नही गये थे तो क्या तुम कुछ बोल भी नही सकते थे ? तुम्हारी बात तो सभी मानते हैं। और हम तो तुम्हारी पारटी मे थे। तुमने अपना होकर भी · "

सोमराइ के स्वर में कोई अभियोग न था। उसकी जगह अपार विस्मय था। गजानन बेरा की कोशिश से खालुआ गाँव में वे आ बसे थे। संथालो और आदिवासियों की किस्मत में ही उजाड़ा जाना लिखा हुआ है। नकसली आन्दोलन के बाद प्रचड अत्याचार के फलस्वरूप शांकराइल और गोपीवल्लभपुर थाना से संथालों के कई परिवार उजडकर बाहर आये। काम की तलाश में घूमते रहे। घूमते-घूमते ही ब्याह-शादी करते रहे, बच्चे जनमाते रहे और जिन दिनो इस खानाबदोशी से बहुत तग आ गये थे उनकी मुलाकात गजानन बेरा से हुई। गजानन बाबू ने उन्हें खालुआ गाँव मे ला बसाया।

इसके लिए अघोर दलुई के साथ लडाई लड़नी पड़ी थी उन्हे। गजानन बेरा ने बड़ी ऊँची-ऊँची बातें कही थी---अपने भाषण मे।

अपना घर-बार छोडने वाले को अगर हम शरणार्थी कहते है तो आदिवासी जन हजार बार शरणार्थी होकर सामने आ खडे होते है।

इधर तीन घर भूमिज और पन्द्रह घर संथाल है। ये सब भी आ जायें तो नुकसान क्या है ? खेती के समय हमे आदमियो की कमी न रहेगी।

बहुत से बिना जमीन के ही रह गये थे। अघोर दलुई इन्हें जो भी

ऊसर बेचते ये उसे उपजाऊ बना लेते। वस्तुत: राजाराम और सोमराइ के अलावा किसी के पास रैयतदारी नही थी।

यह अत्यंत स्वाभाविक था कि राजाराम, सोमराइ आदि नवागतों का नेतृत्व गजानन बेरा को ही मिलता। राजाराम था भी नेता होने लायक लड़का। उसको लेकर माझीपुरा मे एक चमत्कारी एकता का निर्माण हुआ था।

सोमराइ इन बातो को नहीं दोहराता, पर ये सब बातें गजानन को याद आ रही है।

"सोमराइ, उन दिनों हम सरकार के पक्ष मे नही थे। और सरकारी पक्ष का आदमी न होने पर···"

"सुकुमार भैया तो आये थे।"

"हाँ, सुकुमार आया था। पर अब उन बातो का क्या फायदा? इसीलिए तो उसकी खोपड़ी फोड दी गई है।"

"तब? हमारे लिए वैर मोल लेने के कारण उसे मार पड़ी है। तब उसे ऐसी हालत मे छोड़कर चले जाना क्या धर्म होता?"

सोमराइ हेमब्रम का धर्मबोध उसे मरना सिखाता है। गजानन बेरा जानते हैं कि यह आदिम धर्मबोध लेकर चलना आज के ज़माने में कितना कठिन है। वर्तमान समय अत्यंत हिंस्र और निर्मम है। आज की दुनिया में जिंदा रहने के लिए दूसरे कौशल भी चाहिए। वर्ना तुम अभिमन्यु हो जाओगे। कुशल शत्रु तुम्हें चक्रव्यूह में फँसाकर मार डालेगा। पंचायत में विजयी विरोधी दल, आदिवासी भूमि हस्तातरण कानून को अँगूठा दिखाने वाले कुचक्री, महाजन, ब्लाक कार्यालय, आदिवासी विकास का पैसा बाँटने वाला आदिवासी कार्यालय—इन सब चतुर योद्धाओं के बीच धर्मयुद्ध की रणनीति पर विश्वास रखने वाला राजाराम की नियति को प्राप्त करेगा।

घर जल गया, जमीन पर दूसरों ने कब्ज़ा कर लिया, फिर भी कहता है 'क्या धर्म होगा?' ऐसे निपीड़ित, नंगे-भूखे मनुष्य को अपने भीतर यह धर्मबोध पाले रहना किसने सिखाया? सिधू-कानू? उनकी कहानी जानता है सोमराइ? क्या उसके रक्त में ही है यह धर्मबोध? गजानन बाबू का प्रवीण अनुभवी मन भी चकित हो उठता है।

गहरी आंतरिक उत्कंठा से प्रायः धमकाते हुए वह कहते है—"जिंदा रहेगा, तभी तो धर्म करेगा ?"

सोमराइ सिर्फ आँखें बडी-बडी करके उनकी ओर देखता है। कुछ बोलता नहीं।

"सुना है सुकुमार को तुम्ही लोगों ने मारा है। कुछ लोग तो तेरा ही नाम ले रहे हैं।"

"मेरा ! ! न, नही बाबू…।"

"मेरे जानने से क्या होगा ? अगर केस बिगड गया तो तुझे लंबी सजा होगी।"

"केस में फँसा देंगे ?"

"केस की बात करता है। केस के बिना भी कितने ही दिन आदमी को जेल में डाल देते है। हम सुकुमार को यहाँ लाये है, इसलिए ननी बाबू भी कुछ और ही सोच रहे हैं। वे भी उसे देखने आयेंगे।"

"बाबू, मैं तो काचकुँआ मे अपनी बुआ के यहाँ हूँ। वहाँ भाइयों ने कहा था, बीच-बीच में आते रहना, खबर लेते रहना।"

"इसीलिए आया था ? या सुकुमार ने कुछ कहा था ? मुझे तो लगता है सुकुमार ने कुछ कहा था।"

सोमराइ की दोनों आँखें दो सितारों की तरह चमक उठती है। वह कहता है—"कहा था तुम्हारी ज़मीन तुम्हे दिला देंगे। फिर वापिस पा जायेगा तू।"

सोमराइ ऐसा ही है। राजाराम दूसरी तरह का था। इससे कहीं अधिक पक्का और मजबूत।

गजानन ने कहा—"तो बच्चा देखा न, वह तो एकदम बेबस पडा है। तू हस्पताल मत जा, गाँव में तो जाना ही मत।"

"ठीक है, नहीं जाऊँगा।"

"कहाँ, क्या कर रहा था ?"

"क्या करूँ बाबू, पानी हुआ नहीं। खेती कही हो नहीं रही। हम इन दिनो मिट्टी काट रहे हैं, या कभी पत्थर तोड़ते हैं। शान दीन्दा जो हुकुम देते हैं वही करते हैं।"

"ज्ञान दीन्दा ? निरंजन बाबू का साला लगता है न ? वह तो बार्थी के उस पार रहता है।"

"नहीं बाबू ! ज्ञान बाबू तो वफादार बन गये हैं। कुली का चालान करते हैं।"

"कहाँ काम चल रहा है ?"

"कहिए, कहाँ नही हो रहा है ?"

उँगलियो के पोरो पर गिन-गिनकर बताता है सोमराइ, "सब जगह मिट्टी काटने का काम। कोलाघाट गया था, घापा गया..."

"पैसे मिले ?"

"बाद मे देगा।" सोमराइ हँसकर कहता है।

"वह दे चुका और तुम पा चुके। उसकी बातों मे आकर तूने तो कुछ मजूर नही जुटाये ?"

"ना, ना। मेरी जबान पर कौन काम करेगा ? पैसे तो देता नही। मैं किसी को लाऊँ तो बाद मे मुझे पकडेगा।"

"पैसे नही देता तो क्यो जाता है ?"

"खाना मिलता है। जितना चाहो। जिसकी जितनी मर्जी खाता है। कोई कुछ नही बोलता।"

"कुछ भी नही देता ?"

"नही। हम क्या करें बाबू। कोई और रास्ता भी तो नही। हम खेत मे काम करते थे। सो खेती हुई नही। पानी होता तो इतने लोग अपना घर क्यो छोड़ते ? पचायत तो सभी को काम देती नही...हमारे लिए कोई कुछ कहता भी तो नहीं। इसीलिए तो सब घर छोड़कर रास्ते-रास्ते घूम रहे है। अभी बरसात का वक्त है, पर बरखा होती ही नही। बरखा होती तो खेती होती। बाबू लोग हमे काम देते। देश की हालत बहुत ही खराब है।"

गजानन बेरा गहरी साँस भरते हैं। सोमराइ कोई अभियोग नही कर रहा। उसे पूरा विश्वास है कि गजानन बेरा उसके या उसके साथियों-परिजनों की जीविका के लिए कुछ नही कर सकते।

"सुकुमार ठीक हो जायेगा न ?"

"लगता तो है।"

"किससे खबर दूँ ?"

"क्या खबर ?"

इस प्रश्न के उत्तर में सोमराइ की आँखें जैसे अपने भीतर उतर जाती हैं। वह जैसे कई हजार पहले के अतीत में चला जाता है, जहाँ गजानन बेरा जैसे किसी अन्य वर्ग के व्यक्ति से उसका कोई संवाद संभव नहीं। जैसे उस मनुष्य के साथ कोई संबंध बनाये रखना सम्भव नहीं।

यह तो सुदूर अतीत नहीं है। रेलवे स्टेशन है। एक परिचित भिखारी गर्दन टेढ़ी करके किसी आने वाली गाड़ी की धमक सुनने की कोशिश कर रहा है। स्टेशन पर भिखारियों का जाना वर्जित है, मगर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सरकार द्वारा बनाई गई पक्की इमारत है, ऊपर छत है, नीचे पक्का फर्श है। निराश्रय लोग कहाँ जायें ?

यह सुदूर अतीत नहीं है। ईसा का 1983 वर्ष है। कई सौ वर्षों से गजानन और सोमराइ की बिरादरी पास-पास रह रही है। मनुष्य-मनुष्य के बीच सपर्क के लिए डाक-तार, रेडियो, टेलिविजन कितने ही साज-सरंजाम की व्यवस्था है।

मगर आरंभ से ही यात्रा पास-पास फिर भी अलग-अलग शुरू हुई थी। रास्ते हमेशा से समानांतर चलते रहे। इसीलिए समानांतर मार्गों पर कई सौ वर्षों से साथ-साथ चलते हुए भी, दोनों वर्ग एक-दूसरे के लिए अपरिचित ही रह गये।

"कुछ कहना है घरवालों से ?"

"नही।"

सोमराइ उसी तरह अतीत में खोया हुआ कहता है।

"देखना...झारखंड पारटी तो नहीं कर रहा है तू ?"

"नहीं बाबू, इस इलाके में [illegible] नहीं है। पहले ही [illegible] दल हैं, उनमें भी ज्यादा लोग बाहर के हैं। [illegible] भी नहीं होती है, कहीं नहीं। खूब दूर-दूर पर हैं...।"

"निरापद को कुछ कहना है ? मेरे बारे में ?"

"बाबू और माँ तो बहुत पहले ही [illegible]"

[illegible]

लकड़ी लाकर बेचते हैं। बाबू को देखने गया था। देह हल्दी-सी पीली हो रही है। लगता है बचेंगे नहीं।"

गजानन को लगता है किसी ने एक और चाँटा उनके गाल पर जड़ दिया है। उन्होंने इन बातों को जानने की कोई ज़रूरत क्यों नहीं महसूस की?

"सुवासी···कुसुमी?"

"वे भी बाहर काम कर रही थीं।"

"अब गाँव में कहाँ रहती हैं?"

"अपने बाप के घर।"

सुवासी और कुसुमी के बाप लवन माझी के पास जमीन नहीं है, पर उसमें एक गुण है। अघोर बाबू के पीछे-पीछे घूमकर उसने जरीब का काम यानी ज़मीन की माप करने का काम सीख लिया था। अपने दोनों बेटों सनत और महीराम को उसने लिखना-पढ़ना सिखाया था। सनत शहर की एक बड़ी कंपनी में काम करता है। महीराम मेदिनीपुर के एक ठेकेदार के यहाँ चपरासी लगा हुआ है।

लवन माझी ननी दलुई का पक्का समर्थक है। वह एक पक्की खोपड़ी का समादृत व्यक्ति है। खालुआ न० चार और केतूपुर न० दो का नक्शा बनाते समय उसे नहीं बुलाया गया इस बात से वह बहुत दुखी है। किसकी ज़मीन किसके पेट में गई इसका पूरा पता उसे रहता है।

राजाराम और सुवासी के ब्याह से वह बहुत खुश था। उसने लड़कों से कहा था—"जिसको जो पारटी करना है करो, पर आपस में उसे लेकर लड़ना ठीक नहीं।"

राजाराम की हत्या के बाद लवन माझी जैसे बदल गया है। गुमसुम पड़ा रहता है। अब नशा-पानी भी नहीं करता। जिस दिन यह घटना घटी उस दिन वह नशे में धुत् पड़ा सो रहा था, यह बात उसे सालती रहती है। उसका मन कहता है कि अगर वह होश में होता तो यह घटना नहीं घटने पाती। यह बात कोई उसके मन से नहीं निकाल पा रहा है।

सुवासी अपने बच्चों को माँ-बाप के पास छोड़कर काम की तलाश में निकलती है। कुसुमी ही दीदी को अपने साथ खींचकर ले जाती है।

गाँव में रहती है सुवासी तो इधर-उधर घूमती-फिरती है। लगता है राजाराम को हर जगह ढूंढ़ती फिर रही हो। सुवासी की आँखें और बड़ी-बड़ी हो गई है। उसके माथे पर झूलते बाल सुनहले हो रहे हैं।

यद्यपि सुवासी राजाराम की विधवा है, वही राजाराम जो पिछली मन्त्रिसभा के समय ननी के दल के विरोधी दल मे गिना जाता था, फिर भी लवन माझी के घर मे वह पूरी तरह सुरक्षित थी।

सोमराइ कुछ सोचकर कहता है— "अभी तो सब एक ही दल में हैं। फिर भी इतनी दुश्मनी क्यों चल रही है ? मुझे घर नही बनाने देंगे, जमीन पर पाँव नही रखने देंगे···अच्छा बाबू, तो फिर चलता हूँ। बाद में पता करने आऊँगा।"

"कहाँ जायेगा ?"

"काचकुआ मे पोखरा की खोदाई हो रही है। मिशन तो उधर गया नही। इसलिए अंचल से लोगों को ले जाकर पोखरा, बावड़ी की खोदाई हो रही है।"

"तुझे काम मिलेगा ?"

"हाँ, महीने में कुछ ही दिन काम चलता है।"

"कुछ ही दिन ?"

"उतना भी तो कही और नही मिलता। जो मिल जाय, वही बहुत है।" सोमराइ जैसे गजानन बाबू को सांत्वना देते हुए कहता है।

फिर कुछ सोचकर, भीतर की किसी दुर्लघ्य बाधा को पार करते हुए बोला—"भाभी को और कुसुमी को बोल दीजिएगा कि तुरंत काचकुआ आ जायें। देर करने की ज़रूरत नही है।"

"काचकुआ क्यों ?"

"खालुआ मे उनपर बहुत बड़ी विपदा आने वाली है। मैं जा पाता तो खुद ले आता। मगर वह रास्ता भी बन्द है।"

"कैसी विपत्ति ?"

"रूपलाल को पता है।"

रूपलाल का नाम सुनकर डर से गजानन काँप उठे। नहीं, सोमराइ को क्या अधिकार है उन्हें इस तरह डराने का ? बहुत दिनों के बाद कल

रात से वे कुछ ऐसा कर रहे हैं, जिससे उनका मन प्रसन्न है। मन भी सभी कामों में हां नही भरता।

अभी कुछ ही दिन पहले सूखाग्रस्त इलाका खालुआ और पून्या मे 'कृषि-प्रशिक्षण' हुआ था। गजानन गये थे, प्रसन्नता प्रकट की थी और वाहवाही की थी। शुरू-शुरू मे प्रशिक्षण लेने के लिए एक भी गरीब किसान नही आया। सभी काम की तलाश मे निकले थे। खेत-मजूर सूखे के समय प्रशिक्षण लेने आयेगा यह आशा करना भी पागलपन है। खेती हो रही हो तो वह तुम्हारे खेत में काम करने आयेगा। प्रशिक्षण लेने से उसको क्या मिलेगा? मन कोई जवाब नही देता। गूँगा बना रहता है।

अभी उस दिन प्रत्येक ब्लाक मे धूमधाम से कृषि प्रदर्शनियां की गईं। इस सूखाग्रस्त अंचल में किसे इतना पानी मिलता है कि सारे साल खेतों को हरा-भरा रख सके? किसके खेतो मे लगे बड़े-बड़े कुम्हड़ों और बैंगनों को प्रशंसापत्र मिले? आदर्श कृषक दंपति के रूप मे स्थापित वे जो आदमकद मूर्तियां हैं उनकी तरह यहाँ का कौन किसान है? ऐसे स्वस्थ, प्रसन्नता से चमकते चेहरे आजकल कहाँ देखने को मिलते हैं? जैसे गजानन का मन गूँगा हो गया है।

बहुत दिनो से उनका मन ऐसे ही गूंगा-बहरा बना हुआ है। पर जब सभी असफलताओं के लिए दूसरी शक्तियों को फटकार देकर, अपशब्द कहकर वे भाषण देते हैं, तब!

गजानन क्या नही जानते कि वर्ग-संघर्ष के नाम पर बंगाल के गाँवों में कैसे मनुष्य-मनुष्य के मन को विषाक्त कर दिया गया है? इस रोहिन उत्सव मे किसी ने गाना नही गाया, कोई पूजा-अर्चना नहीं हुई।

उस बार वे लोग फ्रंट में नही थे। इसी कारण राजाराम हेमब्रम को कहा गया कि वह शत्रु है। वह मारा गया। राजाराम का खून तो उसकी जाति-बिरादरी के ही लोगो ने किया, जो एक वर्ग और एक ही समाज के लोग थे।

आज तो वे भी फ्रंट में शामिल हैं। उस बार जो अन्याय हुआ, अब तो उसका प्रतिकार हो सकता है।

मगर हुआ नही। सोमराइ को गाँव मे घुसने नहीं दिया जा रहा है।

सोमराइ आज भी वही एक सपना देख रहा है कि उसका जलकर राख हुआ घर अगर उसे वापिस मिल जाता तो वह अपनी ज़मीन पर भात पकाकर खाता।

निरापद और उसकी बहू कहाँ गये होंगे ? जंगल हैं ही कहाँ ? सुवासी और उसके बच्चे तो खैर लवन माझी के घर पर हैं।

कल से मन प्रसन्न था कि वे एक अच्छा काम कर रहे हैं। सोमराइ ने उस प्रसन्नता को समाप्त कर दिया। सुवासी और उसके बच्चे किसी मुसीबत में हैं। और मुसीबत क्या है, इसे रूपलाल जानता है।

'रूपलाल' एक भयानक नाम है। बहुत डर लगता है इस नाम से। पता नहीं वह क्या जानता है।

पूछने का वक्त नहीं था। लोकल ट्रेन ने सीटी मार दी थी। सोमराइ दौड़कर चलती गाड़ी में चढ़ गया। बालीचक उतरकर पैदल काचकुआ जायेगा। रूपलाल सिंह एक भूमिज जाति का वृद्ध है। शहर से एक नेता परशुरामसिंह उससे जानने आये थे कि भूमिज और मुंडा जातियाँ एक ही हैं या अलग-अलग।

रूपलाल ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया था। खजूर के पत्ते की चटाई बुनते-बुनते और भी झुककर उसी में तल्लीन हो गया था। बाद में उसने गजानन से कहा था कि इस तरह की बातें सुनकर पहले खून में थोड़ी गर्मी आती थी, पर अब कुछ नहीं होता। क्या फायदा ? भूमिज होने पर भी बिना खाये मरना है, और मुंडा होने पर भी।

इसका यह मतलब नहीं है कि रूपलाल जीवन से उदासीन हो गया है। लोग कहते हैं कि रूपलाल तंत्र-मंत्र से वर्षा करा सकता है। भूत-पिशाच और डाइन को पकड़ने में भी वह सिद्धहस्त है। क्या आदिवासी, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सभी इन बातों पर विश्वास करते हैं।

सूखा, सन्तानहीनता, अनाज पैदा न होना वगैरह रूपलाल के अनुसार अशुभ शक्तियों का काम है। अब इन बातों में आदमी का विश्वास कम हो रहा है, इसीलिए बूढ़े रूपलाल के पास ज्यादा लोग नहीं आते। सुकुमार ने विज्ञान क्लब बनाने की बात उठाई थी। वर्ना आदमी के सिर पर से भूत नहीं उतरेंगे।

इन बातों को कुछ देर तो गाँवों में लोग मानते हैं, फिर उनका विश्वास चुक जाता है। खासकर डाइन की बात पर तो अभी भी सब विश्वास करते हैं। डाइन को पकड़ा जाता है। उसे मार दिया जाता है। फिर भी शिशुओं की मृत्यु होती है, औरतें प्रसूति में मरती हैं, इनफ्लुएंजा, डेंगू आदि के कीटाणु लोगों की जान लेते हैं। इसी से पता चलता है कि चिकित्सा और सफाई ही इन सब व्याधियों का उत्तर है। डाइन को जान से मार देने से इन व्याधियों से मुक्ति नहीं मिलेगी।

सभी चुपचाप इन बातों को सुन लेते हैं, पर डाइन का मामला अभी भी गाँवों में बहुत मान्यता प्राप्त है। तो क्या रूपलाल ने सुवासी को डाइन करार दिया है?

इसी चिंता में झुलसते हुए गजानन बेरा हस्पताल पहुँचे।

चार

हस्पताल के सामने तो जैसे सोलह सूरजों की हाट लगी हुई थी। ननी, पशुपति, सीताराम, चिन्मय, विशाल और दूसरे कुछ गण्यमान्य लोग। दूसरी ओर थे निरंजन, सुकेश, खड़ा सरेन और पतित। जो जिसका अपना आदमी था वह उसे लाया था। सुकुमार की माँ, पंचानन और दिलीप इन सबसे अलग बैठे थे। बाहर दो वाहन खड़े थे। निरंजन खुद अपनी लॉरी ले आया था। ननी ने पाल बाबू का टेम्पो किराये पर ले लिया था।

"मुझे तो शत्रुता की गंध मिल रही है।"

"ओहो! छोड़ो न तुमने 'जेलसी' (ईर्ष्या) की बदबू।"

मणि दा ये सब बातें ठीक पकड़ लेते थे। इसीलिए पारटी में उनका नाम ही गंधमादन दादा पड़ गया था। कितने आश्चर्य की बात है, हर चीज को, हर षड्यन्त्र या दुरभिसंधि को सूंघ लेने वाले मणि दा खुद अपनी मौत को नहीं सूंघ पाये। डलहौजी स्क्वायर में बस के नीचे आ

गये।

थोड़ा आगे जाते ही गजानन को लगा कि चाहे मामला आंतरिक हो या दुनिया को दिखाने के लिए, उन लोगों ने सबल प्रयास करके मिलन का एक दीवार पर झुलाने लायक चित्र तैयार कर लिया है।

"अरे, तुम लोग कब आये?"

पंचानन उम्र में सबसे बड़े हैं। बड़ों जैसा ही व्यवहार भी करते हैं। यह प्रश्न उन्होंने ननी, फिर निरंजन पर नजर घुमाकर सुकुमार की माँ के चेहरे पर टिका दिया।

ननी दलुई बहुत दिनों से एक कठोर व्यक्ति की भूमिका करता आ रहा है। अभिनय करते-करते एक समय ऐसा आता है कि अभिनेता खुद चरित्र बन जाता है। ननी के मामले में यह रूपांतरण हो पाया है या नहीं, गजानन नहीं जानते। पर ननी ने अब पर्याप्त कठोरता तथा थोड़ा आहत भाव से कहा—"दादा, फट् से उसे लेकर चल पड़े। मुझे भी बता देते?"

निरंजन अभिनय में विश्वास नहीं रखता। खुलासा रखने में ही वह अपनी धाक जमा पाता है। अवसर के उपयुक्त गंभीरता से बोला—"मैं भी तो था? इन सब मौकों पर क्या क्षुद्र दलगत स्वार्थ देखना ठीक लगता है? सुकुमार तो हम सभी का है।"

अत्यन्त सरलता और विस्मय के साथ गजानन बोले—"तुम लोग कह क्या रहे हो? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

गजानन के स्वर की सरलता और विस्मय से ननी और निरंजन परास्त हो जाते हैं। मन-ही-मन सोचते हैं, बड़ा घाघ है बूढा। कैसा बन रहा है?

गजानन विस्मय के पर्दे को और थोड़ा विस्तार देते हैं। कहते हैं—"तुम्हें खबर नहीं किया? कमाल है! मैं तो खुद दादा के पास खबर लेने गया था। दादा और भाभी ने पकड़ लिया कि उसे तुरन्त हस्पताल ले चलो। मैं तो सिर्फ उनका साथ दे रहा था। उस समय सबको जनाने जाता तो यहाँ पहुँच पाना कठिन हो जाता। तुम लोग तो ताल पार करके छोटे रास्ते से नहीं आ पाये हो। रूपाई ब्रीज की तरफ से लंबे रास्ते से आये हो। फट् से आकर मैंने अच्छा किया या बुरा किया इसका ठीक-

इन बातों को कुछ देर तो गाँवों में लोग मानते हैं, फिर उन
विश्वास चुक जाता है। लगभग डाइन की बात पर तो सभी की
विश्वास करते हैं। डाइन को पकड़ा जाता है। उसे मार दिया जाता
फिर भी शिशुओं की मृत्यु होती है, औरतें प्रसूति में मरती हैं, इन्फ्लु-
एंजा आदि के कीटाणु लोगों की जान लेते हैं। इसी से पता चलता है
चिकित्सा और सफाई ही इन सब व्याधियों का उत्तर है। डाइन को
से मार देने से इन व्याधियों से मुक्ति नहीं मिलेगी।

सभी चुपचाप इन बातों को सुन लेते हैं, पर डाइन का मामला
भी गाँवों में बहुत मान्यता प्राप्त है। तो क्या रूपलाल ने सुख
डाइन करार दिया है?

इसी चिंता में झुलसते हुए गजानन बेरा हस्पताल पहुँचे।

चार

को गंदला करने आया है। थोड़ी ही देर में वह 'संवाद-मार्तण्ड' के ऑफिस जायेगा और अपना बयान देगा। अखबार लोहे के एक व्यापारी का है। अगर किसी साइकिल वाले से कोई अंडा बेचने वाला धक्का खाकर अपनी टोकरी न सँभाल सके तो इस घटना को 'संवाद मार्तण्ड' निम्नलिखित शीर्षक देगा—'उग्र क्षत्रिय की साइकिल से नम्र शूद्र की अंडे की टोकरी का विनाश—सरकार इस बारे में क्या कहती है?' अभी पिछले दिनों 'संवाद मार्तण्ड' के कार्यालय के सामने एक प्रदर्शन हुआ था जिसमें जाति का उल्लेख बन्द करने का आग्रह किया गया था। इस प्रदर्शन का कारण था निम्नलिखित शीर्षक—'कपाली जाति को कपाली जाति नहीं देखेगी, तो कौन देखेगा?' इस अखबार की मात्र दो सौ इकहत्तर प्रतियाँ छपती हैं, पर गंदगी फैलाने में इसकी क्षमता में इससे कोई कमी नहीं आती। इसलिए ननी इससे डरता है।

गजानन ने कहा—"निरंजन, अभी तुम जाना नहीं, तुमसे बात करनी है, अभी तुम रुको।"

"मैं रुकूँ?"

"नहीं तो और किससे कह रहा हूँ?"

खड़ा सरेन सपन्न सथाल है। पूर्न्या में उसका अपना मकान है। तीन पुश्त से कांग्रेस-समर्थक है और आज भी खद्दर पहनता है। उसकी जाति के सोमराइ और रघू उसे 'बाबू' कहकर पुकारते हैं। संथाल-समाज के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। उसका उठना-बैठना, मिलना-जुलना सब दूसरे ही समाज में होता है।

"कुछ बातें तो साफ हो जानी ही चाहिए।" वह बोला।

"मतलब?"

"सुना है इस मामले में संथालों पर संदेह किया जा रहा है।"

"सोमराइ हेमब्रम का नाम सुन रहा हूँ। मैं कहता हूँ इस मामले में उसका नाम क्यों आया?"

तीताराम और पशुपति जल उठे। तीताराम ने कहा—"अब क्या उस बात को लेकर झंझट करेंगे?"

"अभी वह सब बातें रहने दीजिए।" ननी ने कहा।

ठीक विचार तो डाक्टर लोग ही कर सकते हैं। हाँ, अगर तुम लोगों ने तय किया हो कि जिस पारटी का आदमी घायल होगा वही उसको हस्पताल ले जायगी, तो यह बात मैं जानता न था। ऐसी स्थिति मे मुझसे ज़रूर गलती हुई है।"

सुकुमार की माँ ने घूंघट को थोड़ा और लवा खीचकर मुँह सबकी तरफ घुमाया और आँखों से आंसू पोंछते हुए बोली—"हमारा बच्चा है, हम हस्पताल ले आये है। देवरजी को साथ मे ले लिया था। इससे हमे सुविधा ही हुई है। घटना तो परसों रात की है? अभी तो देख रही हूँ इतनी भाग-दौड़ हो रही है। तब तो किसी ने इसे हस्पताल पहुँचाने की कोई कोशिश नही की।"

ननी को तेज गुस्सा आता है, मगर इस समय क्रोध दिखाना बड़ा घातक होगा। इसलिए वह अपने को सँभालकर बोलता है—"खैर, छोड़िए। अभी तो यह देखना है कि मरीज़ की हस्पताल मे पूरी देखभाल हो, कोई लापरवाही न हो।"

सुकुमार की माँ दुख से पागल होकर बोल पड़ी—"किसी का क्या जायेगा? बिगड़ेगा तो मेरा ही न? और किसी का तो नही? मेरे हाथ-पैर जोड़ने से ही तो इस उमर मे देवरजी भाग-दौड़ कर रहे हैं। प्रधानजी, जो कहना है हमे कहिए। देवरजी को कुछ कहने की जरूरत नही है।"

ननी समझ गया है कि इस चाल मे उसकी मात हो गई है और गजानन की जीत। अंचल प्रधानोचित सहृदयता के साथ ननी उत्तर देता है—"भाभीजी, आप कैसी बातें कर रही हैं? गजा दादा और हम क्या अलग हैं? हम जो नहीं कर पाये वह दादा ने कर दिखाया, बात तो एक ही है।"

पीछे से निरंजन बोला—"बहू, तुम चिन्ता मत करो। जिन्होंने सुकुमार को चोट पहुँचाई है, उन्हें हम आज नही तो कल पकड़ ही लेंगे। सुकुमार भले ही विरोधी दल का था मगर उसने नेताजी की तरह, वीरेनशासमल जैसा साहस और बहादुरी का काम किया है। सुकुमार माहिष्य जाति का गौरव है।"

ननी और गजानन पलक झपकते समझ गये कि निरंजन वातावरण

को गंदला करने आया है। थोड़ी ही देर में वह 'संवाद-मार्तण्ड' के ऑफिस जायेगा और अपना बयान देगा। अखबार लोहे के एक व्यापारी का है। अगर किसी साइकिल वाले से कोई अंडा बेचने वाला धक्का खाकर अपनी टोकरी न सँभाल सके तो इस घटना को 'संवाद मार्तण्ड' निम्नलिखित शीर्षक देगा—'उग्र क्षत्रिय की साइकिल से नम्र शूद्र की अंडे की टोकरी का विनाश—सरकार इस बारे में क्या कहती है?' अभी पिछले दिनों 'संवाद मार्तण्ड' के कार्यालय के सामने एक प्रदर्शन हुआ था जिसमे जाति का उल्लेख बन्द करने का आग्रह किया गया था। इस प्रदर्शन का कारण था निम्नलिखित शीर्षक—'कपाली जाति को कपाली जाति नहीं देखेगी, तो कौन देखेगा?' इस अखबार की मात्र दो सौ इकहत्तर प्रतियाँ छपती हैं, पर गंदगी फैलाने मे इसकी क्षमता में इससे कोई कमी नहीं आती। इसलिए ननी इससे डरता है।

गजानन ने कहा—"निरंजन, अभी तुम जाना नहीं, तुमसे बात करनी है, अभी तुम रुको।"

"मैं रुकूँ?"

"नहीं तो और किससे कह रहा हूँ?"

खड़ा सरेन संपन्न संथाल है। पूर्या में उसका अपना मकान है। तीन पुश्त से कांग्रेस-समर्थक है और आज भी खद्दर पहनता है। उसकी जाति के सोमराइ और रघू उसे 'बाबू' कहकर पुकारते हैं। संथाल-समाज के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। उसका उठना-बैठना, मिलना-जुलना सब दूसरे ही समाज में होता है।

"कुछ बातें तो साफ हो जानी ही चाहिए।" वह बोला।

"मतलब?"

"सुना है इस मामले में संथालों पर संदेह किया जा रहा है।"

"सोमराइ हेमब्रम का नाम सुन रहा हूँ। मैं कहता हूँ इस मामले में उसका नाम क्यों आया?"

सीताराम और पशुपति जल उठे। सीताराम ने कहा—"अब क्या उस बात को लेकर झंझट करेंगे?"

"अभी वह सब बातें रहने दीजिए।" ननी ने कहा।

गजानन कुछ बोलते-बोलते रह जाता है।

"सुकुमार को होश में आने दो। वही बतायेगा कि उसे किसने मारा है। क्या हुआ है?" पंचानन कहता है।

यह प्रसंग यहीं रुक जाता है। निरंजन अपने गले में थोड़ी ज्यादा मिश्री घोलकर बोलता है—"सुकुमार अच्छा हो जाय तो सब कुछ अच्छा ही समझो। सब कुछ वही बतायेगा। मगर ननी बाबू सोमराइ का नाम चारों ओर सुन रहा हूँ। काचकुआ में हमारे माले का काम चलता है। उसमें सोमराइ खट रहा है। बेचारा इधर तो आता भी नहीं है। फिर उसका नाम इस मामले में कैसे उठा?"

"इस मामले में यहाँ बातचीत नहीं की जा सकती। और हम इस बात का फैसला भी यहाँ नहीं कर सकते हैं।" ननी ने जवाब दिया।

तभी दिलीप हस्पताल के अंदर से आता दीखा। उसके हाथ में कागज़ का एक टुकड़ा था।

"क्या है? दवा खरीदनी है?"

"हाँ! बाहर से लाने को कहा है।"

"क्यों? ये नहीं देंगे?"

"नहीं, ननी दा! सब कुछ तो दे रहे हैं। जो दवाइयाँ उनके पास कम हैं उन्हें बाहर से ले आने को कहते हैं।"

"चलो मैं बोल देता हूँ।"

"वे लोग तो अपनी ओर से काफी-कुछ कर रहे हैं…।"

"काफी-कुछ क्या कर रहे हैं," ननी नीरस स्वर में कहता है, "उनका जो कर्त्तव्य है, वही कर रहे हैं।…ठीक है, मैं हेल्थ आफिसर को बोल देता हूँ। सुपर को बोल देता हूँ। यहाँ कुछ लोग बने रहें, तो मेरा खयाल है, अच्छा रहेगा।"

"जी, मैं काम चला लूंगा। मेरे दोस्त भी तो हैं। कोई जरूरत नहीं है।"

"जरूरत हो तो बता दो।"

"मेरे भैया की दुकान का पता है न?" सुकेश कहता है, "वहाँ कह रखा है मैंने। जो भी चाहिए, जाकर ले आना।"

"अच्छा ! क्या तुमने और तुम्हारे बाप ने सुकुमार को यहाँ ले आने का प्रबंध किया ?" ननी ने पूछा ।

"जी हाँ !"

"हमें भी जरा सूचना दे देते तो···।"

सभी जानते हैं कि सवेरे ननी सुकुमार को हस्पताल ले जाने गया तो पाया वह पहले ही हस्पताल पहुँच गया है । वह वेवकूफ बन गया था । फलस्वरूप उसे बहुत गुस्सा था । ननी की नाराज़ी बहुत घातक हो सकती है, पर दिलीप इस तथ्य से परिचित नही है ।

"ननी, लौटना है आज ?" गजानन पूछते हैं ।

"नही दादा, कुछ काम है ।"

"निरंजन के विदा होने तक यहीं रुको ।" गजानन ने फुमफुमाकर ननी से कहा और आवाज ऊँची करके सुकुमार के माँ-बाप से पूछा—"क्यों दादा, तुम और भाभी तो आज ही लौटोगे न ?"

"नही, आज यहीं रहेंगे । कल लौटेंगे ।"

"घर-बार ?"

"वहाँ लोग है । गोपाल और उसकी माँ को बोल के आये हैं ।"

गोपाल लड़कियों के स्कूल का दरवान है । लड़का भला है और सुकुमार को मानता है । गाँव की खेल-कूद प्रतियोगिता में आँखों पर पट्टी बाँधे हुए भी दूर लटकाई गई हांडियों को लाठी मारकर अचूक निशाना बनाने में उसका सानी नही । गोपाल हो तो घर की सुरक्षा की ओर से निश्चित हुआ जा सकता है ।

"और तुम्हारे खाने की क्या व्यवस्था है ?"

"दिलीप के एक दोस्त के वहाँ से बुलाया है । मगर क्या मुंह में कौर उठेगा, देवरजी ? उसने कभी किसी का कोई नुकसान नही किया । दो ही काम जानता है—पारटी का काम और दूसरों की मदद···उसे इस तरह ···मैं तो सोच भी नही पाती ।"

निरंजन इस तरह बोलता है जैसे उसे सब पता है—अपराधी ठीक पकड़ा जायेगा ।

"सरसों मे ही भूत है । खड़ा सरेन मुहावरे में बोलता है ।"

"इसका मतलब ?" तीताराम पूछता है।

"चोर की दाढ़ी मे तिनका।" मुकेश दूसरे मुहावरे मे स्पष्ट करता है।

"अच्छा नही हो रहा है।" पशुपति की धमकी।

"हाँ, अच्छा तो वाकई नही हो रहा है। वर्ना सूखा के बहाने किसको काम दिलाया जा रहा है, किसको नौकरी दिलाई जा रही है, कहाँ पंप सेट बिठाया जा रहा है ..."

"पशुपति ! तीताराम ! !" ननी धमकी के स्वर में पुकारता है। "वोट का मार्जिन क्यो कम हुआ ? चलो निरंजन भैया। पचानन दादा, हम हैं यही। हम पार्टी देखकर नही आदमी देखकर मदद को दौड़ते हैं। पुकारते ही हाजिर हो जायेंगे।"

मौका पाकर ननी दलुई को कुछ खरी-खोटी सुना दी—इस विजय-गर्व से उल्लसित होकर निरजन का दल मच पर से हूं-हूं करता हुआ प्रस्थान कर गया, चुनाव के दिन निरजन ने मुरमुरे और पकौड़े बांटे थे, चिन्मय ने आटा दिया था। फिर भी मार्जिन कम हो गया था और सुकुमार चुनाव-परवर्ती बैठक बुलाने पर जोर दे रहा था।

मार्जिन क्यो कम हुआ है और कैसे गरीब जनता खुद अपना वोट देने के लिए प्रेरित होगी, इस विषय पर सुकुमार को बहुत-कुछ कहना था।

निरंजन सोच रहा है, जो जाना-बूझा है, वही अप्रिय सत्य सामने आता।

ननी क्या सोचता है, कहना मुश्किल है।

इस समय ननी गुस्से मे गुम हुआ बैठा है। गजानन बेरा से इस चाल में उसकी मात हुई है। निरजन की बातचीत से तो लगता है काफी कीचड़ उछलेगी। खड़ा सरेन की बात भी कम चिंताजनक नहीं है। सूखा, उपवास, काम के लिए दूसरे गाँवो को भागना और दूसरे कारणों से ग्राम का संथाल समाज एकदम तितर-बितर हो रहा है।

राजाराम का मामला भी अभी दबा नहीं है।

खड़ा सरेन चाहे तो काफी झमेला फैला सकता है। ऐसा झमेला, जिसका नतीजा बहुत खराब हो सकता है। किस्मत अच्छी है कि वह

इधर की किसी घनी बस्ती में नहीं रहता।

ननी एक बात अच्छी तरह समझ गया है कि सुकुमार के मामले में सोमराइ का नाम लेना ठीक नहीं होगा। राजाराम मारा जा चुका है। अब सोमराइ को फँसाने की कोशिश करने से माझीपुरा के और भी नाना प्रकार के झमेले साथ में उठ खड़े होंगे। वर्तमान परिस्थिति उसके अनुकूल नहीं है।

पानी, उन्हें पानी चाहिए। सिंचाई के लिए पानी न मिलने पर अगर काम ढूंढने के लिए वे इधर-उधर बिखर जायें तो वे मन-ही-मन कह सकते हैं—'हम अब किसी भी दल में नहीं हैं।'

हाँ, सूखा के मुआविज़े में उन्हें पूरा काम नहीं मिला। एक अनार सौ बीमार वाली हालत। ननी यह तो नहीं कह सकता कि सिर्फ हमारी पारटी के समर्थकों को ही काम मिलेगा।

दल के समर्थक गरीब लोग अगर दूसरे गरीबों के साथ विवाद करें तो वह क्या करेगा ? सुकुमार ने कहा था—"ननी दा, एक ही वर्ग के लोग एक-दूसरे के शत्रु होते जा रहे हैं। यह तो वर्ग-संघर्ष नहीं है।"

"ननी !"

"जी ?"

"तुमने क्या हस्पताल के डाक्टर से कुछ कहा है, मतलब यहाँ के नहीं, गाँव के ?"

"उससे ही पूछ लीजियेगा।"

"सुकुमार को लाये हैं—उसके बाप और भाई।"

"जानता हूँ।"

"तुमने क्या सोचा था ?"

"किस बारे में ?"

"सुकुमार को किसने मारा ? और क्यों मारा ?"

"पता नहीं।"

"यह कोई अच्छी बात नहीं है।"

"कौन-सी बात ?"

"तुम और हम साफ-साफ बात नहीं कर रहे हैं यह अच्छी बात नहीं

है। हमारी-तुम्हारी स्थिति एक ही है।"

"राजनीतिक स्थिति ?"

"तुम बड़ी पार्टी के आदमी हो, वहाँ मेरी कोई स्थिति नही है, पर खालुआ मे हम मिलकर 'स्टैंड' नही ले सकते ? क्या तुम इसकी जरूरत नही महसूस करते ?"

"हम और आप ! हुँह ! आप निरंजन मैती को ही मदद दें। मैं अकेला ही अपना घर सँभाल लूँगा। मेरे लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है।"

"तुम्हे पार्टी मे लाने वाला मैं ही हूँ।"

"उसका बदला मैं अभी भी चुका रहा हूँ, वर्ना क्या आप गाँव में रहने पाते ?"

"धन्यवाद ! ···आज तक नही जानता था कि तुम्हारी दया पर जी रहा हूँ।"

"यह तो नही कहा मैंने।"

"यही तो कहा।"

गजानन बेरा का चेहरा अपमान और क्रोध से तमतमा उठा। फिर स्वर को दबाकर कहा—"सभी कह रहे हैं कि देबू और राजेन को कहकर तुम्ही ने सुकुमार का सिर फटाया है ?"

"झूठ बात है।"

"झूठ है या सच इसका प्रमाण तो सुकुमार ही दे सकता है। मगर सभी यह बात कह रहे हैं।"

"नही।"

"ननी, तुम अपने को सब-कुछ के ऊपर मत समझो। यह बात तुम्हारे ही दल से निकली है। यही स्वाभाविक भी है। अभी कुछ दिन पहले देबू और राजेन निरंजन के मामा के वहाँ कुली का काम करते थे। नबर एक के पाजी और बदमाश लोग हैं दोनो। उनकी मदद करके ही इस चुनाव मे तुम्हारा मार्जिन घटा है।"

गजानन बेरा पचानन को बुलाकर कहते हैं—"चलो, काम है।" फिर हस्पताल के बाहर आकर कहते हैं—"सुकुमार को किसी अपरिचित

हत्यारे ने मारा है। तुम पुलिस को कहो कि तुमको दुबारा हमले की आशंका है। इसलिए पुलिस का पहरा जरूरी है।"

पचानन ने इस बात का कोई प्रतिवाद नहीं किया। हाँ, हस्पताल दरअसल बहुत ही अरक्षित जगह है। हस्पताल में घुसकर रोगी की हत्या करना आसान है।

"थाने वाले मेरी बात सुनेंगे ?"

"मैं भी तो हूँ साथ में।"

सुकुमार को बचाना, होश में आने पर उसके मुंह से उस दिन की घटना का खुलासा प्राप्त करना, गजानन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो उठा है।

ननी भी भीतर-ही-भीतर सुलगता हुआ गाँव वापिस चला जाता है। बाद में देखा गया कि गजानन के लिए इतना आशंकित होना अकारण था। क्योंकि वापिस आते ही ननी ने देवू और राजेन को तलब किया। उन्हीं से पूछता हूँ कि उन्होंने क्या किया है, ननी ने सोचा। चिन्मय और दूसरे लोग मुंह से नहीं बोल रहे हैं, मगर मन-ही-मन सोच रहे हैं, शायद, कि सुकुमार को मारने का हुक्म ननी ने ही दिया है।

मूर्ख, मूर्ख कहीं के सब।

ननीकांत दलुई ने अपने मुंह से कभी नहीं कहा कि राजाराम को मारो, सुकुमार को मारो।

चुनाव-परवर्ती बैठक के लिए ननी अपना वक्तव्य तैयार कर रहा था। ननी जानता है कि देवू और राजेन ने कुछ लोगों को कच्ची शराब बनाने का लाइसेंस दिला दिया था। ये लाइसेंस-प्राप्त लोग बाजार-हाट के दिन कच्ची बेचते थे। देवू और राजेन इसमें हिस्सा लेते थे। सुकुमार इसका विरोध करता था। सुकुमार सब्जी खरीदने-बेचने का काम करता था। प्रत्येक हाट के दिन वह देवू और राजेन को धमकाता था। एक दिन एक ठेका उसने उठवा दिया हाट से। राजेन उस आदमी को भरोसा देकर लाया था।

सुकुमार तो आग से खेल रहा था। ननी से उसने कहा था—"हम बात करेंगे, बैठक बुलाइये। राजाराम की तीन बीघा जमीन को हमने

कैसे, किस कानून से ग्राम-समाज में शामिल कर लिया ? ननी दा, यह सब इसलिए किया गया कि कानून इसके आड़े नही आता था। मगर सोमराइ अगर मुकदमा करना चाहे तो वह किसके भरोसे ऐसा कर सकता है ? तोताराम और पशुपति कौन हैं ननी दा ? अभी कुछ ही दिन पहले तो वे नेताजी जिंदाबाद, राष्ट्रपिता गाधी जिंदाबाद करते हुए तिरंगा लिए घूमते थे, नही ?"

हाँ, सुकुमार आग से ही खेल रहा था। मन-ही-मन ननी कितना जल गया था ? पर ऊपर से सिर्फ इतना कहा था—"ठीक है, तुम मीटिंग में यह सब रखना।"

सुकुमार आग से खेल रहा था। मीटिंग होगी। सुकुमार ये सब बातें मीटिंग मे कहेगा। ननी पागल हो रहा था। देबू और राजेन उधर क्षुब्ध हो उठे थे। ठेके की दुकान उठा देने पर देबू ने सुकुमार से प्रतिवाद किया था—'गरीब के ऊपर अत्याचार कर रहे हो, अच्छा नही होगा।' संभवतः उनमे थोडी हाथापाई भी हुई थी। इसी का परिणाम थी वह घटना।

जानता था, ननी को लगा था कि ऐसा कुछ होगा। सब-कुछ रोकना क्या उसके वश का है ? वह सुकुमार जैसे लडके को कैसे रोक सकता है, जो कहता है—पार्टी के अंदर से कूडा-कर्कट साफ करना होगा। पार्टी का नाम ऊँचा करना होगा। काम करके दिखाना होगा ननी दा। आदोलन करना होगा, स्वस्थ गणतान्त्रिक आदोलन। आंदोलन नही होगा तो जनता हमें उठाकर फेंक देगी। भारत में जिस दल ने आंदोलन का रास्ता छोडा है, जनता ने उसका साथ छोड़ दिया है।

सोमराइ हेमब्रम को अगर इस मामले मे फँसाया जा सकता तो अच्छा ही होता। राजाराम की विधवा का मुँह इससे बंद किया जा सकता था। वह जली हुई झोपडी के आसपास घास छीलती रहती है। अपने परती खेत के किनारे चुपचाप बैठी रहती है।

वह जमीन जिन्हे दी गई थी, उन्होने भी दखल नही लिया। कहते हैं उस जमीन को सुबासी ने नजर से बाँध रखा है। उस पर जाने से भला नही होगा।

कितने कुसस्कारो से घिरे हैं ये लोग !

राजाराम अपने समाज के कुसंस्कारों को हँसकर उड़ा देता था। पत्नी को लेकर क्या मस्ती करता था। उस साल वर्षा का पानी ताल में भरा हुआ था। राजाराम अपनी पत्नी को पानी मे डुबकियाँ दे रहा था। पति की गर्दन मे झूलती सुबासी की मुक्त उच्छल हँसी गूँज रही थी। हाट-बाज़ार में बहू की कमर मे हाथ डालकर चलता था राजाराम।

एक दिन उसने पत्नी के ऊपर पनिहा साँप छोड दिया था। देखकर ननी की देह मे आग लग गई थी। छि: ! यह क्या तमाशा है ? हमेशा हँसी-दिल्लगी क्या अच्छी लगती है ? प्यार अच्छी चीज है, मगर इतनी निर्लज्जता ! कभी उसकी भी ऐसी उमर थी। वह भी अपनी पत्नी गीता को क्या किसी से कम चाहता था। पर वह गीता को ताल के पानी में डुबकी दे रहा है, उसकी कमर मे हाथ डालकर रास्ते में निकल रहा है, उसके बालों में सरेआम फूल खोंस रहा है—इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता।

सुबासी भी क्या कम है ? तेरी उमर भी क्या है ? तेरी बिरादरी में विधवा-विवाह प्रचलित है। तवन माझी की बेटी होने के कारण तुझे भी दूसरे ब्याह का प्रस्ताव मिला। मगर तेरे मुँह मे एक ही बात कि 'वह बात जो कहेगा उसके मुँह में हँसिया घुसेड़ दूँगी।'

सुकुमार के अलावा किसी नौजवान को वह पास भी नही फटकने देती। सुकुमार की बात सिर्फ सिर झुकाकर मान लेती है।

देबू और राजेन को तलब करता है ननी। विशाल घर से निकलता है, रास्ते में कच्ची शराब चढाता है और दौड़ पड़ता है। उसका मन बहुत प्रसन्न है। वह सोच रहा है—बाबू हस्पताल गये थे सुकुमार को देखने। सुकुमार की तबीयत अच्छी हो रही है। पर वापिस आकर कितने गुस्से में बोले—"उन्हें बुलाकर ला, अभी, तुरत।"

हाँ, हाँ, बाबू, तुम हमारे मालिक को नही चीन्हते। गुस्सा नहीं आयेगा तो नहीं आयेगा। और अगर आ गया गुस्सा तो अच्छों-अच्छों की फूँक सरक जाती है। राजा बाबू आयेंगे तो मैं उनके पैर पूजूँगा। विशाल को तुमने खूब बचाया। किसी को कानों-कान पता नही चला कि सुकुमार को रातों-रात हस्पताल ले जाने की सलाह तुमको विशाल ने ही दी थी।

सुकुमार के लिए मालिक का मन दुखी है और मालकिन का भी। आज मालकिन ने आलू डालकर क्या मछली का झोल बनाया था। मालिक चुपचाप थोड़ा-बहुत खाकर उठ गये। मगर विशाल ने नमक डालकर भात के कई ढेर साफ कर दिये। चाहे कुछ हो, मालिक के घर भात की कमी नहीं होती है, जितनी मर्जी हो ठूँस लो। दो-दो जवानों को खिलाकर पाल रहे हैं। सुकुमार कहता है—"तो कौन-सा अहसान कर रहे हैं। चार आदमियों का काम भी तो ले रहे हैं।"

बात अद्भुत जरूर है पर सच है कि जहाँ देबू है वहीं राजेन। जैसे अंडे के भीतर का पीला और सफेद भाग। वे दोनों बैठे ताश खेल रहे थे।

"मालिक ने बुलाया है," विशाल ने कहा।

"ननी दा ने?"

"हाँ, तुरत आने को कहा है।"

"शहर से लौट आये?"

"कब के!"

"ठीक है, तुम जाओ। कहना, आ रहे हैं।"

"तुरत बुलाया है।"

"कहा न, जाओ, सुन लिया," राजेन गुर्रा उठा। फिर विशाल को चौंकाते हुए बोला—"हुंह्! इनके बाप के गुलाम हैं जैसे।"

विशाल बिना कुछ बोले वापस हो गया मगर राजेन के व्यवहार से उसका मन विचलित हो उठा था। क्या जमाना आ गया है। यह आदमी 'ननी दा'-'ननी दा' करके दाँत निपोरते हुए मालिक के आगे-पीछे घूमता था। अब कैसी बात कर रहा है।

वापस आकर ननी से विशाल ने सिर्फ इतना कहा—"आ रहे हैं।"

घर के अंदर आकर विशाल ने सुदाम से सारी बातें ज्यों-की-त्यों बता दी। फिर काँपते हुए गले से कहा—"बाप रे! कैसा गुर्राया। मेरा तो कलेजा काँप रहा है। कहीं से चुल्लू-भर कच्ची गला तर करने को मिल जाती तो मेरी कँपकँपी बंद होती।"

"तू साला तीन महीने नलहाटी क्या रह आया ये बेहूदा आदत डाल

लिया। बड़ा आया गला तर करने वाला। शराब मिलेगी वहाँ जो गला तर करेगा ! केला खाना है तो बता, बढ़िया सिंगापुरी केला !"

"कहाँ है केला ?"

"बाबू शहर से लाये हैं।"

ननी की बहू गीता सुदाम और विशाल को जो कुछ घर में आता है उसमें से हिस्सा देती है। खुद शायद ही कुछ खाती है। ननी भी कम ही खाता है। जो कुछ घर में आता है उसका बड़ा हिस्सा—ताजा न सही तो बासी ही सही—इन्हीं दो नौकरों को प्राप्त होता है।

फिर भी सुदाम चोरी करता है। मुर्गी या बतख के अंडे छुपाकर रखता है और मौका मिलने पर उबालकर खाता है। एक बार जलेबी चुराकर खाते हुए पकड़ा भी गया था। फिर भी वह चोरी करता है। चोरी करके खाने में मजा आता है उसे।

इस तरह उसे लगता है कि उसने मालिक से किसी अज्ञात दुश्मनी का बदला ले लिया है। कभी-कभी आँगन में सूखने के लिए डाले गये धान को बारिश में भीगते देखकर भी सुदाम चुपचाप खड़ा रहता है या पालक की बयारी में बकरी को मुँह मारते देखकर भी उसके मुँह से आवाज नहीं निकलती।

"ऐसा क्यों करता है रे ?" पूछने पर उसका एक सीधा जवाब होता है—"क्या बताऊँ। लगता है उस समय मेरे सिर पर कोई भूत सवार हो जाता है।"

सुदाम शिक्षित है। उसके पास दो किताबें हैं—'देशप्राण वीरेन्द्र शासमल' और 'घरेलू नुस्खे'। समय मिलने पर वह प्रायः इनमें से एक को खोलकर पढ़ता पाया जाता है। अथक कोशिश करके भी ननी उसे पारटी साहित्य पढ़वाने में सफल नहीं हुआ था। अब केला खाते-खाते सुदाम विशाल को उपदेश दे रहा है।

"हमारे मालिक और राजा बाबू बहुत दिनों से बहुत काम करके पारटी में ढुके हैं। है कि नहीं ?"

"सही है।"

"तुम्हारे देबू और राजेन क्या है ?"

"क्या है ?"

"वे तो पारटी में गुड़ खाने के लिए घुमने वाले चीटे हैं। अभी कुछ दिन पहले निरंजन बाबू की पारटी में थे। उनका मामा ठेकेदार है। उससे पैसे लेकर कुली-मजदूरो की पिटाई करते थे। वहाँ खा-पीकर चिकना कर दिया तो हमारे मालिक की पारटी मे घुसे हैं खाने-पीने के लिए। ऐसे लोगों के मुँह से तू क्या मीठी बोली सुनना चाहता है ?"

"ऐसे लोगों को मालिक बर्दाश्त क्यों कर रहे हैं ?"

"आहाहा ! नदी से बुलाकर घडियाल को लाये हैं मालिक, पालना-पोसना तो पडेगा ही। क्यों ? और फिर तुम्हारे पशुपति बाबू, तीताराम बाबू !" 'बाबू' शब्द को एक विशेष ढंग से बिगाड़कर बोलता है सुदामा।

"कल तक यही सब बाबू लोग निरंजन मैती के दायें-बायें हाथ थे। अब पैसे की धार इधर मुड गई है तो वे ही हमारे मालिक के दायें-बायें हो गये हैं।"

"सुना है उन्होने ही सुकुमार दादा को मारा है ?"

"भइया, तुम्हारी देह जैसी है, बुद्धि तो वैसी है नही। किसने किसको मारा इससे तुम्हें और हमे क्या लेना-देना है ? हो सके तो जाकर गोपाला मेढक मारकर लाओ।"

"गोपाला मेढक कहाँ मिलेगा ?"

"बताता हूँ।"

"मेंढक से क्या होगा ?"

"रूपलाल ने तो साफ-साफ कह दिया है कि पानी के लिए कोई पूजा-पाठ नही करेगा। पानघाट के अजित बाबू ने कहा है एक गोपाला मेढक पर पाँच रुपया मिलेगा। पता नही मेढक से कोई पूजा-पाठ करवाये।"

"गीदड मारने वाला दल आया तो गाँव में गीदड़ खतम हो गये। लगता है अब मेंढक खतम होने की बारी है।"

"हो गोबरधन तुम ! पानी कहाँ है जो मेंढक होगा। लगता है राजाराम की बहू पगला गई है। अकेली बैठी राजाराम के साथ बात करती है, हँसती है। मेढक का मांस खाने से माथा ठडा रहता है। होगा ही। पानी का जीव है। लवन माझी भी मेढक खोज रहा है, मगर मिल

नही रहा है।"

विशाल बहुत कातर होकर कहता है—"हाँ भाई सुदाम, लगता है परलय होने वाला है। जवान लडकी पगला रही है। बेचारी को खाने के लिए एक मेंढक भी नही जुट रहा है। ओह! देश की हालत सचमुच खराब हो गई है।"

विशाल की बात सुनकर सुदाम एकदम खीँखिया उठता है। "गधे हो, एकदम बौड़म हो तुम। जवान लड़की को खाने के लिए मेढक नही मिलता इससे देश की हालत का पता चलता है तुम्हें। सूखा पड़ा हुआ है, एक बूंद पानी नही कही। जमीन की दरकी हुई छाती देखकर कुछ समझ में नही आता।"

विशाल मुँह फाड़कर देखता है। उसकी समझ में नही आ रहा है कि सुदाम इतना नाराज क्यों हो गया। हताश होकर वह सोचता है, सचमुच बहुत बुरा वक्त आ गया है। कही से दो बूंद कच्ची शराब मिल जाती तो बहुत अच्छा होता। ये सब बातें जो अभी बड़ी गोलमाल लग रही है, तब समझ मे आ जातीं।

देबू और राजेन प्रायः एक घटे बाद आते हैं। उनके चेहरो पर ऐसा भाव है जैसे वे किसी निर्णय पर पहुँच गये हों। उन्हें देखकर ननी की समझ में ये नही आ रहा है कि वह बात कैसे शुरू करें। वह बहुत ही गुस्से में हैं।

"ये सब बातें क्यों उठ रही है?"

"कौन-सी बातें, ननी दा?"

"कि मैंने सुकुमार को मारने के लिए तुम लोगों को आदेश दिया है।"

"क्या सुकुमार को हम लोगों ने मारा है?"

"सभी तो यही कह रहे है।"

"आप क्या कह रहे हैं?"

"मैं? मैं क्या कहूँगा?"

"जिस दिन उसे मार पड़ी थी उस दिन आप कह रहे थे कि सोमराइ ने उसे मारा है।"

"ऐसा ही लगा था।"

"आज क्या कुछ और लग रहा है?"

"तुम लोग कहना क्या चाहते हो?"

राजू मारपीट और उस्तादी करने में बहुत ही दक्ष था। अब उसने अपना असली चेहरा सामने कर दिया। दबी आवाज़ में बोला—"उस दिन क्यो? आप तो पहले से जानते थे कि उसके साथ हमारा बन नहीं रहा है।"

"तुम लोग शराब के ठेके से पैसा वसूलते थे?"

"आप लोग लाइसेंस देते हैं···देखिये यह लाइन आप नही समझेंगे। शराब के ठेके से हम पैसा नही वसूलेंगे तो कोई और वसूलेगा।"

"कमाल है!"

"कमाल तो है ही। कोई खराब इंतजाम तो नहीं है। हाट-बाजार में जो लोग शराब बेचते हैं उनके ऊपर भी इस तरह से एक दबाव रहता है। मगर आपका सुकुमार तो शराब के कारोबार का ही विरोधी है। हम उसे बखरा देने को राजी थे वह भी नही लेता था।"

"छि: देवू! छि. राजेन!!"

"अरे गंदे लोग है यह क्या आपको मालूम न था? आपने सुना नहीं था हमारे बारे मे?"

"सोचा था सुधर गये होगे।"

"सुधरेंगे क्या देखकर, सर? अभी तो असल में एक ही जमात हैं। कोई थोड़ा कम, तो कोई थोडा ज्यादा।"

"झूठ बात है। हम गरीब को कभी नही ठगते।"

"रहने दीजिए सर, ये सब बातें कही और कहिएगा।"

"क्या कहना चाहते हो तुम?"

"एक आप नही करते होगे। सदर दरवाजा बंद होने का मतलब यह तो नही है कि पिछला दरवाजा भी बंद हो। स्कूल मे मास्टरी की नौकरी के समय सुना था कि यहाँ से चिन्मय बाबू सदर में व्यवस्था करने गये थे। पैसे का लेन-देन हुआ था। पशुपति बाबू आज पंप बैठाते है, कल वह खराब हो जाता है, परसो उसकी मरम्मत शुरू हो जाती है। क्या उनका

कोई विल रोका गया है ?"

"इतने दिनों से जड़ जमाये हुए करप्शन को एक दिन में नही खतम किया जा सकता है।"

"सर, हम लोगो ने सोचा था आप लोगों से कुछ सीखेंगे, मगर नजदीक आकर देखा कि आप लोगो के बहुत-से काम जरूर अच्छे है, मगर आप लोग जितना गरजते हैं उतना बरसते नही है। और फिर सभी दो पैसा कमाने की कोशिश कर रहे हैं, न कि सिर्फ हम।"

"मगर हम यहाँ किसी और चीज के बारे मे बात कर रहे थे।"

"ओह, सुकुमार की बात !" देबू थोडी देर अजीब-सी दृष्टि से ननी को देखता रहा। फिर बोला—"नही, आपने सुकुमार को मारने के लिए नहीं कहा था, फिर भी आपकी बात मैं समझ नही पा रहा हूँ।"

"क्यों ?"

"आप जानते है कि सुकुमार के ऊपर हमें गुस्सा था। जिस दिन यह घटना घटी उस दिन उसके साथ हमारी मारपीट की बात भी आप जानते हैं।"

"बाद मे पता चला।"

"हम लोगों ने उसे मारा है यह तो आप उसी दिन जान गये थे ननी दा !"

"मैंने खुद ही कहा था सर !"

"मुझसे ?"

"नही, तोताराम बाबू से।"

ननी का सिर घूमने लगता है, बड़ी मुश्किल से वह अपने को सँभालता है। तो इसका मतलब है तोताराम ने ही यह बात फैलायी है। किसी भी बात को फैलाना बहुत आसान है। बस इतना कहना होगा, 'अरे भाई सुना तुमने, लोग कह रहे हैं देबू और राजेन ने सुकुमार को मारा है। किसी से कहना नही।' और 'लोग कह रहे हैं कि ननी बाबू ने ही देबू और राजेन से…।'

निश्चय ही यह तोताराम के दिमाग की उपज है। ननी के पाँवों के तले की जमीन को खोदो, उसे अतल गर्त में डालो। फिर उसकी

जगह अपने आप तीताराम मंडल आ जायेगा। उस दिन की भयंकर घटना की खबर इन लोगों ने तीताराम को यह मानकर दी होगी कि यह खबर ठीक जगह पहुँच जायेगी।

"ठीक है। तुमने तीताराम को वता दिया। मगर जब मैं सोमराइ को अपराधी मानकर बात कर रहा था, तब तुम लोगों ने क्यों नहीं कहा कुछ?"

देबू अवाक् होता है। अत्यंत अवाक्॥

"इसलिए कि हम यह समझ रहे थे कि आप अपने दल का आदमी मानकर हमें बचा रहे हैं।"

"नहीं, ननी दलुई उस तरह का आदमी नहीं है।"

राजेन ने मुस्कुराते हुए कहा—"हम क्या समझें, बताइये? सोमराइ इस मामले में दूर से भी जुड़ा हुआ नहीं है, यह जानते हुए भी आप उसका नाम इस मामले में ले रहे हैं···।"

ननी समझ रह था इस तरह की बातचीत का कोई फायदा नहीं है। सोमराइ को फँसाने की चेष्टा वर्तमान ग्राम बाग्ला की एक राजनीतिक चाल थी। शत्रु को पूरी तरह नष्ट कर देना होगा—इसीलिए सोमराइ का नाम इस घटना के साथ जोड़ा है ननी ने।

सोमराइ हेमब्रम बजाते—खुद ननी का शत्रु नहीं है! ऐसा गरीब युवक ननी का शत्रु होने लायक भी नहीं है। राजाराम ही मुख्य लक्ष्य था। राजाराम गजानन बेरा की पारटी करता था। उस बार गजानन का दल वाम फ्रंट में शामिल नहीं था। उनका कोई संगठन भी नहीं था। पर गजानन वेरा ने एक जमाने में एक जबर्दस्त किसान आंदोलन का नेतृत्व किया था, इस कारण गजानन के अपने गाँव मे उनके कुछ समर्थक थे।

राजाराम सिर्फ अच्छा कार्यकर्ता था, इतना ही नहीं, दोनों पक्ष के संथालों पर उसका अच्छा असर था। वह एक भयकर वात बोलता था—"अपनी-अपनी पारटी करो। पर अपनी एकता को अपनी बिरादरी की एकता को मत तोड़ो।"

संथालो के बाहा, करमा आदि उत्सवो में ननी भी गया है और उनका लुत्फ उठाया है। उसने भी पहले मतव्य व्यक्त किया था कि संथाल भले

ही गरीब है, पर उनकी एकता और स्वाभिमान बहुत ही प्रशंसनीय है।

पर बाद में ननी को अपनी इन धारणाओं और मंतव्यों का परित्याग करना पड़ा था। अपनी सभ्यता-संस्कृति और 'हम सथाल हैं' के आधार पर अगर वे संगठित होते हैं तो इसका फल बुरा होगा। 'क' दल के लोग 'ख' दल के विरोधी हैं, पर अपनी बिरादरी के स्तर पर उनमे पूर्ण एकता है, यह भी तो ठीक नहीं है।

क्यों ठीक नहीं है इसे लेकर ननी ने कभी ज्यादा सोच-विचार नहीं किया और न इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर ही उसे मालूम है। मगर राजाराम ने उसके मन को भयंकर आघात दिया था।

वह एक अद्भुत दिन था। ऐसा ही कोई और दिन राज्य में कहीं मनाया गया था, इसका पता ननी को नहीं है।

मूलतः ननी की कोशिश से माझीपुरा के कुछ लोगों को अपनी रिहाइशी ज़मीन का पट्टा और पाँच डेसिमल खेती की जमीन बाँटी गई थी। इसके लिए सथाल पुरा में नगाड़ा, मादल आदि के साथ बड़ी धूमधाम हो रही थी, जिन्हें मिला था वे ननी के समर्थक थे यह जितना सच है, उतना ही सच यह भी है कि जिन्हें मिला था वे सचमुच गरीब थे।

राजाराम ने दूसरे लोगों से कहा था—"भाई लोगो, सभी को ज़मीन का पट्टा नहीं मिला, कुछ लोग रह गये हैं। मगर जिन्हें मिला है वे भी हमारी जाति-बिरादरी के हैं, अपने लोग है और वे भी गरीब हैं। है कि नहीं ? तो फिर उनकी खुशी में हम शामिल क्यों न हो ? चलो हम भी आनंद करें।"

आनंद करने, गाने-बजाने का राजाराम के पास अशेष उत्साह था। राजाराम के बिरादरी वाले संथाल परगना से उजाड़े गये तो आसाम के चाय बागानों में जा बसे; फिर वहाँ से उजाड़े गये तो सुंदरवन में आबाद हुए। वहाँ से भी उजाड़े गये तो इस जिले में एक थाने से दूसरे थाने में खदेड़े जाते हुए अब इस गाँव में आ बसे है—यही उनका संक्षिप्त इतिहास है।

ये भी एक प्रकार के शरणार्थी हैं, मगर इनके उजाड़े जाने को लेकर किसी ने हाहाकार नहीं किया, कोई शरणार्थी शिविर नहीं खोला गया,

जगह अपने आप तीताराम मंडल आ जायेगा। उस दिन की भयंकर घटना की खबर इन लोगों ने तीताराम को यह मानकर दी होगी कि यह खबर ठीक जगह पहुँच जायेगी।

"ठीक है। तुमने तीताराम को बता दिया। मगर जब मैं सोमराइ को अपराधी मानकर बात कर रहा था, तब तुम लोगों ने क्यों नहीं कहा कुछ?"

देवू अवाक् होता है। अत्यंत अवाक्॥

"इसलिए कि हम यह समझ रहे थे कि आप अपने दल का आदमी मानकर हमें बचा रहे हैं।"

"नहीं, ननी दलुई उस तरह का आदमी नहीं है।"

राजेन ने मुस्कुराते हुए कहा—"हम क्या समझें, बताइये? सोमराइ इस मामले में दूर से भी जुड़ा हुआ नहीं है, यह जानते हुए भी आप उसका नाम इस मामले में ले रहे हैं...।"

ननी समझ रहा था इस तरह की बातचीत का कोई फायदा नहीं है। सोमराइ को फँसाने की चेष्टा वर्तमान ग्राम बांग्ला की एक राजनीतिक चाल थी। शत्रु को पूरी तरह नष्ट कर देना होगा—इसीलिए सोमराइ का नाम इस घटना के साथ जोड़ा है ननी ने।

सोमराइ हेमब्रम बजाते—खुद ननी का शत्रु नहीं है! ऐसा गरीब युवक ननी का शत्रु होने लायक भी नहीं है। राजाराम ही मुख्य लक्ष्य था। राजाराम गजानन बेरा की पारटी करता था। उस बार गजानन का दल वाम फ्रंट मे शामिल नहीं था। उनका कोई संगठन भी नहीं था। पर गजानन बेरा ने एक जमाने मे एक जबर्दस्त किसान आंदोलन का नेतृत्व किया था, इस कारण गजानन के अपने गाँव मे उनके कुछ समर्थक थे।

राजाराम सिर्फ अच्छा कार्यकर्ता था, इतना ही नहीं, दोनों पक्ष के संथालो पर उसका अच्छा असर था। वह एक भयंकर बात बोलता था—"अपनी-अपनी पारटी करो। पर अपनी एकता को अपनी बिरादरी की एकता को मत तोड़ो।"

संथालों के बाहा, करमा आदि उत्सवों मे ननी भी गया है और उनका लुत्फ उठाया है। उसने भी पहले मंतव्य व्यक्त किया था कि संथाल भले

ही गरीब है, पर उनकी एकता और स्वाभिमान बहुत ही प्रशंसनीय है।

पर बाद में ननी को अपनी इन धारणाओं और मंतव्यों का परित्याग करना पड़ा था। अपनी सभ्यता-संस्कृति और 'हम संथाल हैं' के अधार पर अगर वे संगठित होते हैं तो इसका फल बुरा होगा। 'क' दल के लोग 'ख' दल के विरोधी हैं, पर अपनी बिरादरी के स्तर पर उनमें पूर्ण एकता है, यह भी तो ठीक नहीं है।

क्यों ठीक नहीं है इसे लेकर ननी ने कभी ज्यादा सोच-विचार नहीं किया और न इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर ही उसे मालूम है। मगर राजाराम ने उसके मन को भयंकर आघात दिया था।

वह एक अद्‌भुत दिन था। ऐसा ही कोई और दिन राज्य में कहीं मनाया गया था, इसका पता ननी को नहीं है।

मूलतः ननी की कोशिश से माझीपुरा के कुछ लोगों को अपनी रिहाइशी जमीन का पट्टा और पाँच डेसिमल खेतों की जमीन बाँटी गई थी। इसके लिए संथाल पुरा में नगाड़ा, मादल आदि के साथ बड़ी धूमधाम हो रही थी, जिन्हें मिला था वे ननी के समर्थक थे यह जितना सच है, उतना ही सच यह भी है कि जिन्हें मिला था वे सचमुच गरीब थे।

राजाराम ने दूसरे लोगों से कहा था—"भाई लोगो, सभी को जमीन का पट्टा नहीं मिला, कुछ लोग रह गये हैं। मगर जिन्हें मिला है वे भी हमारी जाति-बिरादरी के हैं, अपने लोग हैं और वे भी गरीब है। हैं कि नहीं? तो फिर उनकी खुशी में हम शामिल क्यों न हों? चलो हम भी आनंद करें।"

आनंद करने, गाने-बजाने का राजाराम के पास अशेष उत्साह था। राजाराम के बिरादरी वाले संथाल परगना से उजाड़े गये तो आसाम के चाय बागानों में जा बसे; फिर वहाँ से उजाड़े गये तो सुंदरवन में आबाद हुए। वहाँ से भी उजाडे गये तो इस जिले में एक थाने से दूसरे थाने में खदेड़े जाते हुए अब इस गाँव में आ बसे हैं—यही उनका संक्षिप्त इतिहास है।

ये भी एक प्रकार के शरणार्थी हैं, मगर इनके उजाड़े जाने को लेकर किसी ने हाहाकार नहीं किया, कोई शरणार्थी शिविर नहीं खोला गया,

केंद्र-राज्य के बीच पैसों का खेल नही खेला गया। ये दूसरे तरह के शरणार्थी हैं, पर हैं शरणार्थी ही।

उस दिन राजाराम रघू वगैरह के पास गया था। आज पाँवों के नीचे मिट्टी है, कल नहीं है, ऐसे इतिहास की सतान राजाराम भीतर-बाहर से पूरी तरह शुद्ध सथाल बना रह गया था। इसीलिए उसने रघू वगैरह से कहा था— तुम्हारी खुशी मे हम भी खुशी मनायेंगे।

पहले तो रघू चौंका था, फिर शराब के नशे ने चमत्कार कर दिखाया था और वे सब एकसाथ नाचने-गाने लगे थे। कुछ देर बाद राजाराम ने प्रस्ताव किया था—चलो, गाँव-भर में घूम-घूमकर नाचें-गायें।

नाचते-गाते वे ननी के दरवाज़े पर भी गये थे। रघू की बहन का लाल रिबन माथे पर बँधा हुआ और गले में मादल झूलता हुआ। राजाराम को देखकर ननी स्तंभित हो उठा। शराब के नशे में राजाराम की ज़ुबान लड़खड़ा रही थी और आवाज़ भी साफ नहीं निकल रही थी। फिर भी उसने जो कहा उसका आशय था—ननी बाबू, कल से वे तुम्हारे दल के हो जायेंगे। मगर तुमने बहुत अच्छा काम किया है बाबू! इसीलिए हम भी खुशी मे शामिल हो गये। चाहे जो पारटी करो, माझीपुरा की एकता नही टूटनी चहिए। इसे मैं तोड़ने नही दूंगा।

इसके बाद ननी ने रघू से कहलाया कि राजाराम उसके दल में आ जाय। लकड़ी फाड़ते-फाडते रुककर माथे का पसीना पोंछते हुए कुल्हाड़ी के सहारे खड़े होकर राजाराम ने पूछा—"बीड़ी है?"

"हाँ है। यह लो।"

"तू जो कह रहा है, इसे मैं समझता हूँ, रघू! इस पारटी का कोई भरोसा नही, पर जिस पारटी का ऐसा हाल हो कि अब टूटने ही वाली है—उसे छोड़ देना पता नहीं क्यों मुझे बेईमानी-सा लगता है। आज अगर मैं राजाबाबू को छोड़कर ननी बाबू के पास चला जाऊँ तो इसका मतलब है मैं बेईमानी कर रहा हूँ। फिर कल को ननी बाबू को छोड़कर निरंजन बाबू के दल में भी तो जा सकता हूँ। फिर मैं सच्चा कहाँ रहा, बता?"

निश्चय ही यह कोई राजनीतिक तर्क नही है। इसे संथाल तर्क या

राजाराम तर्क कह सकते हैं। जो भी हो अभी रघू कट्टर राजनीतिक नहीं हो पाया है। उसके संथाल मन को राजाराम का तर्क न्यायोचित लगता है। वही बात वह लौटकर ननी को बताता है और सांत्वना देते हुए वादा करता है कि उसे—अपनी पारटी करने दीजिए—मैं अपनी करूँगा। इसमें चिंता की कोई बात नहीं है। माझीपुरा की एकता को हम बनाये रखगे।

इस प्रतिज्ञा से ननी बहुत घबड़ा उठता है। गाँव में व्यक्तिगत रूप से वह, गजानन और निरंजन तो एक होकर नहीं चल रहे हैं, केवल मौखिक भद्रता और सामाजिक शिष्टाचार की रक्षा करके चल रहे हैं।

जो भी हो, वे नेता हैं। मगर उनके कार्यकर्ता आपस में एकता कर लें तो कैसे काम चलेगा? राजाराम अगर तले मे छेदवाली यह नाव छोड़कर ननी और तेज़ रफ्तार वाली स्टीम-लांच में चढ जाता, तो ननी को परेशानी नहीं होती।

वह छेदवाली नाव मे भी रहेगा और माझीपुरा एकता भी बनाये रखेगा—तब तो व्यक्तित्व और स्वभाव के कारण सामाजिक नेतृत्व उसी के हाथ में चला जायेगा।

फिर उसके अनुयायी अगर उसके व्यक्तिगत नेतृत्व के साथ ही उसकी राजनीतिक पारटी को भी स्वीकार कर लें तो?

ननी को लगा था कि रघू, चिंतामणि, लखन और उसके लडके—ये सब बडे अनभिज्ञ है। अपने आचार-व्यवहार में पर्याप्त राजनीतिक नहीं हो पाये हैं।

उसने अपने अनुयायियों की तरफ इसके बाद से पूरा-पूरा ध्यान देना शुरू किया। बहुत तेज़ी से उनमे परिवर्तन आने लगे। माझीपुरा मे एक की जगह दो-दो करम पूजाएँ हुईं। बाँधना, सहराय और बाहा पर्व भी अलग-अलग किये गये। लड़कियो ने नाराज़ होकर सारहुल नाचने से इनकार कर दिया। कहा—सभी लड़कियाँ एकसाथ न नाचें तो त्यौहार मनाने का फायदा क्या?

राजाराम ने इन बातों को लेकर बहुत तूफान मचाया था। नहीं, यह उसे अच्छा नहीं लग रहा है। ससुर से भी उसने कहा था—हमे तो जन्म से मरण तक अपने समाज की ज़रूरत पड़ती है।

यह सब दुःख बीच-बीच मे खड़ा सरेन के सामने प्रकट करता था राजाराम। खड़ा सरेन शिक्षित है। वह राजाराम को संथालो के इतिहास के बारे मे बताता था। राजाराम गाँव मे वापिस आकर कहता—"कितनी ही जगहो पर घूमते-घूमते हम यहाँ पहुँचे हैं। अपनी एकता को क्यों तोड़ते हो रघू! चलो, हम भगनाडीही घूमकर आयें, मन को शांति मिलेगी।"

हताश ननी उधर रघू को समझाता है—"सिधूकानू दिवस का आयोजन हमी ने किया है। तुम लोग भी उसमे हिस्सा लेते हो? राजाराम क्यों जाना चाहता है भगनाडीही? वह जरूर कोई झमेला फैलाना चाहता है।"

उन्ही दिनो जोतबदो से ऊपर जो जमीनें थीं उनका अधिग्रहण शुरू हुआ। धनी ज़मीदारो के पास तो ऐसी कोई ज़मीन ही न थी। उन्होने अपनी फालतू ज़मीनो की व्यवस्था कर ली थी। तीताराम, पशुपति वग़ैरह ने अपनी ज़मीनों का पक्का इंतजाम कर लिया था और नये उत्साह से पर्चा, दलील, भूमि-सुधार कार्यालय आदि मे मन लगाए हुए थे।

ननी के स्वर्गीय पिता अघोर बाबू ने जो ज़मीन राजाराम और सोमराइ के पिता निरापद को बेची थी, उस ज़मीन को किसी अद्भुत कौशल से तीताराम ने अघोर दलुई की अधिग्रहण योग्य ज़मीन करार दे दिया। उस ज़मीन को बेचने का अधिकार अघोर बाबू को न था इसलिए उस ज़मीन को अधिग्रहीत किया जायेगा।

ज़मीन तीन बीघा थी। निरापद, उसकी स्त्री, राजाराम, सुवासी, उनके दो बच्चे और सोमराइ—ये सात आदमी उस ज़मीन से पल रहे थे। एक दिन जो ज़मीन ऊसर थी, आज वह बेहद उपजाऊ और सुंदर हो उठी थी।

उनकी ज़मीन ले ली जायेगी और गरीबों मे बाँटी जायेगी इस बात का राजाराम वग़ैरह ने विश्वास ही नही किया। यह भी कोई विश्वास करने योग्य बात थी।

चिंतामणि से इस बात का पता कुसुमी को लगा। चिंतामणि ने कहा था—"बहनोई-बहनोई करके जो पगलाई रहती है, अब देखना ननी बाबू तेरे बहनोई को क्या तमाशा दिखाते हैं। राह का भिखारी बना कर छोड़ देंगे। अब गजा बाबू की टें-टें काम नही देगी।"

चिंतामणि के प्रेम को फिर भी कुसुमी प्रश्रय नहीं देती है। वह घास काट कर आ रही थी। सिर पर हरी घास का बोझा। कपड़ा घुटनों तक उठा हुआ और पल्लू कमर में कसा हुआ। माथे पर घास झूली पड़ रही है। उसके हरे रंग के बीच से कुसुमी का काला माथा और काली आँखें चमक रही हैं। कुसुमी को देखकर चिंतामणि का दिल फिर उछलता है। कुसुमी रे कुसुमी ! तू कब मेरी होगी। अब सहा नहीं जाता मुझसे।

कुसुमी उसकी आँखों की भाषा पढ़कर भी चिंतामणि की मुँह की बात का जवाब देती है।

"क्यों ? क्या किया है मेरे बहनोई ने ?"

"हमारे दल में क्यों नहीं आया ?"

"मैं क्या जानूँ ?"

"आ जाता तो बच जाता।"

"तो अब क्या मर गया है ?"

"अब मरेगा।"

"ओह ! उसे कौन मारने वाला है ?"

"वही बाबा मोशाय मारेगा, जो सबको मारता है।"

"कैसे ?"

"जमीन छीन कर।"

"कौन जमीन छीनेगा ? बाबू लोग ?"

"और कौन ?"

"तू कल का भिखारी बाबू लोगों की फेंकी हुई एक टुकड़ा जमीन पा गया तो संथालों के सर्वनाश की बात हँस-हँस कर सुना रहा है ? बहनोई को कहूँगी कि बाबू लोग जैसा करते हैं वैसा ही करे।"

"क्या करते हैं बाबू लोग ?"

"बाबू लोगों ने कब के मरे हुए आदमियों और पीतल के देवता के नाम पर जमीन नहीं लिखा रखी है ?"

"मैं वह सब नहीं जानता, पर तेरी जमीन जब्त होगी।"

"करे न। इतना आसान नहीं है।"

"आसान ! इतना ही आसान है। कानून से तो कोई चलता नहीं।

तीताराम ने कानूनगो से प्रस्ताव किया तो उस भोदू ने साफ मना कर दिया। कहा—"यह भी कहीं होता है ? मैं नहीं कर सकता।"

"अरे ! मैं कह रहा हूँ।"

"कोई कहे, मैं नहीं कर सकता।"

"देखिए, आप हमारे साथ असहयोग कर रहे हैं !"

"हाँ, कर रहा हूँ। इस तरह के काम में आगे भी सहयोग नहीं करूँगा।"

"नतीजा जानते हैं ?"

"जानता हूँ। बदली हो जायेगी और क्या ? वह तो लगातार हो ही रही है।"

"आपको कौन 'सपोर्ट' कर रहा है जो ऐसे बोल रहे हैं ?"

"मजेदार बात पूछी आपने। आपकी और आप जैसे लोगों को कौन 'सपोर्ट' कर रहा है, सभी जानते हैं। मगर आपकी समझ मे नहीं आ रहा है कि एक मामूली कानूनगो 'पून्या सेटिलमेंट कैंप' में बैठकर किसके ज़ोर पर आपको 'ना' कह रहा है। तीताराम बाबू, मैं पूर्वी बंगाल का आदमी हूँ। शिक्षा वीरभूम मे पाई है। आप तो जानते हैं पूर्वी बंगाल की ज़िद को। वही ज़िद कर रही है मेरी सपोर्ट। समझ गये ? अब तशरीफ ले जाइये।"

"आँ ! क्या कहा आपने।"

"अब आप जा सकते हैं।"

"मैं···देख लूँगा···"

"कुछ नहीं कर सकते आप। जाइए। आप आज हैं कल नहीं होंगे। मैं अभी तेरह साल इसी कुर्सी पर और रहूँगा।"

कानून ! कानून भी अजीब शै है। एक ओर कानून है तो दूसरी ओर कानून को फाँकी मारने और उससे बचने के गलियारे भी हैं। कानून के रास्ते बचाव पाना राजाराम जैसों के लिए मुमकिन नहीं है। ग्राम बांग्ला में कानून, न्याय, धर्म और विचार बहुत दिनों से खरीद-फरोख्त की चीजें हो गयी हैं। और जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं बुढ़ाती हुई वेश्या की तरह उनका दाम घटता जा रहा है।

कानून को कौन पकड़ सकता है ? भूमि-सुधार कानून की कितनी

कुछ सोच नही पा रहा है। खून-खराबा उसे पसद नही है। बाजार मे मुर्गी काटते देखकर भी उसे तकलीफ होती है। वैसे भी खून-खराबा किसे अच्छा लगता है? मगर यह एक कड़वा सच है कि ग्राम बांग्ला की शांति-मूर्ति में आजकल खून लग गया है। जरूरत पडने पर आदमी क्या नही करता है!

रघू के हाथ मे जो हँसिया खीचकर सुवासी ने मारा था उसकी चोट से रघू अवसन्न हो गया था। मगर इस घटना ने शेष लोगों को सक्रिय कर दिया था। मार-पीट पूरी गति से शुरू हो गई थी। कौन किसको मार रहा है, कौन मारा गया, इसको देखने वाला कोई न था। बटखरा किसका था? तोताराम का धान तौलने का बटखरा था शायद। उसी के आघात से राजाराम की मौत हुई? यह बात तो शव-परीक्षा से ही जानी जा सकती है।

रघू के हाथ की चोट को माफ नही किया गया। शोक से विह्वल, *विमूढ लवन माझी, सोमराइ और निरापद राजाराम के शव को बैलगाड़ी* मे लादकर शहर गये। उस मूल्यवान शव का पहरा दे रहे थे स्थानीय थाने के सिपाही। 'अज्ञात आततायी द्वारा निहत' राजाराम के शव को जब डाक्टर की छुरी दो-फांक कर रही थी, तब सुवासी और उसकी सास, सुवासी के पिता लवन माझी के घर पर छाती फाड़कर रो रहे थे, तभी राजाराम के मकान मे 'न जाने कौन से' लोगों ने आग लगा दी। यह सब कुछ निरापद की संथाल बुद्धि के लिए उतना ही दुर्बोध था जितना निरक्षर व्यक्ति के लिए किसी पुस्तक के पृष्ठ।

"क्या राजाराम का मकान भी गजाबाबू की पारटी में था?"

"हाँ, लवन तुम यह सब बात क्या समझो।"

"तू यहाँ रहेगा तो तुझे भी मार देंगे। तू अकेला रह गया है। गाँव छोड़ दे। इसी मे भला है।" लवन अपनी अर्थ-गंभीर और दुखी आँखो में ममता भरकर सोमराइ की ओर देखता है।

"भाग जाऊँ?"

"बेटे, हमारे कुल मे तुम्ही एक बचे हो।"

ग्राम बांग्ला के इतिहास के इन पृष्ठों को किसी ने नही लिखा। इस

इतिहास में एक भरापूरा घर जलकर राख की ढेर बन जाता है। उस राख की ढेर मे, शून्य गोशाला मे, आँगन मे खडे हुए सहजन के पेड़ में, झूलती हुई राजाराम की लाठी में यह इतिहास लिखा हुआ है और सबसे अधिक स्पष्टता के साथ लिखा हुआ है सोमराइ के उस अंतिम वक्तव्य मे जो घर छोडने के पहले उसके मुंह से निकला था—अगर मेरा जला घर कभी मुझे फिर मिला तो मैं वहाँ नयी हांड़ी मे भात पकाकर खाऊँगा।

जोर देकर ननी अपने को अतीत से छुडाकर वर्तमान मे ले आता है। देबू और राजेन! राजेन और देबू!

राजेन और देबू थोड़ा आश्चर्य से ननी का मुंह देख रहे थे। सोच रहे थे—गुरु, पता नही बंद कुल्फी होकर क्या सोच रहा है? यह समय बहुत मूल्यवान है। बैठे-बैठे आकाश-पाताल सोचने का नहीं है यह समय।

"राजेन! देबू! तुम लोगों के खिलाफ पारटी से कारवाई की जायेगी। हाँ, इस समय ननी दलुई की आवाज वैसी ही है जिसे सुनकर शरीर के रोंगटे खडे हो जाते हैं, मगर राजेन समझ गया है कि इस समय डरने मे उसका काम नहीं चलेगा।"

"हमारे खिलाफ कारवाई करेंगे? जनता से पिटवायेंगे? नहीं, ननी दा, यह सुअवसर आपको हम नहीं देंगे। हम पहले ही आपका राज छोडकर जा रहे हैं। अच्छा हो, आप भी चुप रहें। नहीं तो हम माइक पर प्रचार करेंगे कि आप ही ने सब करवाया है और सोमराइ को बनावटी केस में फँसाना चाहते हैं।"

राजेन और देबू चले गये। अब कोई और खेत चरेंगे। और किसी बड़े आदमी का आश्रय ढूंढ़ेंगे। राजेन का मन बहुत उदास है। उसे अपने से नफरत-सी हो रही है। मन-ही-मन वह दुखी हो रहा है कि लोग उसे बुरा बनाये रखने में ही अपना भला देखते हैं। उसे सुधरने का मौका देना नहीं चाहते।

"गजानन बेरा के पास चलेगा?"

"अरे धुत्! वह भी बडा घुग्घू है। राजाराम के खून हो जाने के बाद एक बार खबर लेने तक नहीं आया। सभी एक समान है। कोई इधर है कोई उधर है। बुरे तो सिर्फ हम हैं।"

भयंकर क्रोध से राजेन ननी के मकान के बाहर बने बाँस के गेट को लात मारकर तोड़ते हुए बाहर निकल आया। "बात फैलने के पहले ही खिसक लेना होगा।" राजेन ने कहा।

देबू झिक-झिक करके हँसते हुए बोला—"अरे, हमारे खिसक लेने से कितना फर्क पड़ेगा? तीताराम, पशुपति वगैरह तो यहीं हैं। सारा रस चूसकर तभी बाहर निकलेंगे।"

"हँस मत। पता है तुझे पंचायत में कितना पैसा आया है?"

"दुर-दुर! पंचायत क्या एक ही है। चल, बांका श्यामपुर चलते हैं। वहाँ मेरा मामा है।"

"मैं क्या करूँगा वहाँ?"

"अरे चल न कमायेंगे, खायेंगे, और क्या, भीख माँगेंगे?"

इस प्रकार खालुआ ग्राम से देबू और राजेन नामक दुष्ट ग्रह विदा हुए। ग्राम बाग्ला की वर्तमान छवि में ऐसे दुष्ट ग्रहों की उपस्थिति के पीछे कई लोगों का स्वार्थ होता है। वर्तमान छवि में इस या उस गाँव में—कहीं-न-कहीं इनकी उपस्थिति अपरिहार्य है।

पाँच

वे चले तो गये, पर ननी के दिल को आग में झोंक गये। वह जानता तो था कि तीताराम, पशुपति आदि की भक्ति बहुत तुनकमिजाजी है। वह यह भी जानता था कि राजेन और देबू की पृष्ठभूमि सज्जनता की न थी। फिर भी ये आये थे उसके दल में और उसने स्वीकार किया था। ननी सोचता है—ग्राम बाग्ला की छवि साफ-सुथरा करके सजाना होगा—ऐसा निर्देश तो नहीं मिला था। वरन्, उसे लगा था, धीरे-धीरे इसी पुरानी तस्वीर की मरम्मत कराके काम चलाया जा सकता है।

"जो हुआ, सो हुआ। अब क्या करना है?"

चिन्मय ने बताया—"देबू और राजेन बांका श्यामपुर गये हैं।"

"उससे क्या फायदा ?"

"ननी दा, फायदा नही चाहिए इस समय। और नुकसान न हो तो समझिए बच गये। है कि नही ?"

"हाँ, चिन्मय। बात तो ठीक कहते हो।"

"सुकुमार कह रहा था..."

"क्या ?"

"बहुत-कुछ साफ-सुथरा करना होगा।"

"कहाँ कहा था ?"

"बाजार मे। बाजार खत्म होने पर इसे उसे रोककर, खालुआ में भी शाम को यहाँ-वहाँ जाकर बातें करता था।"

"क्या कहता था ?"

"आप तो जानते ही हैं।"

"क्या ?"

"कहता था, सोमराइ के मामले को लेकर वह लडेगा। ग्राम, ब्लाक, सदर जहाँ भी जरूरत हो जायेगा।"

"ऐसा कहता था ?"

"हाँ, मीटिंग मे तीन बातें वह उठाना चाहता था। चुनाव मे वोटों की सख्या क्यों कम हुई ? इसका वस्तुगत मूल्याकन करना होगा। गरीबों ने जिन्हें हमेशा से अन्य भूमिका मे देखा है उन्हें...।"

"रहने दो। सुकुमार हमारा पारटी कार्यकर्ता है। वह अच्छा हो जाय, जो कहेगा सब सुनेंगे।"

"तो क्या मीटिंग होगी ?"

"होगी, अगर सभी चाहें। रघू, चिंतामणि सब ठीक है न ?"

सत्य और न्याय के लिए आगे बढ़कर लड़ने नही जाता चिन्मय, पर असत्य कार्यों मे सहयोग नही देता। सुकुमार के विषय मे उसकी धारणा है कि—मैं जो नही कर सकता, सुकुमार कर सकता है। सुकुमार के घायल होने को मन-ही-मन वह बुरा समझता है। और यह भी सच है कि सुकुमार के मामले की गहराई से जाँच करके सच्चाई को देखने का साहस भी उसमें

नही है। इस तरह के झमेले वाले प्रसंगों की चिंता वह ननी के ऊपर ही छोड़ देता है।

"रघू ? चिनामणि ? क्यो, उनको क्या हो सकता है ?"

"मुझे लगता है वे कोई खिचड़ी पका रहे हैं। आजकल मिलते क्यों नही, सामने क्यो नही आते ?"

जिस प्रश्न का उत्तर विशाल जैसे भोंदू को अत्यंत अप्रत्याशित रूप से मिल गया था, उसी को जानने में ननी को इतनी देर लग गई थी।

ननी के हृदय को विदीर्ण करके चिन्मय चला जाता है। आज बहुत दिनो बाद ननी ने अपनी पत्नी गीता से कहा—"सिर फटा जा रहा है। मैं थोड़ा सो लेता हूँ।"

"आदमी का सिर आखिर कितना दबाव सहेगा ?"

"कोई बुलाने आये तो कहना तबीयत ठीक नही है।"

"ठीक है।"

सिर के नीचे तकिया लगाकर ननी लेट जाता है। बहुत दिनो से एक फिसलन-भरे रास्ते पर चल रहा है वह। उस रास्ते पर जो ऊँचाई की तरफ जा रहा है, मगर जिस पर तेल फैला हुआ है। आप्राण चेष्टा करके वह जितना ऊपर जाता है, फिसलकर उतना ही नीचे आ गिरता है। फिर उठता है, आगे बढता है, फिर गिरकर पीछे आ जाता है। इस प्रक्रिया मे कितना थक गया है वह। शायद इसीलिए एक पल मे उसे नीद आ जाती है। यह नीद बहुत गाढ़ी है, बहुत अँधेरे से ढँकी हुई।

उधर विशाल गोपाला मेंढक ढूँढने गया है। जानता है गोपाला मेंढक इन दिनों नही मिलता, उसे भी नही मिलेगा, फिर भी जाता है। उसके विशाल शरीर मे जो एक अबोध शिशु रहता है वह उसे खदेड़कर ताल की ओर मेंढक की खोज मे ले जा रहा है। यह एक अत्यत उत्तेजित करने वाली खोज है। रूपलाल सिह अपने को बहुत गुणी मानता है, विशाल सोच रहा है।

अच्छा है ! रूपलाल अगर गुणी होता तो पूजा-पाठ करके वर्षा करा देता। पानी होता तो खेती होती। गाँव का आदमी अपना घर छोडकर रोटी की तलाश मे बाहर नही भागता। पानी होता तो जिसकी अपनी

जमीन है, अपनी जोतता, जिसकी नहीं है वह बाबू लोगों के खेतों में काम करता। इसके अलावा काली और रूपाई में भी पानी भर जाता। ताल में पानी का सोता वह निकलता। पोखरा, गड्ढा—सब पानी में भर जाते। वह तो तुमने किया नहीं।

अगर गोपाला मेंढक पकड़ पाता तो मति कौरानी वर्षा के लिए पूजा करने को तैयार हैं। साबित हो जायगा कि कौन बड़ा गुणी है—रूपलाल या मति कौरानी। उधर अजित बाबू एक मेंढक का पाँच रुपया देने को तैयार हैं। पाँच रुपया में कई दिनों तक कच्ची शराब पी जा सकती है। किसी दिन शहर जाकर सिनेमा भी देखा जा सकता है।

यही सब सोचते-सोचते विशाल ताल के किनारे चला जा रहा था। रास्ते में एक भी पेड़ न था। सब काट डाले गये थे। भूख से मजबूर होकर लोगों ने बहुत-से फल वाले पेड़ भी बेच दिये थे। आजकल चारों ओर लकड़ी की बड़ी माँग है। ताल के किनारे एक छोटे-से जमीन के टुकड़े पर कुछ पेड़ खड़े हैं जिनमें शिरीष, शाल, शीशम और पियाशाल के पेड़ हैं। ये पेड़ इसलिए नहीं काटे गये कि यह निर्णय नहीं हो पा रहा है कि वह जमीन किसकी है—निरंजन मैती की या उनके चाचा की या उनके ताऊ के लड़के की? अदालत में बहुत दिन से मुकदमा चल रहा है। भला हो उस मुकदमे का जिसकी वजह से घालुआ से लगभग पानघाट तक के एक लंबे-चौड़े इलाके में एकमात्र यही स्थल है जहाँ हरे-भरे पेड़ों का एक झुरमुट खड़ा दिखाई देता है। इसी झुरमुट में से जामुन का एक पेड़ ताल की ओर झुक गया है। किंतु अभी भी इसकी कुछ जड़ें मिट्टी में लगी हुई हैं, इसलिए अभी भी यह हरा-भरा है। इसकी पत्तों से भरी हुई शाखाएँ बड़े-बड़े झोंपों में नीचे तक लटकी हुई हैं। इसमें फल नहीं लगते, इसीलिए बच्चों ने उसे रिहाई दे दी है वरना, उनकी धमाचौकड़ी को बर्दाश्त करना इस पेड़ के बस में न था।

वहाँ पर जामुन के पेड़ के झोंपों के नीचे ताल के किनारे की कीचड़-मिट्टी में गोपाला मेंढक हो सकता है। इसी आशा में विशाल उस तरफ जा रहा था। अचानक वह चौंककर खड़ा हो गया। जामुन के पेड़ की एक डाल में एक रंगीन साड़ी और चोली लटक रही थी। विशाल के कानों में आवाज

आयी जैसे कोई किसी से विनती कर रहा हो। फूहड कौतूहलवश विशाल झुककर देखने लगा तो बुरी तरह चौंक उठा। सुवासी एकदम नंगी होकर पानी में पांव डुबाये बैठी है। दोनों हाथ पीछे की ओर मिट्टी में टिकाकर शरीर को थामे हुए है। आंखें बंद हैं और भीगे बालों से पानी चू रहा है।

"बोलो, कुछ बात करो! पास आओ। मैं तुम्हारी वही सुवासी हूं। पहचानते नही हो? मुझे ताल के पानी में डुबाओ-तैराओ। देखो शाम होने को आयी, अब आ जाओ। कुछ तो बोलो।"

विशाल के क्षुद्र भेजे में यह बात नही समाई कि सुवासी नहाकर कपड़े सुखा रही है। सुवासी अपने-आप बोल रही है। नगी होकर ऊपर को मुंह किये किससे बातें कर रही है। यह सोचकर ही विशाल के रोंगटे खड़े हो गये।

वह गांव की ओर दौड़ पड़ा। रघू को सामने देखकर पसीने में तर विशाल रुका। हांफते हुए बोला—"लवन की बड़ी बेटी को पता नही क्या हो गया है। ताल के किनारे जामुन के पेड के नीचे, जहां अजगर सांप रहते हैं, वह उलंग होकर बैठी है और उसके भीगे बालों से पानी चू रहा है। आस-पास कोई भी नही है। पता नही किसके साथ सोहाग की बातें कर रही है।"

रघू ने सुवासी के हंसिये से किये गये अपने हाथ पर लंबे चीरे की तरफ देखा। मन के अंधेरे में से कोई सांप फुंफकार उठा। वह फुसफुसाकर बोला—"तो रूपलाल ठीक ही कहता है कि सुवासी डायन हो गयी है।"

"डायन!"

रघू उसकी ओर देखता है। उसकी एकटक दृष्टि में एक अत्यंत दुर्बोध एवं अपरिचित भाव है। फिर अजीब आवाज में रघू कहता है—"तभी मोचीराम का लडका छटपटाकर मर गया। मुंह में दवा भी नही लिया।"

"डायन!!"

"विशाल, तू घर जा। यह बात किसी से नही कहना।"

"नही, नही कहूंगा। उसे···उसे तुम लोग क्या करोगे रघू? क्या करोगे?"

"डायन को क्या करते है? ओह! बहुत दिनों से यह सब चल रहा

है। पहले मैं विश्वास नहीं करता था•••।"

सुबासी इस बारे में कुछ भी नहीं जान पायी। शाम और गहरा गई तो उसने अधभीगी चोली पहनी और सूखी साड़ी लपेट ली। फिर जामुन के पेड़ के नीचे ताल के किनारे की भीगी ठंडी मिट्टी में लेट गयी। सुबासी सोना चाहती थी। क्या उसे नींद आयेगी? राजाराम की बलिष्ठ बाँह पर सिर रखकर वह सोती थी। उसके घर के दूसरे लोग सिर के नीचे तकिया लगाते थे। रुई का बना कड़ा तकिया आग में सब कुछ भस्म हो गया।

सुबासी सोने की कोशिश करती है। तुम जब तक जिंदा थे तब तक कभी भी यह नहीं समझ में आया कि तुम्हारे चले जाने के बाद जीवन कितना कठिन हो जायेगा। गले में रस्सी नहीं लगा सकती, पानी में डूबकर नहीं मर सकती, क्योंकि तुम्हारी संतान सना और मना अनाथ हो जायेंगे। आत्महत्या तो महापाप है। तुम कहते थे मेरा मौसा रोग से परेशान होकर आत्महत्या कर बैठा था तो तुमने कितना बुरा माना था। मगर क्या करूँ। तुम नहीं हो तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। अपनी जाति के लोगों ने तुम्हें मारा क्यों? तुम्हारा क्या दोष था?

बहुत देर तक रोने के बाद सुबासी की पलकों में नींद उतरी।

और रूपलाल सिंह जो वर्षा नहीं कराना चाहता, जो किसी का कोई उपकार नहीं करना चाहता, जो हमेशा गाजा पीकर धुन् रहता है और सारी दुनिया में जिसे अशुभ और पाप ही दिखाई देता है, वही रूपलाल सिंह अपने साथ आदमियों का एक छोटा दल लेकर सुबासी की खोज में निकला है।

डर से काँपते हुए लखन माझी, कुसुमी और माझीपुरा के युवक उस दल के पीछे-पीछे चल रहे हैं। लखन माझी विनती करता है—"रघू, चिंतामणि! मेरा इतना सर्वनाश तो आगे ही तुम लोगों ने कर दिया है। तुम लोग जो डायन की बात करते हो वह सब गलत है। अंधविश्वास है। क्यों रे! क्या तुम सब अब सुबासी की भी जान लेना चाहते हो?"

"रूपलाल जो कहेगा वही होगा।"

यह बात रघू और चिंतामणि दोनों ही कहते हैं। उनके खून में जो अंधविश्वास और भय पल रहा है, उसने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया

है कि आखिर मोचीराम का शिशु अचानक कैसे मर गया ? पेट के रोग और बुखार से छोटे बच्चे लगातार क्यों मर रहे हैं ? इनके पीछे कौन-सी अशुभ शक्ति है ?

रूपलाल बहुत दिनों से कहता आ रहा है। धीरे-धीरे यह बात हवा में कब से फैल रही है।

अचानक रूपलाल ने चलते-चलते रुक कर कहा था—"वह रही।" किसी ने सुबासी के ऊपर टॉर्च की रोशनी फेंकी। चौंककर सुबासी उठ बैठी और उन लोगों को देखकर बोल पड़ी—"तुम लोग यहाँ क्यों आये हो ? मैं उनसे बातें कर रही थी। अँधेरे में हमारे पास आते हैं।"

ये बातें कहकर सुबासी ने अपने सर्वनाश को न्यौता दिया था।

"ननी, सर्वनाश हो रहा है।" गजानन बेरा पागलों की तरह ननी के दरवाज़े पर धक्का मार रहे थे।

"ननी ! ननी ! सर्वनाश हो रहा है उठो। किसी को थाने भेजो।"

"क्यों ? क्यों ?"

"सुन नहीं रहे हो ?"

"क्या ?"

"धममा और नगाड़ा की आवाज और लोगों का हाहाकार।"

"हुआ क्या है ?"

"वे लोग सुबासी को डायन साबित कर रहे हैं। रघू, चिन्तामणि और दूसरे लोग। सोमराइ ने मुझसे कहा था। वह खतरे को भाँप गया था।"

"डायन साबित कर रहे हैं ? सुबासी को ?"

"हाँ, हाँ और क्या कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ इसलिए विश्वास नहीं हो रहा है। यह समय खोने का नहीं है।"

"नहीं, चलिए चलते हैं।"

"विशाल और सुदाम को बुला लो। मैंने बल्लू को कहा है नित्य और सुन्दर को बुला लेगा। चिन्मय को रास्ते में ले लेंगे। डाइन-फाइन हो गया इस गाँव में तो हमारा नाम डूब जायेगा।"

ननी कछाड़ मारकर धोती पहन लेता है। इस समय उसका दिमाग

बिजली की-सी तेजी से काम कर रहा है। उसने कहा—"हो सकेगा तो हम सीधे उन्हें थाने ले जायेंगे। आदमी जायेगा, आयेगा, तब तक तो बहुत देर हो जायेगी।"

बहुत दिनों बाद ननी दलुई हाथ में एक सोटा उठाता है। गीता बिलख कर रो पड़ती है। ननी उसे धमकाता है—"रोओ मत। दरवाजा बन्द करो। जागती रहना।"

"रघू! चिन्तामणि!" ननी पर सात्विक क्रोध सवार होता है, न्याययुक्त और स्वस्थ क्रोध।"

"पकड़ कर पीटूँगा सबको। कठोर सजा दूँगा।"

"मोचीराम का बच्चा मर गया, इसीलिए···" विशाल डरते हुए कहता है।

"पेट में कोई रोग होगा। बुखार होगा। मोचीराम का बच्चा मर गया, इसीलिए किसी न किसी को डाइन साबित करना पड़ेगा क्या?"

"यही तो होता है, ननी! किसी को मार डालना हो तो उसे डाइन कह दो।" गजानन बेरा ने कहा।

"उन्हें मैंने समझाया है। सुकुमार तो विज्ञान क्लब की स्थापना करना चाहता था। मैंने उन्हीं लोगों से प्रचार कराया है कि यह एक अंध-विश्वास है। उसका कोई लाभ नहीं हुआ।"

"वे बदलते नहीं है।" सुन्दर कहता है।

"बदलना होगा। यह सब मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा। डाइन-फाइन का तमाशा इस इलाके में नहीं चलने दूँगा मैं।"

लवन के अहाते में पहुँचकर एक पल वे थमक गये। दो-दो लालटेन जल रहे थे। रूपलाल सिंह पीली आँखों से ताकता उँगली उठाकर जाने क्या बोल रहा था। सुवासी बीच में पड़ी हुई थी। एक मुट्ठी रस्सी पड़ी थी और ढेर सारे काले-काले चेहरे इधर-उधर दीख रहे थे। नगाड़ा कौन बजा रहा था, दीख नहीं रहा था।

ननी चीखकर बोला—"रघू, चिंतामणि! यह सब क्या हो रहा है?"

शायद डाइन साबित हो गई है सुवासी। अब उसे सजा सुनाई जाने

वाली है। सभी विवश और सम्मोहित-से बैठे हैं।

रूपलाल को बगल से खींचकर ननी एक तरफ कर देता है और सोटे से पीटना शुरू कर देता है। "सभी का चालान कराऊँगा। किसी को भी काम नहीं मिलेगा। सभी को जेल में ठूँस दूँगा। मजाक समझ लिया है।"

"बाबू, यह हमारा अपना मामला है।"

"चोप कर! रूपलाल को पहले बंद करूँगा। मोचीराम कहाँ है? बुलाओ उसे।"

ननी खुद आया है और साथ में गजानन भी हैं—यह सुनकर पशुपति और सीताराम भी आ पहुँचे। बड़ी मुश्किल से बनाया गया रहस्य का भुतहा परिवेश टूट जाता है।

सुवासी की माँ और कुसुमी काँपते-काँपते आकर सुवासी को उठाती हैं। रघू और चिंतामणि सिर पर पाँव रखकर भाग खड़े होते हैं।

"उठ सुवासी, उठ!" ननी कहता है।

"न···नी···बा···बू!"

"हाँ, हाँ, मैं कह रहा हूँ; उठ जा।"

"कहाँ जाऊँगी?"

"अभी मेरे घर चल।"

लवन कहता है—"बाबू, हम भी साथ चलेंगे। यहाँ नहीं रहेंगे।"

लवन, सोमवारी, कुसुमी और सना-मना।

ननी ने कहा—"इन्हें रहने दो यहीं। कुछ लड़के पहरा देंगे। थाने में खबर भिजवा रहा हूँ।"

"अभी ले जाओगे?"

"नहीं गजादा, बहुत रात है।"

बहुत रात है और थाना भी नजदीक नहीं है। एक पुलिस आउट-पोस्ट है तो सही पास में मगर वह एकदम अरक्षित है। कुल मिलकर सभी दृष्टियों से ननी का घर ही इस समय सबसे ज्यादा सुरक्षित है। और अगर इस घटना से कोई उभड़ सकता था तो वह माझीपुरा ही था। ये लोग ननी के खिलाफ नहीं जायेंगे। तो फिर यही सबसे अच्छा समाधान है।

फिर भी 'किंतु' रह जाता है कहीं।

राजाराम मारा जा चुका है। राजाराम की बहू सुबासी आज ननी के घर पर है। वह एकदम विह्वल और आविष्ट है। वह बारी-बारी से सबकी ओर ताकती है। अब क्या होगा? उसकी परेशानी का कारण सभी की समझ में आ रहा है।

"लवन, तुम लोग इस कोने में पड़े रहो।" ननी ने कहा।

"ननी, तुम भी जाकर सोओ।" गजानन बेरा ने कहा।

"नींद नहीं आ रही है। शाम से ही पता नहीं क्यों बड़ी नींद आ रही थी। सिर फटा जा रहा था। आप सो लीजिए। यहीं रहिए। आपका घर भी तो एकदम निराली जगह पर है। और ऐसे मामलों में···सवेरा होने में देर ही कितनी है।"

"तुम्हारा घर तो काफी बड़ा है। मैं भी चटाई बिछाकर एक किनारे पड रहता हूँ।"

"चाय लेंगे? मैं तो एक कप लूंगा।"

"ठीक है। ले लूंगा।"

"चिन्मय, अपनी भाभी को बोलो—विशाल को चाय-पत्ती, चीनी और दूध निकाल दें। वह चाय बना देगा।"

उस घर में जो उपस्थित थे गीता उनके सामने निकलती थी। अभी तक वह भी पिछली घटना के मानसिक आघात से उद्विग्न थी। ननी की बात सुनकर उसने दरवाजे के पीछे से कहा—"चाय मैं ही बना देती हूँ।" फिर थोड़ा झांककर गजानन की तरफ देखा, दोनो हाथ माथे से लगाये और पूछा—"कैसे हैं? कितने दिनों के बाद देखा आपको!"

"हाँ बहू, तुम्हे भी बहुत दिनों बाद देखा। मुझे तो देख ही रही हो भला चंगा।"

गीता मुस्कराई और बोली—"सुबासी वगैरह अंदर की दालान में सो जायें। मरदों के सामने उन्हें परेशानी हो रही होगी।"

"हाँ, ठीक तो है।"

"चाय के साथ मुरमुरे दूं?"

"दो न। और क्या है?"

"देखती हूँ। आप लोग अंदर ही आ जाइए।"

सुबासी और उसके परिवार के लोग अंदर की दालान में चटाई बिछाकर सो रहे। अब लग रहा था कि सुबासी का मन ठिकाने आ रहा है। अचानक उसे अपने बच्चों की याद आयी। उन्हें उसने अपने पास बुलाया। एक तरफ सना को और दूसरी तरफ मना को लेटाकर दोनों के शरीर पर अपना एक-एक हाथ रखकर सुबासी लेट गई। सोमवारी ने कहा—"अब इन्हीं का मुँह देखकर तुम्हें अपना दुख भूलना होगा। कितनी बार तो कहा था तुमसे जवान-जहान औरत को इधर-उधर बेकार नहीं फिरना चाहिए। आज अगर बाबू लोग बखत से नहीं पहुँचते तो क्या होता।"

"चुप करो न, माँ!" कुसुमी ने धमकाया।

सुबासी ने कुछ नहीं कहा। वह समझ गई थी कि आज उसकी मौत आ गई थी। सीने की आग को सीने में ही दफन करके सना-मना को लेकर जीना होगा।

तभी किसी ने सुबासी के सिर पर हाथ रखा। सुबासी ने सिर घुमाया। और बाप का हाथ दोनों हाथों से पकड़कर अपने माथे पर दबा लिया।

"सो जा सुबासी, सो जा।" लवन माझी ने कहा।

"अच्छा, अब सो जाऊँगी।"

"सुबासी, जो है उसको देखकर जो नहीं है उसका दुख भुला दे।"

"अच्छा। तुम मुझे डाँटोगे तो नहीं?"

"नहीं, तुझे अब कभी नहीं डाँटूँगा।"

धीरे-धीरे सभी नींद की लहरों में समा जाते हैं। केवल लवन जागता रहता है। चतुर, अनुभवी तथा वरिष्ठ लवन। उसने बहुत दुनिया देखी है। वह जानता है कि अगर बीज होगा तो अंकुरित होना अवश्य चाहेगा। गीली मिट्टी की खोज करेगा। डायन की बात लेकर शायद रघू वगैरह और कुछ न करें, मगर किसी और बात को लेकर किसी और बहाने से फिर खड़े हो सकते हैं। हस्पताल ऐसे हैं कि वहाँ दवा भी नहीं मिलती। कोई परवाह नहीं करता। गेदी-गेदा (शिशु) पुटक जाते हैं। जच्चा का जीवन संकट में पड़ जाता है। सूखा लगातार फसल होने ही नहीं दे रहा है। भोजन न

मिलने से आदमी की बुद्धि गायब हो रही है। ऐसे समय में अपनी-अपनी परेशानी से जो गुस्सा उठता है उस गुस्से को आदमी किसी और तरीके से सामने लाता है। आदमी का मन जब ऐसा हो गया हो तो उसके मन की माटी में डायन के विश्वास का बीज तेजी से उगने लगता है। आज विपत्ति हट गई, कल फिर आ सकती है।

बीज रहेगा तो अंकुरित होना चाहेगा ही। राजाराम की मृत्यु से सुवासी के मन में स्नेह, प्रेम, सुरक्षा इन सबके लिए जो एक गहरी प्यास है वह यंत्रणा के रूप में रह गयी है। यह भी तो एक बीज है। दुबारा उसका घर बस जायेगा तो शायद सुवासी धीरे-धीरे सहज हो जायेगी। किन्तु इस मामले में लवन तो कुछ बोल नहीं सकता। बेटा-बेटी अगर ब्याह का भार अपने माँ-बाप पर छोड दें तो वह एक बात है। पर, अगर वे अपने चुनाव से ब्याह करना चाहें तो उसे मानना ही होगा। सुवासी और राजाराम बचपन से ही एक-दूसरे के संगी थे। दोनों के माता-पिता जानते थे कि एक दिन ये विवाह करेंगे। सुवासी बडी हो गई तो राजाराम की माँ उसे छेड़ती थी—"सुवासी, आकर धान सिझा देना।"

"कब आऊँ सिझाने ?"

"सो मैं क्या जानूं, तेरा ही तो सब होने वाला है। तू अपने हिसाब से जब ठीक समझे सिझा देना।"

विधवा-विवाह आजकल खूब प्रचलित है। मगर लवन सुवासी से यह नहीं कह सकता कि जा दुबारा ब्याह कर ले। ब्याह की बात तो अलहदा इसे गाँव में रखना भी अब ठीक नहीं है। सनत और महीराम सना और मना की जिम्मेदारी लें, सुवासी और कुसुमी की व्यवस्था करें। बाबू लोग हर वखत इनकी रक्षा कर पायेंगे इसका भी क्या भरोसा। कुसुमी ने तो कह ही दिया है कि गाँव में शादी नहीं करेगी। जो भी हो लवन अब बूढा हो गया है। गाँव में बैठकर सुवासी को बचाने की शक्ति उसमें अब नहीं है।

लवन उठकर बैठ जाता है और बीड़ी धराकर कश खींचने लगता है। उसे नींद नहीं आ रही है। उसे आज नींद आयेगी भी नहीं।

गीता ने चाय के साथ मुरमुरे, तिल के लड्डू और नारियल की मिठाई

खाने को दी थी। खा-पीकर सभी लेट गये थे। गजानन ने ननी को भी अंदर जाकर सोने का परामर्श दिया। ननी ने भीतर जाकर देखा लखन चुपचाप बैठा है। पूछा—"सोये नही अभी?"

"बाबू, मैं सोच रहा था···।"

"क्या?"

"ये सब भूत-डायन पर से आदमी का विश्वास खतम नही होता है। भीतर दबा रहता है··। सुबासी को यहाँ से हटा देना ही ठीक होगा।"

आज की रात ननी दलुई पहले का ननी दलुई हो गया है। आज का ननी जानता हो न था कि वह पुराना ननी आज भी कही उसके भीतर सोया हुआ है। लखन की ओर स्नेह से देखकर गहरी सहानुभूति से ननी ने कहा—"मैं जो हूँ।"

"कौन, कहाँ चोरी से वार करेगा, आपको कैसे पता चलेगा? उसके पीछे दो ठो बच्चे भी मारे जायेंगे। कही रात में ही पकड़कर उनकी गर्दन दबा दें?"

"देखूँगा कैसे करते हैं वे? अपने इलाके में यह सब मैं वर्दाश्त नही करूँगा, कहे देता हूँ। गजा दादा ने आकर बताया तो पता चला। तुम अगर भाग कर पहले ही आ जाते?"

"हमे उन लोगो ने घेर रखा था।"

"ओह! यह बात सोची भी नही जा सकती।"

"बहुत दिनों से भीतर-भीतर गुज-बुज चल रही थी।" मगर बात समझ में नही आयी थी।

"वही रूपलाल!"

"दिन-रात गाँजा पीता है। कोई काम-काज नही करता···"

"उसका दिमाग ठीक नही है। जाओ तुम सो जाओ।"

यह बात भी ननी हार्दिक सच्चाई के साथ कहता है। सबेरा होने पर ननी का मन ऐसा ही बना रहेगा—वह नही जानता। अभी उसके मन में हो रहा है कि इन सभी समस्याओ का समाधान वह खोजेगा। वह इन दरिद्र, असहाय लोगों की मदद करेगा और सुबासी की सुरक्षा की व्यवस्था करेगा।

वह भी सोने चला गया।

गीता के हाथ के बने तकिये को सिर के नीचे रखकर गजानन बेरा पड़े-पड़े सोच रहे हैं—इसीलिए सोमराइ, सुबासी को काचकुआ ले जाना चाहता था। इसीलिए वह गाँव आने की कोशिश कर रहा था। एक तरह से आज की घटना का एक अच्छा असर भी होगा। सुबासी गाँव छोड़ने के लिए राजी हो जायेगी। इसके पहले लाख कोशिश करने पर भी वह राजी नहीं हुई थी। जले हुए घर के चारों ओर पागल की तरह घूमती रहती थी।

सोमराइ अगर सुबासी से शादी कर ले तो यह एक समाधान होगा। मगर आदमी के जीवन में उसकी समस्याओं के समाधान ऐसे आसान तरीके से नहीं आते।

सुबासी को अगर गाँव छोड़ना ही पड़े?

गजानन जानते हैं सुकुमार क्या कहेगा। कहेगा, सोमराइ ने भागकर प्राण बचाया। सुबासी की जान बचाने के लिए उसे भगा देना होगा। यह भी समस्या का कोई समाधान है? भागते-भागते एक समय ऐसा भी आता है कि भागने के लिए और जगह नहीं रह जाती।

सुकुमार! सुकुमार! सब कुछ आदर्शवाद के आधार पर अगर हल किया जा सकता तो अच्छा होता। मगर ऐसा किया नहीं जा सकता। ऐसा करने के लिए सबको मिलकर बैठना होगा, सबको मानना होगा कि राजाराम का खून करना गलत था, उनकी जमीन को जोत-सीमा के ऊपर प्रमाणित करना, उस पर दखल करना, उनका घर जलाना सब गलत है, अन्याय है। फिर उन्हें बुलाकर उनकी जमीन वापस देनी होगी, उन्हें उनके घर में बसाना होगा। निरापद और उसकी बहू पता नहीं किस जंगल में लकड़ी काटकर गुजारा कर रहे होंगे। उन्हें सोमराइ को, सना, मना, सुबासी को—सभी को वापस लाना होगा।

ऐसा ही करना उचित भी है। पर, ऐसा करने में बाधाएँ हैं। ननी मान भी ले तो पशुपति नहीं मानेगा। तीताराम पीठ में छुरी भोंकेगा। रघू और चिंतामणि को भी भुलाया नहीं जा सकता। उनके मन में जो विष का बीज बोया गया है, उसका क्या होगा? धान का बीज रोपने पर

उसमें सोने का फल कैसे लगेगा ? गरीब और गरीब के बीच का यह गृह-युद्ध एक प्रकार का भयंकर भू-स्खलन है।

इस भू-स्खलन को कौन-से समाज पर आधारित वृक्षारोपण द्वारा रोकेंगे हम ? अगर हम यह स्खलन न रोक सके तो हमारा ध्वंस अवश्यंभावी है।

खालुआ गाँव में ऐसा कौन है जो सोमराइ हेमब्रम का हाथ पकड़कर कहे कि चल सोमराइ नयी हांडी खरीद कुम्हार के घर से। अपने जले हुए घर के आँगन में तीन ईंटों का चूल्हा बना और भात पका। मैं पहरे पर खड़ा रहूँगा, कि तेरा चूल्हा न बुझे, कि तू गरम भात में आँसुओं का नमक मिलाकर पेट भर खा सके।

नहीं, ऐसा कोई भी आदमी खालुआ में नहीं है।

यदि ऐसा कोई आदमी होता, तो उसकी उमर चाहे जो होती, गजानन बेरा उसके पाँव की धूलि सिर पर रखकर चला जाता। ऐसे आदमी तरुणों के बीच से उठें, आयें, जिनके लिए राजनीति, रुपया-पैसा, मकान-दुकान, मोपेड-स्कूटर, ठेकेदारी, सिनेमा-हाल, धन-संपत्ति इकट्ठा करने का साधन नहीं है। ऐसा तरुण, ऐसा युवा आये और कहे—हे भाई, इस राजनीति से काम नहीं चलेगा। देश की ओर देखो और देश का आदमी जिस तरह की राजनीति चाहता है वैसी राजनीति करो।

ऐसे लोग कहाँ हैं जो आकर गाँव-गाँव में संघर्ष करके सिंचाई, पीने का पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी और गरीबों को जमीन का मालिकाना हक दिलायेंगे !

नहीं, वे नहीं हैं। वे नहीं आते। वे नहीं आते, इसीलिए खेल के खाली मैदान में गजानन, सीताराम, पशुपति और ननी जैसे लोग खेल रहे हैं और दनादन गोल दाग रहे हैं। देवेन और राजेन जैसे लोग तालियाँ बजा रहे हैं।

इस तरह आकाश-पाताल की बातें सोचते-सोचते गजानन बेरा सो गये। साथ ही उनकी नाक तेजी से बजने लगी। चिन्मय चौंक उठा।

उधर से विशाल बोल उठा—"वाह, गजा बाबू की नाक भी मरदों *जैसी बोलती है। बोलेगी नहीं ? इस उमर में भी आधा किलो गोश्त और*

चीम रोटी खा लेते हैं।"

"तू यहाँ क्या कर रहा है ?"

"पहरा दे रहा हूँ।"

विशाल जाग रहा है। अपनी विशाल समस्या लेकर। अगर पानी होता तो गोपाला मेंढक खूब मिलते। किंतु पानी होता ही अगर तो गोपाला मेंढक की जरूरत ही क्या थी ? विशाल का ऐसा भाग्य कहाँ कि बरसात के बिना उसे गोपाला मेंढक मिल जाय।

फिर विशाल ने मन-ही-मन एक बहुत बड़े त्याग का निश्चय किया। छोड़ो, न मिले गोपाला मेंढक। बरसात हो, आदमी की जान बचे। पानी होने पर तो गोपाला मेंढक मिलेंगे ही। विशाल उन्हें पकड़कर लदन को देगा। उसकी बेटी सुवासी का माथा गरम हो गया है न ? वह खायेगी।

इस निश्चय पर पहुँचते ही विशाल की विशाल आत्मा को शांति मिल गई और बैठे-बैठे ही वह सो गया।

छह

सवेरे-सवेरे पंचानन खबर दे गया है कि सुकुमार को होश आ गया है। दिलीप का एक दोस्त कह गया है।

सबेरे दिन की रोशनी में सब कुछ बदला-बदला दिखाई दे रहा है। रात के अँधेरे में अनेक लोगों को अनेक प्रश्नों के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया था। सबेरे उन प्रश्नों को पूरी तरह भुलाकर पुरानी मानसिकता में लौटना मुश्किल लग रहा है।

गजानन चिंतित है और ननी गंभीर। चिन्मय मालीपुरा का चक्कर लगाकर आता है और बताता है कि रघू और चिंतामणि छुपे हुए हैं। रूपलाल भी कुछ नहीं कह रहा है।

"नहीं कह रहा है तो कहना होगा। तुम लोगों ने इनके साथ बातचीत करना, उन्हें समझाना-बुझाना सब छोड़ ही दिया है। जो करता था, सब

सुकुमार करता था।"

"हाँ, यह ठीक नहीं हुआ।"

"शहर जाना होगा।"

"सुबासी और उसके परिवार के लोग?"

"वे यही रहेंगे।"

गजानन कहते है—"ननी, सुबासी को जाने दो। इस मौके पर उसका चले जाना ही ठीक है। यहाँ की परिस्थिति तो तुम समझोगे। तुम जब हाँ कहोगे तो वह लौट आयेगी।"

"और उसके बच्चे?"

"कुसुमी यही रहेगी। लवन और बच्चों के साथ।"

हालांकि ननी ने यह नहीं पूछा कि 'आप सुबासी को कहाँ ले जा रहे हैं।' फिर भी गजानम ने अपनी ओर से बताया कि वे सुबासी को अपनी भतीजी के घर रखेंगे।

कुसुमी ने घर से सुबासी के कपड़े—गमछा और हँसिया और खुरपी लाकर उसे दिया। बोली—"जहाँ भी जायेगी काम करके ही तो खायेगी इसलिए ये औजार दे रही हूँ।"

फिर बहन का गला जकड़कर कुसुमी ने कहा—"सना-मना के बारे में जरा भी मत सोचना। हम उन्हें अच्छी तरह रखेंगे। बस, तू अच्छी तरह रहना दीदी और पागलपना मत करना और इधर-उधर मत घूमना।"

सुबासी सिर हिलाती है। वह समझ गई है कि कल उसकी मृत्यु निश्चित थी। राजाराम की मृत्यु के बाद सुबासी भी जैसे मौत के गड्ढे की तरफ लुढकती जा रही थी। कल वह उस अतलात गर्त के किनारे से किसी प्रकार लौट आयी है।

अब वह मरना नही चाहती।

लवन और सोमवारी सुबासी की पीठ पर और सिर पर हाथ फेरते हैं फिर सना और मना से कहते हैं—"चलो घर चलें।"

सना और मना ने काफी दिनों से माँ को नजदीक नही पाया था, हर बार उन्हें बताया जाता कि माँ बाहर काम करने गयी है। गाँव लौटने पर

भी माँ अपने कमरे में रहती थी, इसलिए दादा-दादी के साथ वापस लौटने में उन्होंने आना-कानी नहीं की।

फिर गजानन, ननी, चिन्मय और सुवासी आगे बढ़ते हैं। पानघाट में ताल पार करते हैं। ननी कहता है—"जैसे भी हो, इस बार पुल का सैंक्शन लेना ही होगा।"

घाट पार करते ही लारियाँ मिलती हैं जो एक रुपये में शहर पहुँचाती हैं। चिन्मय किसी समय एक मिनी बस चलाने का सपना देखता था। उस समय ननी ने कहा था—"मैं कुछ नहीं कर सकता।"

लॉरी पर बैठने के पहले एक दुकान में जाकर उन्होंने सरसों के तेल में बनी जलेबी, नक्ली मेरी बिस्कुट खाया और चाय पी। अजितपाल उन्हें देखकर आगे आया, बोला—'एक अच्छी खबर दूँ?'

"क्या खबर?"

"सुकुमार अच्छा है, होश आ गया है उसे। अब डर नहीं रहा। अब सब कुछ अच्छा ही अच्छा होगा। क्योंकि संन्यासी माँ यानी मति कौरानी खूब याग-यज्ञ कर रही हैं। अब तो बरसात भी होगी, जो लाइसेंस, परमिट अटके हुए हैं सब निकल आयेंगे, ब्रिज भी हो जायगा। और हमारा सिनेमा-हॉल भी खुल जायेगा। अरे नहीं, नहीं, पैसे नहीं चाहिए। आप जैसे महानुभाव बीच-बीच में हमारी दुकान पर आ जाते हैं यही हमारा सौभाग्य है।"

इसके बाद गजानन और उनके साथी लॉरी पर सवार होते हैं। लॉरी के सामने की तरफ लिखा है 'जय बाबा सत्यसाई' और पीछे की तरफ 'टा-टा—शुभ विदा'। ड्राइवर हैं जनक महापात्र मालिक एक मारवाड़ी। जैसे ईश्वर एक होता है और जीव अनेक होते हैं उसी तरह पानघाट में ड्राइवर सिर्फ एक हैं जनक महापात्र और गाड़ियाँ अनेक हैं।

"हस्पताल?"

"हाँ।"

जनक गाड़ी को बहुत तेज भगा रहा है। सड़क पर बैठी भैंस छिटक कर भागती है। रास्ता चलने वाले लोग लॉरी से बचने के लिए सिर पर पाँव रखकर भागते हैं। दूसरी लॉरियाँ सड़क से उतरकर जनक के लिए

रास्ता देती हैं। हाईवे पर दूर से आती हुई एक बस के ड्राइवर ने जनक महापात्र को माँ-बहन की गालियाँ दी, फिर भी वह बिना दायें-बायें ताके नाक की सीध में लॉरी भगाता जा रहा है। रास्ते में उसने एक भी पैसेंजर नहीं लिया। शायद अजितपाल का ऐसा ही आदेश था।

हस्पताल के सामने ही दिलीप मिल गया। उसका चेहरा देखकर ही शुभ समाचार का पता चल गया।

"काका! ननी दा! भैया अच्छे हो गये।" कहते-कहते हँसने की चेष्टा करके रोने लगता है दिलीप।

"अरे, इसमें रोने की क्या बात है? चलो हम भी देख आयें।"

गजानन सुवासी को वहीं रुकने का इशारा करते हैं। सुवासी हस्पताल के बरामदे में बैठकर अपनी पोटली से कंघी निकालती है और बालों में फेरने लगती है।

सुकुमार के साथ ज्यादा बातचीत मना है, लेकिन डाक्टर से पाँच मिनट का वक्त माँगकर गजानन, ननी और चिन्मय अंदर जाते हैं। सुकुमार उनकी तरफ देखता है। उसकी आँखों में और चेहरे पर धीरे-धीरे पहचान उभरती है।

"सुकुमार! हम तुम्हें देखने आये हैं।"

सुकुमार स्वीकार में सिर हिलाता है।

"तुम्हारी तबीयत ठीक है न?"

"हाँ, यहाँ से कब छोड़ेंगे मुझे?"

"ये लोग जितने दिन रखेंगे, रहना होगा।"

"अच्छा।"

"कुछ खाने को दे रहे हैं?"

"दूध…"

अपना काम करते-करते नर्स बोलती है—"कल सॉलिड खाने को मिलेगा। आज अंडा दिया था न?"

"हाँ, दिया था। यह सब खर्च कौन कर रहा है?"

ननी ने कहा—"तुम अभी राज्य के खर्च पर हो। सरकारी खर्च पर।"

"ओह !"

सुकुमार थक कर आँखें मूंद लेता है। एक मरीज का बुखार देखते-देखते नर्स उनसे आँखो के इशारे से बाहर जाने को कहती है। ननी झुककर कहता है—"सुकुमार, हम जा रहे हैं। फिर आयेंगे।"

सुकुमार आँखें मूंदे-मूंदे ही जरा-सी गर्दन हिलाता है।

"ननी दा !" उसके मुंह से क्षीण आवाज निकलती है।

"बोलो।"

"मैं···वापिस ··आ···जाऊँगा···तो···"

"क्या ? बोलो ?"

"मीटिंग·· बैठक···करनी होगी।"

ननी सिर उठाता है। गजानन की निगाह उसके चेहरे पर टिकी है। उसके कलेजे से गहरी साँस निकलती है। नही, सुकुमार को अनदेखा करके नही चला जा सकता। सुकुमार ऐसी समस्या है जिसका कोई शॉर्ट-कट समाधान संभव नही है। ग्राम बांग्ला की देह में वह शल्य-चिकित्सा के द्वारा किस मृत जीवकोष को हटाना चाहेगा। किस नये जीवकोष को लाकर जोड़ना चाहेगा, किस या किन जीवित कोषों को बचाना चाहेगा, इसका पता ननी को नही है। एक जगह पूर्ण-विराम के बाद नये सिरे से नया अध्याय शुरू होगा, जीवन में ऐसा नही होता। जीवन मे एक निरंतरता होती है, सब कुछ साथ चलता रहता है, उसी गतिमयता मे स्वीकार, निषेध, संयोजन, मूल्यांकन सब कुछ चलता रहता है।

इस निरंतरता के सामने और स्वयं ननी के सामने सुकुमार एक चैलेंज की तरह है। और सुकुमार अत्यंत सत्य, अत्यन्त वास्तव है।

सुकुमार की बात के जवाब मे हाँ कहने का अर्थ है अपने सर्वनाश की संभावना को स्वीकार करना।

गजानन बैरा चुपचाप देख रहे हैं। ननी सीधा खड़ा हो जाता है, बोलता है—"हाँ, सुकुमार, तुम्हारे वापस आने पर बैठक होगी। तुम लोग अगर चाहते हो तो वही होगा।"

"हम चाहते हैं।"

"तो होगी बैठक।"

ननी समझ रहा है कि इस प्रकार वह अपने दल मे शायद गृह-युद्ध को बुलावा दे रहा है। ठीक है। वह भी शक्ति की लड़ाई है, सामर्थ्य की लडाई है।

चिन्मय विस्मित होकर धीमे से कुछ कहता है। ननी कोई उत्तर नहीं देता। वे बाहर आ जाते हैं। हस्पताल के कॉरीडोर में चिन्मय का क्रोध फूट पडता है—"यह क्या किया आपने ननी दा ?"

ननी इस बार भी कोई जवाब नही देता। कॉरीडोर से बाहर आने पर चलते-चलते ही कहता है—"चिन्मय, तुम वापस चले जाओ। मुझे कुछ काम है।"

ननी बिना दाये-बायें देखे हस्पताल से सीधा निकल जाता है। फलस्वरूप सोमराइ को नही देख पाता।

चिन्मय भी ननी के पीछे-पीछे जा रहा है। अभी भी ननी दा महत्व-पूर्ण है। चिन्मय को उनकी जरूरत है। अभी चिन्मय उसे नहीं छोड़ सकता है। सुकुमार अभी हस्पताल मे पड़ा है। उसे लौटने दो। मीटिंग होने दो, फिर परिस्थिति समझ-बूझकर जैसा होगा किया जायेगा।

गजानन सुवासी को खोजते हैं।

"बाबू !" पीछे से आवाज आती है।

"अरे ! सोमराइ !"

"हाँ बाबू, मैं देर से आया हूँ। ननी बाबू को देखकर उस तरफ छिप गया था।"

गजानन गहरी साँस लेते हैं।

"सुवासी को काचकुआ ले जायेगा ?"

"हाँ बाबू।"

"वहाँ काम हो रहा है ?"

"बादल देखकर नही समझे बाबू ? सिर्फ घुमड रहे हैं।"

"हाँ रे।"

"मगर अब पानी बरसने ही वाला है। फिर खेती का काम शुरू हो जायेगा। काम मिलेगा; पाँच रुपये की मजूरी तो रोज की होगी ही।"

"सिर्फ पाँच रुपया ?"

"सूखा के दिन हैं। काम कम है और मजूरों की कोई गिनती नहीं। अच्छा बाबू चलते हैं। भौजी चलो।"

कमर में छोटी-सी धोती, जीर्ण-शीर्ण देह, गरीब सोमराइ सुवासी को लेकर जा रहा है। जाते-जाते गजानन से कह रहा है—"अगर वहाँ काम मिलेगा तो कुसुमी को बुला लूंगा, आपको खबर दूंगा।"

"ठीक है।"

सुवासी कुछ नहीं कहती। गजानन का घुटना छूकर सिर से लगाती है, फिर चल पड़ती है। कहाँ जायेंगे ये? अपने जले हुए मकान में नई हाँडी मे भात पकाकर खाने का सोमराइ का सपना कब पूरा होगा? या फिर यह उजड़ा हुआ परिवार कहीं और घर बसायेगा?

गजानन वेरा देख रहे हैं कि समस्या जहाँ थी वहीं रह गई है, फिर भी कहीं एक जबरदस्त धक्का लगा है। जैसे नदी के किनारे में टूटने के पहले एक बहुत सूक्ष्म बाल जैसी महीन दरार पड़ती है जो आँखों से दिखाई न देती हुई भी सच होती है।

बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं। बारिश होगी, झमाझम पानी पड़ेगा। आदमी खेतों मे उतरेंगे। मूल समस्या का समाधान शायद नहीं होगा, मगर वृष्टि का अर्थ है खेती। यानी व्यस्तता। वृष्टि होने पर ग्राम बांग्ला की संतान जो जहां होगा काम मे व्यस्त हो सकेगा। यही सबसे बड़ा लाभ है।

अचानक गजानन को चौंकाती हुई बड़ी-बड़ी बूंदें आसमान से झरने लगती हैं। गजानन इतने खुश, इतने चकित होते हैं कि भागकर हस्पताल के बरामदे मे नहीं जाते। सभी लोग इधर-उधर वृष्टि से बचने को निकल जाते है। मगर चकित होकर देखते हैं कि पके बालों वाला एक दीर्घकाय बलिष्ठ वृद्ध आसमान की ओर सिर उठाये, अपने चेहरे पर बड़ी-बड़ी बूंदों का आघात सह रहा है और हँस रहा है। भला इसमें हँसने की क्या बात है?

सीमांत

रानाघाट तक ट्रेन का चिह्न दिखाई पड़ता है। लगता है कि हम इसी दशक मे हैं। उसके बाद बानपुर के ट्रेन में चढ़ते ही लगता है नब्बे वर्ष पहले की बनाई बोगी में बैठे हों। स्टेशन माने ट्रेन का रुक जाना। कूद कर उतरो, कसरत करके चढो। टिकट चाय की दूकान पर ठेकेदार से खरीदो। प्लेटफार्म की आशा मत करो।

कोयले की चोरी और रवानगी, चोरी और रवानगी को स्वीकार करके चुपचाप रहो। इस लाइन मे समय जैसी कोई चीज नही है। काला धुआं चारों ओर थक्का-सा जमा है। ट्रेन जैसे नीद में चलती है। आसपास का विस्तृत इलाका अभी भी सन् उन्नीस सौ दस में पड़ा हुआ है। 'पथेर पांचाली' का देश। फर्क सिर्फ इतना है कि अपु या तो कोयला इकट्ठा करता है, नही तो उचक्को के दल में शामिल हो जाता है। दुर्गा या तो कोयला इकट्ठा करती है, नही तो सियालदह या रानाघाट की पुकार सुनकर उधर चली जाती है। हरिहर और सर्वजया की कोई खबर नही मिलती। शिशुओं की आँखों मे अपु का विमुग्ध शैशव नही है। अब इस लाइन में आदमी सात-आठ वर्ष की उमर से ही रोटी के जुगाड़ में फँसकर बूढा हो जाता है।

कभी ट्रेन से तो कभी लाइन पकड़े-पकड़े कुछ लोग उस पार के बांग्ला से चले आते हैं। नही, कोई नियम-कानून वे नही जानते। भूख के राज्य में और किसी का शासन नही चलता। वे भीख माँगने आते हैं और भीख माँगकर शाम को वापस चले जाते हैं। सियालदह स्टेशन उनका गंतव्य है।

सब अपने-अपने तरीके से भीख माँगते हैं। छालेम और मयनामती गाना गाकर भीख माँगते हैं।

छालेम की उमर चालीस के आसपास होगी। लम्बोतरा अनुभवी चेहरे वाला हट्टा-हट्टा जवान। मगर शरीर थोड़ा सामने की ओर झुका हुआ। पिछली बार बॉर्डर पर कुछ कड़ाई हुई थी। उसका महत्त्व छालेम की समझ में नहीं आया था। फलस्वरूप उधर की पुलिस की लातें और इधर की पुलिस के घूसे उसके पेट पर पड़े थे। फिर भी किसी तरह गिरते-पडते आकर उसने ट्रेन पकड ही ली थी। वहीं पर मयनामती ने उसे देखा था। यह क्या ! कितना खून गिर रहा है ! मयनामती ने बाप से पूछा था।

मयनामती का बाप दार्शनिक आदमी है। उसने उत्तर दिया था—"मुझसे क्यों पूछती है ? क्या खून गिराने के लिए मैंने उसे कहा है ?"

"सिपाही को बोलो न, तुम्हारा दोस्त है। रोज ही उसे पैसा खिलाते हो।"

"तू बडा परेशान करती है। तुझे क्या ? गिरने दे खून। मर जायेगा तो सिपाही खुद उसकी देखभाल कर लेगा। जिन्दा में नहीं, मरने पर आदमी की बहुत खातिर होती है।"

"मरो तुम।" मयनामती ने चिढ़कर बाप को शाप दिया था।

मयनामती के बाप का नाम है सुबुद्धि। सुबुद्धि ने अच्छी तरह छालेम को देख लिया था। सिपाही उसका दोस्त है, हस्पताल के मुर्दाघर का डोम उसका दोस्त है, गैरकानूनी ठेके का दलाल उसका दोस्त है। यह जमाना ही है धंधा करने का। सुबुद्धि ने ऐसे अनेक धंधे कर रखे हैं। धंधा करने से उन्नति होती है। कई धंधे करके भी सुबुद्धि की वैसी उन्नति नहीं हुई। इसका कारण है मयनामती और उसकी माँ। मयनामती और उसकी माँ ही सुबुद्धि के रास्ते के काँटे हैं, दुष्टग्रह है। जो भी हो, सुबुद्धि ने छालेम को गौर से देखा था। मर तो जायेगा ही। लगातार खून निकल रहा है। मरना ही है तो सुबुद्धि के परिचित हस्पताल में क्यों न मरे। मुर्दाघर में लाश के रूप में निकलने के बाद रास्ते के भिखारी का भी कुछ दाम हो जाता है। मुर्दे की देह से मांस-मज्जा गलाकर हड्डी की ठठरी को डोम बेच देता है।

कभी-कभी सुबुद्धि लावारिस लाशों को बेचकर कुछ पैसे कमा लेता है। इस धंधे में एक अच्छी बात यह है कि रेलवे लाइन के पास हरदम मृत या मृतप्राय मनुष्य पाये जाते हैं। रेलवे लाइनो के पास चोरी-छिनलाई के लिए, गुंडों-बदमाशो के अनेक दल बने हुए है, जिनमे प्राय प्रतिद्वंद्विता चलती रहती है।

यह आदमी मर गया तो भी कुछ काम आयेगा और बच गया तो मानेंगे एक अच्छा काम किया। इस तरह की चिंता मे पडा हुआ था सुबुद्धि। रानाघाट आने पर मयनामती ने खुद ही सिपाही को बुलाया। छालेम हस्पताल मे जाकर बच ही जायेगा, यह न सुबुद्धि ने सोचा था और न मयनामती ने। वे छालेम को भूल ही गये थे। बाप-बेटी की पुरानी लड़ाई फिर शुरू हो गई थी।

सुबुद्धि जब जेल से बाहर होते हैं तो उनका मुख्य काम होता है अपनी बीवी और बेटी को पीटना। आसपास के लोगो को इसकी आदत-सी पड चुकी है। दस साल पहले गैरकानूनी शराब बनाने का काम इतना अबाध रूप से नही चलता था जितना आज। दुनिया को दिखलाने के लिए ही सही, पर पुलिस बीच-बीच मे धर-पकड करती थी। हर बार सुबुद्धि पुलिस की पकड मे आ जाते थे।

सुबुद्धि के जेल जाते ही उसकी पत्नी रानी देवी की मनौती मानती, व्रत-उपवास करती, शीतला के मंदिर मे माथा कूटती। रानी बडी सती-साध्वी औरत है। उसकी जैसी स्थिति मे कोई दूसरी औरत इस तरह की पति-भक्ति नही दिखा सकती थी।

रानी कई घरो मे दाई का काम करती है। उन घरो की गृहिणियाँ कसम खाने को तैयार रहती थी कि हजार वर्ष तपस्या करने पर भी ऐसी बहू पाना मुश्किल है जैसे सीता-सावित्री ने कलयुग मे नया जन्म लिया हो।

"ऐसी बहू पाकर भी तुम कुपथ पर क्यो जा रहे हो सुबुद्धि ?" रानी की प्रशंसक कोई महिला पूछती।

"सब ग्रहो का फेर है माँ।" सुबुद्धि उसी दार्शनिकता से जवाब देता।

"घर मे चुपाई मारकर बैठते क्यो नही ?"

"देख लेना माँ, इस बार अगर मैं न सुधर गया तो मुझे उद्धव का बेटा न कहना।"

सती-साध्वी होकर रहना एक प्रकार का रोग है। एक बार अगर पकड़ लेता है तो कभी छोड़ता नहीं। जो पति रोटी नहीं देता, पत्नी और संतान की जिम्मेदारी नहीं लेता, गंदे धंधों में लिप्त रहता है और बड़ी शान से जीवन के आधे दिन जेल की रोटियाँ तोड़ता है, ऐसे पति के लिए उसकी पत्नी रानी की यह भक्ति क्यों है कोई बता सकता है?

सुबुद्धि जब घर में नहीं होता तब रानी का चेहरा एक तरह का होता है और जब वह आ जाता है तब रानी का पूरा व्यक्तित्व बदल जाता है। जब सुबुद्धि जेल में होता है तो रानी के कपड़े मैले, चेहरा अस्वस्थ और प्राय: गंजे सिर पर सिंदूर की रेखा होती है। खूब सवेरे से ही वह घरों में काम करने निकल पड़ती है।

सुबुद्धि के घर आते ही उसके कपड़े सोडे से धुले होते हैं। पाँव में आलता लगा होता है और मुँह में पान होता है। रानी को देखकर ही पता चल जाता है कि सुबुद्धि घर में है। एक पैसा माँगने पर सुबुद्धि उसकी पिटाई शुरू कर देता है। जो औरत एक पर एक चार बेटियाँ जनती है, मुँह खोलने की हिम्मत कैसे होती है उसकी? बेटे का बाप बनने का सपना देखता ही रह गया सुबुद्धि।

मार खाकर रानी रोती, चोटों पर मिट्टी का तेल लगाती, और सब कुछ माफ करके पति की देह दबाने बैठ जाती बेचारी सती-साध्वी। बाबू लोगों के घर में भी सती के नाम से वह प्रसिद्ध है।

मयनामती उनकी सबसे बड़ी लड़की है। बाप को अच्छी तरह पहचानती है और मौका पाते ही उसकी जेब से पैसा खिसका लेती है। बाप से मुँह-दर-मुँह जवाब-सवाल करती है। "लड़की है या नागिन?" सुबुद्धि कहता।

"अरे यह तेरा बाप है रे मयना," रानी कहती।

"कैसा बाप? खाना देता है? कपड़ा देता है?"

मयना ने अपनी दो बहनों को दो घरों में खाना-कपड़ा पर काम धरा दिया था। तीसरी बहन ने मरकर उसका पिंड छोड़ दिया था।

"ओह ! मेरे सुख के दिन अब आ गये हैं, जिसकी बीवी काम कर रही हो और तीन-तीन लड़कियाँ, उसको किस चीज की कमी।"

"इन तिलों में तेल नहीं है बाबा ! वे न यहाँ आयेंगी न उनकी तनख्वाहें यहाँ आयेंगी। वे मालिक के घर रहेंगी और पैसा भी मालिक के मुनीम के पास जमा होगा।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि उनके ब्याह का खर्चा कौन देगा, तुम दोगे, या माँ देगी ?"

"तूने यह इंतजाम किया है ?"

"हाँ।"

"तुझे विदा करना होगा यहाँ से।"

"कहाँ ? अशोक नगर ?"

मयनामती ने बाप को बुद्धू बना दिया था। यह देखकर रानी के हृदय में शूल जैसा बिंधा था। सुबुद्धि ने एक बार पिता के रूप में अपने कर्तव्य का पालन किया था। बहुत दिन पहले उसने मयनामती का विवाह एक पकौड़ी-विक्रेता के साथ कर दिया था। पकौड़ी-विक्रेता की यह तीसरी शादी थी और उसकी उम्र मयनामती के बाप से एक-दो साल कम या ज्यादा कुछ भी हो सकती थी।

मयनामती कभी अपनी ससुराल नहीं गई। सुबुद्धि ने ऐसी शादी क्यों की ? सीधी बात यह कि उसे कुछ पैसों की जरूरत थी। पकौड़ी-विक्रेता ने इक्यावन रुपये और एक लाल पाड़ की साड़ी देकर ब्याह रचा लिया।

पकौड़ी-विक्रेता का भी हिसाब सीधा था। अभी तुम्हारी लड़की को नहीं ले जाऊँगा। घर में मेरी दो औरतें हैं। काम चल रहा है। जब तक वे बूढ़ी होंगी, तब तक तुम्हारी बेटी जवान होगी। तब उसे बुला लूँगा। एक से ज्यादा औरतें होने से बड़ा लाभ होता है। एक औरत बारहमासी बैंगन के खेतों में पानी देती है। दूसरी बत्तखों की देखभाल करती और उनके अंडे बेचती है ? तीसरी भात पकाती है।

इन्हीं कारणों से पकौड़ी-विक्रेता ने मयना से शादी की थी। पर मयना कभी उसके घर नहीं गई। जायेगी भी नहीं, उसने घोषणा कर रखी है।

सुबुद्धि का तर्क था—"तेरी माँ मेरे साथ गृहस्थी चला सकती है तो तू क्यों नहीं जायेगी अपनी ससुराल ?"

"लो, बात सुनो। माँ अगर गू खाय, तो क्या मैं भी गू खा लूँ ?"

"इतनी बड़ी बात, इतने छोटेमुँह से!"

"माँ तो सती-साध्वी है।"

"और तू ?"

"देख बाबा, बात मत बढ़ाओ। अपने धंधे के लड़कों से बोल दूँगी तो तुम्हारी दवा कर देंगे। उसी की तुम्हें जरूरत है। माटी की पुतली जैसी सीधी-सादी मेरी माँ के साथ तुमने बहुत बज्जाती की है। सब निकल जायेगी।"

मयनामती तब बाहर से चावल खरीदकर लाती थी और बेचती थी। गाड़ी-गाड़ी में घूमती रहती थी। इस धंधे में उसके बहुत-से साथी थे।

बेटी के व्यवहार से रानी को बहुत तकलीफ हुई थी। पति को समझाते हुए कहा था—"क्यों उसके मुँह लगते हो, बोलो तो ?"

सुबुद्धि बम की तरह फट पड़ा था—"उस लौंडिया की इतनी हिम्मत, मुझे अभी पहचानती नहीं है। मुझे गुस्सा लग जाय तो मुझे न बीबी दिखाई देती है और न बेटी। बस बोलने भर की देर है। बलाई गुरु एक मिनट में इस छोकरी को सीधा कर देंगे।"

मयनामती ने चोटी बनाते-बनाते कहा—"तो फिर बलाई से मुझे सीधा करवाने के लिए तुम्हें दस साल का इंतजार करना होगा। अभी भी उसकी जेल की मियाद दस साल बाकी है।"

"ओफ! अरे मयना! तुम लोगों का मुँह देखकर कितना त्याग किया है हमने! आजकल घर-घर में मोटा पैसा लेकर लोग अपनी लड़कियों का ब्याह बिहारियों के साथ कर रहे हैं, मैं भी तो वह काम कर सकता था!"

"करना तो चाहते थे, ठीक-ठाक कर लिया था। इसी बीच जेल चले गये। अब भलमानसी दिखा रहे हैं।"

इस प्रकार बाप का मुँह बंद करके मयनामती बाहर निकल गई। बाहर निकलने के पहले वह खींचकर चोटी बाँधती है। पूरी बाँह की

कुरती पहनती है और ऊपर उठी हुई अधमैली साड़ी। ट्रेन मे चावल की चोरी करना आसान काम नही है। अपनी देह को अच्छी तरह छुपाये बिना, दीन-हीन जैसा रूप न धारण करने से लड़कियो के लिए बड़ी मुश्किल है। जीवन की पाठशाला मे मयनामती ने पहला पाठ यही पढा था कि कुछ भी करो, खुद को बचाकर निकाल ले जाने में ही बुद्धिमानी है।

"ऐसा रूप क्यों बनाये रहती है रे?"

"कैसा रूप माँ?"

"ऐसा ही, एकदम गंदा-संदा।"

"तो फिर क्या फैशन करके घूमूँ?"

"मैं क्या बाहर नहीं जाती?"

"कहाँ मैं और कहाँ तुम!" मयनामती मुस्कुराती है।

"तू क्या मुझसे देखने मे बुरी है?"

"क्यों माँ, घर में पैसा ला रही हूँ तो हजम नही हो रहा है? बोल तो आज से ही फैशन करके निकलती हूँ। तीन दिन बाद ही मुझे रहने को घर मिल जायेगा। तू भी आते-जाते देख लेगी कि मयनामती घर के सामने स्नो-पाउडर पोत कर खड़ी है।"

"छि: छि: मयना! मैं तेरी माँ हूँ। क्या बेटी ऐसे ही बोलती है?"

"माँ, तुम्हारे जैसा नही बन पाऊँगा। सती-साध्वी बनकर एक लुच्चे, बदमाश की चरणदासी बनना मेरे वश की बात नही है।"

रानी दुखी होकर रह जाती है। अपने को सती-साध्वी के रूप में प्रतिष्ठित करने के बाद उसकी आँखों के सामने नाना प्रकार से उसका अपना रूप उद्भासित होता है। बिवाई फटे सड़े पाँव, प्राय: गंजा सिर, सूखी हुई छातियाँ और चुमे हुए मुँह पर फैली हुई आँखें, ये सब बाहर का रूप है। इसीलिए तुच्छ है।

वह सती-साध्वी है, यह गौरव ही सब कुछ है।

पति लुच्चा, बदमाश और स्वार्थी है, यह तो सच है, मगर वह तो सती-साध्वी है। वह तो इस तुच्छ व्यक्ति की भक्ति करेगी, इसी में उसका बड़प्पन है।

जो बात बड़े घरो की लड़कियाँ समझती हैं वह खुद उसकी लड़की क्यों

नही समझती ? 'विल्व मंगल' नौटंकी हो या 'बाबा तारकनाथ' सिनेमा—जो उसने देखा था—उसमें सभी जगह सती-साध्वी की जय बोली गई थी। मयनामती उसकी गृहस्थी मे मदद कर रही है यह जितना सच है और रानी के लिए खुशी का कारण है, उतना ही सच यह भी है कि अपनी माँ और बहनो की चिंता न करके अगर मयनामती अपने पकौडी-विक्रेता बूढ़े वर की गृहस्थी चलाने चली जाती तो भी रानी खुश ही होती।

बहुत सोच-विचार के बाद रानी पति के पास जाकर बोली—"मयना के साथ ऐसा क्यों कर रहे हो, बोलो तो ?"

"चुप कर, सुटकी साली।"

"छि· अपनी सती-साध्वी बहू के लिए ऐसे वचन बोलते हो ?"

"हुँह., सती-साध्वी ! जानती है तेरे सती होने से भी मेरा कितना नुकसान हुआ है ?"

"क्या नुकसान हुआ ?"

"अरे वाह रे ! चुमकी रानी ! जो आजकल नौटंकी कर रही है और दोनों हाथों से पैसा पीट रही है और जिसका नाम पाँची है। जानती हो पाँची मुझे कितना चाहती थी। हम दोनों मिलकर नाच पारटी चला सकते थे। मगर जब पाँची ने सुना कि तुम सती-साध्वी हो तो उसने कान पकड लिये और बोली—'आज से तुम बड़े भाई और मैं तुम्हारी छोटी बहन। तुम्हारी बहू सती-साध्वी है उसके पति को लेकर जरा भी इधर-उधर करने से मेरा रौरव नरक होगा।' ओह ! कितना मजा आता । मगर तुम्हारे कारण सब चौपट हो गया ।"

"दुख मत करो तुम ! पाँची अच्छी लडकी है।"

सती-साध्वी. रानी के मन में एक बार भी यह सदेह नही उठा कि नौटंकी की रानी पाँची के साथ उसके स्वामी का प्रेम-संबंध सुबुद्धि की उद्‌भट खोपड़ी की उपज मात्र है। सुबुद्धि एक गैर-कानूनी शराब के ठेके का मामूली-सा दलाल है। इस तरह के ठेके किसी अँधेरे पुल के नीचे किसी लकडी के गोदाम की गली में चलते है। खरीददार लोग भी चुपचाप खा-पीकर सटक जाते है।

जिसकी इतनी सीमित दुनिया हो वह पाँची को नौटकी के मच के

अलावा देख भी सकेगा इसमें संदेह है। मगर कोई सती-साध्वी अपने पति के किसी भी वक्तव्य को चाहे वह कितना ही झूठा हो चैलेंज नहीं करती। रानी ने फिर बात शुरू की।

"मयना को मैंने उकसावा नहीं दिया है।"

"तो फिर किसने उसे चढाया है? बाप के साथ कोई ऐसे बोलता है?"

"सुनो तो," रानी अपने पायरिया-मंडित दाँतों को दिखाकर मधुर-मधुर हँसते हुए कहती है—"आजकल के बच्चों को चढ़ाना नहीं पडता। वे अपने आप सीख जाते हैं। देखो न, लड़की होकर लड़के का काम कर रही है। तो फिर तुम उसे खोंचा क्यों मारते हो?"

"वाह! लडके का क्या काम कर रही है?"

"बाहर से पैसे कमाकर लाती है। अपने लिए एक पैसा नहीं खर्च करती है। बहनों के ब्याह की व्यवस्था कर रही है। फिर भी कहते हो कि लड़के का क्या काम करती है।"

"तो क्या इसीलिए मैं उससे डरकर रहूँगा!"

"उसके साथ कितने ही लड़के काम करते हैं। सभी उसे बहुत मानते हैं। माँ और बहनों के कारण लड़की यहाँ अटकी हुई है, वरना कहीं चली जाय तो क्या होगा?"

"सच?"

"हाँ, जी।" रानी गर्दन टेढ़ी करके मुस्कुराती है। जैसे कह रही हो—लड़की के सामने भले ही मैं कुछ नहीं बोलती हूँ मैं मगर हूँ तुम्हारे ही पक्ष में।

पल-भर में सुबुद्धि यह बात समझ जाता है कि रानी उसके पक्ष में है और यह भी कि मयना मुँह से चाहे जो कह ले, माँ के प्रति उसके मन में कम प्यार नहीं है। सुबुद्धि इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देगा।

"तो ला, दो रुपया निकाल, जरा घूमकर आते हैं।"

"रुको, देती हूँ।"

रानी रुपये देती है। सुबुद्धि कुछ नहीं करता है। वह एक पैसा भी घर में नहीं लाता। उससे वह दुखी नहीं है। ऊपर से उससे पैसे लेकर वह नशा करने जायेगा, यह भी उसके लिए क्षम्य है।

"देखो, जल्दी से वापस आना और चुपचाप सो रहना।"

"हाँ, हाँ, बताने की जरूरत नहीं है।"

"मयना जिससे न जाने।"

"नहीं जानेगी।"

किंतु ठेके पर पहुचने के बाद जब थोडी शराब पेट मे जाती है तो सुबुद्धि की वुद्धि बढ जाती है। वह बोलता है—"हे भाई राम! आज उधार दे दें। कल ही पैसे दे जाऊँगा। मेरी दो-दो बेटियाँ कोठियों मे काम कर रही हैं। वडी बेटी चावल का कारोबार कर रही है। दे, दे दे थोडी-सी।"

"तेरी वडी बेटी वडी चंट है। तुझे पैसे नही देगी।"

"वह तो बाप की हरकतों के बारे मे कुछ नही जानती।"

"तो फिर तू भाभी जी की गर्दन पर सवार होगा?"

"एक नही, सौ वार सवार होऊँगा।"

"सती-साध्वी औरत पा गया है।"

"अरे! उसी की वात सोचकर तो उस पाँन्नो रानी के साथ नहीं गया। वह क्या कम रोई थी?"

"कौन? वह जो नौटंकी करती है?"

"और कौन?"

"तुम्हारे लिए रोई थी?"

"जरूर!"

"उसका घर जानते हो?"

"हाँ, कलकत्ता में रहती है।"

"चुप करो, चुप। इस समय उसकी देखभाल कर रहे है नाथूराम आयल मिल के मालिक नाथूलाल मगनराम।"

"अच्छा!"

"उसके पहले वह दौलता बाबू की रखैल थी। दौलता बाबू को देखा है कभी?"

"अच्छा छोड़ो, अब मैं चलता हूँ।"

उधार की शराब पीकर बेहद खुश-मिजाज से सुबुद्धि घर लौटता है

श्रौर मयना को सामने देखकर बोल पड़ता है—"मयना बेटी, तेरी ही बात सोच रहा था। तेरा जब जनम हुआ तो मैंने गाना बनाया था—'मयना की मयनामती'। वह गाना इतना चला, इतना चला कि चारों ओर धन्य-धन्य होने लगा।"

फिर अचानक सुबुद्धि को लगता है कि घर मे कुछ ज्यादा ही सन्नाटा है। वह हँसकर बोलता है—"तुम लोग कुछ बोलते क्यो नही ?"

रानी रो पडती है और बोलती है—"मयना ने रुपया-पैसा सब मेरे हाथ से ले लिया। कहती है, तुम्हें एक पैसा नही लेने देगी।"

"और भी बहुत कुछ कहा है मैंने वह सब भी कहो न माँ !"

"तो तू ही बोल दे ना।"

"माँ से जो कहा है उसे दोहरा देती हूँ। मैंने गोपला और दूसरे लड़कों को कह रखा है कि अगर तुम्हें शराब पीते देख जायें तो तुम्हारी अच्छी तरह धुलाई कर दें।"

"मुझे पीटेंगे ?"

"हाँ, तुम्हें। नही तो मैं तुम्हें काट डालूँगी और जेल चली जाऊँगी।"

मयना इतने पर ही नही रुकी। दो-तीन दिन बाद बाप से बोली—"आज से तुम रोजगार करने निकलोगे। चावल बेचो। मूँगफली बेचो। चाहे जो धन्धा करो, कुछ कमाकर लाना होगा।"

सुबुद्धि और उसकी बेटी के बीच इस प्रकार का गृहयुद्ध शुरू हुआ। सुबुद्धि धधा-रोजगार के लिए बाहर निकलने लगा। लोग कहने लगे—देखा न सती-सावित्री का प्रताप। इतने वर्षों से रानी ने जो धीरज दिखाया और कष्ट सहे अब उसका फल मिल रहा है।

रामबाबू की पत्नी अपनी कलकत्तावासिनी पुत्र-वधू को सुनाकर बोली—"देखो, रानी को देखो। राख की ढेरी में छुपा हीरा है। मेरा बच्चा ज़रा-सी शराब पी ले, कि आफिस की टाइपिस्ट लडकी के साथ ज़रा-सा घूमने निकल जाय तो हमारे घर मे तूफान मच जाता है। जब देखो तब बाप के घर पहुँच जाती है। वह जो हज़ार-हज़ार रुपया लाता है, नौकरों-चाकरो से घर भरा हुआ है वह दिखाई नही देता। रानी की तरह होती तो गऊ की तरह बेटा घर मे रहता।"

सुबुद्धि इन दिनों घर के मिट्टी का तेल और मसाले का खर्चा देता है। फिर भी रानी की महिमा का खूब प्रचार हो रहा है। आजकल घर-घर में 'संतोषी माँ' अथवा 'जय मंगलवार' आदि का संक्रामक रोग फैला हुआ है। कान्वेंट शिक्षिता तरुणी ऑफिसर वधू अथवा नारी-मुक्ति-आंदोलन की जुझारू नेत्री अथवा कॉलेज की विज्ञान-शिक्षिका सभी इन दिनों व्रतचारिणी हो रही है।

व्रत के उद्यापन के समय अनेक स्त्रियाँ रानी को कपड़े, मिठाई, सिंदूर और चूड़ियाँ देती है।

मयनामती कुछ नही बोलती। वह जानती है कि उसका बाप अब शक्तिशाली विरोधी-दल नही रहा। किंतु दौड़ लगानी हो तो कोई मंजिल तो सामने होनी चाहिए। मयनामती के अशिक्षित, जंगली और जिद्दीपन में कहीं अभी भी पिता ही प्रतिपक्ष के रूप मे स्थापित है। अपने को बचाकर रखने के लिए उसने रूखेपन का अभ्यास किया है। रूखेपन का अभ्यास करते-करते उसका स्वभाव वास्तव में रूखा हो गया है।

वह अपने को अलग करना चाहती है। लगता है दायित्व का यह बोझ अगर वह अपने कंधे पर से उतार पाती तो बच जाती। मगर ऐसा भी नही कर पाती वह।

इसी बीच दोनों छोटी बहनों का ब्याह हो गया। एक का पति किराये का रिक्शा चलाता है और दूसरा गमछा बेचता है। सती-साध्वी की बेटी और मयनामती की बहन होने के कारण बिना किसी झंझट के विवाह संपन्न हो जाना स्वाभाविक ही था। विभिन्न रूपों में रानी और मयनामती दोनों का ही बहुत नाम है।

मगर ब्याह के समय सुबुद्धि के कारनामों ने कुछ असर तो जरूर दिखाया।

रिक्शा-चालक के काकाजी बोले—"जैसे घर की लड़की ला रहे हैं, ऐसे में लेन-देन की बात उठाना ठीक नही है। यह हमारा सौभाग्य है, मगर..."

"कहिए, कहिए न ?"

"लड़के को घड़ी का बड़ा शौक है।"

"और कुछ ?"

"और एक रेडियो।"

मयनामती ने कहा—"ठीक है दूंगी, मगर जैसा दे सकूंगी वैसा दूंगी। बाद मे मीनमेख न निकालिएगा।"

सुबुद्धि बीच में बोल उठा—"हाँ, हाँ, अच्छा ही देंगे।"

मयनामती ने जहर-भरी नजरों से बाप की ओर देखा और बोली—"अच्छा का क्या मतलब है ? तीन सौ रुपये की घड़ी और चार सौ रुपये का रेडियो ? नशा करके आये हो या बैठे-बैठे सपना देख रहे हो ?"

"तू जैसा दे सकेगी, वैसा ही देना।"

"या तो मैं बात करूँ या तुम बात करो।"

"अरे, वह जो वर का काका है वह मुझे बहुत दिनों से जानता है। मैं जो भी कहूँगा उसे वह फूंक मारकर उड़ा देगा।"

"अच्छा, जरा बाहर जाओ तो।"

मयनामती अब आसन सँभालती है और कहती है—"आप लोग तो सब कुछ जानते हैं। हमारी शक्ति भी जानते हैं।"

"हाँ बेटी, तुम्ही बोलो।"

"देखिए सीधी बात है, आजकल जो सस्ती घड़ी और सस्ता रेडियो मिलता है वही दूंगी। दस आदमी से ज्यादे बारात मे नही आने चाहिए। और जो थोडा-बहुत कर सकूंगी। आपका लड़का भी ऐसा क्या है ! उसका अपना रिक्शा तक नही है। आपके घर में रहता है।"

इसी प्रकार बातचीत तय हुई। रानी के मालिकों ने कुछ सहायता की। मयना की बहनों ने जो पैसे कमाये थे वे सब भी काम मे लगे।

लाल तांत की साडी से जिस पर रोलेक्स के फूल बनाये गये थे, बहनों को सजाती हुई मयनामती बोली—"दूली ! फूली ! अगर जरा भी भेजे में बुद्धि हो, तो चाहे जो हो जाय, काम मत छोड़ना। कुछ दिनों की छुट्टी ले लेना।"

"करने देंगे नौकरी ?"

"दिन-रात का काम मत पकड़ना। सिर्फ सुबह-शाम का काम पकड़ना।"

"अगर मना करें ?"

"दुर ! हर महीने तनख्वाह आयेगी, त्यौहार पर कपड़े, जाड़े में चादर— तो कहेंगे और चार घरों का काम पकड़ ले।"

"हम तो काम करना चाहेगी।"

"हाँ, अपनी ताकत नहीं खतम करनी चाहिए। काम छोड़ते ही देखना जूता-लात शुरू हो जायेगा।"

निश्चय ही सुबुद्धि ने अपनी शक्ति-भर झमेला किया।

"यह क्या ! ब्याह क्या इसी झोपड़ी में होगा ? मेहमानों को कहाँ बैठायेंगे ? और खाने में भात, कुम्हड़े की सब्जी, दाल, मछली और चटनी—यह क्या शादी-ब्याह का खाना है ?"

आह ! सुबुद्धि के दुख से रानी की छाती फटती है। दुनिया में उसका नाम है। मालिकों से मदद या उधार लेकर क्या वह कम-से-कम दही और कंदी की व्यवस्था नहीं कर सकती थी।

हाँ, जरूर कर सकती थी।

मगर यह लड़की तो दारोगा की तरह हुकुम चलाती है। इसीलिए हिम्मत नहीं पड़ती।

"तो फिर ऐसी शादी में मैं नहीं शामिल होऊँगा।" सुबुद्धि ने फैसला सुनाया।

"तुम्हारी गाँठ में पैसे हों तो राजमोहन स्कूल की बिल्डिंग किराये पर ले लो, रोशनी करो और माइक के गाने के साथ केटरिंग से खाना मँगवा लो। मैं चूँ करूँ तो कहना।" मयनामती की टिप्पणी थी।

"क्या मैंने कहा है कि मेरे पास पैसे हैं ?"

"तो फिर नहीं शामिल होना चाहते तो जहाँ मर्जी हो जाओ।"

"बाप के बिना ब्याह कैसे होगा ?"

"खूब होगा। पुरोहित जी कन्यादान कर देंगे।"

"ओह ! तो सब इंतजाम पहले से कर रखा है ?"

"जरूर।"

सुबुद्धि को मानना पड़ा कि इस बार भी उसकी हार हुई। शादी-ब्याह के बाद उसने पत्नी से कहा था—"देख लेना तुम। एक दिन

तुम्हारी इस छोकरी के विष-दाँत मैं तोड़ के रहूँगा।"

रानी बिना कोई प्रतिक्रिया किये थोड़ी देर चुप रहती है। फिर कहती है—"ब्याह तो इसका भी हुआ है। एक दिन जाकर बातचीत कर आओ इसके घरवालों से।"

"क्या बात करनी है ?"

"अरे ! घर-द्वार देख आओ ! अगर बहुत बुरा नहीं हुआ तो वह-मुनवर मयना को भी ससुराल भिजवा देंगे।"

"बुरा क्यों होने लगा ? एक आँगन दर चुकी है, दूसरी एकदम जर्जर हो रही है। वह ठहरा मर्द-बच्चा। एक बेटा चौकीदार है, दूसरा आफिस का पिउन। तीसरा गाना गाकर चनाचूर बेचता है।"

"गये थे क्या ?"

"अरे ! हरदम जाता रहता हूँ। वह तो अभी भी राजी है। मैंने भी बता दिया है कि लड़की मेरी कमाऊ है। कुछ गाँठ ढीली करो तो सजाकर उसे भेजूँगा।"

"इसी बहाने उससे ले तो नहीं लिया कुछ ?"

"अरे धत् ! कभी पहले भी किया है ऐसा !"

यहाँ आकर रानी की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है। बहुत दिनों से सुबुद्धि की बातों पर भरोसा करने की आदत है उसकी। गैरकानूनी शराब की दुकान से पुलिस पकड़कर ले गई है उसे। रानी से वह कहता है 'मैंने कुछ नहीं किया है, मयना की माँ। बेकार ही मुझे पकड़ लिया है। गग बाबू को वकील कर लो तो मेरी बेल हो जायेगी और मैं बाहर आ जाऊँगा।'

रानी ने विश्वास किया था।

साइकिल चोरी करके बेचते हुए पकड़ा गया है सुबुद्धि। कहता है—'जरा चढ़कर देख रहा था, कैसी चाल है ? साइकिल चलाने की बहुत दिनों की साध है। बस पकड़ लिया। तुम चिंता मत करो। फटाफट बाहर आ जाऊँगा। देख लेना।'

रानी ने इस बात पर भी विश्वास किया था।

आज भी उसे विश्वास हो गया कि उसने [illegible]

को ले आने का वायदा करके रुपये नहीं लिये हैं। वह तो अपनी लड़की को पहचानता है। ऐसी तो है नहीं कि—"चल छौड़ी, घर करेगी?" बोलते ही चल पड़ेगी।

आजकल घर बड़ा उदास लगता है। दूली नहीं, फूली नहीं। पहले तो घर आती-जाती रहती थी। चलो, अपनी जिंदगी तो है। मयना भी भले-भले अपने घर चली जाये तो हम पति-पत्नी तीर्थयात्रा पर निकल पड़ेंगे।

रानी सोचती है कि टिकट-चेकरों के हाथ-पाँव जोड़कर रेल की यात्रा बिना टिकट के की जा सकती है और तीर्थ में पहुँच जाने पर भोजन भी मुफ्त मिल जाता है। ये सब बातें उसे उसकी एक मौसी ने बतायी हैं। वर्षों पहले उसकी मौसी काशी गई थी और सदाव्रत मे खाया था। रानी को इस पर विश्वास था।

एक दिन मोहल्ले के कुछ लड़के उसे बुलाने आये, बोले—"जल्दी चलो।"

"क्यों रे? क्या हुआ?"

"मयना दीदी का आदमी फूफा के गले में गमछा डालकर ऐंठ रहा है।"

"यह कैसी बात है?"

रानी लड़कों के आगे-आगे दौड़ पड़ती है। उसके घर के सामने भीड़ जमा है। सभी मजा ले रहे हैं। सुबुद्धि के गले में गमछा है और उसके दोनो सिरे पकड़कर एक मुरटंडा उठक-बैठक करा रहा है। उसके सामने एक बूढ़ा खड़ा है। मयना कहीं नहीं दीख रही है। मगर उसकी आवाज सुन पड़ रही है।

"ऐ! उससे छोड़ने को बोल।"

"ऐसे नहीं छोड़ूँगा।"

"अभी तो एक सौ ही उठक-बैठक हुई है।"

"पैसा बिना वापिस पाये नहीं छोड़ूँगा इसे।"

रानी चीत्कार करती हुई गिर पड़ती है। कौन है ये। सुबुद्धि का खून क्यों कर रहे हैं?

मोहल्ले के लोग बीच-बचाव करके सुबुद्धि को छुड़ाते हैं। दिव्य उस मोहल्ले का उभरता हुआ मस्तान है। उस समय प्रकट हुआ। भारी गले से बोला—"क्या हुआ है, पूरी बात सुनकर फैसला होगा। अशोक नगर में बाहरी आदमी आकर हमारा प्रेस्टिज गिरायेगा, यह नहीं हो सकता।"

रानी उठकर सुबुद्धि के पास आती है और पंखा करने लगती है। फिर पानी लाकर देती है। इस समय दिव्य उसके लिए इस विपत्ति से बचाने वाला देवता है।

"बुआ जी, घबराइये नहीं, देखता हूँ।" वह रानी को सात्वना देता है।

दिव्य उभरता हुआ गुंडा है। इस महकमा शहर में कुछ महीने पहले जो दादा लोग राज करते थे और कालेज में अध्यापक की नियुक्ति से लेकर नगरपालिका के लिए झाड़ू और बाल्टी की खरीद तक सारी बातों पर नियंत्रण रखते थे, उनमें से तीन लोग इस दुनिया में नहीं हैं और तेरह लोग शहर छोड़कर भाग गये हैं।

कुछ महीने पहले अचानक पता नहीं क्यों पुलिस अत्यंत उत्साहित होकर अपने कर्त्तव्य-पालन में जुट गई थी। ऊपर से किसे हटाने और किसे मदद पहुँचाने का संकेत हुआ था—इस पर भी पुलिस का ध्यान न रहा।

वेध्यानी के कारण हो, या कि पुराने गुस्से के कारण, एक राजनीतिक दल के तीन श्रेष्ठ गुंडों को पुलिस ने पान चबाते-चबाते दिन की रोशनी में सड़क पर बिछा दिया। रोज की तरह उस दिन भी वे रास्ते के दोनों ओर की दुकानों से कर वसूल कर रहे थे। कर न देने पर वे दुकान का सामान उलट-पलट देते थे और साथ ही कई दुकानदार मुर्दाघर भी पहुँच जाते थे। इसलिए उस दिन भी दुकानदार मन मारकर कर दे रहे थे कि पुलिस ने अचानक हमला बोल दिया। ओह! कितनी अपमानजनक स्थिति थी। न पुलिस की पोशाक न हिन्दी फिल्मों के नायकों की तरह कोई रेखा। मुँह में पान, नीचे लुंगी, ऊपर कुर्ता और रिवाल्वर के मुंह से आग उगलती गोलियाँ।

देखने वाले अवाक्। उक्त तीन महानुभावों ने खून-राहजनी-संत्रास-

रैप जैसे अनेक अच्छे काम किये थे। पर उन कामों के लिए उनको कभी कोई पुरस्कार नहीं मिला। फिर यह कैसे हुआ? कौतूहल के बावजूद जनसाधारण ने चैन की साँस ली।

तीन मारे गये और शेष तेरह जनों ने अपना जाल समेट लिया। उसके बाद जब लोग थोड़ा राहत महसूस करने लगे तो पुलिस ने फिर हाथ खींच लिया।

शहर में मस्तानी के अभी भी कई पद खाली हैं, फिर भी फट् से कोई खाली कुर्सी पर बैठने का इच्छुक नहीं। दिव्य उन्हीं लोगों में है। वह उत्साही तो है पर मंच पर इंट्री लेने मे डर रहा है। इसमें सिर्फ उत्साह से काम नहीं होता। पहले पुराने मस्तानों से 'म्यूचुअल' करना पड़ता है, फिर कोई राजनीतिक खूँटा ढूँढना पड़ता है।

दिव्य अभी भी इस स्थिति से उबर नहीं पाया है। अभी तक वह ऐसा कोई हाथ नहीं दिखा पाया है कि उसे राजनीतिक मदद मिल सके। अभी वह इस-उसके साथ 'म्यूचुअल' करके अपना प्रभाव बढा रहा है।

यह 'म्यूचुअल' भी कोई खराब धंधा नहीं है। बस्ती में राम और श्याम के बीच 'म्यूचुअल' करा देने से दूर शहर में बैठे यदु बाबू खुश हो सकते हैं और खुश होकर यदु बाबू क्या नहीं दे सकते।

स्टेशन पर हरि और भोला के दल मे 'म्यूचुअल' कराने के बाद वकील पाड़ा के दीपक का दल दिव्य को अपने क्लब में आने का न्यौता दे सकता है।

व्यक्तिगत मामलों मे हमेशा 'म्यूचुअल' करा देना लाभकारी नहीं होता। सुबुद्धि के मामले में तो दिव्य इसलिए फँस गया कि वह इस रास्ते साइकिल पर जा रहा था और लोगों ने, पहचान कर, उसे रोक लिया था।

कुछ ही दिनों पहले दिव्य की शादी हुई है। पहले एक बार उसने मयनामती को देखकर जब गाया था—

> ओ रे मेरी मयना,
> इधर जरा आयना,
> गढा दूँगा गहना—

सो बड़ी मुश्किल में फँस गया था। मयनामती ने पीछे से हाँक देकर उसका नाम लेकर पुकारा था—'क्यों रे दिव्य, अभी कल तक तो तुझे हाफ पेंट मे रस्सी बाँधना नही आता था और आज हीरो बन गया! समझ मे नही आता कि किसे क्या बोलना चाहिए?'

निश्चय ही दिव्य अब थोड़ा बदल गया है। अपने इलाके में छः-सात झगड़ों का फैसला किया है और उसके फैसले मान्य हुए हैं। इससे उसकी इज्जत बढी है यह बात दिव्य जानता है और जो लोग इन बातों की खोज-खबर रखते है उनका ध्यान दिव्य की ओर है।

आजकल की राजनीतिक परिस्थिति में गुडो द्वारा सामाजिक नियत्रण बनाये रखने की प्रथा-सी चल पडी है। इस समय शहर का नियत्रण ढीला हो गया है। फलस्वरूप दुनिया-भर के मस्तानो और गुडों पर सतर्क होकर नज़र रखी जा रही है। पता नही आज का नौसिखिया दिव्य कल का बड़ा मस्तान बन जाय या नेता बन जाय।

मस्तान लोग कभी अकेले नही घूमते है। दिव्य के पीछे-पीछे उसके चमचे भी आ गये। दिव्य मयनामती के चबूतरे पर एक पाँव रखकर खडा हुआ।

"मामला क्या है?'

मुस्टंड युवक ने कहा – "मैं बताता हूँ।"

बूढ़ा इस बीच कुछ कहने की कोशिश कर रहा था कि वही युवक चढ बैठा—"एकदम नही बोलोगे तुम! बुढापे में सर्वनाश करने चले थे और अभी बोलना बाकी है?"

"ठीक है, आप ही कहिए।"

"मुझे थोडा पानी चाहिए।" सुबुद्धि ने हाँफते हुए कहा।

उपस्थित भीड़ में से किसी मसखरे ने कहा—"भइया, तीन-चार घडा पानी ले आना, साथ में गिलास भी।"

अभी भी सुबुद्धि के गले में गमछा लिपटा हुआ था। उसने पानी पिया। मुस्टंड युवक ने भी पानी पिया। बूढ़े ने भी आखीर मे पानी पिया और बोला—"घर की बात को बाज़ार में नुमाइश करने की जरूरत नही है। चलो घर चलें।"

"नहीं, इस बात का फैसला होना ही चाहिए।"

सुबुद्धि ने भी फुसफुसाते हुए कहा—"चले जाओ भइया, तुम्हारे पिता ठीक ही कह रहे हैं।"

"एकदम चुप करिए।" युवक ने सुबुद्धि को चुप कराने के बाद दिव्य की तरफ देखा और सुबुद्धि की ओर इशारा करके कहा—"ये सज्जन दो महीने से बार-बार हमारे घर जाते हैं। पता नहीं, हमारे बाप से क्या खुसपुस करके बतियाते हैं। यह हमारे बाप है। (उसने दूसरे बूढ़े की ओर इशारा किया।) इनकी पहली पत्नी से मैं हूँ। दूसरी पत्नी से भी बच्चे हैं। कुल मिलाकर हम चार भाई हैं।"

"बहिन नहीं है?"

"हैं, उन सबका शादी-ब्याह हो गया है। बडी मुश्किल से किसी तरह हम लोग घर-गृहस्थी चला रहे हैं। पिताजी ने जीवन-भर पकौड़ी की दुकान चलाई। हमारे पास डेढ बीघा ज़मीन है, उसमें बैंगन और कुम्हड़ा बोया जाता है। हम लोगों ने पिताजी से कहा—'सौतेली माँ है नहीं, तुम्हारी इतनी उमर हो रही है। तुम नाती-पोतों को लेकर बैठे रहो, तुम्हें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, मगर अपने जीते जी ज़मीन का बँटवारा कर जाओ, जिससे बाद में कोई झमेला खड़ा न हो।'"

"यह तो उसूल की बात है।"

"पिताजी की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। पता नहीं कब उन्होंने इनकी लड़की से ब्याह किया था।"

"मयनामती के साथ?"

"उन्हीं के साथ होगा, मुझे नाम पता नहीं है। पिताजी अब क्या करना चाहते हैं कुछ बताते नहीं। थोड़ी ज़मीन खरीदने के लिए बयाना देने को दो सौ रुपये रखे थे। पिताजी ने हड़प लिए सब रुपये।"

"फिर?"

"घर में चिल्ल-पों मची तो बोले कि इनकी बेटी को लेकर नयी गृहस्थी बसाना चाहते हैं, इसलिए वे रुपये इन्हें दिये हैं, लड़की के लिए कपड़ा-लत्ता खरीदने को।"

"कब दिये रुपये?"

सुबुद्धि ने फिर फुसफुसाकर कहा—"दूली, फूली के ब्याह के बाद से तो मैं घर में ही हूँ।"

"फिर क्या हुआ?"

"अब सुन रहा हूँ उन्होने मेरे बाप को सिखाया है कि उस डेढ बीघे ज़मीन का आधा इनकी बेटी के नाम कर दें। अब बताइये, अडसठ साल का आदमी क्या नई गृहस्थी बसायेगा? मैं पिउन का काम करता हूँ। अपनी गाढी कमाई का कितना रुपया उस ज़मीन पर लगाया है मैंने।"

"अरे! क्या यही मयनामती के दूल्हा हैं?"

"हाँ भाई, धर्म की साक्षी देकर कहता हूँ, खर्चा देकर ब्याह किया है मैंने। एक औरत पहले मर गयी। इनकी माँ भी बहुत बूढी हो गई है। इसीलिए सोचा बुढ़ापे मे सेवा-यत्न करने के लिए..."

"मयनामती!" दिव्य के मुँह से निकला। वह विवाहिता है या नही यह भी उसे मालूम न था। क्या उसकी माँग मे कभी सिंदूर देखा है?

"बहुत खराब मामला है।" गोपाल ने कहा। मुस्टंड युवक ने कहा—"मैं आया हूँ तो समझिये पिताजी की जान बच गई, वर्ना हमारे भाइयो का इरादा था कि बूढे की टाँग तोड़कर बिठा दें।"

बूढ़ा चारों ओर देखकर बोला—"सुना आप लोगों ने इसकी बात? मैं अगर अपनी ब्याहता को लेकर अपनी गृहस्थी बसाना चाहता हूँ तो इसमे बुरा क्या है?"

"रुको, ज़रा बात को समझने दो। इन्होने मयनामती से ब्याह किया था?"

"दो पत्नियों के रहते।" युवक ने जोडा।

"उन्होने पहले कभी मयनामती के साथ गृहस्थी नही बसाई?"

"कभी नही।"

"अब बसाना चाहते है?"

"हाँ।"

"मयनामती के बाप ने रुपये लिये हैं?"

"जी।"

"आप सोच रहे हैं कि ज़मीन-जायदाद का बँटवारा हो जायेगा..."

और ऊपर से रुपयों की भी चोट खा गये हैं ?"

"जी हाँ ।"

"समझ गया । मगर आप मयना के बाप के गले में गमछा डालकर जो उसे चक्कर खिला रहे थे, अगर वह मर जाता तो आपके सिर पर खून का इलजाम लग जाता ।"

"जी हाँ । गुस्मा कितनी बुरी चीज है पहले नही जाना था ।"

"अब इस मामले को शांति से बैठकर बातचीत के द्वारा सुलटाना होगा । मतलब सभी लोग मिलकर..."

दिव्य उतना ही बोलता है जितना जानता है । मामला चाहे जितना साफ हो, पर आसमान नीला है, जल नीचे की तरफ जाता है, समुद्र का पानी खारा होता है—इन सब बातों को बोलने के लिए भी—बहुपक्षीय आलोचना की आवश्यकता होती है दिव्य को ।

दिव्य कहता है—"दिन-काल ऐसा आ गया है कि बिना सबकी सहमति के यह कहना भी मुश्किल है कि यह मेरे मामा हैं ।"

मगर आलोचना, वार्ता, 'म्यूचुअल', यह सब प्रचलित रीति-नीति हवा हो गई एक पल मे । झन्न करके मयनामती ने दरवाजा खोला । सबको दिखाकर उसने लोहे की एक चूड़ी हाथ में से निकालकर फेंक दी । फूली और दूली के ब्याह के समय पडोसिनों ने मयनामती की माँग मे सिंदूर डाल दिया था । मयनामती के मना करने पर कहा था, 'अच्छा नही लगता । यह एक नियम है आदि-आदि ।' रानी ने भी डाँट लगाई थी, 'रोज़ की तरह आज भी झनक-पटक मत करो, बेटी !'

मयनामती ने बालो को खोलकर सिर के एक झटके से फैला दिया और आंचल के कोने से माँग का सिंदूर पोंछ डाला, फिर बाप से बोली—"रुपये कहाँ रखे हैं ? निकालकर दो ।"

इसके बाद मुस्टंड युवक से बोली—"यह आदमी अगर फिर कभी आप लोगों के घर जाय तो टाँग तोड़ दीजियेगा ।"

सब चुपचाप एक-दूसरे का मुँह देखने लगे । पकौड़ी बेचने वाले बूढ़े ने एक समय की अपनी बालिका वधू को ब्याह के बाद पहली दफा देखा । आहा ! क्या सुंदर रूप है ! भरपूर जवानी ! हाय, ऐसी औरत मेरे भाग्य

में न थी।

मयनामती दनदनाती हुई जनता के बीच से निकल गई। इस तरह यह नाटक समाप्त हुआ। गोपला और दीनू मुग्ध प्रशंसा के भाव से मयनामती को देख रहे थे।

गोपला ने कहा—"मयना दीदी को लेकर कोई झमेला नहीं चल सकता। बाप रे! क्या नागिन की तरह फुफकारती हैं।"

दिव्य ने भी अपनी इज्जत बचाने के लिए हाथ झाड़ते हुए कहा—"बस! अद्भुत फैसला हो गया। अब आप लोग अपना-अपना रास्ता नापिये।" फिर सुबुद्धि की ओर देखकर बोला—"दादा, आपका जेल-हाजत में रहना ही ठीक रहता है, बाहर निकले नहीं कि झमेला शुरू। इस बार बेटी ने बचा लिया।"

अब बूढ़े और उसके बेटे में भी मेल हो गया। बेटे ने कहा—"पिताजी चलो, यहाँ रुकने से क्या फायदा?"

"चलता हूँ। पैसे तो ले लूँ।"

सुबुद्धि ने छिहत्तर रुपये निकाल कर उन्हें दे दिये और बोला—"बस, इतने ही हैं।"

दिव्य ने कहा—"दो नंबर की जाली पारटी जिसे कहते हैं, वही है यह। जो पा गये, बहुत है। अब फूट लीजिए।"

दिव्य के चमचों में से पोना नवी कक्षा तक स्कूल गया है। इस दल का वह सर्वाधिक शिक्षा-प्राप्त सदस्य है। उसने जरा साहित्यिक भाषा मे व्यंग्य किया—"यह क्या राजा दशरथ का राज्य है? इस समय दो-तीन ब्याह करना सरासर अपराध है। पुलिस जान गई तो छोड़ेगी नहीं।"

ऐसी बात पोना ही कह सकता है, क्योकि उसके बड़े भाई ने पिछले चार महीनो में अलग-अलग शहरों में मोटा दहेज लेकर तीन ब्याह किये और कुछ ही रोज पहले जेल गया है। जाते-जाते कह गया है—'जेल से बाहर आते ही फिर नया ब्याह करूँगा।'

भीड क्रमश: छँट गई। लोगो को जितने आनन्द की उम्मीद थी उतना नहीं मिलने पर निराश और दुखी हुए। जो लोग रानी के परिवार को जानते थे उन्हें भी इस मामले से दुख हुआ। दोनो पक्षो ने सुबुद्धि की काफी

लानत-मलामत करके दर छोड़ा।

रानी कांपते-कांपते उठी और घर के अंदर जाकर आंख मूंदकर जमीन पर लेट गई। जीवन मे पहली बार उसके भीतर सब कुछ चूर-चूर हो रहा है। पता नही कौन जैसे कलेजे पर हथौड़ा चला रहा है। मयनामती का घर-वर! यही उसका नमूना है? बाप होकर उन्होने यह काम किया?

सुबुद्धि ने समझा, चलो आज के लिए यह विपत्ति टली। घर के अंदर आकर उसने कहा—"जरा एक कप चाय बनाना। गला एकदम सूख कर कांटा हो रहा है।"

रानी चुपचाप जहां की तहां पड़ी रही, हिली तक नही।

"क्या हुआ?···मयना की मां?"

"मरे नहीं तुम? मरो—मरो।"

"क्या कहा?"

"जहर खाकर मरो, जहर न मिले तो रेल के पहिये के नीचे सो जाओ, या फांसी लगा लो। तुम्हें जिंदा रहने का हक नही है।"

"मयना की मां···तुम!!!"

"मरो-मरो। मयना ने तुम्हें ठीक पहचाना था। मैं ही पापिन हूँ।"

सुबुद्धि जैसे बौखला उठा। इतने दिनो के बाद अपनी सती-साध्वी पत्नी के मुंह से यह क्या सुन रहा है वह!

"तूने ऐसा किया···" कांपते गले से रानी बोली, "निकलो यहां से।"

सुबुद्धि रो पड़ा। रानी ने गहरी सांस ली और उठकर घड़े से पानी लेकर भरपेट पिया। फिर जैसे हवा से बोली—"मैं काम करने जा रही हूँ। लौटकर अगर तुम्हें घर मे पा गयी तो देखना क्या करती हूँ।"

ढूंढ़-ढांढ़कर जो भी दो-चार रुपये और खुदरा पैसे मिले उसने आंचल मे बांध लिये। इस घर मे सबसे मूल्यवान चीज है मयनामती का बक्सा। घर की दो-चार बहुमूल्य चीजें और मयना के बचाये हुए दस-बीस रुपये उसी मे रखे जाते हैं।

अवाक् सुबुद्धि ने सामने से मयनामती का बक्सा लेकर बाहर जाते हुए रानी को देखकर पूछा—"क्या···खाना नही बनेगा?"

"जहर खा लो।"

रानी का मन मयनामती के लिए आकुल-व्याकुल हो रहा है। मालिके के घर में नहाकर वह दालान में पड़ी हुई थी। मालकिन ने सहानुभूति दिखाकर रानी के पेट का सब हाल जान लिया। फिर बोली—"तुम ही जो उसे बर्दाश्त कर रही हो। उसे बाहर करो और माँ-बेटी आराम से रहो। तुमको पाँच घर में खटने की क्या ज़रूरत है? मेरे यहाँ ही दिन-भर पड़ी रहो।"

"मयना से पूछूँगी।"

"यह ब्याह तो ब्याह है ही नहीं। हमारा भतीजा वकील है। वह कहता है ऐसा ब्याह गैर-कानूनी होता है।"

"माँ, मैं मयना का ब्याह करना चाहती हूँ।"

"ज़रूर करो, तुम्हारी लड़की की कोई बदनामी भी नहीं है।"

"बहनों का ब्याह अभी पिछले दिनों करवाया है। आप लोगों की दया और सहायता से उस विपत्ति से छुटकारा मिला।"

"मेरा मन बहुत बड़ा है। कोई दया की भिक्षा माँगता है तो ना नहीं कर पाती हूँ।" मालकिन बड़े गर्व से कहती हैं।

रानी बहुत दिनों से उनके घर काम करती आ रही है। रानी के भरोसे अपना घर-बार छोड़कर मालकिन ने तारकेश्वर और कलकत्ते की कई बार दौड़ लगायी है। सतरह सालों में रानी की तनख्वाह बीस रुपये महीने तक पहुँच गई है। फूली और दूली के ब्याह में मालकिन ने पूरे सौ रुपये दिये थे। बोली थी—"नहीं, नहीं, तुमको लेना ही होगा। मेरी पतोहू का चार हज़ार का नेकलेस खो गया था, तुम्हीं ने ढूँढकर दिया था। चार पैसे का इनाम भी नहीं लिया था। वह घटना क्या मैं भूल सकती हूँ।"

रानी के संतोषी स्वभाव के और भी कई प्रमाण इन सतरह वर्षों में मालकिन को मिल चुके हैं, फिर भी सौ रुपये से ज़्यादा उन्होंने नहीं दिया। इससे ज़्यादा देने की बात भी दिमाग में नहीं आयी। और उस तुच्छ सहायता को वे अपने बड़प्पन का परिचय मान रही हैं।

"आज खाना यहीं खा लो।"

"थोड़ा सो लेती हूँ।"

"पहले दो कौर खा लो, फिर सोओ। और हाँ, पीतल के चारों घड़े

आज माँजती जाना। इमली माँग लेना।"

रानी ने मालकिन की बात मान ली। मयना की बात सोचते-सोचते, अपने सड़े-गले जीवन के बारे में सोचते-सोचते मालकिन द्वारा दिये गये भात को निगलती रही और उसके आंसू सामने की थाली में चूते रहे।

उधर मयना घर से निकलकर जिधर सींग समाया उधर ही चल पड़ी। चलते-चलते शहर के पूरब की ओर निकल गई। वह अकेले में बैठना चाहती थी। आदमी की परछाईं से भी वह दूर भाग जाना चाहती थी।

"दीदी, ओ दीदी," पीछे से आवाज आयी और एक पल बाद फूली का दूल्हा रिक्शा लिये उसके बगल में आ खड़ा हुआ और बोला—"बात क्या है?"

"कैसी बात?"

"सुना है तुम लोगों के घर खूब झमेला हुआ है? फूली ने कहा जाकर पता कर आओ। वहाँ गया तो देखा ससुर जी अकेले सोये पड़े हैं। मुझे देखकर फूट-फूट कर रोने लगे।"

"क्या आज रिक्शा लेकर नहीं निकले थे?"

"निकला था। सवेरे स्कूलों के ट्रिप पूरे करके इसी समय एक बार घर लौटता हूँ। फूली भी अपने काम से लौटती है। दोनों बैठकर एक कप चाय पीते हैं।"

"बाबा को पैसे-वैसे तो नहीं दिये? देखो, भूलकर भी यह काम मत करना।"

"नहीं, नहीं, वरन् ससुरजी ने ही मुझसे कहा—'बाबू, जरा जाकर अपनी बड़ी दीदी को खोजो। मुझे तो लगता है कि वह आत्महत्या करने गई है।' तभी से तुम्हें ढूँढ़ रहा हूँ। कोई कहता इधर गयी, कोई कहता उधर गयी। अंत में यहाँ मिली, मेरी किस्मत अच्छी थी। आओ, रिक्शे में बैठो।"

"कहाँ ले जाओगे?"

"चलो न, इस गरीब के घर पर ही एक बेला रुक जाओ।"

"तुम्हारे घर? इन कपड़ों में?"

"चलो न, दीदी!"

"ठीक है! चलो।"

मयनामती रिक्शे पर बैठ जाती है। थोड़ी देर के बाद झुककर कहती है—"अरे रजत! जरा मिठाई की दुकान पर रोक लेना।"

"मेरे साथ कोई दिखावा करने की जरूरत नही है।"

"अरे! तुम्हारे काका लोग भी तो हैं?"

"रहने दो, तुम तो मेरे घर जा रही हो।"

"फूली तुम्हारी अच्छी तरह देखभाल करती है न?"

"जी हाँ।"

काका की जमीन के एक कोने मे एक छोटी-सी घास-फूस की झोंपड़ी है, जिसमें फूली रहती है। कमरे की दीवार पर एक देवता की तसवीर, एक आईना और प्लास्टिक की फूलदानी में प्लास्टिक के ही फूल लगाये गये थे। एक चौकी थी जिस पर साफ-सुथरी चादर पड़ी हुई थी और चौकी के ही नीचे बर्तन-भाड़े सहेजकर रखे हुए थे।

दीदी का हाथ पकड़कर फूली ने चौकी पर बैठाया।

रजत ने कहा—"रोज 'दीदी, दीदी' कर रही थी। लो, ला दिया न तुम्हारी दीदी को!"

आँखो मे उमड़ते आँसुओं को जबरदस्ती पीछे ठेलती हुई फूली ने खँखारकर रुँधे गले को साफ करते हुए कहा—"चाय बना रही हूँ, पीकर जरा दुकान तक हो आओ।"

"फूली, कुछ मँगाने की जरूरत नही है।"

"तुम चुप रहो, दीदी।"

"बेकार मे खर्चा होगा।"

"कहा न, तुम चुपचाप बैठो। आज अगर वह कांड न होता तो तुम्हारे साथ मुलाकात भी न होती। ब्याह कराके ही तुम जैसे हम लोगो को भूल गयी। एक बार आयी तक नही।"

"तू तो जानती है सब बात।"

"जानती तो हूँ। सिर्फ यह नही जानती कि हमने कौन-सा पाप किया है कि हमारे लिए तुम्हें इतना दुख उठाना पड़ रहा है।"

"अच्छा जा, चाय बना।"

"एक दिन दूली आयी थी, तुम्हारे लिए खूब रो रही थी।"

"दूली से मुलाकात होती है ?"

"दोनों एक साथ ही काम पर जाते हैं।"

फिर एक पल रुककर फूली ने कहा—"अगले दो महीने में तुम्हारे बहनोई अपना रिक्शा कर लेंगे।"

"क्या बैंक से पैसे ले रहे हैं ?"

"हाँ, उनके मालिक उसका इंतजाम कर रहे है। पहले तो रिक्शा मालिक के नाम बंधक रहेगा। पैसे चुका देने पर अपना हो जायेगा।"

"सूद लेगा ?"

"कह तो रहा है, नहीं लेगा।"

"देख! बाबू लोगो का कोई विश्वास नही है।"

फूली को देखकर लगता है वह खूब सुखी है। शायद दूली के दिन भी ऐसे ही कट रहे हों। मयनामती सोचती है इन लोगों का जीवन एक ढंग का है और मेरा एकदम दूसरे ढंग का। मेरी छाया पड़ने से भलाई के बदले इनकी बुराई ही होगी।

फूली दीदी को चाय देती है और साथ में मुरमुरे। रजत अंडे लाता है। कहता है—"प्याज और हरी मिर्च डालकर बढ़िया-सा बना दे। मैं अभी घूमकर आता हूँ। समझ गयी न ?"

"हाँ, समझ गयी।"

फूली का जनता स्टोव एक बार फिर गडगड़ाने लगा।

फूली के उस छोटे-से झोपड़े मे, आँगन मे खड़े नीम के पेड़ की डालियों मे सरसराती हवा मे, और उस किनारे की बड़ी नाली से निकलती बदबू में अजीब-सी शांति थी। मयनामती ने सोचा, उसकी माँ को इतना भी नसीब नही हुआ। थोड़ी देर मे मयनामती उसी चौकी पर पडकर सो रहती है।

"खायेंगे क्या ?"

"मियालदह से आलू और प्याज खरीदकर लाऊँगी, यहीं पर बैठकर बेचूंगी।"

"यह काम हमसे होगा ?"

"मैं करूँगी, तुम घर में रहना।"

"अच्छा बैठ, तेरे बालों में तेल डाल दूँ।"

लड़की के बालों में अँगुलियाँ फिराकर उनका जट छुड़ाते-छुडाते रानी ने कहा—"मयना !"

"क्या ?"

"मेरी एक बात मानेगी ?"

"क्या ?"

"तू ब्याह कर ले।"

"माँ, फिर ब्याह ?"

"बेटी, वह तो ब्याह नहीं था।"

"नहीं माँ, वह बात मैं सोच भी नहीं पाती। पचीस-छब्बीस की हो गयी, अब किसलिए वह सब ?"

"तू एक बार हाँ कर दे। दूली का दूल्हा कहता है तेरे लिए वर ढूँढ देगा। ब्याह करेगी तो तेरा भी एक संसार होगा।"

"तुम्हारे संसार ने तुम्हें कितना सुख दिया है ?"

"बेटी, क्या सभी की किस्मत एक जैसी होती है ? तेरी बहनें कितनी सुखी हैं !"

"नहीं माँ, छोड़ो वह सब।"

"अच्छा, एक बात बता, मयना ! तू इधर-उधर इतना आती-जाती है, क्या तेरा मन किसी मरद पर नहीं गया ? ऐसा भी तो होता है ?"

"माँ, आदमी तो रोज ही देखती हूँ मगर उनके साथ काम का रिश्ता है। काम खतम हुआ तो वे अपने रास्ते, मैं अपने रास्ते।"

"तेरी किस्मत और मेरी किस्मत जैसे एक ही कलम से लिखी हुई है।"

"अब कुछ भी अच्छा नहीं लगता।"

"मुझे भी।"

"शरीर जैसे एकदम टूट-सा गया है।"

"हम भी तो आदमी हैं।"

कहा गया है कोई आशा हो, कोई लक्ष्य हो तो आदमी शैतान की तरह काम करता है। कौन कह सकता है कि यह वही रानी है जो दिन-रात खटती रहती थी। ढेर के ढेर बर्तन माजना, बाल्टी के बाल्टी कपड़े धोना, मसाले पीसकर बड़े-बड़े ढेर लगा देना। किसलिए?

इस कड़ी मिहनत के पीछे था परिवार के लिए रोटी जुटाना और मन में यह आशा कि उसका पति उससे स्नेह करेगा।

अचानक सब समाप्त हो गया।

वह जर्जर शरीर तो मन के ज़ोर से चलता था। अब तो मन का ज़ोर भी नहीं है। शरीर चले तो कैसे? धीरे-धीरे रानी को बुखार आने लगा। पहले उसने सोचा—'कुछ नहीं, मौसमी बुखार है। ठीक हो जायगा।' और अपने सब काम करती रही, मगर ज्वर नहीं गया और रानी ने बिछौना पकड़ लिया।

शायद सुबुद्धि के भीतर कहीं भी उसकी आत्मा की पेंदी में ज़रा-सी मनुष्यता बच गयी थी जिसने उस समय ज़ोर मारा। उसने मयना से कहा—"चलो मयना! माँ को हस्पताल ले चलें। घर में रखकर दवा कराना तो हमारे वश का है नहीं। हस्पताल में हमारी जान-पहचान है।"

मयना गहरी साँस लेकर बोलती है—"फायदा क्या है? माँ तो बचेगी नहीं। अब अंत समय कहाँ नरक में ले जाओगे?"

"नहीं रे, वहाँ पाँच तरह की जाँच होगी, दवा देंगे, सुई लगायेंगे।"

सुबुद्धि ने दिव्य को जाकर पकड़ा। उसके हाथ-पाँव जोड़े, कहा—"मैं बुरा हूँ, मगर वह तो अच्छी है। उसकी ओर देखकर उसे हस्पताल में भर्ती करा दो।"

दिव्य ने समझाने की बहुत कोशिश की कि हस्पताल में भर्ती कराने के लिए कोई मस्तान के पास नहीं आता। यह सब काम राजनीतिक लोग करते हैं। मगर सुबुद्धि को समझाना असंभव था। लाचार होकर दिव्य ने इस मामले में दिलचस्पी ली।

हस्पताल में भी कुछ नहीं किया जा सका। कमजोर दीवाल जैसे पलस्तर नहीं पकड़ती, उसी तरह कमजोर शरीर को, जिसकी जीवनी-शक्ति समाप्त हो गयी हो, किसी भी चिकित्सा और किसी भी परीक्षा से फिर से जीवंत नहीं किया जा सकता।

"मयना, मेरे लिए पोस्ते का दाना तलकर ले आना। यहाँ जो खाने को देते हैं वह एकदम खाया नहीं जाता।"

"डाक्टर से पूछूंगी।"

डाक्टर और नर्स कहते हैं—"देना तो ठीक नहीं है, पर···अगर बहुत जिद करें तो···आप खुद समझदार हैं।"

मयना समझती है।

तला हुआ पोस्ते का दाना, फूली का लाया हुआ बिस्कुट और दूली के लाये हुए संतरे—इनमें से कुछ भी नीमबेहोशी की हालत में पड़ी रानी को खिलाया नहीं जा सका। रानी के मुँह से जो अंतिम शब्द सुन पड़े वे थे—"हाँ, मालकिन, कलशी को इमली से माँज दिया है।"

दूसरे दिन रानी की मौत हो गयी।

मयना ने माँ के मुँह मे आग दी। बाँस के पत्ते की तरह हल्के रानी के शरीर को आग को समर्पित कर मयना ज़मीन में लोट-लोटकर रोयी। सभी लोग उसके दुख से दुखी थे। गोपला ने उसका हाथ पकड़ कर कहा —"दीदी, तुम अपने को अकेली मत समझो। माँ चली गई तो क्या, अभी भाई और बाप जिंदा है।"

माँ की मौत ने मयना को बहुत तोड़ दिया। पुराना जीवन, पुराना काम, मगर कुछ भी अच्छा नहीं लगता था उसे।

एक दिन जब सुबुद्धि ने उससे कहा कि चल मयना, हम कोई और काम करें, तो वह चकित रह गयी।

"क्या काम करेंगे ?"

"चावल के कारोबार में तो कुछ खास हो नहीं रहा है। रोज तू सूखा मुँह लेकर आ जाती है।"

मयनामती सिर्फ अपने बाप को देखती रहती है।

"सुना है महाजन भी उधार देने मे हिचकते हैं और धंधा भी बहुत

खराब हो गया है।"

"हद से ज्यादा खराब। गुंडों को पैसा दो, पुलिस को घूस दो और रेल के अदर रेल के बाबू लोगों के साथ भी हुज्जत करनी पड़ती है। माँ के कारण कई दिन नहीं जा पायी थी तो महाजन बोला—तुझे अब माल नहीं दूंगा।"

"कहाँ का महाजन है?"

"लाल गोला लाइन का।"

"चल बॉर्डर की तरफ चलते है।"

"करेंगे क्या?"

"तू यहाँ से लुंगी और बनियान खरीद कर ले जाना। उस पार से आकर लोग खरीद ले जायेंगे।"

"मुझसे होगा यह काम? नहीं, मुझसे नहीं होगा।"

"तब?"

"देखती हूँ अनाज ले आ सकती हूँ या नहीं?"

"ठीक है।"

सुबुद्धि ने गहरी साँस लेकर कहा—"तू मेरे लिए मत सोचना। जैसे भी होगा अपना पेट पाल लूंगा। तू बस अपने बारे मे सोच।"

फिर थोडी देर सोचकर सुबुद्धि ने कहा—"आजकल भीख माँगने का धंधा सबसे अच्छा है।"

"छिः! छिः।"

"तुझे करने को नहीं कह रहा हूँ। सिर्फ कह रहा हूँ कि धंधा अच्छा है।"

"तुम्हें कैसे पता चला?"

सुबुद्धि ने दीवाल के सहारे पीठ टिकाकर बीडी सुलगाई और बोला—"कभी भी अच्छी बात नहीं सोची, अच्छे रास्ते पर नहीं चला। उन दिनों कितने ही लोगों से परिचय था। चाहता तो मुझे भी सड़क के किनारे दुकान मिल सकती थी। पर उस समय तो मैं जानवर बन गया था। आदमीयत रह ही कहाँ गई थी मेरे अंदर।"

"कोशिश करते तो जरूर कुछ न कुछ कर सकते थे। क्यों नहीं किया

तुमने कुछ ? क्यों यों ही ज़िंदगी बर्बाद की ? अब जो अच्छी बातें तुम कर रहे हो, वह अगर माँ के ज़िंदा रहते ही करते, तो सुनकर माँ को कितनी शांति मिलती ?"

"उसकी बात रहने दो।"

"तो फिर अपनी ही बात करो।"

"देखता हूँ, उस पार से रोज़ कितने ही लोग आते है। दिन-भर भीख माँगते हैं और शाम को वापिस चले जाते है। कुछ मिलता नही तो आते ही क्यो ?"

"रहने दो यह बेकार की बात।"

"और···उस आदमी को देखा।"

"किसे ?"

"बहुत दिन पहले ··वह जो आदमी एक दिन ट्रेन में मुँह से खून उगल रहा था···तेरे कहने से जिसे पुलिस वाला हस्पताल ले गया था। याद आया ?"

"अरे ! तो क्या वह मरा नही ?"

"नही रे ! मरता तो लावारिस लाश होता और मुझे जरूर पता चल जाता। बाग्ला देशी आदमी है, उसके वारिस यहाँ कहाँ ?"

"तुम भी धन्य हो !"

"क्यो ? क्यों ?"

"हस्पताल में आदमी लावारिस मर जायें तो तुम्हारे लिए आमदनी का रास्ता बन जाता है। हस्पताल के डोम के साथ मिलकर उसकी ठठरी तुम बेचते थे, मुझे तभी पता चल गया था। कैसे तुम्हारा दिल करता था, ऐसा काम करने को ?"

"अरे ! खरीदते थे, पाल बाबू। मुझे तो बस खबर इधर-उधर करनी होती थी। पाँच-दस रुपये कमा लेता था। छि· छिः करना हो तो पाल-बाबू को कर।"

"वह व्यवस्था करता था ठठरियाँ बेचने की ?"

"हाँ, सभी जगह यही होता है। तुम लोगो का चावल का आढ़ती आराम से एक जगह बैठा है और जूते-लात खा रहे हो तुम लोग। बाटू-

सिंह, गैर कानूनी शराब बेचकर लाखों-लाख कमा रहा है और पुलिस पकड़ ले जाती है मुझ जैसे मामूली दलाल को। पैसा पीट रहे है पाल बाबू और छिः-छिः हो रहे हैं हम।"

"हाँ, ठीक ही कह रहे हो।"

"उस आदमी ने कितनी अच्छी बातें की मुझसे। उस दिन वह हम लोगो से बातें नही कर सका था, पर गौर से देख लिया था। बाद मे ढूँढा था।"

"मुझे क्या करना है उससे ?"

"कुछ नही। उससे जो बातें हुईं, तुमसे बता दिया। अब क्या करोगी, कुछ सोचा ?"

"क्या करूँ ? कुछ सोच नही पा रही हूँ। पूंजी भी पास मे नही है कि कोई कारोबार शुरू करूँ।"

"यही रहोगी ?"

"और कहाँ जाऊँ ?"

"मतलब यहाँ अकेली···उससे तो अच्छा था···फूली का आदमी कह रहा था···"

"बाबू, तुम्हें मेरे बारे मे सोचने की ज़रूरत नही, न किसी से बातें करने की ज़रूरत है।"

"उनके घर रहने की बात कर रहा था।"

"वाह ! अच्छी बात है। मैं दूली, फूली के वहाँ रहूँगी···और जब मैं वहाँ नही होऊँगी तब, जान-बूझकर तुम वहाँ जाओगे और जो भी हाथ लगेगा, लेकर चपत होओगे···नहीं, उन्हें अपने घर चैन से रहने दो। जुटेगा तो खाऊँगी, वर्ना भूखी सो जाऊँगी। समझे ?"

सुबुद्धि समझता है कि रानी की मृत्यु के बाद वह और मयनामती एक-दूसरे के थोड़ा नजदीक तो आये हैं, पर मयना के मन मे उसके लिए जो घोर अविश्वास का भाव घर किये हुए है, वह जाने वाला नही है।

"तू तो मेरी हर बात को गलत समझती है। देख, जो हो गया, वह हो गया। मगर अभी तो एक-दूसरे के जो भी है हमी तो हैं। फिर हम एक-दूसरे के बारे में न सोचेंगे तो कौन सोचेगा ?"

मयनामती बाप की तरफ देख रही थी। माँ की मृत्यु ने इस आदमी को जोरदार आघात दिया है। मगर यह स्थिति सामयिक है। जो आदमी हमेशा अपने बारे में सोचता आया है, उसके लिए ज्यादा दिन मानवीय भूमिका निभाना संभव नही है। अमानुष की भूमिका ही उसका स्थायी भाव है। उसी भूमिका में उसे शांति मिलती है।

मयनामती के सूखे होठों पर एक फीकी हँसी उभरती है। उस हँसी में शायद थोडी करुणा भी मिली हुई थी। सुबुद्धि की ओर देखकर वह सोचती है—यह आदमी नही जानता कि उसे देख-देखकर मयनामती के अंदर से भी मानवोचित आशा-आकांक्षा समाप्त हो गई है। मयना कौन है? उसकी शिक्षा-दीक्षा क्या है? सामान्य रूप से विश्वसनीय किसी रिक्शा-वाले, मामूली दुकानदार या फेरीवाले के साथ ब्याह करके वह अपनी गृहस्थी बसा सकती है।

मगर मयनामती ये सब बातें सोच भी नही पाती।

वह धीरे से कहती है—"बाबा, बाप और बेटी का संबंध तो खत्म होने वाला है नही। पर हम एक-दूसरे की चिंता करेंगे यह बात सोचना भी गलत होगा। तुम अपनी चिंता करो मैं अपनी करूंगी।"

सुबुद्धि ने गहरी सांस भरकर कहा—"ठीक है, जैसा तू कहेगी वैसा ही करूंगा।"

बाप-बेटी कुछ दिनों के लिए एक-दूसरे के नजदीक आये थे, फिर दूर चले गये। नयी व्यवस्था एकदम साफ-सुथरी है। कोई किसी की हांडी में नही झांकेगा। एक-दूसरे के बारे में सोच-विचार नही करेगा। सुबुद्धि ने जैसे-तैसे करके दालान का एक किनारा घेर लिया है। कहीं से एक चौड़ी बेंच भी ले आया है।

फूली के घर जाकर सुबुद्धि ने अपनी भड़ांस निकाली।

"उस हरामजादी ने हमेशा मेरे साथ शत्रुता की है। आज कैसे मान जायेगी?"

"आने को राजी नहीं हुई?"

"नही। पता नहीं क्या चाहती है? मैंने भी कहा भाड़ में जाओ।"

"क्या किया?"

"दालान मे रहने की व्यवस्था कर ली। मैं दस तरह के धंधों मे रहूँगा, बाहर से कब लौटूं इसका कोई ठिकाना नही। वह अपने ढंग से रहेगी।"

"दीदी भी बडी हिम्मत वाली है।"

"तुम लोगो ने यही सब बोल-बोल के तो उसका दिमाग चढा दिया। मानता हूँ कि उसने बहुत किया। लडका होती तो क्या नही करती ? आजकल तो घर-घर मे लडकियाँ लडकों का कर्त्तव्य कर रही हैं। मयना ने ऐसा कुछ अजूबा नही कर दिखाया। खैर, छोडो। दे तो दो रुपया, परसों दे जाऊँगा।"

फूली ने आठ आने का एक सिक्का सुबुद्धि के हाथ मे थमा दिया। बाप को एकदम ना करना संभव न था।

यह नई व्यवस्था मयना को पसद है।

इस बार उसने नया कारोबार किया है। स्टेशन पर बैठकर पान बेचने लगी। एक थाली मे पान, चूना, खैर, सुपाड़ी, जर्दा और चमनबहार लेकर बैठ गई। जो भी दो-चार रुपये हो जाते, उन्ही मे गुज़ारा करती। पुराने धधे के लडके - गोपाल, दीनू वगैरह बहुत दुखी होते है।

"दीदी, तुमने धंधा छोड दिया। तुम्हे हम लोग एक फेयरवेल देना चाहते हैं।" दीनू ने एक दिन कहा।

"अच्छा तो है।" मयना ने जवाब दिया।

"देखो, कितने दिन यह काम होता है तुमसे !"

"क्यो ?"

"स्टेशन तो अब दुनिया-भर के लुच्चो का अड्डा बन गया है।"

वही एक दिन एक आदमी मयना के पास आया। लंबा चेहरा, हट्टा-कट्टा जवान। उम्र चालीस के आसपास। इतना लवा-चौड़ा, बलिष्ठ आदमी, फिर भी आँखो में एक भय का भाव। सिर झुकाकर उसने मयना को नमस्कार जताया।

"पान बनाऊँ ?"

"पान ? हाँ, बना दीजिए।"

"कैसा खाएँगे ?"

"कैसा पान...।"

"माने जर्दा, मीठा मसाला या सादा ?"

"सादा।"

"इलायची ?"

"दीजिए।"

आदमी ने पान ले लिया। फिर थोड़ा परे हटकर खड़ा हो गया। मयनामती अंदर-ही-अंदर आशंकित हो उठी। पता नहीं क्या चाहता है? खड़ा क्यों है?

यह ऐसा वक्त न था, जब मयना के परिचित लड़के आसपास हो।

आदमी फिर मयना की तरफ बढ़ आया।

"क्या बात है ?"

"आप मुझे पहचान नहीं रही हैं शायद ?"

"नहीं।"

"ट्रेन में घायल होकर पड़ा था। आपने दया करके..."

"ओह !"

"मयना दीदी ! मामला क्या है ? इसी समय उसका परिचित लड़का पोना इधर आ निकला। दिव्य इस समय थोड़ा ऊपर उठा है। पोना को स्टेशन की शांति-रक्षा की ज़िम्मेदारी दी है दिव्य ने। वेंडर, हाकर, खुदरा विक्रेता, भिखारी, रेलवे कर्मचारी, पाकेटमार, उचक्के—यही सब लोग साधारण यात्रियों को नियंत्रित करते हैं और उन्हें नियंत्रित करते हैं पोना और उसके साथी। पोना अभी छोटी मछली है। रोहू नहीं बन पाया है। पर लगा हुआ है। किसी भी धंधे में लगे रहना सबसे ज़रूरी चीज़ है।

"कैसा मामला, भाई ?"

"यह आदमी आपको परेशान तो नहीं कर रहा है ?"

"नहीं तो। बहुत पहले परिचय हुआ था। एकाएक पहचान नहीं पाई।"

"यह तो बांग्लादेशी पार्टी है।"

"होगा।"

"कोई परेशानी हो तो बता दीजिएगा।"

"अच्छा।"

पीना चला जाता है। मयनामती कड़वी हँसी हँसती है। ये लड़के
बार-बार उसे प्रोटेक्शन देना चाहते हैं। अभी वसूली की माँग नहीं की।
माँगेंगे तो दे देगी। उसने कभी किसी से कोई सुविधा नहीं चाही। तो फिर
इनसे ही क्यों लेगी।

"आपने उस दिन मेरी जान बचाई थी।...क्या आजकल यहीं बैठती
हैं?"

"हाँ।"

"अच्छा! फिर मुलाकात होगी।"

"हाँ।"

मयनामती थोड़ा अवाक् होती है। यह आदमी उसे अपनी कृतज्ञता
जता गया। बड़ी सख्त जान है इसकी, वर्ना जिस तरह खून बह रहा था,
लगता तो नहीं था कि बचेगा।

दो-तीन दिन बाद फिर वह आया। उसने एक लिफाफा मयनामती के
सामने रख दिया। बोला—"देशी मिठाई है। खाकर देखिएगा। उस पार
से लाया हूँ।"

"यह सब क्यों लाये?"

"आप लोगों ने मुझे मरने से बचा लिया..."

कई दिन बाद इस जंक्शन से सियालदह को जाने वाली गाड़ी बंद
हो गई। स्टेशन पर अपार भीड़ थी। उन्हीं के बीच अचानक वही आदमी
सुरीले, बलिष्ठ गले से गा उठा।

राधाकृष्ण का गीत था। राधा कहती है—"सुन भाई सुबल।
मैं अब और कितना बाँसुरी बजाऊँ?"

अब मयनामती ने समझा कि यह आदमी कलकत्ता की ओर गाना
गाकर भीख माँगता है। शायद ट्रेन में भी गाता हुआ जाता है। इतने
आदमी गाना गाते हैं, गाना गाकर भीख माँगते हैं। पता नहीं कैसे इस
पेशे में उनका पेट चलता है?

मयना गहरी साँस लेकर सोचती है—अच्छा पेशा है? अच्छा जीवन
है। अगर लौटकर वापिस उस पार नहीं जाना होता तो और अच्छा
होता। तो फिर मयना भी उसके साथ गाना गाती हुई भीख माँगती

चारों ओर घूमती फिरती।

पान खरीदने के बहाने थोडा-सा रुकना, दो-चार बातें करना—इसी तरह धीरे-धीरे उस आदमी के साथ मयना का परिचय बढता गया, एक-एक दिन करके, ज़रा-ज़रा।

"सुनती हूँ उस पार से आने के लिए—पासपोर्ट, वीसा क्या-क्या ज़रूरी होता है।"

"कहाँ, कितने ही लोग रोज आते-जाते हैं।"

"पकडे नही जाते?"

"उसका भी इंतज़ाम है।"

"पकडने पर तो खूब पीटते हैं?"

"वह भी स्वीकार कर लेना होता है।"

"कौन-कौन है घर मे?"

"अपना कहने लायक कोई नही है। खेती-बाड़ी भी नही है। जितना काम है उससे कई गुना ज्यादा मजदूर हैं। इसीलिए इस पार भीख माँगने आता हूँ।"

"पर सुनती हूँ दूध और मछली खूब होती है?"

"वह तो इस पार भी है! क्या इस पार दूध और मछली नहीं मिलती? जो खरीद सकता है खाता है। इस पार और उस पार एक ही बात है। चावल जितना महँगा है, कपड़ा भी उतना ही महँगा है। गरीब आदमी बड़ा दुख उठा रहा है।"

"गाना गाने से भीख मिलती है?"

"साथ में औरत हो तो सुविधा होती है। मगर मेरे पास तो वह सुविधा है नही।"

पता नहीं क्या सोचता है छालेम। उनका घर नदिया जिला के ताहेरपुर गाँव मे था। उसके बाप, ताऊ आदि क्यों छोड़कर उस पार चले गये थे—इसका कारण छालेम नही जानता।

"इस पार से उस पार खरीद-फरोख्त का काम कैसा है? बहुत-से लोग करते हैं?"

"करते तो हैं। देखता भी हूँ। मगर हिम्मत नही होती। जिस काम

में झमेला हो वह मुझे पसंद नहीं।"

"क्या बच्चों जैसी बातें करते हैं? ऐसा कौन-सा काम है जिसमें झमेला नहीं है?"

"पान बेचने का काम अच्छा है।"

"जितने दिन चले उतने दिन अच्छा है।"

"ज़्यादा दिन चल नहीं पाता। स्टेशन पर जो चीजें बेचते हैं, सभी मार खाते हैं।"

कारण यह कि बहुत दिनों तक अनुपस्थित रहने के बाद शहर के मस्तान फिर लौटते हैं और कुछ ही दिनों के अंतर पर इलाके को फिर से दखल करने की लड़ाई चलती रहती है।

यह शहर इस तरह की लड़ाई का अभ्यस्त है। बम की आवाज़, गोली चलने का शब्द— छर्र···र्र! छर्र!! चीत्कार, धपाधप भागते हुए पैरों की आवाज़, भागते हुए रिक्शे की टुन्-टुन् और सफेद चेहरे वाले दुकानदार अपना सामान समेटते और शटर गिराते हुए।

चाहे रोशनी गुल हो, चाहे चारों ओर प्रकाश, सब कुछ एक खास ढंग से होता है। तेज़ी से चारों ओर श्मशान जैसी शांति छा जाती है। कहीं पर ऐक्शन होता है। ऐक्शन के बाद एक या एकाधिक लोग शहीद हो जाते हैं। इलाका या पूरा शहर बंद हो जाता है।

इन सब घटनाओं के नियम-कानून भी बहुत कड़े हैं। राम अगर श्याम के दल में होते हुए शहीद होता है तो शहर का पूर्वी हिस्सा कहेगा—एक समाजविरोधी की मौत हुई है और पश्चिमी हिस्सा कहेगा—यह एक शहीद की मृत्यु है।

इसी नियम के अनुसार राम अगर यदु के दल में हो और मारा जाय तो उसे पूर्वी भाग कहेगा शहीद और पश्चिमी भाग समाजविरोधी।

मयनामती का पान-व्यवसाय जब थोड़ा पनपने लगा था और उसके बक्से में दो-चार रुपये इकट्ठा होने लगे थे, तभी गुंडों का वह दल, जो काफी दिनों से भागा हुआ था, आ पहुँचा और उन्होंने स्टेशन को, शहर को अपने कब्ज़े में कर लिया।

जब-तब इलाका, मोहल्ला और शहर बंद होने लगे। गरीब की माँग

उखड़ने लगी। निर्जन पथ में दीवारों पर लिखा जाने लगा—

—नजसल-रवीद्र और सुकांत की जयंती चाहिए।

—युद्ध नही—शांति चाहिए।

— यात्रा-उत्सव चाहिए।

—महानाम सकीर्तन होना चाहिए।

चाहने और पाने में हमेशा बहुत अंतर होता है। स्टेशन की आबो-हवा बहुत गरम हो गई। पोना और उसके साथी ज़रा कम गहरे जल मे तैरने चले गये। कई दिनो बाद पुलिस की गश्त शुरू हुई। शहर जैसे ठहरा हुआ था।

ऐसी स्थिति मे मयनामती की समझ में नही आ रहा था कि वह क्या करे। इस शहर से रोटी जुटाना अब उसके लिए मुश्किल हो उठा था।

इसीलिए जिस दिन छालेम से फिर उसकी भेंट हुई, उसने पूछा—"मुझे साथ ले चलोगे?"

"तुम भीख मांगोगी?"

"यहाँ नही, शहर में।"

"पान का कारोबार?"

"अब नही चला पा रही हूँ।"

"गाना गा सकती हो?"

"नही, सीख लूंगी।"

छालेम ने स्नेह से कहा—"गाना मैं ही गाऊँगा। साथ मे तुम भी कभी-कभी सुर में सुर मिला देना। यह ज़िन्दगी भी तो तुम्हारी ही दी हुई है। तुम साथ में रहोगी तो हमारे लिए भी जीने का एक बहाना हो जायगा।"

"देखो!"

मयनामती जानती है कि छालेम क्या सपना देख रहा है। थोड़ा पैसा हाथ में हो जाय तो वह दो-चार लुंगी, गमछा, बनियान खरीदकर उस पार ले जाकर बेचेगा। ज्यादा माल खरीदने भर को पूंजी नही है उसके पास और थोड़ा-बड़ा व्यवसाय करने के लिए दलालो, गुंडों और पुलिस को भी खिलाना पड़ता है।

छालेम दीन-हीन आदमी है। उसका काम थोड़े में ही चल जायगा। उस पार बहुत गरीबी है, ठीक इस पार की तरह। छालेम भी अपने लिए कोई गरीब लड़की ढूँढ़ लेगा।

एक कमरा, कई-एक मुर्गियाँ इधर-उधर चरती हुईं और खाट पर बैठे पति-पत्नी। उस पार बड़ा कष्ट है इसीलिए इस पार आना होता है। उस पार की मिट्टी मातृभूमि है, इसीलिए अँधेरा होने पर छाया की तरह बार्डर पार करके जाना होता है। छालेम सोचता है—मयनामती अगर साथ मे रहे तो वह भी एक बार ज़िंदगी से लड़कर देखेगा।

"तुम्हारे पिता कुछ नही कहेंगे?" छालेम ने पूछा।

"वह हमारी देखभाल ही कहाँ करते हैं, जो कुछ कहेंगे। कई-कई दिन घर नही आते। मोहल्ले के लोग जानते-मानते हैं, उसी भरोसे पड़ी हुई हूँ, वरना इस तरह अकेली औरत के लिए ज़िंदगी में···"

"बुरा मत मानना, एक बात पूछता हूँ। तुम शादी नही करोगी?"

"शादी हुई थी। मगर मैं गयी नही।"

"क्यों?"

"मेरे बाप से भी ज्यादा उमर थी उसकी। दो बीवियाँ पहले ही घर मे थी। मैं तीसरी थी। कभी गई ही नही ससुराल।"

"ओह! किसने ऐसी शादी करवायी?"

"मेरे बाप ने।"

छालेम ने कई बार सिर हिलाया, फिर थोड़ी देर बाद बोला—"हाँ ऐसा ही तो होता है। कितने ही बाप ऐसा करते हैं। अच्छा, एक बात बताओ, स्टेशन पर कोई झमेला तो नही होगा?"

"झमेला कौन करेगा?"

"वही जो करते हैं?"

"नही, नही, डरने की क्या बात है? और मैं तो कब से ट्रेन-ट्रेन मे घूमती रही हूँ।"

"क्या करती थी?"

"चावल बेचा करती थी।"

कितनी जल्दी इस नयी ज़िंदगी की भी मयनामती अभ्यस्त हो ...

सुबह की ट्रेन से सियालदह पहुँचती, थोड़ी देर में छालेम आ जाता। उसके बाद शुरू होती उनकी गायन-यात्रा—यादवपुर, बालीगंज, ढकुरिया। टीन का कटोरा बजाकर छालेम गाता और मयनामती आँचल पसारे उसके साथ चलती।

शाम को पैसों का बँटवारा करके दोनों अपनी-अपनी ट्रेन पकड़ते। मयनामती जल्दी घर पहुँच जाती। कुछ दिनों के बाद ही उन्होंने अपने कपड़े गेरुए रंग में रँगवा लिये। इस तरह कपड़े मैले भी कम होते थे और धुलाई की भी बचत होती थी। चार-पाँच रुपये रोज मयनामती के हाथ में होते थे। उसने देखा कि नये-नये अंचलों में जाने से आमदनी ज्यादा होती थी।

तीन

सुबुद्धि सब कुछ देख रहा था और जला जा रहा था। इस लड़की को कभी भी बुद्धि नहीं आयी।

इस मामले में गोपला और दीनू के साथ चर्चा करके उसे बहुत अपमानित होना पड़ा था।

"अरे, सुना तुमने अपनी मयना दीदी के कारनामे ?"

"क्या किया उसने ?" दीनू ने पूछा।

"कैसी माँ की बेटी है, सब कुछ भूल-भालकर रोज कलकत्ता की दौड़ करती है। जानते हो क्यों ?"

गोपला आजकल बहुत बकवादी हो गया है। सुबुद्धि को फूटी आँखों नहीं देखना चाहता।

"आप ही बताइये न।" गोपला ने कहा।

"खानदान का नाम डुबा रही है।"

"शहर जाकर गाना गाती है, पैसे लेती है, इसमें आपके खानदान

का नाम डूब रहा है ?"

"किसके साथ जा रही है ?"

"देखो काका, ज्यादा बकवास तो करो मत।"

दीनू ने कहा—"दीदी हमें ले गयी थी। हम देख आये हैं। चलिये, मानते हैं दीदी बहुत बिगड गयी है। मगर आप किस मतलब से उस दलाल के साथ बातचीत कर रहे थे, यह जान सकता हूँ ? हमे पता है कि वह पैसे लेकर लडकियाँ बेचता है।"

"बेटी को बेचना चाहते हो ?" गोपला ने तेवर बदले।

"नही, नही, भला मैं ऐसा काम कर सकता हूँ ? ठीक है। तुम लोग जब देख आये हो, तो मुझे कुछ नही कहना है। जवान-जहान लड़की के बाप को चिंता तो रहती है।"

"रहने दो, रहने दो।"

इसके बाद सुबुद्धि ने दिव्य को पकडा। उन दिनों दिव्य एक दूसरे झमेले में पडा हुआ था। उसकी रिक्शा-यूनिट गोलमाल कर रही थी। उसके चमचे कपाली और मनोहर उसे ठेंगा दिखाकर पैसे कमा रहे थे और बाहर से आये मस्तानों के साथ हाथ मिलाने ही वाले थे।

सुबुद्धि की बात को बीच मे ही काटकर दिव्य चीख पडा—"आपकी लडकी क्या कर रही है, क्या नही कर रही है, इससे मुझे क्या? शहर जाकर उसने खराब कुछ नही किया है। मैं भी फालतू झमेले मे नही पड़ना चाहता।"

"जानते हो, वह आदमी बांग्लादेशी है।"

"जाइये, जाइये। सब मामले मे नाक मत घुसेड़िये। आजकल हालत ठीक नही है। खुद तो रात-दिन चार सौ बीसी करते हैं और चले हैं..."

बांग्ला देश का हो या किसी और देश का, तीन पैसे का कारोबार करने वाले किसी आदमी से दिव्य को आखिर मिल भी क्या सकता है ?

बेटी की बुराई करने में बाहर तो अपमान ही होता है, पर घर के अंदर सुबुद्धि को श्रोता मिल जाते हैं। बाप के मुँह से सारी बातें सुनकर फूली और दूली दुखी हुईं। फिर फूली बोली—"हम उन्हें क्या कह सकते है। हमसे बडी है। वे क्या कर रही हैं, क्या नही कर रही हैं, इसके

बारे में उनसे कुछ कहने-सुनने का भी कोई रास्ता नहीं है। वे इधर आती ही नहीं। घर में अक्सर होती नही हैं, इसलिए हम भी नही जाते।'

ये सब बातें दूली के दूल्हा ने मयनामती को बतायी। सुनकर मयनामती ने कहा — "भाई, अगर मेरे साथ संबंध रखने में तुम्हें कोई परेशानी होती हो तो मुझसे दूर ही रहो। मन माने तभी संबंध रखना ठीक होता है।"

उसी रात मयना ने बाप को घर दबाया।

"मेरे नाम से क्या अनाप-शनाप बक रहे हो तुम ?"

"मैं ? तेरे नाम से ?"

"हाँ, तुम। और कौन ?"

"इस तरह की बातें सुन रहा हूँ तेरे बारे में। तो पाँच पंचों को बताना भी मेरी ही गलती है ? तेरी जो मर्जी होगी करेगी और बाप होकर मैं कुछ बोल भी नही सकता।"

"उस दिन वह आदमी गले में गमछा डालकर घुमा रहा था, मैंने मना किया, गलती की।"

"मयना ! मैं तेरा दिया नही खाता कि जो मुँह में आये वही बकेगी और मैं सुनता रहूँगा।"

"हाँ, खाते तो नही हो, पर रहते तो मेरे ही घर में हो। मकान का किराया देते हो कभी ?"

यह सुनते ही सुबुद्धि की आवाज नरम पड़ गयी—"समय पर ब्याह न होने से तेरे दिमाग को कुछ हो गया है। ठीक है, बांग्ला देश का आदमी तुझे पसंद है न ? एक बार तू हाँ बोल दे, फिर देखना कैसे सजा के ले जाता हूँ।"

"जरूर ! मैं इधर हाँ कहूँ, उधर तुम दलाली का पैसा खाकर मुझे किसी के हाथ बेच डालो।"

"नही, नहीं, कभी नही।"

"पिछले दिनों तुम जिस तरह कसमसाते रहे हो, उसी से मैं समझ गयी थी कि तुम्हारा मतलब क्या है। वैसा नही हो पा रहा है इसीलिए तो

तुम्हें ही बदनाम रहे हो ?"

"यह भी बदला करना चाहती है

"बदनाम करोगी नहीं [illegible] की होती है तुम्हारे बराबर मेरी इस तरह बदनामी और कौन कर सकता है ? [illegible] नहीं पहचान रहे, बाप को उमर के बूढ़े के साथ [illegible] ब्याह [illegible]। वह एक जिन्दा थी, उसको तू ने [illegible] रहे अभी भी तुम्हारा जी नहीं भरा ?"

"अच्छा हो ! मदनामती ! अभी भी यह नहीं समझ पा रही हो कि मैंने जो भी किया तुम्हारे भले के लिए किया है।"

मामला यहीं नहीं खत्म हुआ। एक दिन कुम्मी और रानी भोर होते ही दीदी के पास आ धमकी। मदनामती ने पूछा—'अरे ! अचानक'

"शाम पर आ रही थी, सोचा तुमसे मिलती चलूँ।"

"इसी से तो कहा अचानक।"

"दीदी ! बाबा कह रहे थे···"

एक पल मदनामती एकटक अपनी बहनों को देखती रही। फिर अन्दर समझते हुए कुम्मी को रोककर शांत स्वर में कहा—"तुम लोग मुझे भी देख रही हो और बाबा को भी देख रही हो। तुम्हारी शादी भी मैंने ही की। इसके बाद भी अगर तुम लोगों को बाबा की बात पर ही विश्वास होता हो तो करो। मुझसे कुछ पूछने की जरूरत नहीं।"

"पान बेचती थी न !"

"वह काम बुरा नहीं।···मैं जो कर रही हूँ उसका अच्छा-बुरा मैं भोगूँगी, तुम लोगों को सोचने की जरूरत नहीं है। जाओ, अपने-अपने काम पर जाओ।"

"रजत भी कहता है—'दीदी को जो अच्छा लगता है, करती हैं। उन्हें करने दो, तुम्हें क्या परेशानी होती है ?'"

"बाबा ने कहा था इसलिए···"

"जो कहा था वह तो नंबर दो की कहानी है। असली कहानी मैं जानती हूँ। तुम्हारा बाप इस बार तुम्हारी बहन को मोटा पैसा लेकर बेचना चाहता है, इसीलिए उसकी बदनामी करके उसका भात बंद कर रहा है।

देखना, अब वह तुम्हारी दीदी के पार्टनर को लोगों को भड़काकर पिटवायेगा।"

"अब क्या होगा ?"

"मैं क्या जानूं ? हाँ, एक बात जानता हूँ कि कभी मुसीबत पड़ने पर दस-पाँच रुपये की मदद तुम्हारी दीदी ही कर सकती हैं। तुम्हारे बाप ने तो जीवन-भर पाँच पैसे का सिक्का भी हाथ पर नहीं रखा।"

मयनामती किसी को यह नहीं समझा सकती कि छालेम के साथ उसका संबंध पूर्णतया व्यावसायिक है। छालेम के सामने एक लक्ष्य है। किसी दिन उस पार वह अपना संसार बसायेगा। एक गरीब आदमी का संसार होगा वह। मयनामती यह भी जानती है कि जिस दिन छालेम को अपने पाँवों के नीचे जमीन महसूस होगी, उसी दिन से वह इस पार नहीं आयेगा।

सुबुद्धि कोई और बड़ा झमेला कर सकता है, मयनामती सोचती है। सिर्फ उसकी समझ में यह नहीं आता कि वह किस दिशा से चोट करेगा। वह जानती है कि जब तक उसका बाप जिंदा रहेगा, वह मयनामती के उठे हुए सिर को नीचा दिखाने की कोशिश करता रहेगा।

क्यों ऐसा करेगा, यह बात मयनामती नहीं जानती, मगर यह जानती है कि वह ऐसा जरूर करेगा।

जिस आघात की संभावना थी वह ऊपर से आया।

बाहर से जो मस्तान फिर से वापस आ रहे थे उनके, साथ स्थानीय मस्तानों का समझौता हो गया था। इलाकों का बँटवारा हो रहा था। हमेशा ऐक्शन ठीक नहीं होता। सभी चीजों का वक्त होता है।

कुछ ऐक्शन किये गये थे और उनके करने का जो उद्देश्य था वह भी पूरा हुआ था। जो इन ऐक्शनों में मारे गये वे तो मारे ही गये। वे शहीद थे या समाजविरोधी इसको लेकर तर्क करने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिन पर कभी भी मतैक्य नहीं हो पाता।

जैसे पाटू का मामला। निरंतर बमबाजी करने के अवश्यंभावी परिणाम के रूप में पाटू का मुँह जला हुआ था, विरोधियों ने एक बार चाकू से उसका एक कान नीचे उतार दिया था, किसी और लड़ाई में

दाहिने हाथ की अँगुलियाँ उड गयी थी ।

ऐसा होना स्वाभाविक भी है । योद्धा के शरीर मे घावो के चिह्न तो होगे ही । मरने के बाद भी पाटू ने पुलिस को अच्छी-खासी परेशानी मे डाल दिया था। सुना गया कि मुँह जला पटल मारा गया, कनकटा पाटू मारा गया, लूला प्रदीप स्वर्ग सिधार गया—इसका मतलब है तीन-तीन बदमाश मारे गये । जय माँ ! जय माँ ! एक साथ तीन-तीन निकासी । खुशी से पागल दारोगा महाशय ने जाकर देखा कि तीनो बदमाश एक ही शरीर धारण किए हुए थे यानी कि एक ही आदमी के ये तीनो रूप थे ।

खैर छोडो । जो मर गये, मर गये । लगातार ऐक्शन चलेगा तो शहर एकदम बेकायदा हो जायेगा । अब शांति चाहिए, शांति । दुकानदार अपनी दुकान खोलें, रिक्शावाले रिक्शा चलायें, ठेकावाले शराब बेचें, सभी अपना कारोबार चलायें—तभी तो आमदनी होगी । वर्ना पैसे कहाँ से आयेंगे ?

इन सभी कामो मे जो व्यक्ति पर्दे के पीछे से निर्देश दे रहा था वही दुलाल तासा अब नेता बनकर सामने आया था । तासा किसी की पदवी नही होती । दुलाल की कभी अपनी तासा[1] पार्टी थी, इसीलिए यह पदवी उसके नाम के साथ जुड गई ।

दुलाल ने सभी से अपना इलाका चुन लेने के लिए कहा । चोरी से जो भी माल भेजा या लाया जायेगा, उसका इतज़ाम उसने अपने ज़िम्मे रखा । फिर उसने अपने चमचो से कहा—नाटू बाबू कहते है कि शहर से सारी बुराइयो को दूर करना होगा, यह बहुत जरूरी काम है । जहाँ-जहाँ बुराई है वहाँ-वहाँ हमें शासन करना होगा ।

दुर्नीति दमन प्रोग्राम शुरू में थोडा ज्यादा ही कडाई से चला । ट्रेन मे मूँगफली बेचनेवाले परेशान किये गये । घरो मे काम करनेवाली नौकरानियो को अश्लील भाषा में झगड़ा करने की मनाही हो गई । नारी-शरीर को प्रदर्शित करने वाले सिनेमा के पोस्टर फाड़े गये । इस तरह के अनेक फालतू अभियान चलाये गये ।

1. तासा एक छोटा-सा ड्रम जैसा बाजा होता है ।

दुलाल तासा इस तरह 'टॉप' पर जा रहा है यह बात समझने में सुबुद्धि को कुछ देर लगी। मगर जब बात समझ मे आ गई कि कौन बाघ है और कौन सिंह तो उसने राम को पकडा। राम ने वार्टूसिंह को और वार्टूसिंह ने दुलाल तासा से एक दिन बात चलाई।

"इधर पोखरा ही चोरी हो गया, भाई!"

"क्या हुआ?"

"उस पार से रोज ही लोग आते हैं, भीख-वीख माँगते हैं और चले जाते हैं।"

"तो उससे हमें क्या?"

"यह काम तो गैर-कानूनी है।"

"है तो, पर इसे बंद करना मुश्किल है।"

"हमारी लड़कियों का व्यापार चल रहा है।"

"देखिये, इस शहर मे लडकियो को बेचने का काम नही हो रहा है।"

"इस शहर में भी हो रहा है।"

"कैसे?"

"लड़की का बाप कहता है कि उसकी लड़की रोज एक बाग्लादेशी के साथ…।"

"कौन लडकी? कौन बाप?"

"बाप गरीब है। लडकी हरामी है। उसका आदमी लेने आया तो गई नही। एक झुड लड़को के साथ बहुत दिन घूमती-फिरती रही है। अब नया धंधा शुरू किया है।"

"देखता हूँ।"

"उस आदमी को हडका दीजिये।"

इस तरह मयनामती के अनजान में सारी व्यवस्था होती रही। कई दिन बाद ही एक शाम कपाली और मना को स्टेशन पर देखा गया। आजकल ये दुलाल तासा के दल मे हैं। अभी कुछ दिन पहले ये दिव्य के चमचे थे। अब सोचते हैं, चमचा ही होना है तो दुलाल चमचा होना अच्छा है। दिव्य के हाथ में क्या है। दुलाल का कहना है कि वह सबको खिला-पिलाकर खायेगा।

कपाली और मना ने मयनामती को रोक लिया।

"हमारे साथ चल, वात करनी है।"

"क्या वात करनी है ?"

"यहा न, इधर चल।"

मयना स्थिति की गंभीरता को समझ गयी। भौहे टेढी किये सधे कदमों से वह उनके साथ चल पड़ी। वे उसे ओवरब्रिज के नीचे ले गये जहाँ दुलाल खड़ा था।

"आपने मुझे बुलाया है ?"

"हाँ, तुम्हारा नाम मयनामती है ?"

"हाँ।"

"सुनो ! दूसरे धरम और जाति के आदमी के साथ शहर जाकर छिनालपना कर रही हो, ऐसा सुना है मैंने।"

"मेरे बारे मे जिसने यह बात कही है वह सरासर झूठा है।"

"तुम्हारे बाप ने कही है यह बात।"

"मेरा बाप कैसा आदमी है शहर में सभी जानते हैं।"

"आज वार्निग देकर छोड़े देता हूँ। यह सब बदमाशी नही चलेगी।"

"भीख माँगना भी गैर-कानूनी है क्या ?"

"इसके बाद कभी तुम्हें उस आदमी के साथ देखा तो रास्ते से उठवा लूंगा।"

मयनामती पत्थर की मूरत की तरह स्तब्ध खडी रही। वे लोग चले गये। उस क्षण मयनामती को लगा, वह एकदम अकेली है, एकदम विपन्न। दुलाल तासा अगर उसे उठवा ले जाय तो वह क्या कर सकती है ?

अगर वे छालेम को मारें ? उनके लिए यह सब करना आसान है। ट्रेन मे से या प्लेटफार्म पर से वे उसे खीचकर ले जा सकते हैं। सब कुछ उनके हाथ मे है।

कहाँ जायेगी मयनामती, किससे मदद माँगेगी ? उसकी बहनें, बहनोई, गोपला, दीनू इनमें से कौन है जो उसे बचाने की सामर्थ्य रखता हो ?

क्या करे वह ? फिर एक बार सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जायेगा ?

जीविका का यह सहारा भी चला जायेगा ?

धीरे-धीरे मयनामती घर आती है। दरवाजा बंद करती है और अँधेरे में ही चुपचाप लेट जाती है।

दूसरे दिन, दिन उगने के पहले ही मयनामती घर से निकलती है। दीनू को उसके घर से बुलाती है और उसका हाथ पकड़कर कहती है—"दीनू, मैं पहली गाड़ी से कलकत्ता जा रही हूँ। भाई, तेरे हाथ जोड़ती हूँ, छालेम अगर दिखे तो उससे कहना कि वह यहाँ मेरे पीछे न आये। नहीं तो, दुलाल तासा उसे भी मारेगा और मुझे भी उठवा लेगा। उसके आदमी पीछे लगे हुए हैं।"

"तुम क्या लौटोगी नहीं ?"

"पता नहीं दीनू ! इतने दिनों बाद यह अपमान भी होना था। जानता है दुलाल से शिकायत किसने की ?"

"किसने ?"

"मेरे बाप ने। तू छालेम को बता देना, नहीं तो बेचारा झूठमूठ मेरे कारण मारा जायेगा।"

"तुम क्या करोगी ?"

"पता नहीं, देखूँगी क्या कर सकती हूँ।"

खूब सबेरे मयनामती ट्रेन पकड़ लेती है। सियालदह स्टेशन पर बैठी रहती है। एक के बाद एक रेलगाड़ियाँ आ रही हैं पर छालेम का कहीं पता नहीं।

जब वह करीब-करीब निराश हो गयी थी, उसने छालेम को लँगड़ाते हुए आते देखा। माथा सूजा हुआ था और कपड़े फटे हुए।

"दीनू···दीनू ने कुछ कहा नहीं तुम से ?"

"कहा था। मुझे हस्तपाल ले चल सकती हो ?"

"कैसे लगी चोट ?"

"पैर में नहीं। इस बार भी पेट में मारा है।"

"पेट में ?"

"दीनू क्या करेगा ? दो लोगों ने मुझे ट्रेन से खींच लिया और···बाप रे ! क्या मार और क्या धमकी !"

"क्या कहा?"

"कितने ही गैर-कानूनी काम कर रहा हूँ…तुम्हें फुसलाकर ले जा रहा हूँ…इस रास्ते में फिर देना तो बाप ने मदद कर दी।"

बड़ी मुश्किल से रिक्शे पर बैठाकर मयना उसे हस्पताल ले गयी। डाक्टर के सामने धरना देकर बैठ गयी और बोली, "दुहाई डाक्टर साहब…पहले भी पेट में चोट लगी थी…इस बार भी…"

थका-हारा डाक्टर चुपचाप दवा लिख देता है। दवा खरीदकर मयना उसे पिलाती है और कहती है—"चलो, पार्क में ले चलते हैं। थोड़ी देर चुपचाप पड़े रहना।" मगर छालेम पास के पार्क तक नहीं जा पाता है। रास्ते में एक मकान के बरामदे में लेट जाता है। मयना उसके पास बैठी रहती है।

काफी देर बाद छालेम कहता है—"चार नम्बर में हमारा एक परिचित रहता है, चलो वहीं चलते हैं।"

"कैसी तबीयत है अब?"

"पहले से अच्छी है।"

"चलो, पार्क में चलते हैं।"

वे दोनों पार्क-सर्कस के मैदान में जाकर बैठते हैं। धीरे-धीरे शाम गहराती है। घास में अजीब-सी भीगी-भीगी गंध।

"मैं वापस नहीं जाऊँगी अब।"

"वापस नहीं जाओगी?"

"नहीं। किसके भरोसे जाऊँ? अकेली औरत…भेड़िये मुझे फाड़कर खा जायेंगे।"

"ठीक कहती हो।"

"उनके हाथ से हमें कौन बचायेगा? और घर में मेरा बाप रहता है। उसके हाथ से कौन बचायेगा?"

"बहनों से तो तुम्हें प्यार है?"

"बहनें? वे भी…खैर, छोड़ो।"

दोनों हाथों से अपनी आँखें ढककर छालेम काफी देर तक पता नहीं क्या सोचता रहा। फिर गहरी साँस खींचकर बोला—"चलो, हावड़ा

लाइन मे कही चले जायें।"

"यहाँ ?"

"कही भी।"

"मेरे साथ ?"

"मेरे कारण ही तो इतना हुआ। अब अगर मैं तुम्हें छोड़कर भाग जाऊँ तो वह क्या अन्याय नहीं होगा ?"

उत्तर मे मयना कुछ नही कहती। उसका मन कहता है—ठीक है, यही अच्छा है।

दोनों ही किसी बडी उपलब्धि के एहसास से चुप है। उन्हें अपनी बाँहों में समेटे कलकत्ता की शाम तेजी से अँधेरे की चादर लपेट रही है। शायद वे समझ नही पा रहे हैं कि अभी अभी उन्होने निषेध के एक सीमांत को साथ-साथ पार किया है।

अँधेरे की संतान

पूजा को तीन महीने बाकी हैं। शहर के रवीन्द्र-भवन मे जिस समय 'श्रावन तुम' चल रहा है, उस समय वर्षा का भरोसा न पाकर लोग पोखरे मे से पानी लेने के लिए रहट चला रहे हैं। चावल का दाम चार रुपये की सीमा नांघकर रोज प्रमोशन पा रहा है। उसी प्रकार, मेघविहीन श्रावन शाम को शहर में हवा के झकोरे खिलाता है। गंगा के जल में हिलसा मछली पकड़ने वाली नौकाएँ अगल-बगल भीड़ लगाकर डोल रही हैं। फरक्का बाँध ने गंगा का रूप बदल दिया है। अब वह नद-नदी नही लगती, बल्कि हमेशा एक बड़ी नहर जैसी लगती है।

नावों के बीच से ऐसा दीख रहा है कि कोई पानी की सतह के नीचे खडा होकर अपने दोनों हाथ सतह के ऊपर उठाये है।

समय ऐसा नही है कि मान लिया जाय कि जल-देवता पानी मे से हाथ ऊपर उठाकर खडे है। सच बात तो यह है कि आजकल बहुत-से लोग दूसरों की संतान को गंगा में विसर्जित कर जाते हैं। शहर के पश्चिम में अगर गंगा बहती हो तो क्या लड़के लाश फेंकने पद्मा नदी जायेंगे ?

ऊपर उठे दोनो हाथो को खींचकर किनारे ले आया जाय या नहीं। इस बारे मे थोड़ी बातचीत चलती है। अंत मे मनोहर कहता है—"आजकल का जमाना दूसरी तरह का है। मुझसे पूछा तो कहूँगा कि अगर बिल्ली भी नदी मे डूब रही हो, तो पुलिस को गवाही में रखकर ही उसे बाहर निकालना चाहिए। इसे बाहर निकालने मे हम लोग मुसीबत में फँस जायेंगे।"

"हम निकालेंगे ही क्यों ?"

"आजकल पास में ही पुलिस की गुमटी बैठायी गई है। कोई जाकर

कह आओ।"

"काम के समय अशुभ देखने को मिला।"

"तुमसे किसने कहा बोलने को ?"

"अशुभ नही है क्या ?"

"पहले देखो किसकी है।"

"अगर मधु की हो तो मैं पूजा चढाऊँगा।"

"हाँ, तू पूजा जरूर चढायेगा। तुझे अकल कब आयेगी ?"

"क्यों, क्यो ?"

"मधु के कारनामो से पहले ही हम मर रहे हैं। अब अगर उसकी लाश हमारी नावों के पास मिले तो सभी कहेंगे, हमने ही उसे मारा है। समझे कि नही ?"

पुलिस-गुमटी से कई सिपाही आ गये। अब लाश को बाहर निकालने की समस्या है। समाचार मिलते ही थाने से छोटे दारोगा आ गये।

"किसकी लाश है ?" उन्होने पूछा।

"अभी निकाली नही गई है।"

"क्यों ? क्यो नही निकाली गई ?"

"बाबू, हम लोग नही निकालेंगे।"

"क्यों ? क्या तुम्हारी जात चली जायेगी ?"

"क्या कहते हैं बाबू ? यह बात नही है। हम झमेले में नही पड़ना चाहते। पता नही किसके दल का है—कालू के या सिराज के ? बाद में मार खायेंगे हम।"

"पुलिस में जब नौकरी की है · "

"नही सर, हमसे नही होगा।"

"ईश्वर कहाँ है ? ईश्वर !"

"लगता है अपनी कोठरी मे है।"

"ठीक है, उसे कोई जाकर बुला लाओ।"

ईश्वर उसका नाम है और रिहाइश गगा का किनारा। किसी जमाने में उसके पुरखे पटना से आये थे। ईश्वर और पटना दोनों को जोड़कर जिस आदमी ने उसे ईश्वर पाटनी का नाम दिया था, वह अगर जिंदा

होना तो उसकी उमर होती तैंतीस साल। वह गंगा का यह रूप बिना देखे ही मर गया। उसे जिस गंगा के किनारे रखा गया वह गंगा दुबली-पतली, दुखी और कातर दीखती थी। शहर के कितने लोग जमा हुए थे उस दिन, कितनी ही पुलिस।—उसी ने नाम दिया था ईश्वर पाटनी।

उसका नाम सूर्य था। सूर्य ईश्वर के कमरे में ही पकड़ा गया था।

ईश्वर को बार-बार उसकी याद आती है। अगर वह ज़िंदा होता तो ईश्वर के बेटे को ज़रूर ही ढूँढ़कर ला देता। बीस साल का ईश्वर का बेटा टोना, कहाँ गायब हो गया? सूर्य होता तो उसे ढूँढ निकालता। सूर्य जब मारा गया तब टोना और उसकी बहन टूनी छोटे-छोटे थे।

टोना के गायब होने की बात को ईश्वर अपने मन से निकाल नहीं पा रहा है। टोना और टूनी साथ-साथ पैदा हुए थे। छोटे-छोटे थे कि उनकी माँ चल बसी। उसकी चिता को धोकर ईश्वर घर आया तो उसने बच्चों से कहा—तुम्हारी माँ मेला देखने गयी थी। मेले में खो गयी। मैं उसे ढूँढ़ लाऊँगा।

यह सांत्वना क्षणिक थी, क्योंकि पड़ोसियों की कृपा से टोना और टूनी जान गये थे कि वे बिना माँ के हो गये हैं।

इसके बाद सूर्य बाबू चल बसे। ऐसा लड़का जिसे देखते ही प्यार करने की इच्छा होती थी उसे जेलखाने के अंदर गोली से क्यों मार दिया गया? ओह! गंगा के किनारे उस दिन कितनी चिताएँ जल रही थीं! जवान-जहान लड़का जैसे पत्थर के एक टुकड़े की तरह अँधेरे में गिरा और खो गया।

टूनी, टूनी, टुनटुनी। ससुराल से नैहर में बाप के पास आयी थी। दीपा टाकीज में सिनेमा देखने गयी थी, तो लौटी ही नहीं।

पहले टूनी गायब हुई, फिर उसे खोजने गया टोना तो वह भी नहीं लौटा। कितने दिन हो गये। बाबू लोगों के पास, पुलिस के पास घूम-घूम कर हैरान'''दामाद भी सूखा मुँह लिए घूमता रहा। बीच-बीच में वह शराब पीकर श्वसुर के पास आकर रोना और कहता—"तुम्हारी बेटी अब नहीं मिलेगी। तुम्हारे नाती को कैसे पालूँ मैं? मर्द इतने छोटे बच्चे को भला कैसे पाल सकता है?"

ईश्वर मन ही मन खीझता है—नही मिलेगी तो न मिले। तुम्हें जो करना है करो। दूसरी शादी करनी है तो करो न ! चलाओ रिक्शा और मरो। सरकार हस्पताल में स्वास्थ्य-केंद्र खोलती है। स्वास्थ्य-केंद्र के लिए दवाइयाँ आती हैं, सदर मे और सदर से इधर-उधर राम बाबू और श्याम बाबू की दुकानो में जाती हैं। तुम इस बहुत बड़ी मशीन के एक छोटे स्क्रू हो।

आ रहा है, तुम्हारा भी बुरा दिन आ रहा है। अच्छा दिन भी था। मैंने देखा है टूनी के शरीर पर अच्छे कपड़े और उसके हाथों में चाँदी के कड़े। भइया दूज पर टोना को अच्छा कपड़ा दिया था। तुम कह रहे हो लड़की नही मिलेगी ? दूसरा ब्याह करने की साध है ! मिटा लो साध। यह सब सोचते हुए भी ईश्वर मुँह से कुछ नही कहता था।

दामाद के लिए दरी बिछा देता था और खुद जमीन पर सोकर टोना के बारे मे सोचता रहता था।

टोना के बारे में वह बहुत सोचता है। रात-रात-भर बिना सोये उसके बारे में सोचता रहता है। कहाँ फँस गये मेरे बाप, किसके डर से घर नही आ रहे हो ? एक बार आ जाओ, तुम्हारे लिए मन बड़ा कचोटता है। तुमने कहा था, और किसी को मैं 'माँ' अब नही कह पाऊँगा। तुम अगर उससे ब्याह करोगे तो मैं उसे 'मयना की मौसी' कहकर पुकारूँगा। तुम्हारे इतना कहने पर मैं तुम्हारा मन भाँप गया था और फिर भी ब्याह का नाम नही लिया मैंने।

बेटे की बात सोचते-सोचते ईश्वर रात मे गंगातीर का प्रहरी बन जाता है। हे, कौन आ रहा है ? गंगा मइया का रात का पहरेदार ईश्वर जाग रहा है। कोई नही आता। आवारा कुत्तो और आवारा लड़कियों के अलावा और कोई नही आता। हालाँकि लगता है उन्हें भी घर लौटने की जल्दी है। इसके अलावा रात मे गुंडों और बदमाशों का चुपचाप तथा चीते की-सी चाल से चलना और ब्रिज के ऊपर से ट्रकों तथा रात्रिकालीन बसों का बीच-बीच में गुजरना। ईश्वर एक दिन यह सब कुछ बंद कर देगा। सब बंद पूरा बंद।

चंद्र-सूर्य सब एक दिन ईश्वर के सामने घुटने टेककर खड़े होंगे। सब

पहले की तरह कर दूंगा। गुंडई, लूटपाट, चुनाव के आगे-पीछे लाशें, खून की धारा, शहर में रोज की बमबाजी—मीटिंगें, जुलूस, फंक्शन, मेला, चोरी-चोरी माल का चालान, हस्पतालों मे लूट का कारोबार— सब पहले की तरह कर दूंगा।

अगर टोना को लौटा दो।

वरना सब वद रहेगा। तुम ईश्वर को पहचानते नही हो। अधनगे और आधा पागल ईश्वर के लिए यह भारत-भूमि नही है। ईश्वर पढ़ना जानता है। रास्ते के दोनों ओर लगे सभी इश्तहारों को उसने पढ़कर देखा है।

सब ईश्वर के लिए ही है।

ईश्वर आधा नगा और आधा पागल क्यो रहता है? यह बात तुम नही समझते हो? ईश्वर तुम लोगों की पूंजी है। ईश्वर आधा नगा और आधा पागल है, इसीलिए इतना दंद-फंद कर पा रहे हो तुम, इतना पैसा खीच-कर ला रहे हो।

ये सब बातें सूर्य उसको समझाता था। इस जीवन में कुछ भी समाप्त नही होता। सब लौट-लौटकर वापस आता है। तेरह-चौदह वर्ष पहले सूर्य उसे जो बातें बताता था, वे बीज की तरह उसकी छाती में पडे थे। इतने दिनो बाद ईश्वर के मन में वे बीज धान के बड़े-बडे पौधे हो रहे हैं।

वे सारी बातें लौट-लौटकर आ रही हैं। ऐसी रात मे वे बातें जैसे ईश्वर को ढूंढती हुई वापस उसके कमरे में आ जाती हैं। टोना और टूनी के गायब हो जाने के बाद बाबू लोगों के दरवाज़ों पर, थाने मे, इनके-उनके चौखट पर अपना सिर पटक-पटककर ईश्वर नये सिरे मे इन सभी को पहचान रहा है। ऐसे मे वे सारी बातें उसके मन में फिर वापस आ रही हैं।

ऐसी रात मे जब हवा मनुष्य और सूअरों के मल-मूत्र मे भारी हो रही थी और झुड के झुड मच्छर भनभन करते उस पर टूट रहे थे। ऐसी रात मे · ।

सूर्य बाबू की बातें।

सूर्य बाबू के कागज़-पत्र और उनकी किताबें बहुत दिनों तक सँभालकर रखे रहा ईश्वर ! घर के भीतर छप्पर की फूस हटाकर सिलोफिन के पैकेट में मोड़कर रखा था उसने। ऊपर-नीचे से फूस को बराबर कर दिया था।

कई वर्ष पहले जब एक सर्वनाशी बाढ़ आयी थी तो ईश्वर जैसे कितने लोगों के घर गंगा मइया के पेट मे समा गये थे। उसी घर के साथ सूर्य बाबू के कागज़-पत्र और टोना की माँ की तसवीर सब चले गये।

जाय, सब कुछ चला जाय। सिर्फ टोना वापस आ जाय। कितने ही लोग कितनी तरह की बातें करते है, पर मन नही मानता। माँ गंगा हो ! कितने वर्ष पहले नवाबो के अमल मे हम यहाँ आये थे। सुना था, उन दिनों कासिम बाज़ार, सैदा बाज़ार, खागरा मे खूब भीड़भाड़ थी।

आजकल कैसे ब्रह्मपुर फैल रहा है। फैलो, जितना मर्ज़ी फैलो। उस पार मानकरा तक पाँव फैला लो। धान के खेत निगलो, कोठी उगलो, मगर टोना को वापस दे दो। ईश्वर के लिए रातें उत्सवमयी होती हैं। उस समय केवल वह होता है। टोना के लिए उसकी व्याकुलता होती है और माँ गंगा होती है। उसकी रात सात बजे से ही शुरू होती है।

ईश्वर के पास आते-आते सिपाहियों को साढ़े सात बज जाते हैं, क्योंकि नाव के पास काफी भीड़भाड़ होती है। इसी बीच पता नहीं किसने अफवाह फैला दी थी कि जल से एक देवता निकले हैं जिनके तीन हाथ है।

छोटे दारोगा और पब्लिक के बीच काफी देर तक तर्क-वितर्क चलता है। इसके बाद एक साथ कई टॉर्चों की रोशनियाँ पानी मे फेंकी जाती हैं, तो सचमुच तीन हाथ दिखाई पड़ते हैं।

छोटे दारोगा तन्त्र-मंत्र और भूत-प्रेत में बहुत विश्वास रखते हैं। वे विज्ञान के स्नातक हैं। विज्ञान की शिक्षा लेने से अलौकिक में विश्वास करना ही पड़ता है। क्योंकि विज्ञान के द्वारा वर्तमान समय की व्याख्या करना असंभव है। सभी जानते हैं कि किंग एक अपराधी है। जिसे पुलिस खोज रही है और वे भी खोज रहे हैं। जिसकी तसवीर उन्होंने प्रचारित भी की है और सभी जानते हैं और वे खुद भी जानते हैं कि महीने में दो-

तीन बार किंग के साथ उनकी मुलाकात होती है। मुलाकात के समय किंग बेहद मुलायम गले से कहता है—कोई असुविधा तो नहीं हो रही है? हो रही हो तो बता दीजिएगा।

किंग को वे खोज रहे हैं। किंग के साथ उनकी मुलाकात हो रही है। यहीं पर विज्ञान की पराजय है और अलौकिक की जय।

इस समय छोटे दारोगा सोच रहे हैं, हाथ तो दो ही थे। जनता ने शोर किया तीन हाथ। फलस्वरूप तीसरा हाथ भी पानी में से बाहर निकल आया।

ईश्वर आ जाता है और सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरह ही समस्या का समाधान कर देता है। जल के पास रहता है, जल से उसकी गहरी पहचान है। मिट्टी की दुनिया ही बार-बार उसकी दृष्टि को गड्ला कर जाती है।

मगर आजकल जल भी अपरिचित जैसा व्यवहार कर रहा है। बाढ़ आयी थी तो ईश्वर ने कहा था—"होने दो सब कुछ बर्बाद, डूब जाने दो। सब कुछ इतना सड-गलकर बज-बज कर रहा है।"

मगर बाढ की मार खाई गरीबो ने। टोना ने कहा था—"क्यो बापू! पापी जैसे पहले थे, वैसे अब भी हैं?"

"तो फिर तुम इतनी उछल-कूद क्यो कर रहे थे?"

"हाँ टोना।"

"तब, समझ-बूझकर चुप रहो।"

ईश्वर ज़िंदा रहने के लिए बहुत तरह के काम करता है। बस-स्टैंड और बाज़ार मे माल चढाना-उतारना। कभी किसी की साइकिल हाथ लग जाती है तो उसके कैरियर पर सब्ज़ी की टोकरी बाँधकर सब्ज़ी बेचता है। ताड़ के पत्तो का पंखा बनाता है। कभी-कभी बीड़ी भी बाँधता है।

और गंगा मे डुबकी लगाकर कोई चीज बाहर निकालने को कहो तो खुशी से तैयार हो जाता है। इस काम में वह सबसे चतुर है। बाढ के वक्त रिलीफ वालो के साथ जाकर कितने ही लोगो को तैरकर उसने पानी से निकाला है और नाव पर बिठाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया है।

•

गंगा में अगर कोई नाव डूब जाती थी तो वह ईश्वर के लिए एक लड़ाई जैसी बात होती थी। लाखों क्यूजेक पानी प्रति घंटा कितने ही किलोमीटर की गति से बह रहा हो, उसमे कूदकर जल के ही एक जंतु की तरह ईश्वर जल की दुनिया मे से ढूँढकर सभी कुछ बाहर निकाल लाता है।

मुर्दा पानी में से निकालने के लिए पुलिस उसी को ढूँढती है। सभी की ओर ताककर वह पानी मे उतर जाता है। कहता है—"ज़रा परे हटो, जगह करो। नाव वही रहने दो।"

पानी मे उतरकर वह नाव के नीचे घुसता है। फिर धक्का देकर मुर्दे को ऊपर उठाता है। फिर मुंह ऊपर करके बोलता है—"दारोगा बाबू!"

"बोलो, सुन रहा हूँ।"

"दो दो मोक्किल हैं।"

"क्या कहा? दो लाशें हैं?"

"जी, ताजा हैं।"

"पकड पा रहे हो?"

"जी।"

"फिर क्या कर रहे हो?"

"कुछ नही। अजीब-सा लग रहा है।"

ईश्वर जब दोनो लाशों को खीचकर किनारे लाता है तो सभी विस्मय से चीख पड़ते हैं।

"नेताई!"

"माल्य!"

"और वह हाथ?"

नेताई की कमर मे एक हाथ रस्सी से बँधा हुआ है। बगल से पूरा का पूरा कटा हाथ।

सभी देखते हैं कि कुछ महीने पहले इस इलाके के जोड़ा गब्बर सिंह—नेताई कर्मकार और माल्य प्रधान इस समय गंगातट की हवा खा रहे हैं। छोटे दारोगा भी देखते हैं, फिर भी कहते हैं—"सीधा हस्पताल

ले चलो। काटपीट, शिनाख्त ···।"

बिजली की तरह यह खबर चारों ओर फैल जाती है। साथ-साथ पब्लिक को डर लगता है कि अब कालू के इलाके से लेकर अजित के इलाके तक बमबाज़ी शुरू हो जायेगी। लाश बरामद होने के बाद बमबाज़ी का फैशन-सा हो गया है। दल होगा तो इलाके बनेंगे और इलाके होंगे तो उन्हें बढ़ाने की कोशिश भी होगी।

व्यवस्था-दखल की लड़ाई।

अलग-अलग दल और इलाके होंगे तो बम रखना ही होगा। बम रहेगा तो फोड़ा भी जायेगा। क्योंकि यही नियम है। शहर के लोग वर्षों से बेकारी, महँगाई, लोड-शेडिंग, व्यापक दुर्व्यवस्था को स्वीकार करके जीवन बिता रहे हैं। उसी तरह गुंडों के इलाका-दखल और बमबाज़ी को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया है। गुंडागर्दी के साथ नियम-कानून के ध्वस्त होने का कोई सबध नहीं है, यह वे जानते हैं। जिस रानीपुर मे चारों ओर महीने मे दस-ग्यारह खून औसतन हो जाते हैं, क्या वहाँ नियम-कानून समाप्त हो गया है? नहीं। खून होता है। बम पड़ते हैं। आदमी ज़ख्मी होता है। बच्चे स्कूल जाते हैं। नौकर-चाकर काम कर रहे हैं, लोग अपनी नौकरियों पर आ-जा रहे हैं। चोरी, डकैती और बटमारी हो रही है। बेटे का अन्नप्राशन, बेटी का ब्याह, राम के पिता का श्राद्ध और श्याम के मोहल्ले मे संतोषी माँ का जाप—सभी कुछ एकसाथ चल रहा है।

जब जैसी हवा हो, तब तैसी पीठ करनी चाहिए।

फिर पाँच लोग लाशों के साथ हस्पताल चल पड़ते हैं। भीड़ बिखर जाती है। सब अपने-अपने घर चल देते हैं। छोटे दारोगा सोचते हैं—तो यही है नेत्य और माल्य। पानी एकदम नहीं पिया है, सिर्फ गोली खायी है। फिर भी इनकी शिनाख्त करनी होगी। शिनाख्त हो जाने के बाद ही वे कह सकते हैं कि ये नेताई कर्मकार और माल्य प्रधान हैं।

विज्ञान! तुम पराजित हो गये।

"ईश्वर! थाना जा।"

आदमी आजकल पुलिस को बेकार गाली देता है। सभी कुछ जैसे

अँधेरे की सतान ···

पुलिस की गलती से हो रहा है। रास्ते मे कौन लड़का किस लड़की को छेड़ता है, बस क्यों टाइम पर नही चलती, सिनेमा की दीवार पर अश्लील पोस्टर क्यों लगे रहते हैं, जंगी सरकारी यूनियन करनेवाले पिउन के ऊपर गाय क्यों झपटती है—सभी कुछ जैसे पुलिस की ही गलती है।

मगर विज्ञान हार जाता है तो पुलिस क्या कर सकती है ? पुलिस को जितना बुरा कहना चाहें कह लें, छोटे दारोगा एकदम सज्जन व्यक्ति हैं। ईश्वर जब भी लाश निकालता है नदी मे से, तो वे उसे कुछ न कुछ देते हैं।

ईश्वर उसकी बात नही सुन पाता। पसीना पोंछता रहता है। गंगा के जल में डूबकर लाश निकाली है उसने। देह में हवा लग रही है, फिर भी उसे पसीना छूट रहा है।

माझियों में से एक पूछता है—"गमछा दूं ?"

"एँ ?"

"गमछा दूं ?"

"गमछा !"

"गमछा लाया हूँ, देह पोछेंगे ?"

"दो। उधर जाकर एक बार और नहा लेता हूँ। साबुन मिल जाता तो कितना अच्छा होता।"

"लो न। दे तो रहा हूँ।"

"नहीं, मैं अपने कमरे से लाऊंगा।"

ईश्वर चला जाता है। माझी कहता है—"उसने सोचा था—उसी के बेटे की लाश है। पसीना छूट गया।"

"कौन ? टोना ?

"और कौन ?"

"अरे नही !"

थाने में छोटे दारोगा और बड़े दारोगा खूब लंबे और कलाई पर अंकित रिस्टवाच वाले हाथ की ओर देखते रह जाते हैं।

"जिसका हाथ है वह जिंदा नहीं रह सकता।" छोटे दारोगा गंभीरता से मंतव्य प्रकट करते हैं।

"किसने कहा ?"

"नही, अगर डाक्टरी मदद न मिले तो ··"

"कुछ कहा नही जा सकता। और इसी बात पर जश्न न मनाने लगियेगा।"

"क्यों ?"

"नही, जश्न न मनाइयेगा अभी।"

पता नही कोई जश्न मना रहा है या धमाकेदार प्रतिवाद जता रहा है, क्योकि भयानक आवाज के साथ शहर के पूर्व और दक्षिण अंचलों मे बमबाजी शुरू हो जाती है।

"लीजिये, मनाइये जश्न !"

इसी समय फोन बजने लगता है।

दो

यह शांतिकामी शहर है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यह शहर युद्ध नही शांति चाहता है। इस बारे मे मीटिंग, जुलूस, सभा, प्रदर्शनी वगैरह चलते रहते हैं, चलते रहेंगे।

इस शहर की पुरानी कब्रों, पेड़ों, वर्तमान निवासियों सभी ने शांति चाही थी, चाहते हैं। फिर हाई-वे बनाने के लिए नगर के अभिभावको की मूर्खतापूर्ण बर्बरता के कारण प्राचीन वृक्षों और वनस्पतियो का संहार हुआ। समाधि के ईंट-पत्थर चोरी हो गये। ऐतिहासिक इमारतों के कीमती पत्थर, सजावट और मूर्तियां गायब होकर शहर के एक नेपथ्य-वासी अर्थनीतिनियंता के झकाझक, फिर भी कुत्सित, मकान मे पहुँच गये।

और मनुष्य का जीवन जल रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से इस जिला के आदमी ने समझना शुरू किया है कि वास्तव मे गुंडे उनके जीवन को नियंत्रित किये हुए हैं। यह गुंडों की

इच्छा पर निर्भर है कि शाम को दवा खरीदकर आदमी अपने घर पहुँचेगा या नहीं।

वे शांति से रहना चाहते थे, चाहते हैं। शांति की भी तरह-तरह की व्याख्याएँ है।

उस रिक्शावाले को, जिसके रिक्शे के पीछे 'जय माँ' लिखा हुआ था, इतनी जटिलता का ज्ञान न था। बमबाज़ी शुरू होते ही सनातन, बाबू के रिक्शे को सही-सलामत उनके घर पर छोड़कर, अपने डेरे पर पहुँचने के लिए ज़ोरों से पैडिल मार रहा था। पर गंगा के पानी में प्राप्त नेताई कर्मकार के कमर मे जो हाथ बँधा हुआ पाया गया था, वही हाथ आज शहर को नचा रहा था। उस हाथ ने अपनी सेनाओं को बुला लिया था और रणभेरी बजा दी थी।

जो व्यक्ति हाथ का समाचार मंटा को दे गया था वह भी रिक्शा-वाला है और सनातन की तरह ही किसी बाबू का रिक्शा चलाता है। उसके रिक्शे के पीछे कोई नाम नहीं लिखा है।

हाँफते हुए मदन एक पुराने दोतल्ला मकान के सामने जा खड़ा होता है। रिक्शा वह यहीं छोड़ देगा।

इस मकान के मालिक के सौंदर्यबोध और रहमत मिस्त्री के हाथो की कला का परिचय दे रहा था मकान की ड्योढ़ी पर बना सीमेंट जमा-कर बनाया गया सिंह।

इस इमारत के जिन कमरों के सामने पहले के दिनो मे दरबान और संतरी खड़े रहते थे, अब उनमें दूसरे लोग आते-जाते हैं। इसी तरह के एक कमरे मे मंटा और उसकी सेना ज़ोरदार बहस चला रहे थे। नेता शहर के बाहर है। ऐसे में क्या करना चाहिए।

मदन दरवाज़े को पकड़कर खड़ा होता है। फिर हाँफते हुए कहता है—"गंगा से···नेताई और माल्य की लाश···पुलिस ने निकाली है··· और···नेताई की कमर से बँधा एक समूचा कटा हुआ हाथ पाया गया है, जिसकी कलाई पर घड़ी का गोदना है···"

मदन रोने ही जा रहा था, कि वह हवा में झूलने लगा। हवा मे झूलते हुए रोना मुश्किल है। मंटा उसे झुलाता हुआ कमरे में ले जाता है

और धप् से जमीन पर खड़ा करके पूछता है—"क्या बोला तू ?"

मंटा का चेहरा मदन के चेहरे के एकदम पास है। उस मुँह से हिलमा मछली की गंध आ रही है। गंगा की हिलसा मछली को खूब कुरकुरा भूनकर उसके साथ 'दवा' लेना मंटा को प्रिय है।

"कटा हुआ हाथ। कलाई पर घड़ी का गोदना।"

"ठीक से देखा है ?"

"जरूर। बार-बार कई टार्चों की रोशनी उस पर पड़ रही थी। खूब उजाला हो रहा था।"

"हाथ कैसा था ?"

"गोरा···खूब लंबा।"

"चूतिया तो नहीं बना रहा है ?" बाबुन ने पूछा।

"कभी बनाया है ?"

"हूँ,···क्या समझे, बाबुन ?"

"दोनों ही तरो-ताजा थे। न पानी ने खाया था और न जन्तुओं ने। हाथ भी खूब ताजा था।"

"हूँ···तू जा।"

बाहर आकर मदन रिक्शा ठेलते हुए पैदल ही चलने लगा। शहर के उत्तरी भाग में जाकर रिक्शा जमा करेगा फिर पूर्वी भाग में अपने डेरे पर जायेगा। यह सब संभव नहीं लगता।

तो फिर चल गाड़ी मदन के घर।

मटा को खबर देने का मतलब मदन जानता है। मगर उसका रिक्शा उधर ही रहता है। इसलिए खबर देना उसकी मजबूरी है। इसके लिए उसे कभी एक पैसा भी नहीं मिलता। वह ऐसा गंदा पैसा चाहता भी नहीं।

पर खबर न दे तो वह जिंदा नहीं रह सकता। पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सभी जगह मटा और उसके प्रतिपक्षी खबरें पाने का ऐसा ही इंतजाम रखते हैं।

मदन द्वारा दी गई खबर के फलस्वरूप ही शहर में बमबाजी शुरू हो गई। बमबाजी सड़कों पर ही पहले शुरू हुई। और बहुत-से रिक्शा-

वालों की तरह सनातन भी अपने रिक्शे को और खुद को सुरक्षित रखते हुए डेरे पर लौटने की भरपूर कोशिश कर रहा है। गहरी हताशा से वह सोचता है रिक्शा उठाने के तीन-चार घंटों के अंदर ही बमबाजी शुरू होने से रिक्शे का किराया भी नहीं उठा पाया कि कुरुक्षेत्र शुरू हो गया।

संचारिणी स्टेशनर्स के बगल से एक गली उत्तर की ओर जाती है। प्रायः एक सौ गज जाकर दो और गलियाँ उसमें मिलती हैं और मुख्य गली उत्तर की ओर चली जाती है। आश्चर्यजनक बात है कि यह गली रानी मूदिनी के नाम से जानी जाती है। स्वर्गीया रानी मूदिनी इस इलाके की प्रतिष्ठित शराब-विक्रेता थी। जो बेचती थी उसी का पान करते-करते वह इतनी मोटी हो गई थी कि मरने के बाद उसका शव ढोनेवालों के छक्के छूट गये थे। उनके कंधों का दर्द दो-ढाई वर्ष तक बना रहा और उस महान रमणी की याद दिलाता रहा और दर्द की याद को भुलाने के लिए वे आज भी शराब पी रहे हैं।

नादू बाबू की मान्यता है कि यह उनके परिवार, रोजगार और स्वास्थ्य किसी के लिए भी अच्छा नहीं है। नादू बाबू इसी गली में रहते हैं और उनके अनुसार दुनिया की सभी समस्याएँ इसलिए समाप्त नहीं हो रही हैं कि 'नेता जी आज नहीं हैं।'

शराबियों को उन्होंने बता दिया है कि उनका कितना नुकसान हो रहा है।

"आप नहीं समझेंगे।"

"कितना पैसा नष्ट होता है।"

"रानी जो दगा दे गई।"

"काश ! नेता जी जिंदा होते !"

इसी गली के तिकोने पर सनातन को घेरकर एक ऐसा दृश्य घटित हुआ, जो बंबई के नहीं मँविसकी के किसी रक्तास्त फिल्मी दृश्य की तरह था।

नादू बाबू दोतल्ला के अपने कमरे के बंद दरवाजे के छेद से सब देख रहे थे।

सनातन के दोनों ओर की गलियों के भीतर से दो दल उसे लक्ष्य

करके बम मार रहे थे। भीषण शब्द, चारो ओर धुआँ। पुलिस आ रही है, पुलिस, पुलिस !

बम फेंककर दोनो ही पक्ष गायब। गली के तिकोने पर रिक्शा सहित सनातन टुकड़े-टुकड़े।

पुलिस आई तो वहाँ कोई नही था। मांस के टुकड़े और रिक्शे के अंग-प्रत्यंग बिखरे हुए थे। एक सनातन अनेक मासपिंडो मे बिखर गया था सड़क पर। रिक्शे का एक पहिया घूमता जा रहा था। पुलिस तीनों गलियो में दौड पड़ी।

नाडू बाबू माथे का पसीना पोंछते हुए फर्श पर बैठ गये और उनके मुँह से निकला—"आज अगर··"

"चुप भी रहोगे या नही।" पत्नी ने बीच में ही डाँटकर चुप करा दिया। मगर नाडू बाबू साहस करके दुबारा बोले—"आज अगर···इस तरफ बिजली होती···तो पुलिस उन बदमाशों को जरूर मारती।"

इसके बाद नाडू बाबू घड़े से पानी पीते हैं। इस तरफ बिजली नही लायी जा रही है। सड़कों के विद्युतीकरण की सारी कोशिशें व्यर्थ जा रही हैं।

वे तार काट ले जाते हैं। पहरेदारी का भी कोई लाभ होता नही दीखता। जो तार काटते हैं उन्होने दीवार पर लिख दिया है, 'तार काटा जा रहा है, आगे भी काटा जायेगा'।

सवेरा होने तक हैरान होकर पुलिस के हाथ लगा सिर्फ बाबुन। पीछा करते-करते पुलिस उन्हें जहाँ तक ले गयी, वहाँ से उनका अलग-अलग इलाका शुरू होता था।

पुलिस को यहाँ रुक जाना पड़ा, क्योंकि यहाँ से लक्ष्मण-रेखा शुरू होती थी। कौन कह सकता है किधर घुसने पर कहाँ से दबाव आ जाय। यही तो होता है, बराबर हो रहा है। क्या एक बार भी वे किंग को पकड़ सके हैं।

बाबुन को पकडा नहीं गया था, बल्कि पकड़ना पड़ा था, क्योंकि जख्मी होकर वह जहाँ पड़ा था, वहाँ से अगर पुलिस उसे ले जाय तो शायद वह बच जायेगा, ऐसा सोचकर वह खुद ही दोनों हाथ ऊपर उठाये

लँगड़ाता-लँगडाता पुलिस की ओर आ रहा था।

सनातन मारा गया है। इस बात की जानकारी होते-होते एक दिन और बीत गया। कई-एक रिक्शावाले सनातन के रिक्शा-मालिक के घर गये। बड़ा मुँह बनाकर उन्होंने बीस का एक नोट दिया।

"बस इतना ही ?"

"माफ करो भाई। इससे ज्यादा नहीं हो पायेगा। रिक्शावान मारा गया, बहुत दुख की बात है। मगर साथ में हमारा रिक्शा भी गया। मेरे पास कुल दो रिक्शे थे। एक चला गया।"

चंदा मांग कर सनातन का दाह-संस्कार किया गया। सिर्फ कलकत्ता में ही साधारण आदमी की हालत इतनी पतली नही है, बल्कि इस शहर में भी उसका वही हाल है। पहले सनातन की पत्नी और उपवास के बीच में सनातन ढाल बनकर खड़ा रहता था। अब सनातन की विधवा और उपवास सीधे एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। ऊपर से गर्भ में तीसरी सन्तान पल रही है। सनातन की विधवा श्मशान की धूल मे पछाड खाकर गिरती है और चीत्कार करती है—"हमारे ऊपर सब कुछ ढालकर कहाँ चले गये तुम ! जिन्होने हमारा ऐसा सर्वनाश किया है, उनको भगवान देखेगा।"

मुहल्ले के दादा लोग सनातन की किशोरी बेटी की उभरती हुई छातियो की ओर ताकते हुए भारी गले से सनातन की बहू को सात्वना देते हैं—"रोओ मत मौसी, हम लोग तो हैं।"

सनातन की बेटी रोते-रोते ही सिर हिलाती है—"नही, नही। रिक्शावान का कोई नही होता। सब उसको खा-चबा जाने की फिराक में रहते हैं। बापू हो ! यूनियन को कितना-कितना चदा दिया तुमने, पर उसने भी तुम्हारी मदद नहीं की।"

प्रत्येक शब्द मदन के कान में बर्छे की तरह चुभता है। सनातन की मौत का वह भी तो जिम्मेदार है। यह कैसी व्यवस्था है जो एक रिक्शावान का सर्वनाश करने के लिए दूसरे रिक्शावान का इस्तेमाल कर रही है ?

इसी बीच रिक्शा यूनियन के कुछ लोग आ गये। इनमे से माखन

थोड़ा जिम्मेदार है।

"क्या मामला है? सनातन दादा?"

"अब कहाँ सनातन दादा? कहाँ थे?"

"उस पार था। ये सब एक ही यूनियन में हैं, फिर भी वहाँ…"

"भाड़ में जाय यूनियन!"

"अमर बाबू नहीं आये?"

"नहीं। वाणी सुना दी—देखता हूँ। एक मीटिंग बुलाता हूँ। शोक-प्रस्ताव करेंगे और पैसा इकट्ठा करके जो मिलेगा सनातन के घरवालों को देंगे।"

"नहीं। इस मामले को देखना है।"

"'देखना है', 'देखना है' करके कितने दिन काटोगे?" चार महीने में तीन रिक्शाचालक बुरी तरह जख्मी हुए, एक मारा गया। चार रुपये मालिक के। दस-बारह रुपये न हों तो पेट चलना मुश्किल।

"इस बार हड़ताल करना पड़ रहा है!"

"पुलिस और इलाके के गुंडे दोनो को खिलाते-खिलाते…खैर! छोड़ो। सनातन दादा का लड़का तो तेरह-चौदह साल का है। उसका क्या होगा?"

"देखता हूँ। अरे भाई, हम भी तो उनका पैसा खा रहे हैं। है कि नहीं?"

"जो खाता है वह खाय।"

मदन मिहर उठा। वे क्या उसकी ही बात कर रहे हैं? बोलो ना माखन? रिक्शाचालकों को यह काम करना होता है।

"माखन!"

"क्यों?"

"तुम क्या समझते हो, अब शहर ठंडा हो जायेगा? दो आदमी तो गये। इसके बाद?"

"हाँ, कुछ दिन ठंडा तो रहेगा। नेताई गया, माल्य गया। एक और नेताई आयेगा, एक और माल्य आयेगा। कैसा पाप शुरू हुआ है इस शहर में!"

"मान लो एक दिन रिक्शा हड़ताल की हमने। फिर मीटिंग करके मौन जुलूस निकालकर शहर का चक्कर लगाया। फिर जाकर सारी बातें लिखकर एक कागज जिलाधीश को दिया। फिर?"

बाद मे सारी बातें उन्होंने अमर बाबू को भी बताईं। अमर बाबू गंभीरतापूर्वक सुनते रहे। फिर सूखे गले से गुस्से का-सा भाव दिखाते हुए बोले—"यह सब बातें तो मैं तब से कहता आ रहा हूँ जब सुखलाल जख्मी हुआ था।"

"तब हम इस धंधे में नही थे, इसलिए हमने नहीं सुना था।"

"सनातन के बच्चे हैं?"

"लडकी बड़ी है। एक लड़का उससे छोटा है। बीच में दो-चार मर गये और फिर होने वाला है।"

"लड़की घर में रहती है?"

"नही। स्कूल की किसी मास्टरनी के घर में रहती है। उनका काम-काज करती है। साथ मे पढ़ती भी है। माँ को बच्चा पैदा होने वाला है, बीच-बीच में आती रहती है।"

"लडका कितना बड़ा है?"

"यही तेरह-चौदह साल का।"

अमर बाबू गहरी साँस लेकर बोलते हैं—"अभी तुम लोग ऐसा करो कि सुबह और शाम थोड़ी देर उसे रिक्शा चलाना सीखने की व्यवस्था कर दो। फिर कुछ किया जायेगा।"

यह बात सुनकर सभी एक-दूसरे का मुँह देखते हैं। फिर माखन बोलता है—"उसके लिए इलाके के फंड से रिक्शा खरीद दीजिए। सिखाने-उखाने का झमेला छोडिये।"

"ठीक है, जो हो सके करिये।"

"सनातन इस धंधे का एक पुराना आदमी था।"

अमर बाबू सोच में पड़ गये। इस शहर में इनकी पारटी का असर बहुत कम है। इस अंचल में और जिले मे उनकी इमेज कोई खास अच्छी नहीं है। तरह-तरह के छोटे-बड़े लकड़ी के टुकड़े सजाकर इस जिले का राजनैतिक मानचित्र पूरा होता है। पिछले पंचायत-चुनाव में मानचित्र

सहित काठ के ये टुकड़े इधर-उधर हो गये थे। उन्हे नये सिरे से सजाने का काम वाकी है। तभी जिले की छवि उभरेगी। मगर जो टुकड़े सजाये जायेंगे उनका पुराना रंग बना रह जायेगा, इस बारे मे अमर बाबू और उनके साथियों को पूरा भरोसा नहीं है।

जो इस मामले मे कुछ बता सकते हैं उनमें सनातन, माखन और मदन जैसे लोग हैं। यही लोग जुलूस के हरावल दस्ता है। इस मानचित्र में किसान और मजदूर, रोज स्कूल-कालेज और ऑफिस मे हाजिरी देने वाला मध्यवित्त, दुकानदार, कारोबारी हैं। ऐसे लोग इस हरावल दस्ते की आवाज हैं और इस सीमांत जिले मे जनसख्या उसी तरह कभी एक जगह जमी हुई दिखाई पड़ती है और कभी बिखर जाती है जैसे—पानी के ऊपर तैरती काई।

अमर बाबू बोलते हैं—"उसके लडके को मजबूत देखकर एक पुरानी साइकिल खरीद देता हूँ। उस पर टोकरी बाँधकर सब्जी बेचने का काम कर लेगा। इसके लिए शुरू में थोड़े पैसे दे दिये जायेंगे। इससे ज्यादा कुछ करने की क्षमता यूनियन की नही है। जुलूस और मेमोरेंडम तो जल्दी-से-जल्दी कर लेना होगा।"

इस शहर में कुछ रिक्शावाले खुद ही रिक्शा-मालिक हैं। मगर रिक्शा मालिक का हो या उनका अपना, जीवन बहुत विपन्न है उनका। ऐसी हालत मे अगर इस तरह बमबाजी लगातार चलती रहे तो फिर उनकी क्या हालत होगी।

"यह काड और कितने दिन चलेगा?"

"क्या कहा जा सकता है!"

"वे खुद ही अपने को खतम करते हैं।"

तीन

थाने के बड़े बाबू और छोटे बाबू भी यही बात करते हैं।

"वे खुद ही अपने को खतम करते हैं।"

"नेताई और माल्य ?"

"सिराज क्या कहता है ?"

"वह है कहाँ ?"

"यहीं कहीं आसपास होगा।"

बड़े बाबू बोले—"बाबुन तो हस्पताल में है। मंटा कहाँ है ? वह क्या अपने गुरु को खोजने गया है ?"

"हाथ क्या उसके गुरु का ही है ?"

"इसमें क्या संदेह है। कालू ने कलाई पर घड़ी का गोदना गोदवाया था। उसमें वह टाइम देखता था।"

"एक लड़की को लेकर पता नहीं क्या···"

"छोड़िये, छोड़िये। *अच्छा, एक बात बताइये। इतनी शिक्षा प्राप्त* करके पुलिस की नौकरी में क्यों आये ?"

"और कोई नौकरी मिली नहीं।"

"मुझे तो मेरे ससुर फँसा गये।"

"आपका क्या, ससुर जो छोड़ गये हैं···बच्चे तो कलकत्ते में ही···"

"नहीं तो उनकी पढ़ाई-लिखाई नहीं हो पाती और उनकी माँ को तो सफाई का रोग है। हमारे क्वार्टर में उनका गुजारा नहीं होता। वे वहीं भली हैं। मेरी छोटी बेटी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रही है। क्या फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती है !"

"अच्छा सर ! हमारे इस थाने की इमारत का शुभ मुहूर्त निकालकर पूजन कराया गया था या नहीं ?"

बड़े बाबू छोटे बाबू की तरह विज्ञान पर अविश्वास नहीं करते। फिर भी थाने की इमारत के पूजन इत्यादि *के मामले में वे घोर विश्वासी हैं।* मनुष्य जब पैदा होता है तो उसके जन्म का लग्न और समय देखकर उसका पूजन कराया जाता है। पक्के मकान के मामले में नींव खोदते समय

का लग्न देखकर पूजन कराना होता है।

बड़े बाबू अत्यंत चिंतित हो उठे और बोले—"डेढ सौ वर्ष पुराना मकान है। फर्श-वर्श बैठ गया है। अंग्रेजों का बनवाया हुआ है।"

"यहाँ क्या हमेशा थाना ही था?"

"पता नहीं। इन सब बातों का पता रखता है गदाई शेख। ओ गदाई शेख! इधर आना।"

"जी आया।"

छोटे-छोटे पाँव रखता हुआ गदाई शेख अंदर दाखिल होता है जैसे मापकर चल रहा हो।

"अरे, थाना कितना पुराना है?"

"सन् पचास के अकाल के साल यह इमारत बनवायी गयी थी।"

"तब क्या पूजा-ऊजा हुई थी?"

"हाँ, बाबू, खूब धूमधाम से पूजा हुई थी। सब राजा, जमींदार, मारवाड़ी बाबुओं ने बहुत-सा सामान भेजा था। सर्किल ऑफिस में खाना पका था।"

"अच्छा तू जा।"

गदाई पाँव घसीटता हुआ चला जाता है।

बड़े बाबू छोटे बाबू से पूछते हैं—"क्या गदाई कभी लंबे-लंबे डग भी भरता है?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मैं क्या कह सकता हूँ।"

"बेटा, लाइफर (आजन्म कारावास प्राप्त) था। उन दिनों जेलर पाँव में बेड़ी डालकर बागीचे में काम करवाता था। पाँव में बेड़ी होने से माप कर डग भरना पड़ता था। इस तरह सालों-साल चलते-चलते वैसा ही अभ्यास हो गया।"

"यहाँ कौन लाया?"

"बस आ गया। इसके सात कुल में कोई नहीं था। थाना ने इसे पाल लिया।"

"अब तो इसके पाँव में बेड़ी नहीं है।"

"हम आप तो जानते हैं। यह बेटा खुद न जाने तो क्या किया जाय।"

"अच्छा! इसके पाँवों में बेड़ी न होते हुए भी योंही यह माप-जोखकर पाँव उठाता है?"

"जी हाँ, हमारे बड़े काम का है।"

यह बात छोटे बाबू भी जानते हैं। मगर गदाई शेख का मामला नये सिरे से उनके दिमाग में उठने लगता है। विज्ञान का अर्थ क्या है? तार्किक जीवन-दर्शन। दिमाग से, बुद्धि से और तर्क से सब कुछ परखने का नजरिया। विज्ञान कहता है कि गदाई शेख के लिए उस तरह छोटे-छोटे डग भरते हुए चलने का कोई कारण नहीं है। खुद गदाई भी देख रहा है कि उसके पाँवों में बेड़ियाँ नहीं हैं, फिर भी वह पाँव घसीटकर चल रहा है।

कातर होकर छोटे बाबू कुर्सी के उस तरफ दीवार से झूल रही तस्वीर की ओर देखते हैं, काली माँ खड़ी हैं, मुँह पर मुस्कान है। अगर लंबी जीभ को हटा दिया जाय तो चेहरा परवीन बाबी से बहुत कुछ मिलता-जुलता दिखाई पड़ेगा। काली के पाँवों के पास 'आओ प्यार करें' मार्का कपड़ा बेचने वाले दुकानदार की तस्वीर है। वह हाथ जोड़कर बैठा है। उसके दाहिने हाथ में घड़ी का गोदना साफ दीख रहा है। तस्वीर है, तस्वीर में हाथ है, हाथ मुर्दाघर मे सड़ रहा है, तुम आज कहाँ हो दुकानदार जी?

बड़े बाबू के मन में घड़ी की सुई घूमती रहती है। कई घंटे बीत गये। अभी किसी ओर से कोई दबाव, कोई फोन या संदेश नहीं आया। आश्चर्य नेताई और माल्य, मंटा और बाबुन—इनके गुरु, जिनकी मदद से शहर के एक व्यस्त बाज़ार में बंदूक ऊँची करके एक के बाद दूसरी कटपीस की, रेडियो की, कैसेटों की, साड़ियों की कितनी ही दुकानें खोली गयी, वे कहाँ हैं?

वे कोई मनुष्य नहीं हैं, वे एक दल हैं। राम को पकड़ने पर रहीम का दल कहेगा—छोड़ दो। श्याम को पकड़ो तो हरि के दल से प्रेशर आयेगा।

थाना क्या करेगा? तीन महीने से ज्यादा तो किसी भी कारण से किसी को अँटकाकर नहीं रखा जा सकता। वे थाना के इंचार्ज हैं। वे भी

बँटवारा नियमित रूप मे करते हैं। मगर जो थाना को मानते हैं, उन्हें ही थाना वर्दाश्त करता है।

जो थाने को सुबह-शाम अँगूठा दिखा रहे है और नेपथ्य के नायकों की मदद से बार-बार बाहर निकल रहे हैं, उन्हें खतम कर देने मे ही वे विश्वास करते हैं। हाँ, चोर, डकैत, राहजन, पाकेटमार, चोरबाजारी, थाना-पुलिस सबकी एक-दूसरे के साथ परंपरा से चली आती एक अलिखित संधि है।

जनजीवन को सोलहों आना विपर्यस्त मत करो। चार आना करो, बारह आना बनाये रखो। सभी वर्ग के लोगों को सब समय गरम तेल में मत तलो।

बीच-बीच मे थोडा काम दिखाने दो। चार आदमियो को पकडकर जेल में ठूँसा। ऐसा कोई खराब केस हुआ तो जबर्दस्त ठुकाई की।

यह कौन है ? इसका क्या नाम है ?

गहरे दुःख से बड़ी-बड़ी सांस लेते हुए बड़े बाबू उठे। इस समय उच्च स्तर पर वार्ता हो रही है। सुपर०, डी० एम०—और भी कुछ बड़े अधिकारी।

"बडे बाबू ! उन्होने क्या कहा ?"

'हम तो हुकमी बंदे हैं। जरा रुकिये।"

बड़े बाबू बाथरूम गये। उस बार बार्डर पर बाग्ला देश के एक माझी की लकड़ी खाई थी सिर पर। कितने ही दिन बेहोश रहे। अच्छे होने पर भी सिर का दर्द नही गया। कभी-कभी दर्द फिर उभर जाता है।

कुछ दिन पहले सागरकांदी गाँव के एक वैद्यराज शशिशेखर भेषजरत्न शास्त्री के निर्देश से उन्होने जल-चिकित्सा की तो आराम मिला। अनेक बार स्नान, अनेक बार जलपान, अनेक जलवियोग। बड़े बाबू ने एक मिनट मे स्नान करना सीखा है। पूजा-ऊजा हुई थी, तो थाना का लक्षण शुभ होना ही चाहिए।

बाथरूम से वापस आकर बोले—"थाने के कल्याण के लिए एक पूजा करवा देता हूँ, क्या कहते हैं ?"

छोटे बाबू कुछ कहते, इसके पहले ही एक जीप आकर रुकी थाने मे।

उसमें से एस० पी० साहेब उतरे। टूर पर निकलते हुए रास्ते में डी० एम० उन्हें छोड़ गये थे।

"ज़रा देखियेगा।"

"ओह् श्योर!!"

एम० पी० नये हैं। गैर-बंगाली होने पर भी बंगला बहुत बढ़िया बोलते हैं। कूचबिहार में जन्म हुआ है और शिक्षा-दीक्षा दार्जिलिंग में। नौकरी का रिकार्ड भी अच्छा ही है।

"सुनिए!"

"येस् सर।"

"फोर्स मोबिलाइज करिये। शहर को साफ करिये। डी० एम० ने कहा है—और मैं भी ऐसा ही समझता हूँ—कि सबसे पहले पुलिस के मॉरेल को ऊपर उठाना है। सभी को पकड़िये। सबसे पहले राजीव काली को।"

"और किंग को, सर?"

"जरूर। किंग! माइ फूट!"

"येस् सर!"

"हम दोनों का कहना है कानून और प्रशासन की निगाह में अपराधी अपराधी है।"

"येस् सर!!"

"मुझे सारी बातों की खबर देते रहिये। ये लीजिये आर्डर।"

एक पल में ही *दृश्य बदल गया। एस० पी० अभी थे, अभी गायब हो* गये। बड़े बाबू लिखित आदेश पढ़ने लगे—इन सभी व्यक्तियों को (नाम दिये हुए थे)·· पढ़ते-पढ़ते बड़े बाबू ने बेल्ट कस ली।

"यानी सिराज और कालू की जो यह गैंग-वार है···"

"अब चुप भी करियेगा।"

पुलिस चाहे तो कुछ काम दिखा सकती है। कौन कहता है, इस शहर की पुलिस नहीं कर सकती? सिराज और कालू के पीछे जो लोग है, वे क्या सोच रहे हैं, बस उतना जानना आवश्यक है।

शाम तक पता चल गया कि ये भी यानी दोनों नेता भी शहर को साफ

करने के बारे मे प्रशासन के साथ सहमत हैं। इनका यानी राजनीतिक नेताओं का कोई नाम देना ठीक नही है। नाम से क्या आता-जाता है। दल की मदद के लिए और दल कितना शक्तिशाली है यह जानकर कभी तो ये राजा हो जाते है और कभी···। कही पर कोई नेपथ्य सगीत बजा रहा है। तुम बाजा हाथ मे थामकर कुर्सी पर बैठ जाते हो। बच्चों को शुरू से ही रोज 'म्यूजिकल चेयर' का खेल सिखाने पर वड़े होते-होते वे व्यवस्था पर कब्ज़ा करने की लड़ाई मे दक्ष हो जाते है।

तो फिर सब कुछ यथेष्ट दक्षता के साथ होगा, जिसे पेशेवर निपुणता कहते हैं उसके साथ।

अभी भी इस युद्ध में जो मारपीट करते है उनकी शिक्षा वचपन से नही हुई है। कोई कारखानों मे यूनियन चलाता था, कोई गाँव मे पटसन बेचता था, कोई स्कूल में मास्टरी करता था—सभी नौसिखिये, सभी अमेचर। जैसे बेनेदा गाँव के पतितपावन सरकार है। ग्राम सहकारी समितियाँ वनाते और फेल करते थे। अभी भी वह सदर जाते हैं तो कहते हैं, "शहर गया था, भाई।" ऐसे लोगों के पास कौन-सी तेज़ धार की छुरी की उम्मीद की जा सकती है। उन्होंने बचपन मे म्यूज़िकल चेयर का खेल नही खेला था। केंचुए का चारा बनाकर मछली पकडी थी।

खबर आती है।

शहर को साफ करने के मामले मे यदु और मधु सहमत है। फिर भी यदु का कहना है कि कालू और उसके चमचों को पकड़ लेने से यह शहर सुंदरी रूपसी हो जायेगी।

मधु के अनुसार सिराज को गिरफ्तार करने से यह शहर वर्षा में नहाई चपे की लता के समान पवित्र हो जायेगा। मधु को थोड़ा काव्यरोग है।

डी० एम० ने सिर हिलाया। अपराधी तो अपराधी है, इन्हें पकड़ना ही होगा।

वाहर आकर यदु और मधु ने सात साल वाद एकसाथ बैठकर दुकान में चाय पी। राम और श्याम के साथ गहरी और दुर्लभ बंधुता में मिले थे दोनों। वाहर शत्रुता करनी पडती है, पर हृदय मे तो गहरा प्रेम है। सभी ने एक-दूसरे की हाल-चाल ली।

"तुम्हारी लडकी की शादी कैसी रही ?"

"दादा, आप अपने दाँत निकलवा दीजिये।"

"अरे भैया ! यह अफारा बड़ा बुरा रोग है। तुरत कलकत्ता जाकर बड़े डाक्टर को दिखाओ।"

"वाह ! अभी भी आपका स्वास्थ्य कितना अच्छा है।"

अँगरेजों को भारत से हटाने के लिए सभी भारतवासी एकजुट हुए थे। ये भी एक महान उद्देश्य को लेकर एकत्र हुए हैं।

डी० एम० को हटाना होगा। इसको बोलने की तमीज़ नहीं है। कहता है, अपराधी तो अपराधी है। बहुत ही भद्र, सभ्य, बहुत पढ़ने-लिखने वाला है, शादी नहीं की है, फिर भी कोई नशा नहीं करना। जब मे इस शहर में आया है तभी से सभी मामलों में उसे परामर्श दिया जा रहा है, फिर भी वह अपने मन से नोट दिये जा रहा है। कोशिश तो बहुत की तुमने, हुआ कोई काम ? हमी तो सब चीजों के पीछे है, करोगे कैसे ? हमे छोडकर तुम्हारा कोई काम होगा भी कैसे ?

जो करना है, हमे साथ लेकर करो।

ऐसा न करके, एक पारटी की प्रशंसा किये जा रहे हो। कहते हैं उन्होंने पचायत में बहुत काम किया है। पूरा-पूरा हिसाब भी उन्होंने दाखिल किया है।

श्याम कहते हैं—"वह हमारा इलाका है। मगर प्रधान बड़े मनमाने ढंग मे काम कर रहा है।"

"दादा, हटाइये उसे, हटा दीजिये।"

उसे हटाओ। सभी जगह चमचों को बैठाओ।

"बिराम क्या कर रहा है, बिराम ?"

"खबर ढूंढ रहा है।"

"खबर पा जायेगा।"

शहर को पता चल जाता है। अभियान चलाकर पुलिस कुछ ताजा बम और कारतूस बरामद करती है…सिराज उर्फ साजन उर्फ कालो-मानिक अपने कुछेक साथियों समेत पकड़ा जाता है। कल्कि के अवतार उर्फ कालू और राजीव काली उर्फ किंग, उर्फ जयमां की खोज में पुलिस

सरगरमी से लगी हुई है । अंतिम आदमी बहुत दिनों से···

हस्पताल में बाबुन को कोई छोटी चिड़िया उड़ते-उड़ते खबर दे गयी है कि जिस समय वे लोग अपने हाथ-पैर, आँख-मुंह खतरे में डालकर जूझ रहे थे उसी समय उन्हें लड़ाकर मंटा शहर छोड़कर भाग गया था। दूसरे भी भागने वाले है, क्योंकि नेताई और माल्य की लाश के साथ कालू के दाहिने हाथ की बरामदी के बाद मंटा ही उस्ताद था।

नेता ही कैडर को लड़ना सिखाता है। अगर वह कैडर को फँसाकर खुद हवा हो जाये तो दूसरे सेनापति भी ऐसा ही करेंगे। वे भी विश्वासघात करके खिसक जायेंगे।

नेता अगर विश्वास और संघर्ष की शिक्षा दे तो सेनापति वही सीखेंगे। और नेता अगर कहे—'चचा, अपनी-अपनी जान बचा' तो सेनापति भी वही सीखेंगे। सभी स्थितियों में सेनापति नेता को ही मानकर चलता है।

बाबुन, आँखें मूंदे रहता है। मुंह भी नही खोलता। हाथ में पैसे हो और कोई धंधा कर ले तो बार्डर इन दिनों सोने की खान हो रहा है। उधर निकल चला जाय···

बाबुन की भक्तिन तथा पुत्र-स्नेह मे अंधी माँ इसी समय हाथ में बहुत अच्छी दुकान का सदेश (एक बंगाली मिठाई) लिये प्रविष्ट हुई और बोली—"बच्चा, इस बार तुम्हें रिहाई मिले तो मैं तुम्हारा ब्याह कर दूंगी। डाक्टर कहता है, एक पांव नही रहेगा। उससे क्या? कितने ही लँगड़ो-लूलों की शादी हो जाती है।"

"तुम चुप भी करोगी या नहीं?"

"अब तुम उन कलमुंहों के साथ मिलना-जुलना मत। सिपाही से कहा मैंने कि मेरा बच्चा तो सोने का टुकड़ा है। बाप ने ब्याह नही किया, इसीलिए गैंग की संगत में पड़ गया। इस पर सिपाही ने बहुत दुख प्रकट किया।"

"ओपफो! चुप क्यो नही रहती तुम?"

बाबुन की माँ को रोका जा सकता है, पर राजीव काली की चलायमानता को कौन बाधित कर सकता है!

सिराज नही है, कालू नही है, यही वक्त है घुस पड़ने का। ऐसे वक्त में उसके पीछे क्यों लग गये लोग ?

क्षणे काली क्षणे वनमाली यानी पल में काली, पल में वनमाली यानी पल मे किंग और पल में राजीव काली।

वह फीलर भेजता है। यदु बाबू संदेश भेजते है कि अभी वे कुछ नही कर सकते। जब तक इस शहर का प्रशासनिक ढाँचा नही बदल जाता कुछ भी कर पाना संभव नही है।

राजीव की ओर से बात करने जो आदमी आया था उसकी मिनी-बस बाग्ला देश बार्डर से धड़ाधड़ सामान इस पार पहुँचाती है। अपनी कल्पना का पूरा प्रयोग करके उसने दोनों मिनी-बसों का नाम रखा है मधुकर। फलस्वरूप उसकी ये मिनी-बसें मगल काव्य की पण्य से लदी हुई नौकाएँ बन गयी हैं।

मधुकर साहा दास ने पहले सिंचाई परियोजना में ठेकेदारी करके जो करना था सो किया था और मधुडाँगा के पास गंगा के किनारे उसके —एक के बाद एक—तीन भट्ठे है ईंटों के।

इन दिनों भट्ठे बंद हैं। ईंटों का आफ-सीज़न है। इन दिनों भट्ठों पर सिर्फ कतारों में बने लेबरों की ईंटों से बनी झोंपड़ियाँ हैं। इन दिनो खाली हैं। सीजन मे इनमें मजदूर रहते हैं। दीवारें काफी मजबूत बनायी गयी हैं। भट्ठा तो रहेगा ही। तो फिर हर साल झोपड़ियाँ बनाने का क्या फायदा ?

भट्ठों के परे मधुकर का एक मकान है। यह एक ज़मींदार की कोठी है जिसे इसलिए खरीदा गया है कि भविष्य मे ज़्यादा दाम मिलने पर बेच दिया जाय। गगा के तीर पर बनी इस कोठी का बागीचा इलाके के लोगों के लिए एक तरह का 'पिकनिक-स्पाट' है।

मधुकर साहा दास देखने मे लंबा, गोरा और मोटा है। दाढी-मूँछ और सिर के बाल बिखरे होते हैं। गले की आवाज लड़कियों जैसी महीन है। स्नो-पाउडर और सेंट का ढेरो प्रयोग करता है वह। उसका यह सौंदर्य-प्रसाधन यदु बाबू को एकदम पसद नही है, किंतु सामान्य जनता को जो व्यक्ति 'हारलो' बनियान और 'नाइफ' जोस पहना रहा है,

बहुत-सी युवतियों के लिए विदेशी सौंदर्य-प्रसाधन मुहैया कर रहा है, बहुत-सी कन्याओं के पिताओं के लिए दामाद को दहेज में देने के लिए घड़ियाँ बेचता है, उस जनसेवक की देह में यदि थोड़ी-सी सुगंध हो तो उचित ही है।

सभी तो यदु बाबू की तरह नहीं हैं कि जीवन-भर संघर्ष करते रहेंगे और लाइफबॉय लगाते रहेंगे।

मधुकर ने बाँसुरी की तरह महीन गले से कहा—"किंग को पकड़ लेंगे तो हमें प्रोटेक्शन कौन देगा ? शहर की सफाई कर रहे हैं, करिए, मगर मुझे तो प्रोटेक्शन न आप लोग देंगे न पुलिस देगी। जानते हैं, कभी-कभी मेरे पास लाखों रुपये का माल होता है।"

"तुम मुझे डर दिखा रहे हो ? इस तरह मुझसे कभी मत बोलना, मैं तुम्हारा दिया नहीं खाता : न आज तक कभी खाया है।" यदु बाबू गरम हो उठे।

"आपकी पारटी और लोग तो खाते हैं।"

"तो उन्हीं से जाकर बोलो। अभी कुछ दिनों के लिए सब कुछ बंद रखना होगा।"

"सर, जमाना जैसा है वैसे ही चलेगा। पुराने लोगों को हटाइयेगा, उनकी जगह नये आ जायेंगे।"

"मैं कुछ नहीं जानता।"

यदु बाबू की कभी-कभी इच्छा होती है कि सारा कूड़ा-कचरा फेंककर जिले को साफ कर दें, पर साथ ही वे यह भी समझते हैं कि ऐसा संभव नहीं है।

"तो फिर चलता हूँ।"

मधुकर सब बातें किंग को बताता है फिर प्रस्ताव रखता है—"चलो, देखते हैं। तुम्हें अभी मैं अपनी मधुडाँगा वाली कोठी में रखवा दूँगा।"

"चलो।"

जाते-जाते मधुकर सोच रहा है कि कारोबार का बदलना होगा। किंग का क्या विश्वास ? पैसे लेकर किसी दिन वह उसे भी खतम कर

सकता है। अवश्य ही अभी उसका वक्त नहीं आया है। ठेकेदारी छोड़कर इस धंधे में आना ठीक नहीं हुआ।

"कालू और तुम कितने दिन पहले अलग हुए ?"

"यही कुछ महीने पहले।"

"इतने में ही उसने अपना गेंग बना लिया ?"

"जानते तो हो।"

"नेताई और माल्य को किसने मारा ?"

"उस पार मारकर पानी मे फेंक दिया।"

"तो क्या लाश तैरकर इस पार आ गयी ?"

"हाँ, ऐसा ही तो होता है।"

"हूँ" खैर, मुझे क्या पता।"

"वहाँ कमरा-उमरा तो साफ है ?"

"हो जायेगा। तुम्ही तो गये थे कुछ दिन पहले। मैं बहुत दिनो से नहीं गया हूँ। उस बार…अचानक…पता नहीं क्या…"

"जायेंगे कैसे ?"

"क्यों ? गाड़ी से।"

"पागल हुए हो ? बरतलाट का ओ० सी० हरदम रास्ते में घूम रहा है…उनके गले में गोली मारकर पानी मे फेंक दिया था। समझे नहीं ?"

मधुकर परेशान हो उठा। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था और किंग भी जैसे उसके साथ नहीं बल्कि अपने आप बात कर रहा था।

किंग यानी राजा। राजा की तरह ही है वह देखने में। कितनी आश्चर्यजनक बात है कि बायें हाथ की सिर्फ तीन उँगलियाँ खोकर उस बार वह लौट आया था।

किंग जन्म से ही बायें हत्था है। उसके बायें हाथ का बेकार हो जाना बड़ा ही खराब है। दाहिने हाथ को चालू करने के लिए वह इस तरह कई महीनों से दम साधे बैठा है और दाहिने हाथ से रिवाल्वर चलाने की प्रैक्टिस कर रहा है। कालू के ऊपर किंग खार खाये बैठा था। मगर कालू का इंतज़ाम किसी और ने कर दिया। उमर खैयाम की कविता के प्रेमी जैसे सुंदर चेहरे वाला किंग अभी भी कुछ सोच रहा है।

"बरतलाट का ओ० सी० ?"

"हाँ···सुनो, मैं नाव से जाऊँगा।"

"नाव से ?"

"हाँ।"

"शहर तो अभी भी···"

"दो-एक दिन देखता हूँ।"

"ठीक है।"

किंग फिर सोचने लगता है। हाँ, वह, कालू, नेताई और माल्य एक साथ ही थे। अब वह अकेला है। वह और ओ० सी० सलीमुल्ला। "अल्ला कसम राजीव, तुम्हें एक दिन मैं मारकर फेंक दूंगा।"

"अभी तो नहीं मार पा रहे है न ?"

"तुम सभी को काटकर फेंक दूंगा।"

दारोगा हो तो ऐसा ! वह एक टेरट है ! देखने मे खुद डकैत जैसा लगता है। कहता है—"अरे रहने दो। चार्जशीट बनाओ, केस तैयार करो, फिर दादा लोग ऊपर से दबाव डालें तो छोड़ दो। यह मुझसे नही होगा। डकैतों के साथ डकैती के नियम-कानून से ही चलना होगा। कही बेकायदे मिल जायें तो गले मे गोली मारो और गंगा के सुपुर्द करो। ऐसी गगा पास में बह रही हो तो फिकर किस बात की ?"

हिलसा मछली मुर्दा खाती है। हिलसा मछलियों को खिला-पिलाकर मोटा करो। जैसे तेल चूता हो।

नेताई और माल्य तो सलीमुल्ला की करामात है, मगर कालू ?··· उसका हाथ ?

कटा हुआ हाथ लेकर कहाँ जाओगे कालू ? किंग तुम्हें देख लेगा। किंग के मारे जाने पर उसके लिए रोने वाला कोई नही है।

चार

शहर का सन्त्रास फैलकर गंगा तीर तक पहुँचता है। चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। इसके बाद पुलिस की दौड़-धूप शुरू होती है। भय और संत्रास भगीरथी के पश्चिम तट पर भी फैल जाते हैं।

गंगा की वीरभूमि इस समय बहुत शांत हो गयी है। पश्चिमी तट से देह का व्यापार करनेवाली जो गरीब औरतें इस पार आधी रात तक अपना धंधा करती थीं, वे अब यहाँ नहीं होतीं।

अंधेरे में गैर-कानूनी शराब के जो छोटे-छोटे ठेके चलते थे, अब बंद हो गये हैं। देशी कुत्ते बिना रोक-टोक के नदी-तट पर भाग-दौड़ करते हैं और बीच-बीच में किसी ट्रक की हेडलाइट पलभर के लिए पानी की सतह को झुलसाती हुई गुज़र जाती है।

शहर की नगरपालिका ने बहुत दिन पहले से काम-काज बंद कर दिया है। हाज़िरीदान, वेतन-ग्रहण और अपनी-अपनी माँगों को लेकर मीटिंग, जुलूस आदि के परिश्रम से ही वे अत्यंत क्लांत और शांत हैं। नगर-पालिका के कमिश्नर लोग राम-श्याम-यदु-मधु-बाबुओं के दल में बने रहने और उसे छोड़कर दूसरे दल में शामिल होने से संबंधित बहुत-से कार्य-कलापों में लगे हुए हैं।

शहर की वर्तमान परिस्थिति ने नगरपालिका को बड़ी मुश्किल में डाल दिया है। 'शहर को साफ करना होगा' यह बात उसमें भी कही गयी है। यह बात उससे क्यों कही गयी, इसे लेकर नगरपिताओं में बहुत गंभीर आलोचना-प्रत्यालोचना शुरू हुई। और विराम को बुलाया गया।

"विराम बाबू, इसका क्या मतलब है ?"

"किसका ?"

"हम शहर की सफाई कैसे करेंगे ?"

"मतलब ?"

"नगरपालिका की अपनी कै-कै तो खतम हुई नहीं।"

"ओह !"

"शहर साफ ! वाह ! इसका मतलब क्या है ?"

"यही—नाली साफ, कूड़ा-कर्कट साफ, पाखाने साफ, साफ पीने के पानी की व्यवस्था, नालियों में दवा का छिड़काव, बाज़ार-हाट की सफाई वगैरह।"

"समझा। यह काम तो कार्तिक का है"

"क्यों?"

"आपके प्रभाव से वह नाटककार बना। फिर नगरपालिका की आलोचना करते हुए उसने नाटक लिखा।"

"नहीं, नहीं। यह बात नहीं है।"

"गंगा किनारे आपके चेले जो गंदगी फैला रहे हैं, उसे जाकर रोकिये पहले।"

"मेरे चेले?"

विराम ने हँसकर कहा—"आज मुझे थोड़ी जल्दी है।"

विराम के चले जाने के बाद बाकी लोग एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। एक ही पेड़ में मीठे और कड़वे फल कैसे लगते हैं, यह' विराम को देखकर समझो।

एक पिता के तीन लड़के। बड़ा लड़का अगर समाजसेवी है। दूसरा सूर्य सन् इकहत्तर मे जेल में मारा गया। विराम जेल काटकर आया तो अब नौकरी कर रहा है। और नाइट-स्कूल, अखबार निकालने की योजना, ईश्वर के बेटे रोना की खोज मे व्यर्थ की भाग-दौड़—इसी तरह के फालतू कामों में खपा रहा है अपने को। इसीलिए तो भाई-भाई में पटती नहीं।

शाम को विराम ईश्वर के घर जाता है। अधपके बाल, सुता हुआ चेहरा, होंठों पर मुसकान, आँखो पर मोटे काँच का चश्मा आह! शाम के नीम उजाले में पेड़ो के नीचे से तुम आ रहे थे, तो मुझे लगा सूर्य बाबू चले आ रहे हैं। तुम दोनों भाई एक तरह चलते हो।

"ईश्वर!"

"आइए बाबू, बैठिये।"

"वाह! कितनी अच्छी हवा चल रही है आज।"

"हाँ, बदली भी है थोड़ी-थोड़ी।"

"थोड़ा पानी पिलाओगे?"

"चाय भी बनाता हूँ।"

"चाय बनाओगे ? सामान है ?"

"लाकर रखा है। आज के दिन तुम आते हो न ?"

"तुम्हें याद रहता है ?"

"हां, आज उसका जनमदिन है न !"

"हां !"

"कितने सालों से आ रहे हो। भाभी जी के चले जाने के बाद से तो यहीं पर...पहले तो मैं ही जाता था।"

"हां, वह मनाती थी।"

"कैसे-कैसे लोग चले गये...और लड़की कहाँ है ?"

"बहिन के पास।"

"मिलने जाते हो ?"

"जाता हूँ।"

"चाय बनाता हूँ...जानता था तुम आओगे...और अगर टोना आ जाय तो आते ही चाय की फरमाइश करेगा। दुकान क्या हमेशा खुली रहती है।"

"टोना आयेगा।"

"मन बोल रहा है। इतने दिनों से कभी तो नहीं बोला मन।"

ईश्वर चाय बनाता है। बाँस के पत्तों को चूरा करके आग जलाता है, फिर पानी चढ़ाता है।

सूर्य अगर ज़िंदा होता तो विराम की तरह नहीं भी होता तो भी प्रायः प्रौढ़ हो गया होता। तैंतीस-चौंतीस का तो हो ही गया होता। सूर्य अगर ज़िंदा होता तो मलिना को भी मरने नहीं देता। जैसे भी हो अपनी भाभी को बचा लेता। गॅल-ब्लैडर कोई ऐसा रोग भी नहीं है कि आदमी को बचाया न जा सके। सूर्य ज़िंदा था तभी से बड़े भैया और विराम के चूल्हे अलग हो गये थे। सूर्य भी विराम के साथ ही रहता था। विराम उससे प्राय. दस वर्ष बड़ा है।

आश्चर्य, उन दिनों विराम ईश्वर के यहाँ नहीं आता था। वे लोग जब लालबाग में रहते थे तो ईश्वर उनकी नाव चलाता था। सूर्य के बाप

के पास खेनेवाली एक नाव थी। नदी पार किये बिना खोशबाग और हज़ार दुआरी की देखभाल करने कैसे जाया जा सकता था। ईश्वर दूसरे यात्रियों को भी नदी पार कराता था।

उन दिनों सूर्य ईश्वर के घर आता था। स्कूल के दिनों से ही सूर्य और उसके साथी यहाँ रात्रि पाठशाला चलाते थे।

और यही पर सूर्य पकड़ा गया था। और उसको पकड़ने मे पुलिस की मदद न करने के अपराध में विराम। उन दिनों कोई सपने में भी नही सोचता था कि जेल मे कैदी की हत्या की जा सकती है। ईश्वर को भी पुलिस ने बहुत परेशान किया था। बडी जिरह, बडी धमकी। ईश्वर का एक जवाब—बचपन से मेरे यहाँ आता था। उसे यहाँ आने से कैसे मना करता मैं। इसके अलावा मैं कुछ नही जानता। अब चाहे मारो या काटो।

सूर्य ईश्वर के कमरे में बहुत बार रहा है, बहुत-सी बातें की हैं उसके साथ। यह सब जानकर विराम को बड़ा ताज्जुब होता है।

यह जो एक खास दिन उसके पास विराम आता है, उसका और कोई कारण नही है—उसे अच्छा लगता है। मलिना चली गई, सूर्य चला गया। ईश्वर सूने घर में रोज घुसता है तो कैसा-कैसा लगता है। उसने एक बार कहा था—"चलो न, ईश्वर! मेरे साथ रहो।" ईश्वर ने जवाब दिया था—"नही बाबू, इस कमरे को जगाये रखना है। टोना किसी भी दिन एकाएक आ जाये तो?"

"लो बाबू, चाय पिओ।"

दोनो चाय सुड़कने लगते है। संध्या का आलोक धीरे-धीरे बुझता जा रहा है। दोनो चुप हैं। ईश्वर जानता है विराम बाबू बहुत दुखी है। सूर्य बाबू की मौत को क्या सभी भूल गये?

अचानक ईश्वर बोल पड़ता है—"बाबू, दुख मत करो।"

"नही···दुख नही···अचानक···"

"उनकी मुझे आजकल बहुत याद आती है। टोना के लिए रात में जागता हूँ···तो सारी बातें एक-एक कर दिमाग में चक्कर काटती हैं। ताज्जुब! एक भी बात भूला नही हूँ।"

आधा पागल और अधनंगा ईश्वर पाटनी इस तरह अकेले और

उदास विराम को सांत्वना देता है।

"मुझे लगता है बाबू कि गंगा किनारे रहने से ऐसा होगा ही।"

"लो, बीडी पीओ।"

"बीड़ी तो बढ़िया है।" घबराते हुए ईश्वर कहता है।

"अच्छा ईश्वर, मैं चलता हूँ।"

"अच्छा बाबू ! अँधेरा होता जा रहा है।"

"वह नहीं। सात बजे से कर्फ्यू है।"

"कर्फ्यू। अच्छा ! जभी तो मैं कहूँ चारों तरफ इतना सुनसान क्यों हो रहा है!"

"फिर आऊँगा।"

"तुम भी सावधानी से रहना।"

"अच्छा!"

"मन करता है—जाकर तुम्हारे पास रहूँ। पर मन यह भी कहता है कि टोना कभी भी आ सकता है। आज गंगा का पानी जैसे कह रहा है वह आयेगा।"

टोना के लौटने की बात पर विश्वास करना विराम के लिए बहुत मुश्किल है। फिर भी कहता है—"टोना आये तो मुझे बताना न भूलना।"

ईश्वर थोड़ी दूर तक विराम के साथ जाता है। फिर वापस आकर बैठता है। बत्ती नहीं जलाता। कथरी को शरीर पर लपेट लेता है। आज हवा बहुत तेज है। उसका मन शांत है और आत्मा स्थिर है।

थाना से गदाई शेख दस रुपये दे गया था। चलो, दस सही। बाबू लोगों ने बीस रुपये दिये होंगे। फी लाश दस रुपये। तो क्या दस रुपये गदाई ने खा लिया ? खाओ—गदाई, तुम भी खाओ। कौआ कभी कौए का मांस नहीं खाता, मगर मेरे पैसे थोड़ा-बहुत तुम खा सकते हो। थाने में रहते हो। पुराने कैदी हो डामुल के। तुम्हारी शिक्षा दूसरे तरह की है।

तुमसे ईश्वर नाराज नहीं है।

उन्हीं पैसों से ईश्वर मुरमुरे खरीद लाया था। पानी के साथ मुरमुरे खाने में और किसी चीज की जरूरत नहीं होती।

हाथ की बुनी खजूर की चटाई पर लेटना है ईश्वर। कैसा शांत है

सब कुछ! गंगा का किनारा भी कितना शांत है! कारण क्या है?

टोना आयेगा, इसीलिए।

एक बहुत चौड़ी नहर की तरह गर्जन करती हुई तीव्र वेग से प्रवाहित इस अपार जलराशि ने ईश्वर की चिरपरिचित गंगा को निगल लिया है। उसे लगता है इसी पानी में से निकलकर टोना आयेगा। टोना, इस समय तेरी भी उमर वही है जिस उमर में सूर्य बाबू मारे गये थे।

ईश्वर सोच रहा है—शहर में कोई भी नहीं जानता था कि जेल के भीतर ऐसा कांड होने लगा है। सवेरा ही था कि एकाएक क्या हंगामा शुरू हुआ। दक्खिन श्मशान से भागकर अपने कमरे तक भी आना मुश्किल कि ठांय-ठांय की आवाज़। पता नहीं सूर्य बाबू और उनके साथियों ने वार्डर को मारा है, या क्या? उस समय हाकिम बड़ा जालिम था, बोला—गोली चलाओ।

तो ये बातें सभी लोग गंगा का किनारा पकड़कर पैदल आते हुए बोल रहे थे। ईश्वर को सब कुछ याद है। हाँ, हाँ, तुम उसे पागल कहते हो न! कहते हो—ओह! बेचारा बेटा-बेटा करके पागल हो गया। ईश्वर अगर पागल न होता तो तुम लोग 'ईश्वर को दूध-भात खिलायेंगे हम' का शोर उठाकर यह सब कर पाते? जेल का टावर देखा है? आसमान में लाल बत्ती जैसे सभी को लाल आँखें दिखाती है।

सब कुछ ईश्वर के लिए हो रहा है न? ठीक है अगर मैं टोना को वापस नहीं पाऊँगा तो देखना तुम लोगों का सारा कारोबार बन्द कर दूँगा।

सब बंद।

सब स्थिर। सूर्य आसमान में ठहरा हुआ, छाया रुकी हुई, ट्रक, बस, ट्रेन सब जाम, गंगा का पानी शीशे जैसा पारदर्शी और स्थिर।

टोना को वापस दे दो, फिर सब चालू कर दूँगा।

जल-देवता की तरह टोना पानी में से निकलकर आ सकता है। नाव पर बैठकर आ सकता है, कुछ भी हो सकता है।

शहर में फैला हुआ भयानक संत्रास, दो लाशें और एक कटा हुआ हाथ, फिर पुलिस की भाग-दौड़ कुछ भी ईश्वर को छू नहीं पा रहा है।

वह पानी की तरफ लगातार देख रहा है। हवा में सड़े हुए मलमूत्र की गंध, झुड-झुंड के मच्छरों का आना और जाना।

पता नहीं कौन लोग नाव लेकर आ रहे हैं। बहुत धीरे, बहुत चुपके-चुपके शायद हिलसा मछली ला रहे हैं चोरी से। मगर इधर क्यों ?

एक छाया नीचे जाती है और नाव पर चढती है। नाव ऊपर की तरफ चल पड़ती है।

ईश्वर मुस्कराता है। शहर बड़ा गरम हो गया है। इसीलिए गरम बालू में से धान के लावे की तरह अँधेरे में छिटक कर भाग रहे हैं सब।

जाओ, जाओ, यहाँ अभी गुड़ नहीं है। दूसरी बहुत-सी जगहों पर है, वहाँ जाकर मक्खियों की तरह भिनभिनाओ।

पाँच

मधुडांगा में मधुकर साहा दास की कोठी से थोड़ी दूर पर उनकी जो गोशाला थी, उसकी छत पर चढ़कर बैठ गया टोना। गोशाला एकतल्ला है, उसके साथ जो बड़ा-सा आम का पेड़ है वह पूरे आहते को ढके हुए खड़ा है।

हाँ, कालू का हाथ उसने काटकर गिरा दिया था। उसके बाद कहाँ गया कालू ?

टोना ने कटार की धार पर उँगली फिरायी। कई महीनों से वह सिर्फ घूम रहा है और खोज रहा है। अभी दो-चार दिन पहले मधुडांगा के सब्जी बाज़ार में डाभ काटकर बेचते हुए उसने देखा सभी लोग जल्दी-जल्दी अपना सामान समेट रहे हैं। टोना ने भी अपना सामान समेट लिया। तभी कोई बोलता हुआ गुजरा—भागो, भागो, पुलिस आ रही है।

इस बाज़ार में सब्जी की थोक बिक्री होती है। किसान और दूसरे थोक विक्रेता बेचते हैं और खुदरा विक्रेता खरीदते हैं। इस बाज़ार से

सब्जी खरीदकर टोना और उसका एक मित्र शहर मे ले जाकर बेचते हैं। कुछ ही दिन पहले उसने यह काम शुरू किया था। बाप के चेहरे पर हँसी झलक रही थी और टोनी भी आ पहुँची थी।

यह जगह उसकी पहचानी हुई है, खूब पहचानी हुई है। बरतलाट के बड़े दारोगा और शहर के चार मस्तानों के बीच इससे थोडा और उत्तर खोदडांगा में लडाई हुई थी। बडे दारोगा के हाथ से पिस्तौल गिर गयी थी और मौका देखकर गुडे इधर-उधर भाग खड़े हुए थे। टोना पीछे से सब कुछ देख रहा था और मन-ही-मन कह रहा था—मारो, मारकर गिरा दो, दारोगा साहब तुम्हारे हाथ मे पिस्तौल है। ये ही बदमाश हमारी बहन को उठा ले गये है।

मगर बड़े बाबू के हाथ से पिस्तौल गिर गई थी। कालू, नेताई और माल्य भाग खड़े हुए थे। खोदडांगा की उस लड़ाई मे बडे दारोगा मारे जाते, अगर कालू के हाथ मे पिस्तौल होती। राजीव काली का हाथ इतना सधा हुआ है कि उसकी गोली का वार कभी खाली नही जाता। बडे दारोगा की पिस्तौल छिटककर नदी मे जा पडी थी।

हताश होकर टोना भयानक दुस्साहसी हो उठा था और उसने काली की बायी बाँह को लक्ष्य करके कटार फेंकी थी और कटार अँगूठा तथा उसके पास की दो अँगुलियों को काटकर नीचे गिर गयी थी।

बडे दारोगा सोच नही पा रहे थे कि राजीव काली ने उनपर गोली क्यों नही चलायी? क्यों उसने टोना को लात मारकर परे धकेल दिया था।

बडे दारोगा ने कहा था—"राजीव, मैं तुम चारों को मार डालूँगा।"

"अभी तो नही मार पा रहे है न।"

खून से सना बायाँ हाथ पैंट के पॉकेट मे डालकर राजीव भाग खडा हो गया। बडे दारोगा टोना से बोले—"ओह, सब बेकार हो गया, तूने खबर दी। जीप को दूर ही छोडकर भागता हुआ आया, फिर भी काम नहीं बना। देख तो उसे उठा सकता है या नहीं।"

एकाएक टोना पेट दबाकर जमीन पर लोटने लगा।

"रहने दे तुझसे नही होगा।"

आदमियों को बुलाकर पिस्तौल निकलवाया गया और टोना को डाक्टर के यहाँ ले जाया गया। अद्भुत आदमी है यह दारोगा। टोना को अपने घर में रखवाया उसने, बोला—"यहीं रह, वे सब साँप की जात हैं, पता नहीं कब काट खायें।"

फिर बोले—"अजीब बात है, हाथ में पिस्तौल थी फिर उठकर भागा क्यों ? गोली क्यों नही चलायी ?"

अच्छा, तो अभी भी बड़े दारोगा की समझ मे बात नहीं आयी है। बडी कठिनाई मे करवट बदलकर टोना ने कहा—"हुजूर, वह तो बायाँ-हत्था है। जो करता है, सब बायें हाथ से।"

और अवाक् होकर टोना ने देखा, बड़ा दारोगा हँसने लगा। चरम उल्लास की हँसी। हँसते-हँसते उसने टोना की पीठ थपथपाते हुए कहा—"वाह, बहादुर लड़के ! तूने बायें-हत्था राजीव के बायें हाथ का खेल ही खतम कर दिया।"

"मैंने कुछ सोचकर नही किया हुजूर, देखा जमीन में पड़ा उसका हाथ पिस्तौल लिये आगे सरक रहा है। बस···"

"बेटा, दाहिने हाथ से प्रैक्टिस शुरू करेगा अब।"

"करने दो, इतनी जल्दी प्रैक्टिस नही होगी।"

बड़े दारोगा ने इस मुठभेड़ की रिपोर्ट बनायी और बायें हाथ की कटी हुई तीन अँगुलियों वाले राजीव काली को गिरफ्तार करने पर जोर दिया।

इस घटना के बाद बड़े दारोगा ने टोना से कहा—"तू मेरे इलाके मे रह जा।"

टोना ने कोई उत्तर नही दिया। सोचने लगा—तुमने मुझे अपने इलाके मे रहने को कहा। अच्छी बात है, मगर तुम जो कहोगे क्या वही करना जरूरी है ? सूर्य बाबू को लेकर थाना ने मेरे बाप को कितना परेशान किया था। प्रकट में बोला—"बाबू, बहन को खोजना है न ?"

"हाँ, खोजना तो है। मैं भी तेरी बहन की तलाश कर रहा हूँ। हो सकता है ये लोग उसे बॉर्डर पार ले गये हों। इनके लिए कुछ भी मुश्किल नही है।"

"बहन का फोटो नहीं है। ऐसे ही लोगों को बता-बताकर पूछता हूँ, मगर कौन समझे। टूनी जैसी लड़कियाँ तो हर जगह हैं।"

टोना अपनी बहन को खोज रहा है। कहता फिरता है—मेरी बहन टूनी, शादी हो गयी है उसकी। हाथो मे शख और चाँदी की चूड़ियाँ, नाक मे लाल पत्थर की कील और कानो में कुंडल। रंग थोडा मैला जरूर है, मगर हट्टी-कट्टी है, बाल घुंघराले हैं, बड़ी-बड़ी आँखें है और बालो का रंग पीलापन लिये हुए है। चेहरा देखने मे अच्छा है, न लंबी है, न नाटी।

ढूँढ-ढूँढकर हैरान हो गया है टोना। टूनी की किस्मत ही खराब थी। जीजा के घर पर ही राजीव ने उसे देखा था। बोला था—"तू उसे लेकर क्या करेगा। हमारी मेहरबानी से रोटी पा रहा है! दूसरी ले आना। लड़कियों की कोई कमी नहीं है।"

टूनी ने बाद में पति से कहा था—"तुम शराब का धंधा क्यों करते हो? उनकी चमचागिरी करते हो, इसीलिए तो इतनी बड़ी बात कहने की हिम्मत पड़ी उसकी। छोड़ नहीं सकते यह काम?"

"छोड़ तो अभी सकता हूँ, मगर अब तो तेरे ऊपर उसकी बुरी नजर पड़ गयी है। अभी छोड़ दूं तो कहेगा इसीलिए छोड़ दिया। मेरी जान ले लेगा।"

"यहाँ से अपना बोरिया-बिस्तर उठा ले चलते हैं।"

"कहाँ जायेंगे?"

"क्या? गंगा पार।"

ये सब बातें टोना को बाद में मालूम हुईं। एक दिन अचानक जीजा, टूनी को उसके घर पहुँचा गया। कह गया—"कुछ दिन रहने दो यहीं। मकान बदलना है, ढूँढ़ने में थोडा समय लगेगा।" यह बात न जीजा ने बतायी और न टूनी ने कि राजीव ने कहला भेजा था कि टूनी तैयार रहे, वह उसे लेकर कुछ दिनों के लिए कलकत्ता घूमने जायेगा। और कालू भी समझा गया था—"जानते तो हो वह कितना जिद्दी है। टूनी! तुम्हारी गोद में छोटा बच्चा है। तुम्हारा दुख मैं समझता हूँ, मगर जैसे भी हो दो-चार दिन के लिए उसके साथ हो आओ। रात मे गाड़ी लेकर आयेगा।"

इसी मे डरकर टूनी और उसका पति ईश्वर के घर आ गये थे। मगर

सारी बातें साफ-साफ बता देते वे लोग तो टोना उसी समय उन्हें ब्रिज के उस पार पहुँचा आता। वहाँ उसकी काफी जान-पहचान है। मगर उन्होंने कुछ भी नही बताया।

टूनी चुपचाप कुछ दिनो तक घर मे बैठी रही, बाहर नहीं निकली। उसका आदमी भी डर के मारे वापस नही गया। काली बाबू के बाजार में रहने लगा। इन बातो का पता न ईश्वर को था, न टोना को।

कई दिनो से राजीव, कालू, नेताई और माल्य उसे ढूंढ रहे थे। किस पापी ने राजा का शिकार छीना है? गुंडों का मनोविज्ञान अजीब होता है। टूनी उसे जितनी आकर्षक लगी थी, उतनी आकर्षक शायद अब नही लग रही थी, मगर उसे पाना राजीव के लिए इज्जत का सवाल हो गया था।

एक मामूली रिक्शावाला जो उन्हीं की मदद से अपनी रोटी चला रहा है, उसकी बीवी को क्या मांगने पर भी किंग नही पायेगा? शहर और जिला के गुंडा-जगत् मे हँसी का पात्र बनेगा। जैसे भी हो, वह लड़की चाहिए। उसे सबक सिखाना होगा।

टूनी कुछ भी नही जानती थी। वह अपने बच्चे को दुलार रही थी—"ओ मेरे सोना! ओ मेरे गोपाल! टोना, जाओ मछली और अण्डे लाओ, पकाकर खिला दूं। अरे सोना, रोया क्यो? मामा को दुलार किया तो जलन हो गयी तुझे?"

क्यो टूनी को ऐसा लगा कि अब वह निरापद है? क्यों वह दूसरी लड़कियों के साथ सिनेमा देखने गयी? टोना उसके बच्चे को गोद मे लेकर सुलाने की कोशिश कर रहा है हिला-डुलाकर। सिनेमा तो कब का खतम हो गया होगा, मगर टूनी आयी क्यों नही? क्या हुआ उसे? तभी से उसके कुछ दोस्त दौड़ते हुए आये और बताया कि तेरी बहन को राजीव, कालू, नेताई और माल्य जीप में बैठाकर ले गये है।

तभी से टोना सब काम छोड़कर सिर्फ टूनी को खोज रहा है। जुड़वाँ भाई-बहन हैं दोनों। उनका आपस में बहुत गहरा प्यार है। टूनी का पति बच्चे को अपनी बहन के वहाँ रख आया। इस उमर मे ईश्वर के लिए उस नन्हें शिशु को पालना क्या सम्भव है?

टोना के सिर पर खून सवार है। कहाँ जायेंगे वे—उन्हें वह ढूँढ निकालेगा। उसी सिलसिले मे वह बरतलाट गया था और बाज़ार मे माल्य को उसने पहचान लिया था और ललकारा था, "अरे माल्य, मेरी बहन को कहाँ रखा है हरामी!" माल्य भागने लगता है।

टोना बड़े दारोगा के पास दौड़कर जाता है और पाँव पकड़कर कहता है—"बाबू, जो बदमाश हमारी बहन को उठा ले गये हैं वे खोद-डांगा के आम के बगीचे की तरफ गये हैं।" इसके बाद जो संघर्ष हुआ, उसमें राजीव के बायें हाथ की तीन उँगलियाँ रह गयी, बाकी गुंडे सब भाग गये।

इसके बाद वे शहर मे घुस गये। बरतलाट के बड़े दारोगा का कहना है कि मधुकर साहा दास राजीव को शेल्टर दे रहा है। उसके मकान पर हम नज़र रख रहे हैं। वहाँ वे आयेंगे ही।

"हाँ, वहाँ किसी-न-किसी दिन वे आयेंगे ही, क्योंकि किसी-न-किसी दिन उन्हें भी भागना पड़ता है, अपने लिए बिल ढूँढ़ना पड़ता है, जहाँ वे छुप सकें। कोई नयी बात नही है। गुंडों की दुनिया का नियम ही है।

इसीलिए टोना बार-बार बरतलाट आता है। बड़ा दारोगा देख रहा था। भयानक ज़िद्दी यह लड़का असफल क्रोध में कैसा तो होता जा रहा है। बड़ा दारोगा समझाता है—"देख टोना, इस तरह माथा खराब करने से कोई फायदा नहीं। इससे काम नही बनता। सुन, तू यहीं पर बाज़ार में कुछ खरीद-फरोख्त कर। मुझसे थोड़े पैसे ले जा, बाद में लौटा देना। चारों ओर नज़र रख, जो भी खबर मिले, मुझे बता। तू थाने का जासूस बन जा।"

"यह भी कहीं हो सकता है, हुज़ूर! थाने का जासूस मैं कैसे बन सकता हूँ? मेरा तो एक ही काम है। हमारी बहन को जो लोग उठाकर ले गये हैं उनसे बदला लेना और अपनी बहन का पता लगाना। थाना-पुलिस से मुझे डर लगता है। आप जो करने को कहते हैं, उसको करने से तो मैं 'दागी' हो जाऊँगा। आम आदमी मुझसे घिन करेगा। मेरे दोस्त भी मुझे बुरा बनायेंगे। बाप कहेगा—टोना, तू भूल गया थाना ने मुझे कितना परेशान किया था।"

अंततः ईंट-भट्ठे के पीछे उस दिन बड़े दारोगा ने नेताई और माल्य को खतम कर दिया। तब टोना ने उसे याद दिलायी थी—"बाबू, कालू का क्या होगा ?"

बड़ा दारोगा कान खुजलाता है। कहता है—"गुस्सा था न टोना उनके ऊपर। देखते ही मारकर गिरा दिया। उस समय कालू के बारे में सोचने का होश ही नहीं रहा। वर्ना पहले उनसे कालू का ही पता पूछ लेता।"

थोड़ी देर टोना की तरफ आँखें मिचकाता देखता रहा बड़ा दारोगा, फिर बोला—"मैंने उसकी थोड़ी खोज जरूर की, पर जीप से नहीं उतरा। कालू के ऊपर तेरा भी तो पुराना खार है। तेरी बहन को उठा ले गये थे। अखिल होता तो यह काम नहीं होता। वह ऊँचे किस्म का बदमाश था। औरतों की बेहुर्मती उसे बर्दाश्त न थी। तेरी बहन तो एक छोटे-से बच्चे की माँ थी···छि: ! छि. ! चल कालू को मैंने तेरे लिए छोड़ दिया। खोज सके तो मुझे बता देना। नजदीक मत जाना उसके। पिस्टल रहती है उसके पास हर वक्त। तुरत छाती में सुराख कर देगा। और बाजार में बैठता है तो बाट वगैरह सही रखना।"

यह सब कहकर अपने इलाके के सम्राट बड़े दारोगा ने जीप स्टार्ट की।

"नेताई और माल्य, बाबू ?"

"पड़ा रहने दे। थोड़ी देर लोगों को इनका दर्शन करने दे। फिर गंगा तो है ही।"

"कौन करेगा दर्शन। लोग तो जीप देखकर और गोली चलने की आवाज सुनकर भाग गये। लोग तो तब देखते हैं जब बदमाश को मारकर थाने के सामने डाल दिया जाय जैसे झेनो को रखा था थाने ने और लोगों को बुला-बुलाकर दिखाया था। नहीं तो कौन झमेले में पड़ना चाहेगा। आजकल तो आदमी अपनी जान बचाने की फिकर में रहता है।"

बड़ा दारोगा जीप लेकर चला जाता है।

टोना सोचता है—आज कैसे अखिल की तारीफ कर रहे थे बड़े दारोगा ! हाँ, वह भी भला, तुम भी भले। आजकल तो जैसे भले लोगों

की खेती हो रही है। तब फिर टूनी इस तरह कैसे गायब हो गई ? गंगा में नहीं गई टूनी । गगा मे जाती तो बापू को ठीक पता चल जाता। पानी के तल मे बापू की निगाह ऐसे चलती है जैसे सर्चलाइट।

टोना आम के बाग मे घुसा था। बहुत अच्छे किस्म के आम के पेड़-जैसे भवानी, रानीपसंद, सादौला, खीरसापाती—अब देखभाल न होने से बुरी हालत मे हैं। लाल बाबू लोगों का बाग है।

इन्ही आम के पेडो के बीच छाया की तरह फिसलते कालू को टोना ने देख लिया था। उसकी चाल से लग रहा था कि वह डरा हुआ है। पेड़ के साथ सटकर वह हाँफने लगा था। गेहुँअन साँप की तरह वह गर्दन घुमाकर इधर-उधर देख रहा था।

टोना ने एक पत्थर फेंका था और पत्थर जहाँ गिरा उसी के आस-पास कालू के पिस्तौल की गोली लगी। और एक पत्थर, और एक गोली। एक और पत्थर ··

कालू दौड़कर टोना की तरफ आया। टोना आड़े-तिरछे दौड़ने लगा। एक और गोली चली।

चार गोलियाँ थी पिस्तौल में। सब खतम। कालू ने फिर भी टोना का अंदाज से पीछा किया कि माथे पर टोना का फेंका पत्थर आकर लगा। खून की धार बहकर आँखों मे घुसने लगी। आँखों से खून पोंछे कालू कि इसी बीच माथे पर एक और पत्थर। कालू ढेर हो जाता है। फिर उठता है। टोना पागल हो रहा था गुस्से से। इसी पल वह कटार लेकर झपटता है।

"टोना को पहचानते नही तुम। बोल, मेरी बहन कहाँ है ? बोल साला, टूनी कहाँ है ? सिनेमा देखकर निकली थी और तुम लोगो ने उसे हाल के सामने से उठा लिया था।"

"मैं नही जानता, नही जानता···वह अब इस दुनिया मे नही है।"

"मेरी बहन नही रही तो क्या तू जिंदा रहना चाहता है ? मैं आज तेरी बलि चढ़ाऊँगा।"

और एक बार में ही टोना ने उसकी बाँह काटकर शरीर से अलग कर दी थी। खून का फव्वारा-सा छूटा था, जिसे देखकर टोना सिहर

उठा था।

भागता है नदी

की ... रंग लाल होने

लग

टोना जैसे स्तब्ध खड़ा रह गया। कालू के पीछे नहीं जा पाया। कै होने लगी उसे। जो कुछ खाया था सब बाहर हो गया। और रोने लगा टोना। टूनी रे ! बहन, तेरा बदला नही ले पाया मैं। उसे मार भी नही पाया। हार गया मैं। बापू को क्या मुँह दिखाऊँगा ?

कटे हाथ को छूने में घिन लग रही थी। पानी मे फेंक दूँ क्या ? नहीं, बडे दारोगा बाबू को दिखाना है। टोना अपनी कमीज निकालकर हाथ को उसमें लपेट लेता है। चलते-चलते ईंट के भट्ठे मे वह कटा हाथ फेंक देता है। थाना वाले ढूँढ लेंगे।

नेताई और माल्य की लाश देखने को लोग जमा होने लगे हैं।

इसके बाद कई दिन बीत गये।

मधुकर साहा दास की कोठी के पीछे से कार्बोलिक एसिड की महक से टोना सतर्क हो जाता है। हां, कोई आया है या आ रहा है। सांप भगाने की दवा डाली गई है कोठी में। पुरानी इमारत है। सांप तो होंगे ही। कभी-कभी सपेरे यहां सांप पकड़ने भी आते हैं।

टोना गोशाला की छत पर चढ़ जाता है और आम के पेड़ की पत्तेदार झाड़ियों के बीच तेंदुए की तरह चिपका रहता है। यह ठीक नही कर रहे हो तुम, पुराने दिनों का टोना उपदेश देता है। यह पुराना टोना अभी भी परेशानी पैदा करता है। कहता है—"थाना है, पुलिस है, तुम क्यों बेकार कटार पर शान चढाकर घूम रहे हो ?"

टोना उस पुराने टोना को धमका कर चुप करा देता है। वाह ! सब कुछ है जरूर, मगर गरीब के लिए नहीं है। टूनी के बारे में थाना ने न रपट लिखी और न कुछ किया। ऊपर से कहा गया—जवान लडकी है, छोटी जात की। अपना आदमी पसंद नही होगा। किसी और के साथ भाग गई होगी। जिनका नाम तुम ले रहे हो वे बड़े खतरनाक लोग हैं। गहना-कपडा और पैसों की लालच से भी उनके साथ जा सकती है।

लो सुनो इनकी बातें ! गोद का नन्हा-सा बच्चा छोड़कर भला कोई औरत ऐसा करती है ? टूनी को ऐसी-वैसी औरत समझ रखा है इन्होंने । टूनी मेरी बहन है । मैं उसे नहीं जानता क्या ? एक तरह से टूनी मेरे ही शरीर का आधा हिस्सा है। मैं अगर बाजार से अमरूद खरीदता तो उसे देने दौड़ता और अगर टूनी के घर गोश्त पकता तो वह बहनोई को भेजती मुझे बुलाने को । टोना को बिना खिलाये कोई भी अच्छी चीज टूनी मुँह में नहीं रखती थी ।

विराम बाबू मुझे लेकर कितनी जगह गये। कितने लोगों से बात की । सभी कहते, थाना जाओ । उधर थाना मेरे से नाखुश ।

जिन्हें करना चाहिए था, अगर वे कुछ करते तो मैं क्यों इस तरह खाक छानता फिरता ? टोना बहुत थक गया है। शरीर की एक-एक नस ढीली पड़ गई है ।

कटा हाथ बरामद हुआ तो बड़े दारोगा ने टोना को बुला भेजा और लाल आँखें दिखाकर पूछा—"उसने बड़े दारोगा को इस घटना के बारे में क्यों नहीं बताया ?"

टोना ने भी तमककर जवाब दिया—"क्यों कहने जाता ? टूनी क्या आपकी बहन है ? हम दोनों एक मुट्ठी मुरमुरे लेकर 'तू खा'-'तू खा' करते हुए बाप का इंतजार करते रहते थे कि कब वह चावल लाये और हमें भर-पेट खाना मिले । इस तरह कितने ही दिन हमने बचपन में बिताये थे। हम दोनों के बीच एक ही गमछा होता था । टूनी घर में नंगी बैठती थी तो मैं गमछा पहनकर नहा आता था और फिर मैं गमछा उसे देता था तो वह नहाने जाती थी । मैं सुतली के सहारे एक टुकड़ा कपड़ा लटकाये रहता था। "ब्याह होने के बाद टूनी ने रोते हुए मुझसे कहा था—"अरे टोना ! अब मेरे पास दो-तीन नये कपड़े हैं ।"

शाम को तोतों के झुंड के झुंड उड़कर आसमान को रंगीन बना रहे थे। दूर पर रास्ते के किनारे दुकान में रोशनी जाती है । कहीं कैसेट का दर्दीला गीत सुनाई पड़ रहा है । पूर्व दिशा में हँसिए की धार-सा वक्र चंद्रमा दिखाई देने लगा था। पक्षी अपने पंख मोड़कर घोंसलों में मौन लगे थे। इसके कुछ देर बाद सनसनाती हुई एक नाव किनारे में टिक जाती

है। उस पर से एक आदमी उतरता है। उतरने के बाद लाइटर जलाकर सिगरेट जलाता है। लाइटर की रोशनी में एक अत्यंत सुन्दर चेहरा उद्भासित होता है।

उस व्यक्ति का बायाँ हाथ पॉकेट में है, दाहिने हाथ से टॉर्च जलाता हुआ वह आगे बढ़ रहा है। आखिर में मकान की परछाईं में जाकर वह मिल जाता है।

छह

सर्वप्रथम किंग का स्वागत कालू ने किया।

जिस कमरे को साफ-सुथरा करके उसके लिए रखा गया था वहाँ पहले से कालू को आया देखकर वह खड़ा हो गया। कालू मरा हुआ था। खून बह जाने से उसकी मौत हुई थी। मरने के पहले उसका एक हाथ किसी ने काट लिया था, इसके बाद वह पानी में कूद पड़ा था। उस हालत में भी वह यहाँ तक आ पहुँचा था, फिर पड़े-पड़े मरा था। कालू से बदला नहीं लिया जा सका। बेटा, हाथ से निकल गया।

किंग कालू को लात मारता है। कालू की मृत देह बहुत जरा-सी हिलकर फिर अचल हो जाती है। अब इसे किसी दूसरे कमरे में डाल आना होगा। नहीं तो इस पर किसी की नजर पड़ सकती है, फिर पुलिस आयेगी यहाँ। बरतलाट के थाने में किंग जाना नहीं चाहता। थाने की अपेक्षा जेल बेहतर है। कभी-कभी थाना बड़ी मुश्किल में फँसा देता है।

जेल की सुरक्षा तो आत्म-समर्पण करने पर ही मिल सकती है। ऐसा काम तब किया जाता है जब इस बारे में तुम निश्चिंत होते हो कि कोई-न-कोई अपनी जरूरत से तुम्हें छुड़ा ले जायेगा। और ऐसी आशा तभी की जा सकती है जब किसी-न-किसी के लिए तुम बहुत ही उपयोगी होओ।

इस समय किंग की किसे जरूरत है? चोरी के माल का कारोबार करने वालों के लिए उपयोगी होने पर भी बहुत जल्दी छुटकारा नही मिलेगा। जल्दी छुटकारा तब मिलेगा जब राम, श्याम, यदु, मधु को किंग की जरूरत हो। मगर यह बडा जटिल अंक है, बडा गोलमाल है इसमें।

बहुत मुश्किल मे पड़े बिना बरतलाट कौन आता है? किसकी हिम्मत है जो साँप की पूँछ से कान के मैल निकाले?

जो भी हो, अपने मन में विपत्ति की आशंका लेकर ही किंग यहाँ आया है। मधुकर खुद नही आया, केवल इंतज़ाम करवा दिया। इससे भी पता चलता है कि वह भी डर रहा है।

बस, एक दिन की मुहलत और चाहिए। दूसरे दिन नाव मे बैठकर किंग रजबखाली चला जायेगा और वहाँ से गायब हो जायेगा। जरूरत होगी तो बाद में फिर वापस आ जायेगा। रजबखाली में उसके अनेक परिचित और मित्र हैं। उनमें से बहुतों को किंग इस धंधे में लाया है। अपने पाँव पर खडा होने मे उनकी मदद की है। रजाबखाली का रजब धंधा छोड़कर अब मछली का कारोबार करता है। बडा आदमी बन गया है। वह निश्चय ही किंग की मदद करेगा। किंग ने एक बार उसके प्राण बचाये थे। एक बार अगर किंग वहाँ पहुँच जाय तो अपनी जरूरत का एहसास करा देगा उन्हें।

निश्चय ही पुराने और परित्यक्त किले को फिर से दखल करना आसान न होगा। वहाँ अखिल घुस जायेगा। शिक्षित अखिल जो जेल की हवा खा चुका है, अखिल, जो और कुछ भी करे, स्त्रियों की इज्ज़त करता है। अखिल का नाम नेपथ्य संगीत की तरह हवा में तैर रहा है। किंग को अखिल जैसा सम्मान नही मिलेगा। अपराध की दुनिया मे भी बहुत-से कामों को बेइज्जती का काम माना जाता है।

खैर, ये फालतू बाते रहने दो। राजीव काली वल्द दिगंबर काली, साकिन मौजा उचट्यागोचर, थाना नकीबगंज बहुत ऊपर उठ गया है।

किंग किसी का कर्ज अपने सिर पर नही रखता। जो चीज़ लेता है उसका दाम चुकाता है। किसी चीज़ को पाने के लिए उसकी कीमत देनी होती है, यह विवेक-बोध आज भी उसके गुंडा मन में रह गया है।

मगर एक चीज ऐसी थी जिसको पाने के लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पडी है जैसे उसके बायें हाथ की उँगलियाँ।

बायाँ हाथ खोकर किग बहुत मजबूर हो गया है। उसका दाहिना हाथ आज भी बायें हाथ की जगह नही ले सका है। फिर भी बायें हाथ के लूला हो जाने की इस घटना के पीछे किग को एक न्याय-पद्धति दीख पड़ती है। वह जो घुँघराले बालों वाला दुबला-पतला फिर भी मजबूत काठी का लड़का है, जिसके माथे पर लटें नाचती रहती हैं, जो बेहद फुर्तीला है और जिसके हाथ में सधी हुई कटार जैसे उसके मन की भाषा समझती है। उसी की बहन को किग ने सरे-आम उठवा लिया था। इसलिए वह लड़का किग के बायें हाथ को घायल कर दे तो एक तरह से यह न्याय-संगत ही है।

किग के हाथ को उसने जख्मी किया है, इसलिए मौका पाते ही उस लडके को मार गिराना होगा।

यही नियम है। एक मामूली-सा गरीब लड़का यह कहते हुए जिंदा फिरेगा कि उसने किग को घायल किया है। यह बात असह्य है। अंधकार की दुनिया के नियम बड़े कठोर हैं।

और वह लड़की! और ऐसी लड़की भी क्या थी। फिर भी क्यों उसे देखते ही किग का खून उसकी नसों में नाचने लगता था। क्यों उसने किग के सभी प्रस्तावों की उपेक्षा की? किसके बल पर? राजीव काली जिसे चाहता है उसे न पाकर वह बहुत भयानक हो उठता है, यह बात उसने क्यो नही समझी?

किग ने उस लडकी को जब उठवाया था तो उसके मन में यह जिद क्यो थी कि उसे सबक सिखाकर वह किसी धान के खेत मे, किसी दुकान के रैक में अथवा रेल लाइन के किनारे मारकर फेंक देगा। वह दिखा देना चाहता था कि किग को ना कहने का नतीजा क्या होता है! किग को यह उलाहना देना कि उसके घर में माँ-बहन हैं या नही, या वह किसी खराब मुहल्ले मे जाकर क्यों नही अपनी भूख मिटाता क्यों ठीक नही है, यह बात किग सबको बता देना चाहता था।

किसी की माँ-बहन होती हैं, किसी की नही होती। किग की माँ-

बहन नही हैं। यह बात तो पहली रात को उस लडकी ने समझ ली थी। उसकी छाती मे दूध था। इससे किग के लिए उसमें एक नया आकर्षण पैदा हुआ था।

चाहकर भी उस लडकी को सबक सिखाना किग के लिए कठिन होता जा रहा था। लगातार उस लड़की की मिन्नतो से वह समझ रहा था कि लडकी के मन मे साहस बढ रहा है, वह जीना चाहती है कि तभी किग की पीठ पर चाकू लगा था।

लड़की ने पहले-पहल सोचा था उसका खून हो जायेगा। 'चाय लो' कहते ही वह चौंककर रोने लगती थी और कांपने लगती थी। 'जाओ नहा धो लो', कहने पर वह चौककर कहती—मुझे मारो मत, तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ। मेरे एक छोटा-सा बच्चा है।

जब उसने देखा कि उसका खून नही हुआ, उसे कोई सबक नही सिखाया गया तो उसके मन में जिंदा रहने की इच्छा प्रबल हो उठी। कालू सब कुछ देख रहा था। सिंह के शिकार पर भेड़िया कभी पंजा नही रखता, इसका यह मतलब तो नही कि भेड़िये के मन में शिकार के प्रति जरा भी लालच नही उठता।

लडकी को लेकर किंग दुर्बल हो उठा था। उसने बहुत-सी हिंदी और बंगला फिल्मे देखी थी। उन सब फिल्मों के क्रूर नायक मन के बडे अच्छे होते हैं। किंग सोचता था— उन्ही की तरह वह भी कहे—चलो, तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ?

'चलो बहन! आज से मैं तुम्हारा बडा भाई हुआ।' यह बात अगर किंग उससे कह पाता तो खुश होता, किंतु उसने लड़की के साथ इससे पहले जो आचरण किया है उसमे यह बात कहना मुश्किल है।

'चलो तुम्हें छोड आते है, मैंने जो गलती की है उसके लिए क्षमा या घृणा जो करना होगा कर लेना।' यह बात भी वह कहने की सोच रहा था।

ये सब डायलॉग सोचते-सोचते ही किंग ने उस लड़की के लिए एक ढकाई साड़ी खरीद ली थी। उस साड़ी का नाम है, आसमान तारा। नीले आसमान जैसे रग के कपडे मे जरी के छोटे-छोटे तारे बने हुए थे। कालू

से उसने कहा था कि वह उसे घुमाने ले जा रहा है।

"किसे ? लडकी को ?"

"हां।"

"कब ?"

कालू ने नेताई और माल्य को समझाया— किंग अकेला है, हम तीन हैं। रुपये-पैसे और लडकी को लेकर भाग चलते हैं। वह क्या कर लेगा ?

किंग गाडी का जोगाड करने गया था। लौटकर देखा तो पंछी उड़ गये थे। चार पंछी, ढकाई साड़ी, ग्यारह सौ रुपये सब कुछ गायब।

मगर आश्चर्य की बात वे तीनों दूसरे ही दिन वापस लौट आये। खोदडांगा के बाग मे उनका भयंकर किंतु विफल साक्षात्कार और संघर्ष हुआ। राजीव थोड़ा ऊपर की तरफ था और वे नीचे। राजीव ने ललकारा था—"हथियार फेंक दो। मेरी उँगली घोड़े पर है।" और डर दिखाने के लिए उसने गोली चलायी जो कालू के कान के पास से होती हुई गंगा मे समा गयी। उन तीनों ने अपने हथियार पानी में फेंक दिये।

"लडकी कहां है ? तूने उसका क्या किया ?"

"कुछ नही⋯हम कुछ नही कर पाये गुरु," काली बोला—"इसके पहले ही उसने चीखकर पद्मा में छलांग लगा दी।"

"पद्मा में छलांग लगा दी ? हरामजादे, तू उसे बॉर्डर पर ले गया था ? मैं उसे लौटाना चाहता था।"

एक ओर किंग था और दूसरी तरफ काली, नेताई और माल्य। किंतु संघर्ष के इस चित्र में बड़ा दारोगा आ घुसा। बड़ा दारोगा को वे यह नहीं जानने देना चाहते थे कि उनका गृहयुद्ध हो रहा है। एक मिनट में चित्र बदल गया। राजीव ने सोचा, उन तीनों के पास हथियार नहीं हैं।

"तुम सब भागो, मैं कवर दे रहा हूँ।"

"धन्यवाद गुरु !" कालू की आवाज़ आयी।

'तेरा धन्यवाद कौन चाहता है रे साला, तुझे मैं याद में समझूंगा,' राजीव काली ने मन-ही-मन कहा, "जीवन में एक अच्छा काम करने जा रहा था, वह भी तुमने नहीं करने दिया। वह मर गयी है इस पर भी विश्वास नहीं होता। तूने उसे कहीं छुपा रखा है। वह लड़का जो काम हाथ में

लेकर आया है, मेरा भी उद्देश्य वही है—उस लड़की की खोज करना। मगर यह बात मैं उस लड़के को कैसे समझाऊँगा। बहन को खोकर तो वह एकदम गब्बर सिंह हो गया है। ऐसे लड़के अपने धंधे में क्यों नहीं आते। ऐसे लड़के पाता तो किंग सिर्फ डकैती करता। किसी हरामी का शेल्टर भी नहीं ढूँढता।"

बड़े दारोगा को पिस्तौल की धमकी से अटकाये रखना मुश्किल है। वह खुद 'थ्री-नॉट-थ्री' की एक बुलेट है। किंग के पिस्तौल में ज्यादा गोलियाँ भी नहीं थीं। गोली के जवाब में गोली, फिर हाथापाई। किंग बेदम होकर जमीन पर पड़ा हुआ था। किंग का बायाँ हाथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है और वह सोच रहा है – बड़ दारोगा, तुम्हारे ऊपर मेरा जितना खार है, उतनी ही इज्जत भी मैं तुम्हारी करता हूँ। तुम सच्चे आदमी हो। बरतलाट में राजा की तरह चलते हो, मगर आज मेरे हाथ से तुम्हारा खेल खतम है। कहाँ बनेगी तुम्हारी कब्र सोच लो। तुम्हारी बीवी कितना रोयेगी, बाज़ार के लोग छाती पीटेंगे।

बड़े दारोगा की आँखें स्थिर हैं। उनमें भय नहीं है। एक-न-एक दिन मरना है, यह बात वह जानता है और इसीलिए उसे डर नहीं लगता।

तभी उसी लड़के ने चीख मारकर कटार खींच मारी थी किंग के बायें हाथ पर। ये लो, इसने तो सारा हिसाब गड़बड़ कर दिया। अरे पागल ! मैंने जैसे तेरी बहन को उठाया है वैसे ही मैं उसे लौटा भी देता। उसे लौटा भी मैं ही सकता था। यह तूने क्या किया ?

उसके बाद से ही दाहिने हाथ को बायें हाथ की तरह साधने की लगातार कोशिश कर रहा है वह। अभी भी सफल नहीं हुआ है। कालू के ऊपर उसे भयानक गुस्सा है। 'साला कालू, मैं तुम्हें ऐसा सबक सिखाऊँगा, जो आज तक किसी ने नहीं सिखाया होगा। एक-एक करके तेरे हाथ-पाँव काटूँगा, किंग के साथ तिकड़मबाजी करने का मज़ा चखाऊँगा तुझे।'

मगर वह सुअर का बच्चा अपना हिसाब-किताब खतम करके कैसा काठ हुआ पड़ा है। जिस रास्ते से गंगा का पानी आकर बाग के बीच की गहरी नाली में भर जाता है उस नाली में गिरकर भी वह मर सकता था,

मगर नहीं यह आकर मरा है पोतहले के सामने, खूनी जगह में। एक ही खुशी की बात है कि बेटा धीरे-धीरे खून बहने से तिल-तिलकर मरा।

जब तक जिंदा रहा शहर उगलता रहा, मरकर भी यही कर रहा है। अब इस साले को यहाँ से हटाओ और अपनी जिम्मेदारी पर हिफाजत से रखो। इस मकान में मधुकर अब कोई माल नहीं रखता। एक ही साफ-सुथरा कमरा है। इस समय तो कालू ही काफी कीमती माल हो रहा है। दाहिने हाथ से कालू का बाल पकड़कर वह घसीटने लगा। इस तरह खींचकर लाश को भीतर ले जाना कोई मामूली बात नहीं है और किंग ने ऐसे काम कब किये हैं। ऐसे काम तो उसके चमचे किया करते थे।

किंग को एक प्रकार की व्यर्थता का बोध होता है। कालू से बदला लेना था उसे, पर उसकी ओर से पता नहीं कौन कालू से बदला ले गया। किंग हमेशा कालू को समझाता था—बाँट-चूटकर खा। मगर कालू हमेशा एक ही जवाब देता था—क्या बड़े लोग बाँटकर खाते हैं? राम बाबू सब खा रहे हैं इसलिए श्याम बाबू नाराज हैं और श्याम बाबू अजगर की तरह सब कुछ लील रहे हैं इसलिए यदु और मधुबाबू क्षुब्ध हैं।

कालू साले की समझ में कभी नहीं आया कि बड़े लोग जो करते हैं जरूरी नहीं है कि हम भी करें। बड़े लोग तो हर हाल में बड़े ही रहते हैं, हमें तो अपनी जान की खैर मनानी पड़ती है। मगर उसने कोई बात नहीं मानी। उस लड़की के मामले में भी किंग एक बार अच्छा काम करना चाहता था, मगर उसने नहीं करने दिया।

कालू की लाश को नीचे के एक कमरे के सामने पटक दिया किंग ने। कमरे में दरवाजा नहीं था। टॉर्च जलाकर देखा अंदर चारों ओर धूल-मिट्टी, चूहे और छछूंदर की लेंडी और खरपतवार पड़ा हुआ था। ठीक है, तेरे लिए यही कमरा ठीक है।

दरवाजे पर जलती हुई टॉर्च रखकर किंग ने कालू की लाश को कमरे के एक कोने में ठेलना शुरू किया। अरे, यह कैसी आवाज है? टॉर्च किसने उठायी? इसके साथ ही ईंट का एक अद्धा किंग की पीठ पर पड़ा। आघात इतना जोरदार था कि किंग भी मुँह के बल कालू की लाश पर जा पड़ा, साथ ही एक और ईंट उसकी कमर पर आ गिरी। करवट

बदलना होगा और दाहिने हाथ मे पिस्तौल लेना होगा। कालू मुझे कवर दे, तुझे उठाऊँगा कैसे ?

तभी टॉर्च लिए टोना भीतर घुसा। जैसे उसके घुसते ही कमरा जैसे भर गया या कि वह छोकरा ही दैत्याकार हो उठा है। डिस्को डांस का ट्वीस्ट करने वाली किंग की कमर क्या टूट गयी है। किंग करवट नही ले पा रहा है।

उसके दाहिने हाथ को पकड़कर टोना उलटी ओर खीच रहा है। "आ" आ"···कहीं कुछ टूटा। टोना किंग के दाहिने हाथ पर लात मारता है।

पूरी ताकत लगाकर किंग चित हो जाता है। उसके सिर के नीचे कालू की लाश है। कालू रे! मेरा भी खेल खतम हो रहा है।

"मेरी बहन कहाँ है राजीव काली ?"

दर्द से किंग छटपटा रहा है ओह, सब बटाढार हो गया। मगर इसके पीछे भी एक न्याय है कहीं।

"मैं नही जानता भाई।"

"भाई ?"

"मै नही जानता।"

"तुम भी नही जानते ?"

टोना का मन उसे सावधान करता है। बैठ जा टोना राजीव गोली चला देगा। चलाने दो गोली।

"कालू···मैं उसे लौटा देता···कालू उसे···कालू कहता है कि वह पद्मा मे कूद पड़ी···"

"तुम नही जानते ?"

"नहीं !"

"तो मैं बेकार ही मगर तुम्ही तो उसे उठा ले गये थे। ओ मेरे बाप, मैं तुम्हें कौन-सा मुंह दिखाऊँगा टूनी रे! मैं तेरे बेटे से क्या कहूँगा ?"

प्रबल आक्रोश और निष्फल दु:ख मे पागल होकर टोना किंग को लातों से मारने लगा। "लात मार-मारकर मैं तुम्हारा राजा-ब[illegible]
दूंगा। तुम्हारे घर में माँ-बहन नहीं है ? ब्याहता स्त्री और ब[illegible]

अंधेरे की,

माँ पर लार चूने लगा तुम्हारा। किसी खराब मुहल्ले में क्यों नही गये ?"

ऐसे वक्त में भी किंग के चेहरे पर एक विस्मय का भाव खेल गया। *ये ही बातें, ठीक यही बातें उस लड़की ने भी कही थी।* इसके बाद विस्मय कर वह भाव चेहरे पर से गायब हो जाता है। किंग की चेतना लुप्त हो *जाती है।*

क्रोध का जो पशु इतने दिनों से टोना के ऊपर अधिकार किये हुए था, उसे चारों तरफ चाबुक मारकर दौड़ा रहा था, उसके द्वारा भयंकर तथा दुस्साहसी काम करवा रहा था, वह पशु इस दुर्गंधपूर्ण कमरे में, मैथुन और हिंसा से बोझिल उस अंधकार में, टोना को एकदम खाली तथा सत्व-हीन बनाकर उड़ गया।

टोना सोच नही पा रहा है कि वह क्या करे।

"राजीव कालो !"

कोई उत्तर नही आता।

"मर गये क्या ?"

किंग के चेहरे पर टॉर्च की रोशनी फेंककर झुककर देखता है टोना। नहीं, साँस चल रही है। हड्डी टूटने से या हाथ टूटने से क्या आदमी मर जाता है ? टोना ने उसके पेट और सीने पर तो लात भी नही मारी थी या *मारी थी ? ठीक याद नही पड़ रहा है।*

टोना रो पड़ता है। टॉर्च फेंककर बाहर निकल जाता है। कटार को गंगा में फेंक देता है। अब एक नाव की जरूरत है। टोना को मालूम है छोटी नावें कहाँ हैं ? वह गंगा के पानी में उतर जाता है। लगातार डुबकियाँ लेता है और फिर बाहर निकल आता है।

सैलून में रेडियो गा रहा है—'आओ ना प्यार करें।' एक के बाद दूसरे गाने। बहनोई शायद अब ब्याह करे, टोना सोच रहा है। आज बहन के घर कल मौसी के घर, इस तरह कहीं बच्चा पलता है ? मगर वह नई बहू क्या टूनी के बच्चे को उसी तरह आदर-प्यार देगी ? कौन जाने ?

सैलून के लड़के को वह बाहर बुलाता है।

"क्यों टोना ? भीगे कपड़े में ?"

"नहाने गया था। एक बार थाना जाओगे ?"

"क्यों ?"

"बड़े दारोगा को कहना एक बार मधुकर साहा दास की कोठी के पश्चिमी हिस्से मे जाकर देख आयें।"

"बतलाओ न ? क्या हुआ ?"

"नही हरि दा !"

"फिर भी बात क्या है ?"

"बड़े दारोगा बहुत खुश होगे। कहना कि अभी तुरंत चले जायें।"

"मैं अब अपने बाप के पास जा रहा हूँ हरि दा। बरतलाट मे मेरे लिए अब और कुछ नही है।"

□□